Padmawat Bashe.
by
~~Ragnvat~~ Diyal.
Raghuvir Dayal

NKP Lucknow 1880

पद्मावतभाषा

پدماوت بھاکا

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावतकीहै

जिसको

परम सुजान सकल गुण निधान परम तत्व बिलासी सम दृष्टि प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसी ने देश भाषा में शेर शाह बादशाह देहली के वक़्त में जगत उपकार हित ज्ञान मार्ग उपदेश निर्म्माण करके संसार को असत्य और परमेश्वरको सत्य दिखाया कहने को कहानी है परन्तु महा सुख दानी है

उसी का उल्था लाला रघुबर दयाल ने बड़े गौर से उर्दू से देव नागरी में करके गूढ़ शब्दों का अर्थ ठीक ठीक वास्ते जानने गुण ग्राहकों के किया।

पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

मई सन् १८८० ई०

विज्ञप्ति॥

इस महीने अर्थात् मई सन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और इन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली	जलभूजन
सिद्धान्त चन्द्रिका	निघण्ट भाषा	हनुमान बाहुक
लघुकौमुदी	वैद्यदर्पण	सुरसागर
मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी	रामविनोद	ब्रह्मसार
शीघ्रबोध	कोष और इतिहास॥	परमात्मसार
पराशरी सटीक	शिवसिंह सरोज	प्रेमसागर
मुहूर्त्त गणपति	सामुद्रिक	सूरसागर
संग्रह शिरोमणि	गणित कामधेनु	राग प्रकाश
जातक चन्द्रिका	कमीशन बड़ोदा	भक्तमाल
लघुजातक भा० टी० स०	शब्दार्थकोश	अवधयात्रा
भाषाजातकालङ्कार	अमरकोष प्रथम काण्ड	कथा गङ्गा जी
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष तीनों काण्ड	रामायण टेपकी
जातकाभरण	भाषाटीका सहित	रामायण जिल्दबन्धी
मुहूर्त्तदीपक	अनेकार्त्थ कोष	रामायण तुलसीकृत प० छ
होरामकरन्द	ब्रजविलास	रामायण तुलसीकृत स०
मुहूर्त्त चिन्तामणि	दुर्गापाठ सटीक	सतसई रामायण
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	दुर्गापाठ मूल	कवितावली रामायण
वैद्यक	अपराधभञ्जन स्तोत्र	गीतावली रामायण
शार्ङ्गधर सटीक	महिम्नस्तोत्र	रामायण दोहावली
वैद्यजीवन	श्रीगोपाल सहस्रनाम	सुन्दरी चरित्र
वैद्यमनोत्सव	शिवार्च्चन	रामायण नानार्त्थ नौ स०
अमृतसागर	गङ्गालहरी	कुण्डलावली
अमृतसागर बड़ा	भगवद्गीता	दूसरी पुस्तक रामायण मा०
अमरविनोद	भगवती गीता	तीसरी रामायण गीताष्टक
जगद्विनोद	श्रीमद्भागवत सटीक	चौथी स्नान दोहावली

पद्मावतभाषा

پدماوت بهاشا

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावतकी है

जिसको

परम सुजान सकल गुण निधान परम तत्त्व बिलासी समदृष्टि प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसी ने देश भाषा में शेर शाह बादशाह देहली के वक़्त में जगत उपकार हित ज्ञान मार्ग उपदेश निर्म्माण करके संसार को असत्य और परमेश्वर को सत्य [illegible] कहने को कहानी है परन्तु महा सुख दानी है

[illegible] बुबर दयाल ने बड़े ग़ौर से उर्दू से

[illegible] गूढ़ शब्दों का अर्थ ठीक

[illegible] ानने गुणग्राहकों के किया

[illegible] पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

मई सन् १८८० ई०

विज्ञप्ति ।।

इस महीने अर्थात् मई सन् १८८०ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और इन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें ।।

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली	जल भूजन
सिद्धान्त चन्द्रिका	निघण्ट भाषा	हनुमान बाहुक
लघुकौमुदी	वैद्यदर्पण	सुर सागर
मुहूर्त चिन्तामणि सारिणी	रामविनोद	ब्रह्मसार
शीघ्रबोध	कोष और इतिहास ।।	परमात्मसार
पराशरी सटीक	शिवसिंह सरोज	प्रेमसागर
मुहूर्तगणपति	सामुद्रिक	सूरसागर
संग्रह शिरोमणि	गणित कामधेनु	रागप्रकाश
जातक चन्द्रिका	कमीशन बड़ोदा	भक्तमाल
लघुजातक भा० टी० स०	शब्दार्थकोश	अवधयात्रा
भाषाजातकालङ्कार	अमरकोष प्रथम काण्ड	कथा गङ्गा जी
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष तीनों काण्ड	रामायण टेपकी
जातकाभरण	भाषाटीका सहित	रामायण जिल्द बन्धी
मुहूर्तदीपक	अनेकार्थ कोष	रामायण तुलसी कृत प० छ
होरामकरन्द	ब्रजविलास	रामायण तुलसी कृत स०
मुहूर्त चिन्तामणि	दुर्गापाठ सटीक	सतसई रामायण
मुहूर्त मार्त्तण्ड	दुर्गापाठ मूल	कवितावली रामायण
वैद्यक	अपराधभञ्जन स्तोत्र	गीतावली रामायण
शार्ङ्गधर सटीक	महिम्नस्तोत्र	रामायण दोहावली
वैद्यजीवन	श्रीगोपाल सहस्रनाम	सुन्दरीचरित्र
वैद्यमनोत्सव	शिवार्चन	रामायण नानार्थ नौ स०
अमृतसागर	गङ्गालहरी	झूलावली
[illegible] सागर बड़ी	भगवद्गीता	दूसरी पुस्तक रामायण मा
अमरविनोद	भगवती गीता	तीसरी रामायण गीताष्टक
जगद्विनोद	श्रीमद्भागवत सटीक	चौथी सान दोहावली

पद्मावत भाषा

پدماوت بھاشا

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावत की है

जिसको

परम सुजान सकल गुण निधान परम तत्त्व बिलासी समदृष्टि प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसी ने देश भाषा में शेर शाह बादशाह देहली के वक़्त में जगत उपकार हित ज्ञान मार्ग उपदेश निर्म्माण करके संसार को असत्य और परमेश्वर को सत्य दिखाया कहने को कहानी है परन्तु महा सुख दानी है

उसी का उल्था लाला रघुबर दयाल ने बड़े ग़ौर से उर्दू से देव नागरी में करके गूढ़ शब्दों का अर्थ ठीक ठीक वास्ते जानने गुणग्राहकों के किया

पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

मई सन् १८८० ई०

श्रीगणेशाय नमः

अथ पद्मावत

लिख्यते

अस्तुति खण्ड

सुमिरों आदि एक करतारू	जें जिव दीन्ह कीन्ह संसारू
कीन्हेसि प्रथम ज्योति परकाशू	कीन्हेसि तिन्हहिं प्रीति कैलाशू
कीन्हेसि अग्नि पवन जल खेहा	कीन्हेसि बहुते रंग औ रेहां ।
कीन्हेसि धरती सरग पतारू	कीन्हेसि बरन बरन अवतारू
कीन्हेसि दिन दिनेर शशि राती	कीन्हेसि नखत नरायँन पाती
कीन्हेसि धूप सेवं औ छांहा	कीन्हेसि मेघ बीजें तेहि मांहा
कीन्हेसि सप्त मही ब्रह्मंडा	कीन्हेसि भवन चौदहों खंडा

कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाजन काहि
पहिले ताकर नाउं ले कथा करों अवगाहि

याद करना १ सबसे पहिले २ परमेश्वर ३ पहिले ४ उजियारा ५ नाम पहा-
ड़ तथा स्वर्गलोक ६ आग ७ हवा ८ मादी ९ चिनकारी १० ज़मीन ११·२२
आसमान १२·२३ अंबरा १३ पैदाइश १४ सूर्य १५ चांद १६ छोटे नखत १७
जाड़ा १८ बादल १९ बिजुली २० सात २१ सात परदा आसमान सात परदा
ज़मीन २४ शुरू २५

कीन्हेसि सात समंदर पारा
कीन्हेसि मेरु खखंड पहारा

कीन्हेसि नदी नार औ झरना
कीन्हेसि मगर मच्छ बहु बरना

कीन्हेसि सीप मोति जहं भरे
कीन्हेसि बहुतै नग निरमरे

कीन्हेसि बनखंड औ जड़मूरी
कीन्हेसि तरवर तार खजूरी ।

कीन्हेसि सावज आरन रहैं
कीन्हेसि पंख उड़ैं जहं चहैं ।

कीन्हेसि बरन सेत औ स्यामा
कीन्हेसि भूख नींद बिसरामा

कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू ।
कीन्हेसि बहु औषध बहु रोगू

निमेख न लाग करत वह सबै कीन्ह पल एक
गगन अंतरिक्ष राखा बाज खंभ बिन टेक ।

कीन्हेसि अगर कसतूरी बेना
कीन्हेसि भीमसेन औ चीना

कीन्हेसि नाग जो मुख बिष बसा
कीन्हेसि मंत्र हरे जेहि डसा ।

कीन्हेसि अमृत जिये जो पाई
कीन्हेसि बिष मीच जेहि खाई

कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी
कीन्हेसि करुबेल बहु फरी ।

कीन्हेसि मधु लावै लै माखी
कीन्हेसि भंवर पतंग औ पाखी

कीन्हेसि लोबा इंदर चांटी
कीन्हेसि बहु तरह हिं धर माटी

कीन्हेसि राकस भूत परेता
कीन्हेसि भूकस देव दयंता

कीन्हेसि सहसै अठारह बरन बरन उपराज
भुक्ति दीन्हेस पुनि सबन कहं सकल साज नासाज

कीन्हा १ राह मुशकिल २ क़िसिम ३ नवाहि साफ़ ४ जंगल ५ पेड़ ६ जंगली जानवर ७ जंगल ८ रंग ९ सफ़ेद सियाह १० आराम ११ इलाज १२ पलक मारने में १३ आसमान १४ बीचों बीच १५ नाम जानवर परिंद १६ मुश्क १७ क़िसिम काफ़ूर १८.१९.२० सांप २१ ज़हर २२-२४ जिसके पीने से मुर्दा ज़िंदा होजाय २३ मौत २५ शहद २६ उड़ने वाले जानवर २७ लोमड़ी २८ चूंटी २९ शैतान की क़िसिम ३०.३१.३२ हज़ार ३३ तरह तरह की पैदाइश ३४ सब ३५

कीन्हेसि मानुष दिहिसि बड़ाई । कीन्हेसि अन्न भुक्ति तहं पाई ॥
कीन्हेसि राजा भोजहि राजू । कीन्हेसि हस्ति घोर तहं साजू ॥
कीन्हेसि तेहिं कहं बहुत बिरासू । कीन्हेसि कोइ ठाकुर कोइ दासू ॥
कीन्हेसि दूर्ब्य गर्ब जेहि होई । कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई ॥
कीन्हेसि जियन सदा सब चहा । कीन्हेसि मींचु न कोई रहा ॥
कीन्हेसि सुख औ कोटि अनंदू । कीन्हेसि दुख चिंता औ दंदू ॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी । कीन्हेसि संपति बिपति पुनि घनी ॥

कीन्हेसि कोइ निभरोसी कीन्हेसि कोइ बरियार ।
छारेहि ते सब कीन्हेसि पुनि कीन्हेसि सब छार ॥

धनपति वही जेहि कै संसारू । सबै देइ नित घट न भंडारू ॥
जावंत जगत हस्ति औ चांटा । सब कहं भुक्ति राति दिन बांटा ॥
ताकर दृष्टि जो सब उपराहीं । मित्र शत्रु कोउ बिसरै नाहीं ॥
पंख पतंग न बिसरै कोई । परगट गुप्त जहां लग होई ॥
भोग भुक्ति बहु भांति उपाई । सबै खवाय आप नहिं खाई ॥
ताकर उही जो खाना पीना । सब कहं देइ भुक्त औ जीना ॥
सबै आस ताकर हरि स्वासा । वहु न काहु की आस निरासा ॥

जुग जुग देत घटा नहिं उभै हाथ अस कीन्ह ।
और जो दीन्ह जगत महं सो सब ताकर दीन्ह ॥

आदमी १ रोज़ी २ हाथी ३ सामान ४ आराम ५ मालिक ६ ग़ुलाम ७ दौलत ८ गरूर ९ लालच १० जीना ११ मौत १२ खुशी १३ फ़िकिर १४ ग़म १५ ग़रीब १६ अमीर १७ दौलत १८ दुख १९ बहुत २० कमज़ोर २१ ज़ोरवाला २२ माटी २३ फिरि २४ दौलतमंद २५ जिसका २६ हमेशा २७-४३ खज़ाना २८ जहां तक २९ दुनिया ३० हाथी ३१ चूंटी ३२ खुराक ३३-३६ निगाह ३४ दोस्त ३५ दुश्मन ३६ ज़ाहिर ३७ छिपा ३८ बहुत तरह पैदा किया ४० उमेद ४१ नाउमेद ४२ दोनो ४३

आदि[1] एक बरनौं[2] सो राजा ॥ आदिन[3] अंत राज जेहि छाजा ॥
सदा[4] सरबदा[5] राज सो करै ॥ औरजेहि चहै राज तेहि दे ॥
छत्रहि[6] अछत[7] निछत्रहि छाया ॥ दूसर नाहिं जो सरवर[8] पावा ॥
परबत[9] ढाहहि देखत सब लोगू ॥ चाँटहि[9] करहि हस्त[10] सर योगू ॥
बज्रहि[11] तिन कहि मारउडाई ॥ तिनै बज्र[12] करि देइ बड़ाई ॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई ॥ करै सोइ जो मन चिन्त न होई ॥
काहू भोग भुगुति[13] सुख सारा ॥ काहू भूख[14] बहुत दुख मारा ॥

सबै नास्ति[14] वह इस्थिर[15] ऐसो साज जेहि केर ॥ ॥
एक साजै[15] औ भाजै चहै सवारै फेर ॥ ॥

अलख[16] अरूप अबरन सो कर्ता ॥ वह सब सौं सब वह सो बरता[18] ॥
परगट[19] गुप्त[20] सो सर्ब व्यापी[21] ॥ धर्मी चीन्हि न चीन्है पापी ॥
ना वह पूत नहिं पिता न माता ॥ ना वह कुटुम्ब न कोइ संग नाता ॥
जना[22] न काहि न कोइ वै जना[23] ॥ जहाँ लग सब ताको सिरजना[24] ॥
वै सब कीन्ह जहाँ लग कोई ॥ वह नहिं कीन्हि काहू का होई ॥
हुत[25] पहिले और अब है सोई ॥ पुनि सो रहै रहै नहिं कोई ॥
और जो होय सो बावर अन्धा ॥ दिन दुइ चारि मरै कर धन्धा ॥

जो वह चहा सो कीन्हेसि करै जो चाहै कीन्ह ॥
बरजनहार[26] न कोई सबै चाहि जेउ दीन्ह ॥ ॥

सबसे पहिले १ बयान करना २ अव्वल न आख़िर ३ हमेशा ४ छत्रधारी ५ बिदून छत्र ६ बराबरी ७ पहाड़ ८ चूंटी ९ हाथी १० पथ्थर ११-१२ रोज़ी १३ नास होनेवाला १४ क़ायम १५ बनाना और बिगाड़ना १६ जिसको कोई न देख सके १७ नज़दीक १८ ज़ाहिर १९ छिपा २० सब चीज़ मैं बिराजमान २१ पैदा होना २२-२३ पैदा हुआ २४ पहिले था २५ मना करनेवाला २६

बिन बुद्धि चहिं जो कहो जान । जस पुरान मा गाहँ लिखा बखान ॥

जीव नाहिं पै जिये गुसाईं । कर नाहीं पै करै सबाईं ॥

जीभ नाहिं पै सब कुछ बोला । तन नाहीं सब ठाहर डोला ।

स्रवन नाहिं पै सब कुछ सुना । हिया नाहिं पै सब कुछ गुना ।

नयन नाहिं पै सब कुछ देखा । कौन भाँति अस जाय बिसेखा ।

ना कोई है वह की रूपा । ना वह सों कोइ आहि अनूपा ।

ना वह ठाँउ ना वह बिन ठाऊँ । रूप रेख बिन निरमल नाऊँ ।

ना वह मिला न बेहरा ऐसो रहा भरि पूर ॥

दृष्टिवन्त कहँ नेरे अंधहि मूरख दूर ॥

और जो दीन्हेसि रतन अमोला । ता कर मरम न जानै भोला ॥

दीन्हेसि रसना औ रस भोगू । दीन्हेसि दसन जो बिहँसै योगू ।

दीन्हेसि जग देखन कहँ नयना । दीन्हेसि स्रवन सुनन कहँ बयना ।

दीन्हेसि कण्ठ बोल जेहि माहीं । दीन्हेसि कर पल्लव बर बाहीं ॥ ॥

दीन्हेसि चरण अनूप चलाहीं । सो जानय जेहि दीन्हेसि नाहीं ।

योबन मरम जानि पै बूढ़ा । मिला न तरुनापा जग ढूँढ़ा ॥

सुख कर मरम न जानय राजा । दुखी जानि जा कहँ दुख बाजा ।

काया का मरम जानि पै रोगी भोगी रहै निचिन्त

सब कर मरम गुँसाईं जानै जो घट घट रहै नित्त

चक़िल १ हाथ २ सब ३ जगह ४ कान ५ दिल ६ आँख ७ कौन तरह ८ मुक़ाबिल जिसका कोई नहो ९ जगह १० पाक साफ़ ११ अलग १२ देखने वाला १३ नादान १४ जवाहिर १५ भेद १६ जीभ १७ दाँत १८ हँसने के लिये १९ आँख २० कान २१ आवाज़ २२ हाथ की हथेली २३ पैर २४ जिसकी मिसाल नहो २५ जवानी २६ क़दर २७ जवानी २८ भेद २९ बदन ३० भेद ३१ बेफ़िक्र ३२ भेद ३३ ईश्वर ३४

अति अपार करताकर करना। बरनन कोई पावय बरना।
सात स्वर्ग जो कागद करै। धर्ती समनद मँस भरै।
जानवन्त जग सारवा बनहाँरवा। जानवन्त कैस सुनो परव पारवा।
जानवन्त खेह होहि दुनयाई। मेघ बूंद औ गंगेन तराई॥
सब लिखनी कौ लिख संसार। लिखि न जाय गति समन्द अपार।
एतो कीन्ह सब गुण परकेटा। अबहू समुन्द महँ बूंद न घटा।
ऐसो जानि मन गर्व न होय। गर्व कर्य मन बावर सोय।

बड़ गुणावन्त गुसाँई चहीं सवारी बेग॥
औ अस गुणी सँवारी जो गुण चही अनेग।

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा। नाम मुहम्मद पूनो करा॥
प्रथम जोति विधि ताकी साजी। औ तेहि प्रीति सृष्टि उपराजी।
दीपक लेस जगत कहँ दीन्हा। भा निरमल जग मारग चीन्हा।
जो न होत अस पुरुष उज्यारा। सूझि न परत पंथ अँधियारा।
दूसरे ठाउँ दैवी लिखी॥ वही धर्मी जो पाढ न सीखी।
जेहि नहीं लीन्ह जन्म सो नाउ। ता काह कीन्ह नरक महँ ठाउँ।
जग बसीठ दई वै कीन्ही॥ दुई जग तरा नाउ जेहि लीन्ही।

गुण अवगुण विधि पूछ न होय लेखे औ जोख।
वेहि बिनवब आग होय करे जगत कर मोख॥

जिसका पारावार नहीं १ बयान करना २ आसमान ३ ज़मीन ४ सियाही ५ बाल ६ दोंन ७ माटी ८ बालू ९ बादल १० आसमान ११ नखत १२ ज़ाहिर करना १३ गफूर १४-१५ ईश्वर १६ जल्द १७ बहुत १८ ख़ास १९ पाक २० चौदही का चांद २१ पहिले २२ ईश्वर २३ मुहब्बत २४ दुनिया पैदा की २५ चिराग़ २६ दुनया २७ पाक २८ दुनया २९ राह ३० ३१ जगह ३२ ३३ दुनिया का क़ासिद ३४ दोनों जहान ३५ पाप और पुण्य ३६ ईश्वर ३७ हिसाब ३८ दुनिया ३९ बन्द से छुड़ाना ४०

चार मीत जो मुहम्मद ठाऊँ । जेहि का दीन्हि जग निरमल नाऊँ
अबाबक्र सद्दीक़ सयाने ॥ पहिले सिद्क़ दीन वेहि आने
पुन सो उमर ख़िताब सुहाये । भा जग अदल दीन जो आये
पुन उसमान बड़ पण्डित गुनी लिखा पुराण जो आयत सुनी ।
चौथे अली सिंह बरियारू ॥ सौंहि ना कोइ रहा जुझारू ।
चारो एक मतै एक बाना एक पंथ औ एक सँघाना ।
बैचन एक जो सुनाया हि साँचा वही पुराण दुहू जग बाँचा ।

जो पुराण बिधि पठवा सोई पढ़त ग्रंथ ॥।
और जो भूली आवत तो सो सुन लागे पंथ ॥।

सेरशाह देहली सुलतानू चारहुँ खंड तपी जस भानू
ओही छाज छात औ पाटा । सब राजै भुइँ धरा लिलाटा ।
ज़ात सूर औ खाँडै सूरा । औ बुधवंत सबै गुण पूरा ॥
सूर नवाई नवखंड वहे । सात दीप दुनी सब नये ॥
तहँ लग राज खड़्ग करि लीन्हा इसकन्दर जुलकरनैन जो कीन्हा
हाथ सुलेमान केरि अगूठी । जग कहँ दान दीन्हि भरि मूठी
औ अति गरू भूमिपति भारी टेक भूमि सब सृष्टि सँभारी

देहि असीस मुहम्मद करहु युगयुग राज ।
बादशाह तुम जगत के जग तुम्हार मुहताज ।

दोस्त १ जगह २ दुनिया ३ पवित्र ४ संसार ५ न्याव ६ शेर ७ ज़बरदस्त ८ सामना करनेवाला ९ लड़नेवाला १० एक सलाह ११ एह १२ बात १३ दुनिया १४ पढ़ना १५ ईश्वर १६ किताब १७ एह १८ नाफ़ १९ सच्ची २० तख़्त २१ माथा २२ पठान २३ तलवारबहादुर २४ बहादुर २५ सारी दुनिया २६ मुल्क २७ तलवार २८ नाम बादशाह २९ नाम बादशाह ३० दुनिया ३१ खैरात ३२ बादशाह ३३ ज़मीन ३४ दुनिया ३५ · ३६ · ३७

बरनौं सूर भूमिपति राजा ॥ भूमि न भार सहै जो साजा ॥
हय गय सयन चलय जग पूरी । परबत टूटि उड़हि होय धूरी ।
परी रेनु होइ रविहि ग्रासा ॥ मानुष पंख लेहि फिरि बासा
भुइँ उड़ अन्तरिक्ष गई मृतमंडा । रूप होय छावा मिहि मंडा ।
डोलै गगन इन्द्र डरि कांपा ॥ बासुकि जाय पतारहि चापा ॥
मेरु धसमसै समुद्र सुखाई । बनखंड टूटि खेह मिलि जाई
अगिलहि कहँ पानी गहि बांटा । पिछलहि कहँ नहि कांदू चांटा

जो गढ़ नये न काहू चलत होय सब चूर
जो वह चढ़ै भूमिपति शेर शाह जग सूर ॥ ११ ॥

अदल कहौं प्रथमै जस होय । चांटा चलत न दुखवै कोय ॥
नौशेरवां जो आदिल कहा ॥ शाह अदल सरि सोहि न अहा
अदल जो कीन्ह उमर की नाईं । भई यहो सगरी दुनयाई ॥
परी नाथ कोइ छुवै न पारा ॥ मारग मानुष से उजियारा ॥
गऊ सिंह रेंगहि एक बाटा ॥ दोनो पानी पियें एक घाटा
नीर खीर छाने दरबारा ॥ दूध पानी सब करै निरारा
धर्म न्याव चलै सत भाखा । दूबर बरी एक सम राखा ।

सब प्रथवी असीसै जोर जोर कै हाथ ॥
गङ्ग यमुन जो लहि जल तौ लहि अमर नाथ

तारीफ़ करना १ बहादुर २ बादशाह ३ ज़मीन ४ घोड़े से भरीहुई ५ फ़ौज ६ दुनया ७ पहाड़ ८ धूर ९ सूर्य १० बीच ११ आसमान १२ ज़मीन १३ आसमान १४ नाम सांप १५ पहाड़ १६ जंगल १७ धूर १८ पहला १९ किला २० टूटना २१ बादशाह २२ दुनया का सूर्य २३ न्याव २४ पहिले २५ दूटी २६ नाम बादशाह २७ न्याव करने वाला २८ न्याव २९ बराबर ३० न्याव ३१ नाम खलीफ़ा ३२ नाथना ३३ एह ३४ शेर ३५ एह ३६ दूधपानी ३७ अलग ३८ सब्बा ३९ ज़बरदस्त ४० बराबर ४१

पुनरूपवंत बखानौं काहा ।। जानवंत जगत सब मुख जाहा
शसि चौदस जो दई संवारा । तबहू जाहि रूप उजयारा ।।
पापजाय जो दरशन दीसा । जगजुहार के देत असीसा
जैसो भानु जग ऊपर तपा । सबै रूप वह आगे छिपा ।।
अस भा सूर पुरुष निरमरा ।। सूर जाहि दस आगर करा ।।
सोहि दृष्ट कोई हेर न जाई ।। जेहि देखा सो रहा शिर नाई
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा । विधि सुरूप जग ऊपर गढ़ा ।

रूपवंत मनसाथ चन्द्र घाट वह वाढ़ि ।।
मेदनि दरस लुभानो असतुत बिनवै ठाढ़ि ।।

पुनदाता दई जग कीन्हा । अस जग दान न काहू दीन्हा
बलि औ बिक्रम दानि बड़ कहे । हातिम करण बतागी अहे ।।
शेर शाह सर पोंच न कोऊ समुद सुमेर भंडारी दोऊ ।।
दान दांग बाजे दरबारा ।। कीरत गई समन्दर पारा ।।
कंचन परस सूर जग भयो । दारिद भागि देसन्तर गयो ।
जो कोई जाय एक बेर मांगा । जन्म न होय नभूखा नांगा ।
दस अश्वमेध जैगत जे कीन्हा दान पुन्य सर सौंह न चीन्हा ।

ऐसो दान जग ऊपना शेरशाह सुलतान ।।
ना अस भयो न होय ना कोई दय अस दान ।

खूबसूरत १ बयानकरना २ दुनया ३ चान्द ४ ईश्वर ५ दुनया ६ सूर्य्य ७ संसार ८ बहादुर ९ मर्द १० पाक साफ़ ११ सूर्य्य १२ दसगुना १३ सूधी निगाह १४ देखना १५ ईश्वर १६ दुनिया १७ खूबसूरत १८ आदमी १९ तारीफ़ २० दानदेनेवाला २१ ईश्वर २२ दुनिया २३. २४ नाम राजा २५. २६ दानदेनेवाले २७. नाम सखी २८. २९ वरषा ३० पहाड़का नाम ३१ नगाड़ा ३२ नेकनामी ३३ पारसपत्थर ३४ बहादुर ३५ दुनिया ३६. ३९. ४१ नाम जगह ३७ घोड़ा ३८ बराबर ४०

तारीफ़ सय्यद अशरफ़ जहाँगीर की

सय्यद अशरफ़ पीर पियारा । जेहि मोहिं पंथ दीन्ह उजियारा
लेसा हियें प्रेम कर दिया । उठी जोति भा निर्मल हिया
मारग होत जो अँधेरा सूझा । भा उजेर सब जाना बूझा ॥
खार समुन्द्र पाप मोर मेला । बोहित धर्म लीन्ह कय चेला
उन्ह मोर कर बूड़ि कय गहा । पायो तीर घाट जो अहा ॥
जाके ऐसो होय कन्धारा । तुरत बेगि सो पावे पारा
दस्तगीर गाढ़े के साथी । वह अवगाह दीन्ह तेहि हाथी

जहाँगीर वय चिश्ती निहकलंक जस चान्द
वय मखदूम जगत के हौं वह घर की बान्द

तारीफ़ - सैद अशरफ़ जहाँगीर के बेटे की

उन्ह कर रतन एक निरमरा । हाजी शेख सभा गुन भरा
तेहि घर दुई दीपक उजियारे । पंथ दये काँह दई सँवारे ॥
शेख मुहम्मद पून्यों करा । शेख कमाल जगत निरमरा
दोउ अचल ध्रुव डोले नाहीं । मेरु खिखंड न भवा पराहीं ।
दीन्ह रूप और जोति गुसाईं । कीन्ह खम्भ दुई जग की ताईं
दोहूँ खम्भ टेके सब मही ॥ दोनों के भार सृष्टि सब रही ॥
जेन्हि दरसी औ परसी पाया । पाप हरा निर्मल भई काया

मुहम्मद तहाँ निचिन्त पंथ जिन्ह संग मुरशिद पीर
झहिरी नाव औ खेवक बेगि लागि सो तीर ॥

राह १ दिल २ पाक ३ दिल ४ राह ५ नाव ६ हाथ ७ किनारा ८ मल्लाह ९ जल्द १० दुनिया ११ जमाहि १२ साफ़ १३ राह १४ चाँद १५ दुनिया १६ पाकसाफ़ १७ नामसितारा १८ बीहड़ १९ दुनया २० - २१ पाक २२ वदन २३ राह २४ मल्लाह २५ जल्द २६ किनारा २७

गुरु मुहदी खेवक मैं सेवा। चलै उताइल जेहि कर खेवा
अगुवा भयो शेख बुरहानू । पंथे लाय मुहि दीन्हो ज्ञानू ।
अलहदाद भल तिन्ह कर गुरू दीन दुनी रोशन सुरखरू ॥
सैयद मुहम्मद कय वे चेला सिद्धि पुरुष संगम जिन्ह खेला
दानियाल गुरु पंथ लखाई ॥ हजरत ख्वाजा खिजिर तेहि पाई
भये प्रसन्न वो हजरत ख्वाजे ले मेरये जहँ सय्यद राजे ॥
वे सेउन मैं पाय करनी ॥ उघरी जीभ प्रेम कब बरनी

वे सुगुरु हौं चेला नित बिनवौं भा चेर ॥
उन्ह हुत देखौ पाउँ दरस गुसांई केर ॥ ॥

एक नयन कब मुहम्मद कने सोई बिमोहा जे कब सुने ॥
चान्द जैसो जग बिधि अवतारा दीन्हि कलंक कीन्हि उजियारा
जग सूझा एके नयना हाँ ॥ उआ सूक जस नखतन माहाँ
जौ लहि अंबहि डाभ न होय । तौ लहि सुगन्ध बसाय न सोय
कीन्हि समुन्द्र पानी जो खारा तो अति भयो असूझ अपारा
जो सुमेरु त्रसूल बिनासा । भा कंचन गढ़ लागि अकासा
जो लहि घरी कलंक न परा काँच होय नहिं कंचन करा ।

एक नयन जस दरपन औ निर्मल तेहि भाव
सब रूपवंती पाउँ गहि मुख जोहन को चाव

नाव खेनेवाला १ राह २ मर्द कामिल ३ सतसंगत ४ राह ५ खुश ६ हमेशा विनती करता ७ ईश्वर ८ आँख ९ मोहि जाना १० दुनिया ११ ईश्वर १२ पैदा किया १३ दुनिया १४ आँख १५ नाम सितारा १६ आम्र १७ झाग १८ खुशबू १९ जिसका किनारा नहो २० नाम पहाड़ २१ जिसको महादेवजी ने त्रिशूल से खोदा २१ सोने का किला २२ दाग २३ सोना खालिस २४ आँख २५ आईना २६ साफ़ २७ खूबसूरत २८ मुँह देखना २९

चार मीत कब मुहम्मद पाये । जो मिताई सर पहुँचाये ॥
यूसुफ़ मलिक पण्डित बहु ज्ञानी । पहिली बात भेद उन्ह जानी ॥
पुन सलार कादम मति माहाँ । खाँड़े सूर उभनत बाहाँ ॥
मियाँ सलोनी सिंह बखान् । बीर कहत रण खग जु मारन ।
शेख बड़ी बड़ि सिद्ध बखाना । के आदेस सिद्ध बड़ दाना ॥
चारो चतुर दश गुण पढ़े । औ सिंह योग गुसाईं गढ़े ॥
बृच्छ होय जो चन्दन पासा । चन्दन होय बिंधि बिधि तेहि बासा ॥

मुहम्मद चारो मीत मिलि भये जो एके चित्त
यह जग साथ जो बैठे वह जग बिछुरन कित्त

जायस नगर धर्म अस्थान् । तहाँ जाय कवि कीन्ह बखान् ॥
औ बिनती पण्डितन सों भजा । टूटि सँवार मेरवहु सजा ॥
हौं पण्डितन केर पछलगा । कुछ कहि चला तबल दीन्ह डगा ॥
हियाँ भँडार अहै जो पूँजी ॥ खोली जीभ तार की कूँजी ॥
रतन पदारथ बोलत बोला ॥ सुरस पेम मधु भरी अमोला ॥
जेहि की बोल बिरह की घाया । कहिं तिन्ह भूख कहाँ तेहि माया ॥
फेरैं भेस रहे भा तपा ॥ ॥ धूल लपेटा मानिक छिपा ॥

मुहम्मद कब जो प्रेम को ना तन रक्त न हँ मास
जैं मुख देखा सो हँसा सुनी तेहि आये आँस ॥

दोस्त १ दोस्ती २ तलवार बहादुर ३ बलन्द हाथ ४ खैरज़बादशत ५ तलवार ६ मर्द कामिल ७ मशहूर ८ चौदह विद्या ९ शेर १० ईश्वर ११ पेड़ १२ दोस्त १३ दुनया १४-१५ मकान १६ बयान करना १७ आजज़ी १८ आरास्ता १९ ढोल बजाय के २० दिल २१ जवाहिर २२ मीठे मुहब्बत के भरे हुये २३ शराब २४ सूरज २५ तप करनेवाले २६ मोती वगैरा २७ ख़ून २८

सन नव से सत्ताइस अहे । कथा अरंभ बैन कब कहे ॥
संगलदीप पद्मनी रानी ॥ रतन सेन चित्तौर गढ़ आनी
अलाउद्दीन देहिली सुलतानू राघव चेतन कीन्ह बखानू
सुना शाह गढ़ छेंका आई । हिन्दू तुरकहिं भई लड़ाई ॥
आदि अंत जस कथा आहे । लिख भाषा चौपाई कहे ॥
कब ब्यास रस कंवला पूरी दूरहि नेरे नेरे दूरी ॥
नेरें दूर फूल जस कांटा ॥ दूर जो नेरे जस गुड़ चांटा ॥

भंवर आय बनखंड सो लेइ कंवल की बास
दादुर बास न पावे फूलहिं जो आछी पास

संगलदीप कथा अब गाऊं । औ सुपद्मनी बरन सुनाऊं ॥
निरमल दरपन भांति बिसेखा जिन्ह जस रूप सो तैसो देखा ।
धनि सुदीप जिन्ह दीपक वारे औ सुपद्मनी जो दई संवारे ॥
सात दीप बरने सब लोगू ॥ एको दीप न वहु सरे योगू ॥
दया दीप नहिं तस उजियारा । सरन दीप सर होय न पारा ॥
जम्बूदीप कहूं तस नाहीं ॥ लङ्क दीप सरे पोच न भाई
दीप गुसस्थल आरन परा ॥ दीप महो सहल बाल हरा ॥

सब संसार पोर प्रथमी आये सातों दीप
एक दीप नहिं आ तिम सगलदीप समीप

गन्धपसेन सुगन्ध नरेशू । सो राजा वह ताकार देसू
लङ्का सुना जो रावन राजू । तेहू चाहि बड़ ताकर राजू
छप्पन कोटि कटक दल साजा सबै छत्रपति औ गढ़राजा

शुरू करना १ नाम भाट २ बयान करना ३ क़िला ४ अक्लआंख ५ बूंदी ६ अगल ७ मेंढक ८ बयान करना ९ साफ़ १० शीशा कौतह ११ ईश्वर १२ बयान १३ बराबर १४-१५ राजा १६ फ़ौज १७

सोरह सहस[1] घोड घुड़सारा[2] । श्यामे करन[3] जस बांक तुखारा
सात सहस[4] हस्ती[5] संघली ॥ डौंम[6] कैलाश[7] ऐरा पति[8] बली ॥
अश्वपतीक[9] शिर मोर कहावै । गजपतीक[10] आंकुस गजे[11] नावै
नरपतीक[12] कहूँ[13] औरनरिन्द्र । भूपतीक[14] जग[15] दूसर इन्द्र[16] ॥

ऐसा चक्कवे[17] राजा चहूँ[18] खंड भै होय ॥
सबै आय शिर नावहीं सरबर[19] करै न कोय ।

जोहि दीप नेरे[20] भा जाई ॥ जनु कैलास तीर भा आई
गहैन[21] अम्बराउ[22] लाग चहूँ पासा । उठी भूमि हुति लागि अकासा
तरिवर[24] सबै मलैय[25] गिर लाई । भई जग छाँहि[26] रैन होइ आई
मिली सुमेर[27] सुहाई छाहीं । जेठ जाड़ लागय तेहि माहीं ।
कहीं छाहि रैन होय आवै । हरियर सबै अकास देखावै
पंथिक[28] जो पहुँचै सहि घामू । दुख बिसरै सुख होय बिश्रामू[30]
जिन्ह वह पाई छाहिं अनूपा । फिरि न आय सही यहि धूपा ।

अस अम्बराउ[32] सघन घन बरैन[33] न पारौं अंत ।
फरी फूली छयो ऋतु जानहु सदा बसंत ।

फरे आम्ब अति सघन सुहाये । औ जस फरी अधिक[34] शिर नाये
कटहर डार पेड़ सों पाके ॥ बडहड सो अनूप अति ताके
खिरनी पाकर खांड़ अस मीठी । जामुन पाक भंवर अस डीठी
नायर फो फरे खरहरे । फरे जानि इन्द्रासन पेरे ॥

हज़ार १ अस्तबल २ नाम घोड़ा ३ हज़ार ४ हाथी ५ बराबर ६ नामपहाड़ ७ नाम हाथी राजा इन्द्र ८ पहसवार ९ हाथी सवार १० हाथी ११ राजा १२-१३ १४ दुनिया १५ राजा इन्द्र १६ चक्रवर्ती १७ तमाम दुनिया १८ बराबर १९ नाम पहाड़ २० गुज़ान २१ बाग़ २२ ज़मीन २३ पेड़ २४ चन्दन २५ रात २६ पहाड़ २७ रात २८ मुसाफ़िर २९ आराम ३० बेमिसाल ३१ बाग़ ३२ बयान ३३ बहुत ३४

पुन महुवा चुवे अधिक मिठासू । मधु जस मीठ पुहुप जस बासू ॥
औ रव जंहजा उन्ह का नाउं । देखा सबरानों अम्बेराउं ॥
लागि सबै जस अमृत साखा । रहे लुभाय सोई जो चाखा ।

लवंग सुपारी जायफरी सब फुर फरे अपूर ।
आसपास घन इमली औ घन तार खजूर ॥

बसहिं पंख बोलहिं बहु भाखा । करहिं हुलास देख के साखा ।
भोर होति बासहिं चहि चुंही । बोलहिं पांडुक एके तुही ॥
सारो सुआ जो रह चहि कारही । करहिं परेवा औ करोरही ।
पीव पीव कर जो लाग पपीहा । तुही तुही कर गड़रु बोहा ॥
कुहू कुहू करि कोयल राखा । औ बिंहगराज बोल बहु भाखा ।
दही दही करि महर पुकारा । हारिल बोली आपन हारा ॥
कुहुकिकहिं मोर सुहावन लागा । होय कुराहर बोलहिं कागा ।

ज्ञानवंत परवो बन के फिरि बैठे अम्बराउं ।
आपनी आपनी भाष ना लीन्ह दई कर नाउं ॥

पैग पैग पर कुआं बावरी । साजी बैठक औ पांवरी ॥
औ कुंड बहु ठांवहिं ठाऊं । सब तीरथ औ तेहिं के नाउं ॥
मठ मंडप चहुं पास संवारे । तपा जपा सब आसन मारे ।
कोइ सु ऋषेश्वर कोइ सन्यासी । कोई रामजती कोई बिसवासी ।
कोइ ब्रह्मचर्य पंथ लागे । कोई सो दिगम्बर आछे नांगे ।

बहुत १ शहद २ फूल ३ नाम मेवा ४ बाग ५ गुंजान ६-७ चिड़ियां ८ खुशी करना ९ नाम चिड़िया १०-११ सारस १२ तोता १३ चिड़िया १४ नाम चिड़िया १५ दहियड़ १६ बाग १७ ईश्वर १८ कदम १९-२० बैठक २१ जीना २२ जगह २३-२४ तप करने वाले २५ जप करने वाले २६ किसम फ़क़ीर २७-२८-२९-३० एह ३१ फ़क़ीर ३२-३३

कोइ सु महेश्वर जोगीयती	कोइ एक परखे देवी सती ॥
कोइ सरस्वती सिन कोइ योगी	कोइ निरास पंथ बैठि बियोगी

सेवरा खेवरा बानप्रस्तो सिद्ध साधक अवधूत
आसन मारे बैठि सब पांच आत्मा भूत ॥

मानसरोवर बरनौं काहा ।	भरा समुद्र अस अति अवगाहा
पानि मोति अस निरमल तासू	अमृत बरन कपूर सुबासू ॥
लङ्क दीप की शिला अनाई ।	बांधा सरवर घाट बनाई
खण्ड खण्ड सीढ़ी भइ गेरे	उतरहि चढ़हि लाग बहु फेरे ॥
फूला कमल रहा होय राता	सहस सहस पखेरन के छाता
उलटहि सीप मोति उतराहीं ।	चुनहिं हंस औ केलि कराही
खनि पतार पानी तहि काढ़ा	क्षीर समुद्र निकसा हत हाढ़ा

ऊपर पाल चहूं दिस अमृत फल सब रूख ।
देखि रूप सरवर को गई पियास औ भूख

पानि भरी आवहिं पनहारीं ।	रूपस रूप पद्मिनी नारी ।
पद्म गन्ध तिन्ह अंग बसाहीं	भंवर लागि तिन्ह संग फिराहीं
लंक सिंघनी औ सारँग नयनी	हंस गामिनी कोकिल बैयनी
आवहि झुराड सो पांतहि पांती	गवने सुहाय सु भांतहि भांती
कनक कलस मुख चन्द दिपाहीं	रहस केलि से आवहिं जाहीं ॥

किस्म फ़क़ीर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२ नाम तालाब १३ तारीफ़ १४ बहुत गहिरा १५ साफ़ १६ रंग १७ खुशबू १८ तालाब १९ सुर्ख २० हज़ार २१ चिड़िया २२ चारो तरफ़ २३ तालाब २४ कमल की खुशबू २५ बदन २६ कमर शेरनी केसी २७ हरिन २८ आंख २९ चाल ३० आवाज़ ३१ चाल ३२ तरह ३३ सोना ३४ घड़ा ३५ चमकना ३६ खुशी से उछलती कूदती ३७

जासों वे हेरैं चख नारी	बाँके नयैन जनु हनहिं कटारी
केस मेघावर शिर ता पाहीं	चमकहिं दसन बीज की नाईं

माथे कनक गागरी आवहि रूप अनूप ॥
जेहि की ये पनहारी सो रानी केहि रूप ॥

ताल तलावा बरन न जाही	सूझै वार पार कुछ नाहीं
फूली कुमुद केति उजियारे	मानहु उगे गगन महँ तारे
उतरहिं मेघ चढ़हि लै पानी	चमकहिं मच्छ बीज की बानी
तैरहिं पंख सुसंगहि संगा ॥	सेते पीते राते बहु रंगा ॥
चकई चकवा केल कराहीं ।	निसके बिछोह दिनहिं मिलजाहीं
कुरलहिं सारस करहिं हुलासा ।	जीवन मरन सुसंगहिं पासा
केवा सो डहेलक बक लेदी ।	रही अपार मीन जल भेदी ॥

नग अमोल तेहि तालहिं दिनहिं बराहे जसदीप
जो मरजिया होय तेहि सो पावै वह सीप ॥

आस पास बहु अम्रत बारी ।	फरी अपूर होय रखवारी ॥
नारंग नीबू सुरंग जंभीरा	औ बदाम बहु वेद अंजीरा ॥
गुलगुल तुरंज सदा फर फरे	नारंग अति राती रस भरे ॥
किशमिश सेब फरे नौबाता	डाँसों दाख देख मन राता
लागि सुहाई हरफारयोरी ॥	उनय रही केला की घौरी ॥
फरी तूत कमरख औ न्योजी	रायकौंदा बेर चिरौंजी ॥

देखना १ आँख २-३- बाल ४ दाँत ५ बिजुली ६ सोना ७ बेमिसाल ८ नारीफ़ ९ कौका बेली १० नाम नखत ११ आसमान १२ बिजुली १३ चिड़िया १४ सफ़ेद १५ पीली १६ लाल १७ रात १८ नाम जानवर परन्द मछली पकड़नेवाले १९ – २० – २१ – २२ मछली २३ बागीचा २४ लाल २५ अनार २६ लाल २७ नाम मेवा २८

सुगन्धराव छुहारा दीठे[१] ।। औ खजहजा[२] खाटे मीठे ।।

पानि देहिं खण्डवानी[३] कुवहिं खाँड़ नहिं मेल
लागी घरी रहँट की सींचहिं अमृत बेल ।।

पुनि फुलवारि लाग चहुँ पासा । बृक्ष[४] बेदहि चन्दन भइ बासा
बहुत फूल फूली घन बेली । क्योड़ा चम्पा गोंद चमेली ।।
सुरँग गुलाल कदम औ कूजा । सुगन्ध बकौरी गन्धूप पूजा
जाहीं जूही बकाचन लावा ।। पुहुप[५] सुदरस नलाग सुहावा ।।
नागेसर सदबरग[६] हवारी ।। औ सिंगारहार फुलवारी ।।
सुबन ज़र्द बहु फूली सेवती । रूप मंजरी और मालती ।।
बोलसरी बेली औ करना । सबै फूल फूल बहुबरना ।

तेहिं सिर फूल चढ़हिं वे जेहि माथे मन भाग
आछे रह सदा सुगन्ध बहै जनु बसंत औ फाग

सिंहल नगर दीख पुन बसा । धनि राजा अस जाकर दसा ।
ऊँची पँवरी ऊँच उड़ासा[७] । जनु कैलाश इन्द्र कर बासा ।
राव रंग सब घर घर सुखी । जो देखे सो हँसता[८] मुखी
रचि रचि साजे चन्दन चूरा । पोते अगर मेद[१०] औ कपूरा ।'
सब चौपारहिं चन्दन खाँभा । बहि सभा तब बैठे राजा
जनु सभा देवतन्हि कौ जोरी । परी दृष्टि इन्द्रासन पूरी ।।
सबै गुनी औ परिडत ज्ञाता । संसकृत[१२] सब के मुख रातो[१३]

अलख[१४] पंथ सँवारें जनु शिव लोक अनूप ।।
घर घर नारि पद्मनी मोहहिं सब अबछरन[१६] की रूप

देखना १ खजूर २ माली ३ पेड़ ४ फूल ५ गेंदा ६ रंग बरंग ७ जीना ८
महल ९ केसर १० निगाह ११ संसकृत ज़बान बोलनेवाले १२
लाल १३ ईश्वर की राह १४ बेमिसाल १५ स्वर्ग की औरतें १६

पुन देखी सिंहल की बाटा । नवो निधि लक्ष्मी सब हाटा ।
कनक हाट सब कुहकहिं लीपी । बैठ महाजन सिंहलदीपी ।।
रचीहँ हतौड़ा रूपन ढारे ।। चित्र कटाव अनेक सँवारे ।।
सोन रूप भल भयो पसारा । धवल सिरी पोतहिं घर बारा ।
रतन पदारथ मानिक मोती । हीरा लाल सँवारे जोती ।।
औ कपूर बेना कस्तूरी । चन्दन अगर रहा भरि पूरी ।।
जिन्ह यह हाट न लीन्ह बिसाहा । ताकहँ आन हाट कित लाहा ।

कोई करै बिसहना काहू केर बिकाय ।।
कोई चले लाभ सों कोई मूर गंवाय ।।

पुनि सु सिंगार हाट भल देसा । किये सिंगार बैठि तहँ बेसा ।
मुख तंबोल सरीर कुसुम्भी । कानन कनक जड़ाऊ खुम्भी ।
हाथ बीन सुनि मिरग भुलाहीं । नर मोहहिं सुनि पैग न जाहीं ।।
भौंह धनुक तेहि नैयन अहेरी । मारहिं बान सान सों हेरी ।।
अलक कपोल डोल हँसि देहीं ।। लाय कटाक्ष मारि जिउ लेहीं ।।
कुच कंचुक जानहिं औ सारि । अंचल दीन्ह सुभावहिं ढारे ।।
केत खिलार हारि तेहि पासा । हाथ झारि उठि चले निरासा ।

चेटक लाय हरहिं मन जब लौं होय गंठ फेर ।
सांठ नाठ पुन भई बटाऊ ना पहिचान न भेर ।

राह १ दुनिया की दौलत २ बाज़ार ३ सोना ४ बाज़ार ५ केसरई ६ सखी ७ मुसव्वरी ८ बहुत ९ आरास्ता १० चूना ११ जवाहिर १२ मूंगा १३ मुश्क १४ बाज़ार १५ मोल लेना १६ बाज़ार १७ फ़ायदा १८ खरीदारी १९ फ़ायदा २० बाज़ार २१ बेसवा २२ सोना २३ बाली २४ हिरन २५ क़दम २६ आँख २७ शिकारी २८ देखना २९ बाल ३० गाल ३१ छाती ३२ अंगिया ३३ संसार ३४ जादू ३५ मुफ़लिस ३६ मुसाफ़िर ३७

लै के फूल बैठि फुलहारी[1] ॥ पान अपूरब धरे सँवारी ॥
सोंधा[2] सबै बैठि लै कांधे ॥ भल कपूर खैरी बाँधे ॥
कतहूँ पंडित पढ़ैं पुरानू ॥ धर्म पंथ का करहिं बखानू[5] ॥
कतहूँ कथा कहै कुछ कोई ॥ कतहूँ नाच कूद भल होई ॥
कतहूँ चहाँहटा पंखी लावा ॥ कतहूँ पाखँड नाच नचावा ॥
कतहूँ नाद शब्द हो भला[8] ॥ कतहूँ नाटक चेटक[10] कला ॥
कतहूँ काहू ठग विद्या लाय ॥ कतहूँ मानुष लीन्ह बौराय ।

चरपंत चेम दूत[12] गढ़ छोरा मिले रहहिं तेहि पांच ।
जो बहु भाँति सजग[13] भा आसन गढ़[14] ताकर पै बाच

पुनि आइसिंह ल गढ़ पासा ॥ का बरनौं[15] जनु लाग अकासा
तरहिं करहिं[17] बासुक की पीठी ॥ ऊपर इन्द्र लोक पर दीठी[18] ॥
परा खोह[19] चहुँ दिसि[20] सब बाँका । काँपै जाँघ जाय नहिं झाँका
अगम[21] असूझ देखि डर खाये । परै सुसँघ पतारहिं जाये ॥
नव पवँरी[22] बाकी नव खंडा ॥ नवो जो चढ़ै जाय बूहांडा ॥
कंचन[23] कोट जड़ नग शीशा ॥ नखतहिं भरी बीज[24] पुनि दीसा
लङ्का चाहि ऊँच गढ़[25] ताका ॥ निरखि[26] न जाय दृष्टि[27] मन थाका

हिये न समाय दृष्टि[29] नहिं पहुँचे जानहि ठाढ़ सुमेर[30]
कहँ लग कहौं ऊँचाई कहँ लग बरनौं[31] फेर ॥

ततगढ़[32] बरिआत चलै जग सूरू । नाहिं त होय बाज रथ चूरू ॥

माली १ हलवाई २ लड्डू ३ राह ४ बयान करना ५ बाज़ीगर ६ गाना ७
आवाज़ ८ करनाटक ९ जादू १० मक्कार ११ चुगुल १२ होशियार १३
गाँठी १४ तारीफ़ १५ जड़ १६ नागसाँप १७ देखना १८ खाई १९
चारों तरफ़ २० मुश्किल २१ सीढ़ी २२ सोने का क़िला २३ बिजुली २४ क़िला
२५ देखना २६ नज़र २७ दिल २८ निगाह पहाड़ ३० तारीफ़ ३१ सौदागर ३२

पँवरी नवौ वज्र की साजे ॥	सहस सहस तहँ बैठे पाजे
फिरै पाँच कुतवार सु भँवरी ॥	काँपे पाउँ चापत वे पँवरी ॥
पँवरहि पँवर सिंह गढ़ गाढ़े ॥	डरपहिं राय देखि तहँ ठाढ़े ॥
बहु बनान वै नाहर गढ़े ॥	जनु गाजहिं चाहहिं शिर चढ़े
टारहिं पूँछ पसारे जीहा ॥	कुञ्जल डरहिं कि गंजर लीहा।
कनक सिला गढ़ सीढ़ी लाई	जगमगाहिं गढ़ ऊपर ताई

नवौं खराड़ नव पँवरी औ तहँ बज्र के वार।
चार बसेरे सो चढ़ै सत सो उतरै पार ॥

नव पँवरी पर दसौं दुवारा।	तेहि पर बाज राज घरियारा ॥
घड़ी सो बैठि गिनै घरियारी	भरी सु आपनी आपनी बारी ॥
जबहिं घड़ी पूजे वह मारा।	घड़ी घड़ी घरियार पुकारा ॥
परा जो डाड़ जगत सब डाड़ा	का निचित माटी कर भाँड़ा
तुम्ह तेहि चाक चढ़े हो काची	आवहिं न फिरी न थिर होय बाची
घड़ी जो भरी घटी तुम आऊ	का निचित सोवे जो बटाऊ ॥
पहरहिं पहर गजर निते होई	हिया न सोगा जाग न सोई ॥

मुहम्मद ज्यों जल भरन रहट घड़ी की रीति
घड़ी जो आई ज्यों भरी ढरी जन्म गा बीति

गढ़ पर नीर क्षीर दुइ नदी ॥	पानि भरैं जैसे दुरपदी ॥
और कुराड एक मोती चूरू	पानी अमृत कीच कपूरू ॥

मकान १ पत्थर २ हज़ार ३-४ पियादा ५ महल ६-७-८-शेर ९ मर्द १० शेर ११ हाथी मस्त १२ सोना १३ किला १४ मकान १५ पत्थर १६ मुकाम १७ सचाई १८ नव मकान तथा ९ इन्द्री वदन की १९ दसवां दरवाज़ा तथा ब्रह्मांड २० गेरा वा नुकसान २१ दुनियां २२ गाफ़िल २३ आदमी २४ उमर २५ गाफ़िल २६ मुसाफ़िर २७ हमेशा २८ पानी २९ दूध ३०

वहँ का पानी राजा पै पिया । बृद्ध होय नहिं जब लग जिया ।
कंचन बृक्ष एक तेहि पासा । जस कलपतरु इन्द्र कैलाशा ॥
मूल पतार स्वर्ग वह साखा । अमर बेल को पाव को चाखा ॥
चन्द पात औ फूल तराई ॥ होय उज्यार नगर जहँ ताई ॥
वै फल पावै तप करि कोई । बृद्ध खाय नव जोबन होई ॥

राजा भये भिखारी सुनि वह अमृत भोग ॥
जै पावा सो अमर भा न कुछ व्याध नहिं रोग ॥

गढ़ पर बसहिं चार गढ़ पती ॥ अश्वपति गजपति भुंइपति औ नरपती
सब क धौराहर सोने साजा ॥ औ अपने अपने घर राजा ॥
रूपवंत धनवंत सभागी ॥ परस पखान पँवरि तेहि लागी
भोग बिलास सदा सब माना । दुख चिन्ता कोइ नहिं जाना ।
मंदिर मंदिर सब के चौपारी । बैठ कुंवर सब खेलहिं सारी ।
पासा ढरहिं खेल भल होय । खड़ग दान सरि पूज न कोय ।
भाट बरनि कहिं कीरति भली । पावहिं हस्ति घोड़ संघली ॥

मंदिर मंदिर सब की फुलवारी चोवा चन्दन बास
निसि दिन रहै बसन्त वहाँ छहौं ऋतु बारह मास

पुनि चलि देखा राज द्वारा । मानुष फिरहिं पाय नहिं बारा ।
हस्ती संघली बाँधे बारा ॥ जनु सजीव सब ठाढ़ पहाड़ा ।

बूढ़ा १ सोने का पेड़ २ नाम दरख़्त जो स्वर्गलोक में है ३ जड़ ४ आसमान ५ पत्ता ६ नखत ७ नौजवान ८ हमेशा ९ क़िला १० घोड़े का सवार ११ हाथी सवार १२ ज़मीन का मालिक १३ राजा १४ महल १५ खूबसूरत १६ दौलतमन्द १७ नसीबवर १८ पारस पथ्थर १९ दरवाज़ा २० हंसी खुशी २१ चौसर २२ बराबरी २३ तारीफ़ २४ नेकनामी २५ हाथी २६ रात २७ द्रबल २८ हाथी २९ दरवाज़ा ३० आदम ३१

कवन्यों सेत पीत रतनारे ॥	कवन्यों हरी धूम अस कारे ॥
बरन बरन गगन जस मेघा ।	उठहिं गगन बैठि जनु ठेघा ॥
सघल के बरने सघले ॥	दूकदूक चाह सो दूकइक बले
गिरिपहाड़ परबत कहिं पेलहिं	बृक्ष उचारि भारि मुख मेलहिं
मत्तमंता सब गरजहिं बांधे ।	निसेदिन रहहिं महावत कांधे

धरती भार न अगोही पांव धरत उठ हाल ॥
कूर्म हि टूटि भुइ फाटी तेहि हस्तिहिं की चाल

पुनि बांधे उन्यार तुरंगा ।	का बरनों जस उनके रंगा ॥
लेले समुन्द चाल जग जाने	हांसल बोर बयाहि बरवाने
पेरी कुरंग सेहो बहु भांती ।	करें को कैलाह दलाह सुपाती
तीख तुरवार चान्द औ बांके	तड़पहि तबहिं बाजी बिन हांके
मन ते अगैम नडोलहिं बागा	देत उसास गगैन शिर लागा
पावहिं सास समुद पर धावहि	बूड़ि न पावें पार होय आवहिं
थिर न रहें रिस लोभ चबाहीं	भाजहिं पूंछ सीस उपराहीं ॥

असतुरवार सब देखे जनु मन के रथवाहि
नयन पलक पहुंचावहीं जहिं पहुंचा कोइ चाहि

राजसभा सब देखे बैठे ॥	इन्द्र सभा जनु परगई डीठे ॥
धनि राजा अस सभा सवारी	जानहु फूल रही फुलवारी

सफ़ेद १ ज़र्द २ लाल ३ धुवां ४ रंगबरंग ५ आसमान ६-७ पहाड़ ८ बयान करना ९ पहाड़ १० मस्त ११ रात १२ ज़मीन १३ कछुवा १४ हाथी १५ घोड़ा १६ नारीफ़ १७ नामरंग घोड़ा १८-१९-२०-२१ बयान करना २२ नामरंग घोड़ा २३-२४-२५-२६-२७-२८ औरख २९ घोड़ा ३०-३१ पहिले ३२ आसमान ३३ शिर ३४ घोड़ा ३५ गाड़ीबान ३६ आंख ३७ निगाह ३८

मुकुट बन्द सब बैठे राजा ।	दो निसान सब जोहे के साजा ।
रूपवन्त मन दिपे लिलाटा ।	माथे छात बैठि सब राजा ॥
जानों कमल सरोवर फूले	सभा कि रूप देखि मन भूले
पान कपूर मेद कस्तूरी ॥	सुगन्ध बास भरि रही अपूरी ।
माँझ ऊँच इन्द्रासन साजा ।	गन्धप सेन बैठि तहँ राजा ॥

छत्र गगन लग ताकर सूर दिपे तस आप ॥
सभा कमल जनु बिगसी माथे बड़ परताप ॥

साजा राज मँदिर कैलासू ।	सोने का सब भूमि अकासा
सात खराड धवरहर साजा ।	तहीं सँवार सके अस राजा
हीराईट कपूर गिलावा ॥	औ नग लाय स्वर्ग लय लावा
जानवंत सबे उरेहे उरेहे ॥	भाँत भाँत नग लाग उबेहे
भा कटाव सब आनकु भाँती	चित्र कटाव सो पाँतहि पाँती
लाग खम्भ मणि माणिक जड़े	निस दिन रहे दीप जनु बरे ॥
देखि धौराहर कर उन्यारा ।	छिपि गये चाँद सूर्य औ तारा

साजी साज बैकुराठ जस तस साजी खंड सात ।
कहूँ बीहर भाव तस रूँड रबंड ऊपर जात ॥

बरनौं राज मँदिर रनिवासू ॥	जैस रहैं भरा जान कैलासू
सोरह सहस पद्मनी रानी ॥	एक एक तें रूप बखानी ॥
अति स्वरूप औ अति सुकमारी	पान फूल की रहैं अधारी
तेहि ऊपर चम्पावत रानी ॥	महा सुरूप पाटे परधानी

कोश १ खूबसूरत २ माथा ३ तालाब ४ केसर ५ मुश्क ६ बीचोबी-च ७ आसमान ८ सूर्य्य ९ खिलना १० ज़मीन ११ महल १२ आसमान १३ खाटना १४ तरह बतरह १५-१६ [illegible] १७ जवाहरात १८ रात १९ महल २० अंग २१ बयान करना २२ स्वर्ग की नारी २३ हज़ार २४

पाट बैठि रहि किये सिंगारू । सब रानी वह करहिं जुहारू ॥
निति नवरंग अंकम सोई ॥ प्रथम बयस न शशि पर कोई ॥
संघल दीप महँ जेती रानी ॥ तिन्ह महँ कनिक सु बारह वानी

कुंवर बतीसो लक्षराी अस सब मा हँ अनूप
जानवत संघल दीपी सबै बरवानी रूप ॥

चंपावत जो रूप मन माहाँ पद्मावत की जोति की छाहाँ ॥
भई चाहे अस कथा बोनी मेटि न जाय लिखी जस होनी ।
संघल दीप भयो तब नाऊ ॥ जो अस दिया बरा तेहि ठाऊँ ॥
प्रथम सो जोति गगन निरमई । पुनि सु पिता माथे मन भई ॥
पुनि वह जोति माता घट आई तिनहि उदर आदर बहु पाई
जस अवधान पूर होय मासू दिन दिन हिये होय परकाशू
जस अचल महँ छिपाये दिया तस उज्यार दिखावे हिया

सोने मन्दिर संवारा औ चन्दन सब लीप ।
दिया जो मन शिवलोक महँ उपना संघल दीप

भये दश मास पूरि भई घड़ी पद्मावत कन्या अवतारी ॥
जानो सूर्य किरन हत गाढ़ी सूर्य किरा घाट वह बाढ़ी
भा निसि माहँ दिनक परकाशू सब उजियार भयो कैलाशू
इतनी रूप मूरत परकटी ॥ पूर्न्यों शशि सु खीन होय घटी
घटहि घटत अमावस भये दिन दुई लाज गाड़ भुई गये
पुनि जो उठी दुइज होय उये ॥ अभि नि कलंक विधि निरमये

नरवत १ हमेशा २ पहिली उमर ३ सोना खालिस ४ बेमिसाल ५ बयान करना ६ जगह ७ पहिले ८ आसमान ९ पेट १०-११ महल १२ रोशनी १३ दिल १४ पैदा होना १५-१६ रात १७ रोशनी १८ ज़ाहिर होना १९ पूरन मासी का चान्द २० पतला २१ ईश्वर २२

पद्मगन्ध बेधीजग बासा ॥ भँवर पतंग भये चहुँ पासा ॥

इतनी रूप भई कन्या जेहिस्वरूप नहिं कोय
धन सुदेस रूपवंता जहाँ जन्म अस होय ॥

भई छठ रात छठीसुखमानी रहसकूद सों रयन बिहानी
भाबिहान पण्डित सब आये काढ़ पुराण जन्म अरथाये ॥
उत्तेम घड़ी जन्म भातासू चान्द उआ भुई दिपा अकासू
कन्या रास उदय जँग किया पद्मावती नाम जस दिया ॥
सूर पुर्ब सों भयो गुरेरा ॥ किरन जास उपना नग हीरा ॥
तेहि तें अधिक पदारथ करा रतन जोग उपना निरमरा
संघलदीप भयो अवतारू [13] जम्बूदीप जाय जमें बारू [12]

रासा आय अयेध्या उपने लखणा बतीसा संग ।
राजा राउ रूपसब भूले दीपक जैसे पतंग ॥

आय जन्मपत्री जो लिखी ॥ दय असीस फिरे जोन बी
पाँच लख्य महँ भई जो बारी ॥ दीन्ह पुराण पढ़े बैसारी ॥
भई पद्मावत पण्डित गुनी चहूँ खण्ड के राजहि सुनी
संगल दीप राज घर बारी ॥ महास्वरूप दई अवतारी [15]
एक पद्मान औ पण्डित पढ़े ॥ वेहि कहँ योग गुशाईं गढ़े [16]
जो कहँ लिखी लक्ष अस होनी [17] सो अस पाव पढ़ी औ लोनी ॥ [18]
संप्रदीप के बर जो आवहिं ॥ [19] उत्तर पावहिं फिर फिर जावहिं

राजा कहें गर्ब कियेहों इन्दु शिव लोक ॥ ॥
को सरबर है मोसों का सों करों बिरोक ॥ [21] [22]

कमलकी खुशबू १ रात २ अच्छी ३ दुनिया ४ सूर्य्य ५ मुलाक़ात ६ पैदा ७ बहुत ८ पैदा ९ पाक १० पैदा ११ मरना १२ पैदा होना १३ ईश्वर १४ पैदा किया १५ ईश्वर १६ देखा १७ खूबसूरत १८ मातों मुल्क १९ ग़मस २० बराबर २१ टीका २२

बारहि बरस माहँ भइ रानी । राजैं सुना संयोग सयानी ॥
सातखण्ड धौराहर तासू । सो पद्मिनि कहँ दीन्ह उड़ासू ॥
औ दीन्ही सँग सखी सहेली । जो सँग करैं रहस रस केली ॥
सबै नवेल पी संग न सोई । कमल पास जनु बिगसी कोई ॥
सुआ एक पद्मावति ठाऊँ । महा पण्डित हीरामन नाऊँ ॥
दई दीन्ह पंखि अस जोती । नयन रतन मुख मानिक मोती ॥
कंचन बरन सुआ अति लोना । मानो मिला सोहागहि सोना ।

रहहिं एक संग दोउ पढ़ें सास्त्र औ बेद ॥ ॥
पढ़ना सीस डुलावहीं सुनत लाग तस भेद ॥

भई उनंत पद्मावति बारी । रचि रचि बिधि सब कला सँवारी ॥
जँग बेधा जेहि अंग सुबासा । भँवर आइ लुबुधे चहुँ पासा ॥
बेनी नाग मलयगिरि पीठी । ससि माथे होइ दूइज बैठी ॥
भौंह धनुक साधे सर फेरे । नयन कुरंग भूल जनु हेरे ॥
नासिक कीर कमल मुख सोहा । पद्मिनि रूप देखि जग मोहा ॥
मानिक अधर दसन जनु हीरा । हिये हुलसे कुच कनक जँभीरा ॥
केहरि लंक गवन गज हारी । सुर नर देखि माथ भुइँ धारी ॥

जँग कोउ दृष्टि न आवे जो लहि होय अकास
योगी जती सन्यासी तप साधहिं तेहि आस ॥

महल १ मकान २ कुआरी ३ फूलना कोंका बेलीका ४ जगह ५ ईश्वर ६ जानवर ७ आँख ८ मूँगा ९ सोने का रंग १० खूबसूरत ११ शिर १२ ईश्वर १३ दुनिया १४ गूँजना १५ चोटी १६ चन्दन १७ चान्द १८ तीर १९ आँख २० हिरन २१ नाक २२ तोता २३ संसार २४ मूँगा २५ होंठ २६ दाँत २७ दिल खुश होना २८ छाती २९ सोना ३० चीते की कमर ३१ चाल हाथी की ३२ दुनिया ३३ नगाह ३४ इन्द्रपुरी ३५

रानै सुना दृष्टि भई आना
भयो रजायस मारहिं सुआ
रानै सुआ के नाऊ बारी ॥
तब लग रानी सुआ छिपावा
पिता की आयस माथे मोरे
पंख न कोई होय सुजानू
सुआ जो पढै पढाये बयना ॥

बुधओदे संघ सुआ सयाना
सवरे सुना चांद जहँ ऊआ
सुनि धाये जस धाय मंजारी
जब लग आव मंजारी न पावा
कहो जाय विनवे कर जोरे ॥
जाने भुक्ति कि जानि उड़ानू
तेहि कत वेध जहि हियन नयना

मारो के मोती देखा वह हिये न मान करलेय ॥
डारो दाख छांड के आव गैर फर लेय ॥॥॥

तै तो फिरि उत्तर अस पावा।
रानी तुम जुग जुग सुख पाऊ
मोती जो मलीन होय करा
ठाकुर अंत चहै जेहि मारा ॥
जहि घर काल मंजारी नाचा
मैं तुम राज बहुत सुख देखा
जोहु च्छो मन कीन्ह सुजेवा

बिनवा सुये हिये डर खावा
हो अत्ता बन बास कहूँ जाऊं
पुनि सो पान कहाँ निरमला
तेहि सेव के कहि कहां उबारा ॥
पंखहि नांउ जीव नहिं बांचा
जो पूंछहि दिये जाय न लेखा
यह पछतावा चल्यों बिन सेवा

मारे सुई निसोगा डरे न अपनी दोसै ॥ ॥
केरा अगिल कै का जो भयो बेर परोस ॥

निगाह १ अक़िल २ तोता ३ हुक्म ४ तोता ५ दुश्मन ६ तोता ७ बिल्ली ८ तोता ९ बिल्ली १० बाप ११ हुकुम १२ अरज़ करना १३ हाथ जोड़ना १४ अक़लमन्द १५ खाना १६ तोता १७ बोली १८ मारना १९ आँख २० मोती २१ दिल २२ अनार २३ अंगूर २४ जवाब २५ दिल २६ हुक्का २७ पाक २८ बिल्ली २९ जानवर पसन्द ३० हिसाब ३१ चाहना ३२ बेगम ३३ पाप ३४ बेरी का पेड़ ३५

रानीउत्तर दीन्ह कै मया ॥ जो जीव जाय रहै किस कया
हीरामन तू प्रान परेवा ॥ धोख न लाग करत तोहि सेवा ॥
तुहिं सेवा बिछुरन नहिं आखे पींजर हियें घाल कै राखे ॥
हौं मानुस तू पंखे पियारा धर्म प्रीति तहां को सारा ॥
का प्रीति तन ह सांह बिलाय सोई प्रीति जिय साथ जो जाय
प्रीति भार ली हियें न सोचू ॥ वही पंथ भल होय कि पोचू ॥
प्रीति पहाड़ भार जो कांधा किन तेहि छूट लाय जीव बांधा

सुआ न रहै खुटक जी अबहूं काल सो आव ॥
शत्रु अहै जेहि करियां कोह सो बूड़ी नाव ॥ ॥

खंड तीसरा स्नान खंड पद्मावत

एक दिवस कवन्यौं तहं आय मान सरोवर चली अन्हाय
पद्मावत सब सखी बुलाई ॥ अनु फुलवारी सबै चलि आई ॥
कोई चंपा कोई गोंदे सहेली ॥ कोइ सुकेत करं नारस बेली ॥
कोइ सुगुलाल सुदरसन राती कोई बकौंठ बकेचन भाती
कोई सो बोलसेर पुहपावती ॥ कोइ जाही जूही सेवती ॥॥
कोई सुअत जर्द ज्यौं केसर ॥ कोई सिंगार हार नागेसर ॥
कोई कूजौं कोई सतबर्ग चवेली कोई कदम सुरस रस बेली ॥

चली सबै मालती संग गहि फूली कमल कुमोद
बेध रही गुन गन्धर्प बास परमला मोद ॥॥

जवाब १ मेहरबानी २ बदन ३ जानवर पन्द ४ दिल ५ जानवर पन्द ६ दिल ७ तोता ८ अंदेशा भरा ९ दुश्मन १० मल्लाह ११ दिन १२ नाम तालाब १३ नाम फूल १४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२३-२४-२५-२६-२७-जाफ़रान २८ नाम फूल २९ ३०-३१-३२-३३-३४-३५ की का बेली ३६

खेलत मांन सरोवर गई ॥ जाय पाल पर ठाढ़ी भई ॥
देख सरोवर ही केली ॥ पद्मावत सो कहहिं सहे ली ॥
ए रानो मन देखु बिचारी । यह नेहर रहना दिन चारी ॥
जब लग अहे पिता कर राज । खेल लेहु जो खेल हि आज ॥
पुनि सासु हम गवनब काले । कित हम कित यह सरवर पाले ॥
कित आवन पुनि आपन हाथा । कित मिलके खेलब एक साथा ॥
सास ननद बोलहिं जिव लेही । दारुन ससुर न निसरे देही ॥

पीव पियारे सब ऊपर सो पुनि करै दहुं काहि ॥
तेहिं सुख राखहि की दुख दहुं कस जन्म निबाह ॥

सरवर तीर पद्मनी आई ॥ खोपा छोड़ केस बिखराई ॥
ससि मुख अंग मलैगिर रानी । नागह झापलीन्ह अरघानी ॥
उनई घटा परा जंग छहां । ससि की सरन लीन्ह जनु राहां ॥
छिप गये दिन भानु की दसा । तेहि निस नखत चांद परगसा ॥
भूल चकोर दृष्टि तेहि लावा ॥ मेघ घटा मह चन्द दिखावा ॥
दसन दामिनी कोकिल भाखें । भौहिं धनुक गगनु ले राखें ॥
नयन खंजन दुइ केल करेही ॥ कुच नारंग मधुकर रस लेहीं ॥

सरोवर रूप विमोहा । हियेहिलोर कर ले ।
पाउं छुवे मगं पाउं तन मन लहरें दे

धरी तीर सब कंचुकि सारी । सरवर मह पैठीं सब बारी ॥

नाम तालाब १ किनारा २ तालाब ३ बाप ४ लाला ५ तालाब ६ किनारा ७ मुशकिल ८ तालाब ९ चोटी १० चांद ११ बदन १२ चन्दन १३ दुनिया १४ चांद १५ सूर्य्य १६ रात १७ खिलना १८ निगाह १९ दांत २० बिजुली २१ कोकिला की सी बोली २२ आसमान २४ आंख २५ छाती २६ मधुर २७ तालाब २८ दिल २९ मायद ३० छाती ३१ तालाब ३२

पानी नीर जानि सब बेलें ॥ हुलसहिं करहिं कामकी केलें
करल केस बिसहर बिस भरे लहरें लेहिं कमल मुख धरे
नवल बसन्त संवारे करी ॥ होय प्रगट जानुहि रस भरी
उठी कोप जस डार्यो दाखा ॥ भई अनन्त प्रेम की साखा ॥
सरवर नहिं समाय संसारा ॥ चांद न्हाय बैठि लिये तारा ॥
धन सु नीर ससि तरई उई अब कित दृष्टि कमल औ कोई

चकई बिछुरि पुकारी कहां मिलहो नाहं ॥
एक चन्द निस स्वर्ग महं दिन दूसर जल मांहं

लागी केल करैं मझ नीरा हंस लजाय बैठि होय तीरा ॥
पद्मावत कौतुक कहं राखे ॥ तुमहिं ससि होंहि तराइन साखे
बादमेल के खेल पसारा ॥ हार देय जो खेलत हारा ॥
सवरहि सांवर गोरहि गोरी ॥ आपन आपन लीन्ह सो जोरी
बूझो खेल खेलो एक साथा हार न होय पराये हाथा ॥
आजहि खेल बहुर कित होय खेल गई कित खेलै कोय
धन सो खेल खेल रसपे रौताई और कुसल खेमा

मुहम्मद बाजी प्रेम की ज्यों भावे त्यों खेल ॥
तेलहि फूलहिं संग ज्यों होय फुलायल तेल

सखी एक तें खेल न जाना भई अचैत मन हार गवाना
कमल डार गहि भई बिकराला कासों पुकारों आपन हारा
कित खेले आयों एक साथा हार गंवाय चल्यो ले हाथा

खुश होना १ मुलायम २ बाल ३ सांप ४ कली ५ जाहिर ६ अनार ७ अंगूर ८ तालाब ९ पानी १० चांद ११ मखत १२ निगाह १३ कोका बेली १४ रात १५ आसमान १६ बीच १७ पानी १८ किनारा १९ तारा २० चांद २१ नखत २२ ठकुराई २३ खैरयत २४ बेहोश २५ बेकरार २६

घर पैठत पूंछब यह हारू ॥ कौन उतर पावब पैसारू

नयेन सीप आँसू तस भरे जानो मोति गिरहिं सब ढुरे ॥

सखिन कहा बौरी कोकिला कौन पानी जेहि पैवन नहि मिला

हार गंवाय सो ऐसे रोवा ॥ ॥ हेरे हेराय लेव जो खोवा ॥

लागीं सब मिल हेरै बूड़ बूड़ एक साथ
कोई उठी मोती ले काहू घोंघा हाथ

कहा मानसर चहा सु पाई ॥ पारस रूप यहाँ लगि आई

भा निरमल तेहि पायन परसे पावा रूप रूप के दरसे ॥ ॥

मली समीर बास तन आई ॥ भा सीतल गइ तपन बुझाई

ना जानो कौन पवन ले आवा । पुन्य दसा भइ पाप गंवावा ॥

ततखन हार बेग उतराना पावा सखिन्ह चन्द बिहसाना

बिगसे कमल देखि ससि रेखा भई तेहि रूप जहां जो देखा ॥

पावा रूप रूप जस चहा ॥ ॥ ससि मुख सब दरपन होय रहा

नयँन जो देखे कमल भये निरमल नीर सरीर
हँसत जो देखे हंस भये दसँन जोति नग हीर ॥

पद्मावत तहं खेल दुलारी ॥ सुआ मंदिर महँ देख मजारी

कहेसि चलौं जौ लहि तन पांखा जिव ले उड़ा ताकि बन ढांखा

जाय परा बनखंड जिव लीन्ही मिले पंख बहु आदर कीन्ही

आन धरी आगे फल साखा भुक्ति न मिटी जब लहि गया

पाय भुक्ति सुख मन भयो ॥ दुख जो अहा बिसर सब गयो

जवाब १ आँख २ हवा ३ ढूँढ़ना ४-५ नामनालायक ६ पाक ७ चन्दन ८ ठण्ढा ९ हवा १० जल्द ११ फूलना १२ चांद १३-१५ आँख १४ पाक १६ पानी १७ बदन १८ हाथ १९ दांत २० तोता २१ बिल्ली २२ जंगल २३ जानवर परन्द २४ रोजी २५-२६

ऐ गुसाईं तूं ऐसा विधाता । जानवंत जिव सभ का मुकंदाता
पाथर महं नाहिं पतंग बिसारा । जहँ न हैं संवादीन्ह तुइँ चारा

नौलह मागवि छेरह कार भोजन पड़ा न पेट
पुनि बिसरा भा सवरना जनु सपने महँ भेंट

पद्मावत पाहिं आय भंडारी । कहिसि मन्दिर महँ परी मंजारी
सुआ जो उत्तर देत अहा पूछा । उड़गा पिंजर न बोलै छूछा
रानी सुना जो सुख सब गयो । जनु निशि परी अस्त दिन भयो
गहने गही चन्द की किरा । आसु गगन जस नखतन्ह भरा
टूटि बार सरवर बह लागे ॥ कमल बूड़ि मधुकर उड़ भागे
यहि बिधि आंसु नखत होय चुये । गगन छांड़ सरवर महँ उये
झरहिं चुवहिं मोतिन की माला । अब सकेत बाँधा चहुँ पाला

उड़गा सोंहा कह बसा खोज सखी सो नास
वह है धर्ती की स्वर्ग का पवन न पावे बास

चहूं पास समझावहिं सखी । कहां सु अब पावेगा पखी
जब लीह पिंजर अहा परेवा ॥ अहा बांध कीन्हेसि नित सेवा
नाहिं बन धन जो छूटे पावा ॥ पुनि फिर बांदे होय कित आवा
सेंउड़ान फुर ओ खाई ॥ । जो भाप रव पारत तन लाई ॥
पिंजर जेह क सौंप तेहि गयो ॥ जो जाकर सो ताकर भयो ॥
दस बौरे जेहि पिंजर माहा ॥ कैसे बांच मंजारी पाहा ॥
ये धर्ती अस केतन लीले ॥ अस ऐपति गजपति बहु धर कीले

ईश्वर १ रोज़ी देने वाला २ मुलाकात ३ रसोईं बरदार ४ बिलारी ५ तोता ६ जवाब ७ रात ८ आसमान ९ तालाब १० भँवरा ११ आसमान १२ तालाब १३ रंज १४ चारों तरफ़ १५ तोता १६ ज़मीन १७ आसमान १८ हवा १९ आमबर पीतल २० नाबेदार २१ राह २२ बिल्ली २३ घोड़े वा हाथी सवार २४

सुवैं कहा हमहूं अस भूले । टूटि हिंडोल गर्ब जेहि भूले ॥
केरा के बन लीन्ह बसेरा । पड़ा साथ तन बैरी केरा ॥

सुखे कुरवार फरी खाना । बिष भा जाहि ब्याँध तुलाना ॥
का है कि भोग बृक्ष अस फरा । अड़ा लाय पखहिं कहँ हरा ॥
सखी निचिंत जोरव धन करना । यह निचिंत आगे है मरना ॥
भूले हमहूं गर्ब तेहि माहाँ । सो बिसरा पावा जेहि पाहाँ ॥
होय निचिंत बैठ तेहि अड़ा । तब जाना खोंचा हियँ गड़ा ॥

> चरत न खुरक कीन्ह जब तब रे चरा सुख सोय ।
> अब जो फाँद परा गै तब रोये का होय ॥

सुनि के उतर आँसु पुनि पोंछे । कौन पंख बाँधी बुधि ओछे ॥
पंखि न जो बुधि होय उज्यारी । पढ़ा सुआ कित धरै मजारी ॥
कित तीतर बन जाभ उधेला । सुनि हँकार फाँद गँह मेला ॥
ता दिन ब्याँध भयो जिव लेवा । उठे पाँख भा नाउँ परेवा ॥
भई ब्याँध तृष्णा सुख बाधू । तू भो भूलि न समुझै ब्याँधू ॥
हमहिं लोभ वह मेला जारा । हमहिं गर्ब वह चारा मारा ॥
हम निचिंत वह आव छिपाना । कौन ब्याँध है दोष अयाना ॥

> सो अवगुन कित कीजिये जिव दीजे जेहि काज ।
> अब कहना कुछ नाहीं मष्ट भली पखिराज ॥

तोता १ ग़रूर २ खुशी ३ ज़हर ४ बहेलिया ५ पेड़ खानेका ६ ग़ाफ़िल ७-८ ग़रूर ९ ग़ाफ़िल १० दिल ११ अंदेशा १२ गाड़न १३ जवाब १४ औक़ल १५ जानवर परन्द १६ अक़िल १७ तोता १८ बिल्ली १९ गाड़न २० बहेलिया २१ जानवर परन्द २२ बहेलिया २३ हवस २४ रोज़ी २५ बहेलिया २६ ग़रूर २७ ग़ाफ़िल २८ बहेलिया २९ क़सूर ३० नादानी ३१ बुरा काम ३२ चुप ३३ जानवर परन्द के राजा ३४

चित्रसेन चित्तौरगढ़ राजा ॥ कै गढ़ कोट चित्र[1] सम[2] साजा ॥
तेहि कुल रतनसेन उजियारा । धन जननी जनमा अस बारा[3] ॥
पण्डित गुन सामुद्रिक देखहि[4] । देखि रूप औ लगन बिसेखहि ॥
रतन सेन यहि कुल निरमरा । रतन जोति मन माथे परा ॥
पदुम[5] पदारथ लिखी सु जोरी । चाँद सूर्य जस होय अँजोरी ॥
जस मालती कहँ भँवर वियोगी । तस वह लाग होय यह जोगी ॥
सिंघल दीप जाय वह पावा । सिद्ध होय चित्तौर ले आवा ॥

भोग भोज जस मानी बिक्रम साका कीन्ह ॥
परख जो रतन पारखी सबै लिखन लिख दीन्ह ॥

चित्तौर गढ़ कर एक बँजारा ॥ सिंघल दीप चला व्योपारा ॥
बाम्हन हुत एक निपट भिखारी । सो पुनि चला चलत व्योपारी ॥
रिण[11] काहू कर लीन्हेसि काढ़े । सँग[12] तेहि गये होय कुछ बाढ़े ॥
मारग[13] कठिन[14] बहुत दुख भये । नाँघ समुन्द्र दीप वह गये ॥
देखि हाट[15] कुछ सूझ न ओरा । सबै बहुत कुछ देखि न थोरा ॥
पै सुठ ऊँच नीच तेहिं केरा ॥ धनी[16] पाव निधनी[17] मुख हेरा[18] ॥
लाख करोरहि वस्तु बिकाई ॥ सहसन[19] केर न कोउ ओनाई ॥

सबहि लीन्ह बिसहना औ घर कीन्ह बहोर[20] ॥
बाम्हन तहाँ लेका गाँठ[21] साँठ सुठ थोर ॥ ॥ ॥

झुरी ठाढ़ हौं काहे क आवा । बनिज[22] न मिला रहा पछतावा ॥
लोभ[23] जानि आयों यह हाटा[24] । मूर[25] गँवाय चल्यों यह बाटा ॥

तसवीर १ बराबर २ लड़का ३ पाया ४ लालजवाहिर ५ रोशनी ६ दुखी ७ नामराजा ८
राजा विक्रमाजीत ९ बहुत गरीब १० कर्ज़ ११ शायद वा कदाचित १२ राह
१३ मुश्किल १४ बाज़ार १५ दौलतवाला १६ बेदौलत १७ देखना १८ हज़ार १९
लौटना २० बेपूँजी २१ माल २२ फ़ायदा २३ बाज़ार २४ राह २५

काभैं मरन सिखावन सिखी । आयो मौ मीच हत्त लिखी ॥
आपन चलन सो कीन्हा ज्ञानी । लाभ न देखि भूर मद हानी ॥
काभैं बो आ जन्म औ भूंजी । खाय चल्यो घर हूं की पूंजी ।
जेहि ब्योहरिया कर ब्योहारू । का लै देब जो छैंकहि बारू ।
घर कैसे पैठब मैं छूंछे ॥ कौन उतर देहौं जेहि पूंछे ॥

साथ चला मत विचला भये बीच समन्द्र पहार ।
आस निरासा हौं फिरों तू बिधि देहि उधार ॥

तबहिं ब्याध सुआ ले आवा । कंचन बरन अनूप सुहावा ॥
बेचे लाग हाँट लै ओही ॥ मोल रतन माणिक जेहि होही ।
सुअहि को पूंछ पतंग मंडारे । चलन देख आछे मन मारे ॥
ब्राह्मण आय सुआ सों पूछा । कह गुणवंत कि निरगुण छूछा ।
कहु परबती जो गुण तोहि पाहीं । गुण न छिपाये हृदय माहीं ।
हम तुम जात ब्राह्मण दोऊ ॥ जात जात पूछे सब कोऊ ।
परिडत हो तो सुनावहु वेदू । बिन पूंछे पाई नहिं भेदू ॥

हौं ब्राम्हन औ परिडत कहि आपन गुण सोय ।
पढ़े के आगे जो पढ़ै दून लाभ तेहि होय ॥

तब गुण मोहि आहा हो देवा । जब पिंजर हुत छूट परेवा ॥
अब गुण कौन जो बंद जज माना । धानि मंजूसा बेचे आना ॥
परिडत होय सो हाँट न हिं चढ़ा । चहौं बिकाय भूल गा पढ़ा ॥
दुइ मौरग देखौं यह हाँटा ॥ दई चलावे वहि केहि बाँटा ॥

मौत १ होशियारी २ फ़ायदा ३ नुक़सान ४ रोकना द रवाज़ा का ५ जवाब ६ ईमान ७ ईश्वर ८ बहेलिया ९ तोता १० सोने का रंग ११ बेमिसाल १२ बाज़ार १३ जवाहिरात १४ तोता १५ उड़नेवाले जानवर १६ तोता १७-१८ दिल १९ फ़ायदा २० जानवर परन्द २१ कैद २२ संदूक २३ बाज़ार २४ राह २५ बाज़ार २६ राह २७

रोवत रकत भयो मुख राता। तन भा पियर कहौं का बाता।
राती श्याम कराठ दुइ ग्रीवाँ ॥ तेहि दुइ फन्द डरों सठ जीवाँ
अब हूँ कराठ फन्द के चीन्हा। दुहूँ के फन्द चाहै का कीन्हा ॥

पढ़ि गुण देखा बहुत मैं है आगे डर सोय ॥ ॥
धुन्ध जगत सब जान के भूल रहा बुधि खोय ॥

सुनि ब्राम्हन बिनवा चरहारू। करी पंखिहि कहँ मया न मारू॥
कतये निठुर जिव बँधसि खावा। दुख्या केर न मोहि डेरावा।
कहसि पंखि का दोष जनावा ॥ निठुर तेई से पुँसस खावा ॥
उनहिं रोय जानि के रोना ॥ तहँ न तजहि भोग सुख सोना।
औ जानहिं तन होय बहु नासू। पोखैं मांस पराये मासू ॥ ॥
जौन होहिं अस परमँस खाधू। कित पखिन कहँ धरे बियाधू।
जुरी मांस पखेन नित धरे॥ सो निति चिन्त मन लोभन करे

ब्राम्हन सुआ बेसाहा सुनि मति बेद गिरन्थ ॥॥
मिला आय सो साथिन कहँ भा चितौर की पंथ

तब लग चित्रसेन शिव साजा। रतनसेन चितौर भा राजा ॥
आय बात तेहि आगे चली ॥ राज बरीज आये सघली ॥
हैं गजे मोती भरी सब सीपी ॥ और बस्तु बहु सँघल दीपी ॥
बाम्हन एक सुआ ले आवा। कँचन बरन अनूप सुहावा ॥॥
राती श्याम कराठ दुइ काँठा। रातीडहन लिखा सब पाठा

खून १ लाल २-३ काला ४ गला ५ दुनिया ५ अक़िल ७ खुशामद ८ चिड़ीमार ९ जानवर परन्द १० मेहरबानी ११ बेदर्द १२ मारडालना १३ जानवर परन्द १४ पाप १५ बेदर्द १६ पराया मांस खाने वाले १७ छोड़ना १८ पराया मांस खानेवाले १९ जानवर परन्द २० बहेलिया २१-२२ जानवर परन्द २३ गाफ़िल २४ फ़ायदा २५ तोता २६ पोथी २७ राह २८ मला २९ सौदागर ३० हाथी ३१ सोना ३२ सुर्ख ३३-३४

चौदुइ नयंन सुहावन राते । राती ठोर अमी रस वाता ॥
मस्तक टीका कांध जनेऊ ॥ कबि ब्यास पंडित सहदेऊ ॥

बोल अर्थ सों बोली सुनत सीस सब डोल ॥
राजमंदिर महं चाही अस वह सुआ अमोल

भयो रजायसु जन दौड़ाये । ब्राम्हन सुआ बेगि ले आये ॥
बिप्र असीस बिनति औ धारा । सुआ जीव नहि करौ निरारा ॥
पै यह पेट महा बिस्वासी ॥ जेइ सब नावा तपा सन्यासी ॥
डारै सेज जहां कुछ नाहीं ॥ भुइं परही लाय गैं बांही ॥
अन्धहि रही जो देखन नयंना । गूंग रही मुख औ न बैना ॥
बहिर रही जो श्रवन नहि सुना । पै यह पेट न रहे निरगुना ॥
काइ काइ फेरा नित यह दोषे ॥ बारहिबार फिरै सतावे ॥

सो मोहि लियं मंगावे लावे भूख पियास ॥
जो न होत अस न बैरी कोहि काहू की आस ॥

सुवै असीस दीन्ह बड़ साजू । बड़ परताप अखंडित राजू ॥
भागवंत बिधि बंधि अवतारा । जहां भाग तहं रूप जोहारा ।
कोइ केहि पास आस कै गवना । जो निरास डिठ आसन मवेना ।
कोइ बिन पूछे बोल जो बोला । होय बोल माटी के मोला ॥
पहिं गुण जानि पंडित मनि भेऊ । पूछे बात कहैं सहदेऊ ।
गुणीन कोइ आप सराहा ॥ जो सो बिकाय ज्ञान सो जाहा ।

आंख १ लाल २ लाल चोंच ३ अमृत ४ सिर ५ हुकम ६ नौकर लोग ७ जल्द ८ ब्राम्हन ९ अलग १० जबरदस्त ११ तप करनेवाले १२ औरत १३ आंख १४ आवाज़ १५ कान १६ नादान १७ हमेशा १८ दरवाज़ा १९ पेट २० हमेशा राज कायम २१ ईश्वर २२ अकिल २३ पैदा करना २४ देखना २५ जाना २६ मज़बूत २७ चुप २८ भाई राजा युधिष्ठिर २९ तारीफ़ ३०

जब लगि[1] गुरु प्रकट नहिं होय ॥ तब लग भेद[2] न जानै कोय ॥

चतुर वेद हौं पण्डित हीरामन मोहिं नाउँ[3] ॥
पद्मावति सों मेरवौं[4] सेवकरौं तेहि ठाउँ[5] ॥

रतन सेन हीरामन लीना ॥ एक लाख ब्राम्हन कहँ दीन्हा ॥
बिप्र[6] असीस जो कीन्ह पयाना ॥ सुआ जो राज मंदिर महँ आना ॥
बरनौं काहि सुआ की भाखा ॥ दीन्ह सुनाउँ हीरामन राखा ॥
जो बोलै राजा मुख जोवा[8] ॥ जानो मोतिन हार पिरोवा ॥
जो बोलै सब मानिक मूँगा ॥ नाहित मौन बाँध होय गूँगा ॥
जनुँहि मार मुख अमृत मेला ॥ गुरु होय आप कीन्ह जग चेला ॥
सूर्य चान्द की कथा कहा ॥ प्रेम की कहन लाय चित गहा ॥

जो जो सुनै धुनै शिर राजा प्रीति होय अगाह ॥
अस गुणवंत नाहिं भल[12] सौंटा बाज कीजे काह ॥

दिन दस पाँच तहाँ जो भये ॥ राजा कतहूँ अहेरै[13] गये ॥
नागवती रूपवंती रानी ॥ सब रनवास पाट परधानी[14] ॥
किये शृंगार कै[15] दरपन लीन्हा ॥ दरसन देख गर्ब[16] जेहि कीन्हा ॥
बोलहु सुआ पियारे नाँहा[17] ॥ मोर रूप कोउ जग[18] माहाँ ॥
हँसत सुआ पुनि आय सुनारी ॥ दीन्ह कसौटी[19] औ पनवारी ॥
सुआ बानि तोरी कस सोना ॥ सगल दीप तोर कस लोना[21] ॥
कौन दृष्टि[22] तोरै रूपमनी ॥ वहिं हों लोन[23] कि वै पद्मनी ॥

जौन कहसि मैं तसौंटा[24][25] तुहिं राजा की आँन[26] ॥
है कोई यह जग महँ मोरे रूप समान[27] ॥

जाहि १ भेद २ चार ३ मुलाक़ात ४ जगह ५ ब्राम्हन ६ कूच ७ तारीफ़ ८ देखना ९ मकान १०
दुनिया ११ तोता १२ शिकार १३ महारानी १४ हाथ १५ ग़रूर १६ खाविन्द १७ दुनिया १८
चुनौटी १९ आवाज़ २० खूबसूरत २१-२३ निगाह २२ सच २४ तोता २५ क़सम २६ बराबर २७

सँवरि रूप पद्मावत केरा ॥ ॥ ॥ हँसा सुआ रानी मुख हेरा[१] ॥ ॥
जेहि सरवर[२] महँ हंस न आवा ॥ बगुला तहँ जलहंस कहावा ॥ ॥
दई कीन्ह अस जगत[३] अनूप[४] ॥ एक एक तें आगर रूपा ॥ ॥ ॥
के मन गर्ब[५] न छाजा काहू ॥ चाँद घटा औ लागयो राहू ॥
लोन बिलोन तहाँ को कहै ॥ लोनी सोइ कंथ जेहि चहै ॥
काहि पूछ सं घल की नारी ॥ ॥ दिनहि न पूजे निस[६] अँधियारी ॥
कँनिक सुगन्ध सुतेहि की कोया ॥ जहाँ माथ का बरौं पाया ॥ ॥

गहो सुसोने सोंधी भरे सो रूपे भाग ॥ ॥
सुनत रोरवे[१२] भई रानी हिये[१३] लोन अस लाग ॥

जो यह सुआ मन्दिर महँ अहै ॥ कोन होय राजा सो कहै ॥ ॥
सुनि राजा पुनि होय बियोगी[१४] छाड़े राज च लै होय योगी ॥
बिय राखें नहिं होत अँगूरू ॥ शब्द न दे बधुर हम चूरू ॥ ॥
धाय[१५] दामिनी[१६] बेगि[१७] हँकारी[१८] ॥ ॥ वह सौंपा हिये रिस न सभारी ॥
देखा यह सोता[२१] है मुँड चाला[२२] ॥ भयो न ताकर जाकर पाला ॥
मुख की आनि पेट बस आना जेहि अवगुण दस हाट बिकाना
पंख न राखी होय कुभाखी ॥ ॥ ले तहँ मारि जहाँ नहिं साखी[२३]

जेहि दिन का मैं डरत हो रैनि[२४] छिपावो सूर[२५] ॥
सो लै दे कँमल[२६] कहँ मो कह होय मयूर[२७] ॥ ॥

धाय[२८] सुआ ले मारै गई ॥ ॥ ॥ समुझि ज्ञान हिये मन्त भई[२९] ॥
सुआ सु राजा करि बिसरामे ॥ ॥ ॥ मार न जाय चहै जेहि स्वामे ॥

देखना १ तालाब २ दुनिया ३ बेमिसाल ४ गरूर ५ खूबसूरत वा बदसूरत ६ खूबसूरत ७ खाविन्द ८ रात ९ सोना १० बदन ११ गुस्सा १२ दिल १३ दुखी १४ आवाज़ १५ लौंडी १६ बिजुली १७ जल्द १८ बुलाया १९ दिल २० तोता २१ बदराह २२ गवाह २३ रात २४ सूर्य्य २५ पद्मावत २६ मोर २७ लौंडी २८ दिल २९ आराम ३०

यह परिडत खरिडत बैरागू । दोष नाहिं जेहि सूझि न आगू ॥
जो तिरियाके काज न जाना । परै धोख पाछे पछताना ॥
नागमती नागिन बुधि ताऊ । सुआ मयौर होय नहिं काऊ ॥
जो न्नहि कंथ की आयसु माहीं । कौन भरोस नारि की बाहीं ॥
मकु यहि खोज होय निसि आवा । तुरी रोग हरि माथे जावा ॥

दुइ सुखि पाले नाव्छि पै इक हत्या अरु पाप
अन्तकाहिं बिना सयह मैं सारवी दै आप

राखा सुआ धाय मति साजा । भयो खोज नस आयो राजा ॥
रानी उतर मान सो दीन्हा । परिडत सुआ मँजारी लीन्हा ॥
मैं पूछ्यों सिंहल पदमिनी । उतर दीन्ह तुम्ह को नागिनी ॥
का तोर पुरुष रैन का राऊ । उलू न जान दिवस कर भाऊ ॥
वै जस दिन तू निसि अंधियारी । जहाँ बसन्त करील की बारी ॥
का वह पंखि कूट मुँह कूटे । अस बड़ बोल जीभ मुख छोटे ॥
ज़हर चुवै जो जो कहि बाता । अस हत्यार लियै मुख राता ॥

माथ नहिं बैसारी जो सठ सुआ सलोन ॥
कान टूटि जेहि आभरन का लै करब सुसोन ॥

राजा सुनि बियोग तस माना । जैसे हिय बिक्रम पछताना ॥
वह हीरामन परिडत सुआ । जो बोलै मुख अमृत चुआ ॥
परिडत दुख खरिडत निरदोषा । परिडत हिये परै नहिं धोखा ॥
परिडत केर जीभ मुख सोधे । परिडत बात न कहै बिरोधे ॥

पाप १ औरत २ अकिल ३ मौत ४ खाविन्द ५ हुकम ६ औरत ७ प्रायद ८ घोड़ा ९ बन्दर १० लौंडी ११ जवाब ग़ुस्से से १२ बिल्ली १३ जवाब १४ रात १५ १७ दिन १६ बागीचा १८ उड़नेवाला जानवर १९ ज़हर २० लाल २१ बेअसल बार २२ खूबसूरत २३ जेवर २४ बुरा २५ दिल २६-२८ बिक्रमाजीत राजा २७ मेहतर २९

पँडित सुमत दै पंथहि लावा ॥ जो कुंपथ तेहि पंडित न भावा
पंडित तार्तों बदन सरेखा ॥ जो हत्यार रुहिर सों देखा ॥ ॥
की भान घर आनहि मती ॥ की जल होहि सुआ सों सती ॥

जन जानहु किय अवगुण मंदिर होय सुदरा ज ।
आय सुमर कंत कर का कर भान अकान ॥

चांद जैस धन उजेर अहे ॥ ॥ भा पीउ रिस गहन अस गहे ॥ ॥
परस सुहाग निवाह न पारी ॥ भाव दोग सेवाजवहारी ॥ ॥
हुतन क दोय धीरज पिव रूठ ॥ जो पिव आपन कहे सु भूठ ॥
ऐसे गर्व नहिं भूले कोई ॥ ॥ जेहि डर बहुत पियारी सोई ॥ ॥
रानी आय धाय के पासा ॥ ॥ सुआ भवा सेमर की आसा ॥
पर प्रीति कंचन महं सीसा ॥ ॥ बिथर न मिले श्याम पै दीसा ॥
कहां सुनार पास जेहि जाऊं ॥ दे सुहाग करै इक ठाऊं ॥ ॥ ॥

मैं पिय प्रीति भरोसे गर्व कीन्ह जिय माहिं ॥
तेहि रिस हौं परहेली नगर रीस की नाहिं ॥ ॥

१९ २०

उतर धाय तब दीन्ह रिसाई ॥ रिस आपहि बुधि अवरहि खाई
मैं जु कहा रिस का हु न बोला ॥ को नग यो यहि रिस कर घोला
बिरस बिरोध रसहि पै होई ॥ रिस मारे तेहि मार न कोई ॥ ॥
तुइ रिस भरी न देखे सि आगू ॥ रिस महं काकहि भयो सुहागू
जेहि रिस तेहि रस जोग न जाई ॥ बेरस होहि दिहाय पिराई ॥ ॥
जेहि के रिस मिलाय रस दीजे ॥ सो रस तज रिस कीन्ह न कीजे ॥
कंत सुहाग की पाई साधा ॥ ॥ पावै सो जो वही चित्त बांधा ॥

राहु १ बरताह २ लाल मुहँ ३ खून ४ नागमती रानी ५ हुकुम ६ खाविन्द ७ रानी ८ ढोकुला ९ कसूर १० गारा ११ लौंडी १२ सोना १३ खाविन्द १४ जगह १५ गफूर १६ दर १७ खाविन्द १८ जवाब १९ लौंडी २० आंकिल २१ औरत २२ खराब २३ हलदी

२४ खाविन्द २५

है जो पिय की आयसु औ बरती होय हीन ॥
निरमल दरपन चाँद जस जन्मन होय मलीन

जुवा हो मन समुझी रानी । सुआ दीन्ह राजा कहँ आनी
नागमती हौं गरब न लीन्हा ॥ कंथ तुम्हार मरम पिय लीन्हा ।
सेवा करै जो बारह मासा ॥ अतना कि अवगुण करै नियासा
जो तुम देइ नाय के गीवाँ ॥ छाड़हि नहिं बिन मारे जीवाँ ।
मिलतहि महँ जन अहो निरारे ॥ तुम सौं अहो अदेस पियारे ॥
मैं जाना तुम मोहि माहाँ ॥ देखो ताक तो हौ सब माहाँ ॥
का रानी का चेरी कोई ॥॥ जेहि कहँ मया करै भल सोई ॥

तुम सौं कोइ न जीता हारा बिक्रम भोज ॥
पहिले आपा हैं खोय कर करै तुम्हारा खोज

राजै कहा सत्य कहु सुआ ॥ बिन सत कस जस सेमर भुआ
हो मुख राती कहो सत बाता । जहाँ सत्य तहँ धर्म सँघाता
बाँधी सृष्टि अहै सत केरी ॥ लक्ष्मी अहै सत्य की चेरी ॥
सत्य जहाँ साहस सिधि पावा । औ सत बाँधी पुरुष कहावा ॥
सत कहि सती सँवारे सरा ॥ आग लाय चहुँ दिसि सत जरा ॥
दुइ जग तरा सत्य जै राखा ॥ और पियार दीन्ह सत भाखा
सो सत छाँड़ि जो धर्म बिनासा । का मत कीन्ह हिये सत नासा

तुम सयान औ पण्डित असत न भाखा काउ
सत्य कहो मो सौं वहि का कर अपनाउ

सत्य कहत राजा जीव जाउ । पै मुख असत न भाखौं काउ

हुक्म १ पाक साफ़ २ मैला ३ ग़रूर ४ खाविन्द ५ भेद ६ खराब ७ गरदन ८ अलग ९ सारा जहान १० मुहब्बत ११ एजाविक माजीत १२ नामराज १३ लाल १४ दुनिया १५ कामिल १६ सच बोलनेवाला १७ मर्द १८ चारों-तरफ़ १९ दोनों जहान २० बोली २१ नास २२ दिल २३ झूठ २४ क़सूर २५ झूठ २६

हौं लियेसत निसरयौं यहते	सिंहलदीप राज घ ते ॥
पद्मावत राजा की बारी ॥	पद्म गन्ध शसि दई संवारी ॥
शसि मुख अंग मलैगिरि रानी	कनक सुगन्ध द्वादस बानी
है पद्मिन जो सिंहल माहा ॥	सुगन्ध सुरूप सो वह की छाहा
हीरामन हौं तिहके परेवा ॥	काठा फूट करत तेहि सेवा ॥
सो पायौं मानुष की भाखा ॥	नाहीं तो पंख मूठ भर पाखा ॥

जबलहि जियौं रात दिन संवरौं मरौं वही ले नाऊं
मुखराता तन हरिहर कीन्हा दुहूं जगत ले जाऊं

हीरामन जो कमल बखाना।	सुनि राजा होय भंवर भुलाना
आगे आव पंख उजियारे ॥	कहेसु दीप पतंग किये मारे ॥
रहा जो कनिक सुबास वे ठाऊं	कस न होय हीरामन नाऊं ॥
को राजा कस दीप अतंगू ॥	जेहि सुनत मन भयो पतंगू
सुनि सुसमंद चंख भये कलकला	कमला चाहि भंवर होय मिला
कहो सुगन्ध धनि कस निर्मली	भा अलि संग कि अवहीं कली
औ कहु तहां जो पद्मिनी लोनी	घर घर सब के होहिं जस होनी

सबै बखान तहां कर कहत सो मोसो आव ॥
चहों दीप वह देखा सुनत उठा तस चाव ॥॥

का राजा हौं बरनौं तासू ॥ ॥	सिंहलदीप आहि कैलासू ॥
जो गा तहां भुलाना सोय ॥	गये जुग बीत न बहुरा कोय ॥
घर घर पद्मनी छतीसौ जाती ॥	सदा बसंत दिवस अरु राती
जेहि जेहि बरन फूल फुलवारी	तेहि तेहि बरन सुगन्ध सुनारी

लड़की १ कमल की खुशबू २ चांद ३-४ बदन ५ चन्दन ६ सोना ७ खलिस ८ जानवर पंद ९ आवाज़ १० जानवर पंद ११ लाल १२ दुनिया १३ बयान करना १४ जानवर पंद १५ सोना १५ जगह १७ आंख १८ नाम जानवर १९ पद्मावत २० पाक साफ़ २१ भंवर २२ खूबसूरत २३ बयान २४-२५ दिन २६ रंग २७

गन्धर्प सेन तहाँ बड़ राजा ॥ अप्सरहिं माहिं इन्द्रासन साजा
सो पद्मावत ताकर बारी ॥ औ सबदीप माहिं उजियारी ॥
चहूँ खण्ड के बर जो अहीं गर्वहिं राजा बोलहिं नाहीं ॥

उदित सूर जस देखी चाँद छिपै जेहि धूप ॥
ऐसे सबै जाहिं छिप पद्मावत की रूप ॥१॥

सुनि रवि नाउँ रतन भा राता ॥ पण्डित यही फेर कहु बाता ॥
तुइ सुरंग मूरत वह कही ॥ चित महँ लाग चित्र होय रही
जनु होय सूर्य्य आय मन बसे सब घर पूरि हिये परगसे ॥
अब हौं सूर्य्य चाँद वह छाया ॥ जल बिन मीन रक्त बिन काया
कौन करान भा प्रेम अगूरू। जो असि स्वर्ग चढ़ौ होय सूरू
सहँस किरान रूप मन भूला ॥ जहँ जहँ दृष्टि कमल जनु फूला
तहाँ भँवर जहँ कमला गन्धी भइ असि राहु केर रन बन्धी

तीन लोक खंड चौदह सबै परै मोहि सूझ ॥
प्रेम छाँडि कुछ और नहिं लुना जो देखौं मन बूझ

प्रेम सुनत मन भूल न राजा ॥ कठिन प्रेम शिर दिये तेहि छाजा
प्रेम फंद जो पड़ा न छूटा ॥ जीव दीन्ह पै फाँद न छूटा ॥
गौरगिर छन्द धरै दुख तीता । रवन हो पीत राति रवन सीता ॥
जानि पुछार जो भये बन वासी रोवँ रोवँ धरी फाँदन को आसी ॥
पाँख फरफरेरा सो फाँदू ॥ उड़न सकहिं उरभे भये वादू
मेउँ मेउँ निसि दिन चिल्लाय वही रोस नागिन धर खाय ॥
पाडुंक सुआ कराठ वह चीन्हा जेहि गे परा चाहिहि जिव दीन्हा

इन्द्रलोक की परी १ लड़की २ चारों तरफ़ ३ गरूर ४ सूर्य्य ५-६ राजा रतनसेन ७ दीवाना ८ तसवीर ९ दिल १० खिलना ११ मछली १२ बदन १३ नस नस में १४ चाँद १५ आसमान १६ सूर्य्य १७ हजार जोति तथा पद्मावत १८ निगाह १९ चाँद २० रंग २१ गर्मी २२ पीला २३ लाल २४ सफ़ेद २५ मोर २६ प्रेम का फन्दा २७ गम २८ गुस्सा २९ कुमरी ३० तोता ३१

तीतर गये जो फांद है नितहि पुकारै दोष ।।
सुतिहैं कार फांद में बोले कित मारै पुनि मोष

राजा लीन्ह ऊब के स्वांसा ।। ऐस बोल नहिं बोल निरासा
पहिलहि प्रेम है कठिन दुहेला दो जग तरा प्रेम जेहि खेला ।।
दुख भीतर सो प्रेम मधु राखा कि चन मरन चहै सो चाखा
जो नहिं सीसे प्रेम पंथ लावा । सो पृथ्वी महँ काहे कहँ आवा
अब मैं पाय प्रेम पंथ मेला ।। पाय न ठेल राख कै चेला ।।
प्रेम बार सो कहै जो देखा ।। जो न देख का जानि बिसेखा
तब लग दुख प्रीतम नहिं भेटा मिला तो गा जरमक दुख मेटा

जस अनूप तुइ बारी नख सिख बरन सिंगार
है मोहि आस मिलन की जो पुरवै करतार ।।

खण्ड सातवां सिंगार खण्ड पद्मावत

का सिंगार वह बरनों राजा ।। वह क सिंगार वही पै छाजा ।।
प्रथम सीस कस्तूरी केशा ।। बलि बासुक को और नरेशा ।।
भंवर केस वह मालति रानी ।। बिसहर लरहिं लेहिं अरघानी
बेनी छोरि झार जो बारा ।। ।। स्वर्ग पतार होय अंधियारा ।।
कोमल कुटिल केस नग कारे लहरें भरी भुअंग बैसारे ।।
बेधी जानि मलैगिरि बासा ।। सीस चढ़ी लोटहिं चहु पासा
घूंघुर वार अलकै बिष भरे ।। संकरे प्रेम ज्यों गये परे ।।।।

गरदन १ हमेशा २ चुप ३ बोलाना ४ गरदन ५ नजात ६ नाउमेद ७ मुश्किल ८ भारी ९ दोनों जहान १० शराब ११ शिर १२ राह १३ ज़मीन १४ राह १५ दरवाज़ा १६ मुलाक़ात १७ बहुत दिन १८ बयान करना १९ नाख़ून से शिर की चोटी तक २० बयान २१ ईश्वर २२ तारीफ़ २३ पहिले २४ शिर २५ मुश्क २६ बाल २७ न्योछावर २८ नाम साँप २९ आदमी ३० बाल ३१ साँप ३२ खुशबू ३३ चोटी ३४ आसमान ३५ मुलायम ३६ पेचदार ३७ बाल ३८ साँप ३९-४० चन्दन ४१ शिर ४२

असफंदवार केस वै राजा परा सीसगे फांद ।
अहीं कली नाग सबडरके भये केसके बांद ॥

बरनौं मागसीसे उपराही ॥ सेंदुर अबे चढ़ा जेहि नाही ॥
बिन सेंदुर असज्ञा नहि दिया उजेर पंथ रयेन महं किया ॥
कंचेनरेख कसौटी कसी ॥ जनु घन महं दामिनपरगोसी
सूर्य्य किरन जनु गगनबिसरवी यमुना माझ सरस्वती देखी ॥
खांडे धार रुधिर जनु भरा ॥ करवट ले बेनी पर धरा ॥ ॥
तेहि पर पूर धरे जो मोती ॥ यमुना माझ गंग की सोती
करवट तपा लीन्ह होय चूर ॥ संग सुरंधिर लेदेइ से दूर

कनक द्वादस बानि होय चही सुहाग वह मांग
सेवा करै नखत शशि तेसे उवे गगने नस मांग ॥

कहौं लिलार दुईज की जोती ॥ दुइजहि जोति कहां जग ओती
सहस किरन जो सूर्य्य दिपाये देखि लिलार सोउ छिपजाये
का शिर बेनो दिपै मयंकू ॥ चांद कलंककी वह निहकलंकू
आद चौद पुनि राहु गिरासा ॥ वह बिन राहु सदा परकासा ॥
तेहि लिलार पर तिलक जो बैठा दुइज पास जानहुं धुवदीठा ॥
कनक पाट जनु बैठा राजा ॥ सबै सिंगार अस्त्र ले साजा ॥
वह आगे थिर रहे न कोऊ ॥ ॥ वह का कहि अस जुरा संजोऊ

खगी धनुक औ चक्र बान दुइ जग मारन नाऊं ॥
सुनि के परा मुरछ के राजा मो कहं भये एक ठाऊं

बाल १ शिर २ गरदन ३ नाम सांप ४ बाल ५ गुलाम ६ तारीफ ७ शिर राह ९ रात १० सोना ११ बिजुली १२ चमक १३ आसमान १४ खून १५ लौटके १६ चोटी १७ नाम जगह जहां शिर कटाते हैं १८ फ़कीर १९ शायद २० खून २१ सोना २२ खालिस २३ चांद २४ नखत्त २५ आसमान २६ शिर २७ दुनिया २८ हज़ार २९ शिर ३० तारीफ़ ३१ चांद ३२ ऐब ३३ रोशन ३४ शिर ३५ नाम नखत्त ३६ मोती ३७ दृष्या ३८ कायम ३९ मिलना ४०

भौंहैं स्याम धनुक जनु ताना । जासों हेर मार बिष बाना ॥
ओही धनुक वह भौंहँ चढ़ा । कै हत्यार काल अस गढ़ा ॥
ओही धनुक कृस्न पै अहा । ओही धनुक राघव कर गहा ॥
ओही धनुक रावन संहारा । ओही धनुक कंसासुर मारा ॥
ओही धनुक बेधा हत राहू । मारा वही सहसा बाहू ॥
ओही धनुक मैं उपलहिं चीन्हा । धानिक आप पनच जग कीन्हा ॥
वहिं भौंहहिं सरि कोइ न जीता । अपसरें छिपीं छिपीं गोपीता ॥

भौंह धनुक धनि धानुक दूसर सरि न कराय ।
गगन धनुक जो ऊगवै लाजहिं सो छिप जाय ॥

नयन बाँक सरि पूज न कोऊ । मानु समुन्द्र अस उलटहिं दोऊ ॥
राते कँवल करहिं अलि भवाँ । घूमहिं मात जिन अपसवाँ ॥
उठहिं तुरंग लेहिं नहिं बागा । जानो उलट गगन कहँ लागा ॥
पवन झकोरे देहिं हिलोरा । स्वर्ग लाय भुइँ लाय बहोरा ॥
जग डोलै डोलत नयनाहाँ । उलट अडार चाह पल माहाँ ॥
जबहिं फिरावैं गगन बूरा । अस वे भौंह भँवर कै जोरा ॥
समुन्द्र हिलोर करहिं जनु भूले । खंजन लरहिं मिरिग बन भूले ॥

भरे समुन्द्र अस नयन दुइ मानिक भरे तरंग ।
आवहिं तीर जाहिं फिर काल भँवर तेहि संग ॥

बरुनी का बरनौं इमि बनी ॥ साधी बान जानु वेहि अनी ॥
जुरी राम रावन की सैना ॥ बीच समुन्द्र भये वह नैना ॥

सियाह १ कमान २ देखना ३ मौत ४ हाथ ५ मारडालना ६ नासगजा ७ तीरअंदाज़ ८ निशाना ९ दुनिया १० बान ११ इन्द्र लोक की परी १२ गोपी १३ पद्मावत तीर-अंदाज़ १४ बराबर १५ आसमान १६ आँख १७ बराबर १८ लाल १९ भँवर २० घोड़ा २१ आसमान २२-२३ दुनिया २४ आँख २५-२६ ममोला २७ हिरन २८ ज़बाहा २९ लहर ३० किनारा ३१ पलक ३२ तारीफ़ ३३ इस तरह ३४ फ़ौज ३५-३६

वारहिं पार नयावर साँधे ॥ जासों हेर लाग विय बाँधे ॥१॥
उन्ह बानहि अस को को न मारा बेधरह्यो सगरा संसारा ॥ ॥
गँगन नखत जस जाहिं न गिने वेसब बान ही के हने ॥ ॥
धरती बान बेध सब राखे ॥ साखा ठाढ़ ठही सब साखे ॥
रोवें रोवें मानुष तन ठाढ़े ॥ सूतहिं सूत बेध अस गाढ़े ॥

बरुनि बान जस उपनहिं बेधी रन बन ढंख ॥
सौजहिं तन सब रोवाँ पंखिहि तन सब पंख ॥

नासक खर्ग देवों केहि जोगा। खर्ग खीन वहि बदन सँजोगू
नासिक देखि लजान्यो सुआ सूक आय बेसर होय उआ ॥
सुआ जो पियर हीरामन लाजा और भाव का बरनों राजा ॥
सुआ सुनाक कँठोर बनेवारी। वह कोमल तिल पुहुप सँवारी
पुहुप सुगन्ध करहिं सब आसा सँग हरकाय लेइ हम पासा ॥
अधर दसन पर नासक सोभा दाड़िम देखि सुआ मन लोभा
खंजन देहिं दिस केलि कराही देखहिं वह रस को पावको उनाहीं

देखि अमीरस आधरन्ह भयो नासिक कीर।
पवन बास पहुँचावै आपम छाड़िन तीर ॥ ॥

अधर सुरंग असो रस भरे ॥ ॥ बिम्ब सुरंग लाज बन फरे ॥ ॥
फूल दुपहरी जानहुँ राता ॥ फूल भरहिं जो जो कहि बाता
हीरा लीन्ह सु बिद्रुम धारा ॥ बेहँसत जगत होय उजियारा॥

देखना १ आसमान २ सूराख ३ पलक ४ जानवर पन्द ५ नाक ६ तलवार ७ बराबरी ८ तलवार ९ पतली १० नाक ११ नाम नखत १२ बयान करना १३ मरद १४ टेढ़ी १५ मुलायम १६ फूल १७-१८ आवद १९ बोलाना २० होंठ २१ दाँत २२ नाक २३ अनार २४ ममोला २५ [illegible] २६ अमृत २७ होंठ २८ नाक २९ तोता ३० हवा ३१ किनारा ३२ होंठ ३३ कुँ [illegible] ३४ लाल ३५ मूँगा ३६ हँसना ३७ दुनिया ३८

भई मंजीठ बानहिं रंग लागे	कुसुम रंग थिर रहै न आगे ॥
वहि के अधर अमी भर राखे	अबहिं अछूति न काहू चाखे
मुख तम्बोल धारनहिं रसा ॥	केहि मुख योग सो अमृत बसा
राता जगत देख रंग राती ॥	रुधिर भरी आछहिं बिहँसाती

अमी अधर अस राजा सब जग आस करेइ ।
केहि का कमल बिकासा को मधुकर रस लेइ ॥

दसन चौक बैठे जनु हीरा ॥	औ बिच बिच रंग श्याम गंभीरा
जनु भादौं निशि दामिन दीसी	चमक उठै तस तहीं बतीसी ॥
वह सो जोति हीरा उपराहीं ॥	हीरा वहिं सो तेहि परछाहीं ॥
जेहि दिन दसन जोति निरमई	बहुतै जोति जोति दा भई ॥
रवि शशि नखत दीन्ह वह जोती	रतन पदारथ माणिक मोती ॥
जेहिं जेहिं विहँसि सभा महँ हँसी	तहँ तहँ छिटक जोत परगसी
दामिन चमक न सरबर पूजा	पुनि वह जोति होय को दूजा

विहँसत हँसत दसन तस चमकी पाहन उठी छुर्क
दाड़िम सैर जो न कै सका फाट्यो हिया दर्क ॥

रसना कहौं जो कह रस बाता	अमृत बचन सुनत मन राता
हरी शशि सिर चातिक कोकिला	बीन बंसि वे बैन जेहि मिला
चातिक कोकिल रमाहिं जो नाहीं	सुनि वे बयन लाज छिप जाहीं
भरै प्रेम मधु बोलहिं बोला	सुनै सो मात घूम के डोला

लाख १ कायम २ होंठ ३ अमृत ४ पान ५ लाल ६ खून ७ हँसना ८ होंठ ९ दुनिया १० खिलना ११ भँवरा १२ दाँत १३ बहुत काला १४ रात १५ बिजुली १६ देख पड़ना १७ दाँत १८ बनाइ गई १९ सूर्य २० चाँद २१ जवाहिरात २२ हसना २३ उजियारा २४ बिजुली २५ बराबर २७ पत्थर २८ लूक २९ अनार ३० बराबरी ३१ जीभ ३२ दूर करना सबों का ३३ पपीहा ३४-३६ आवाज ३५-३७ शराब ३८

चतुर वेद मति सब वह पाहाँ । ऋग यजुर शाम अथरबन माहाँ ॥
इक इक बोल अर्थ जो गुना । इन्द्र मोहि ब्रह्मा शिर धुना ॥
भागवत भेर्थ पिङ्गल औ गीता । अर्थ जो जहि परिडत नहिं जीता ॥

भाव सती औ व्याकरन सुनी पिङ्गल पाठ पुरान ।
वेद भेद सों बात कहि जनु लागें हिये बान ॥

पुनि बरनों का सुरंग कपोला । इक नारंग के दो किये सोला ॥
पुहुप पंग रस अमृत सांधे । कै अस सुरंग खरोरा बांधे ॥
तेहि कपोल बायें तिल परा । जो तिल देखि सो तिल तिल जरा ॥
जनु घुंगची वह तिल कासूं हां । बिरह बान सांधे सासहा ॥
अगिन बान तिल जानहु सूझा । इक कटाक्ष लाख दुइ जूझा ॥
सो तिल काल मेट नहिं गयो । अब वह काल कालजग भयो ॥
देखत नैयन परी परछाहीं । तेहि ते रात श्याम उपराहीं ॥

सो तिल देखि कपोल पर गगन रहा धुव गाड़ ।
खनहिं उठे खन बूड़े डोले नहिं तिल छाड़ ॥

श्रवण सीप दुइ दीप सवारे ॥ कुण्डल कान कर चेउजियारे
मणि कुण्डल चमकहिं अति लोने जनु कौंधा लवकहिं दुइ कोने
दोउ दिस चांद सूर्य चमकाही नखतह भरी निरखि नहिं जाही
तेहि पर घूंट दीप दुइ बारे ॥ दुइ धुवे दुहूं खूंट बैसारे ॥
पहिरे घूंटी सिंहल दीपी ॥ जानहु भरे कचपची सीपी
खन खन जोहिं चीर शिर गहा कांपत बीजु धौल दिसि रहा ॥
डरपहिं देव लोक सिंहला ॥ पड़े न बीज टूटि तेहि कला ॥

चार १ महाभारत पुराण २ पोथी ३ दिल ४ बयानकरना ५ गाल ६ फूल ७ लहू ८ गाल ९ काला मुहँ १० दुनिया ११ आँख १२ लाल १३ सियाह १४ गाल १५ आसमान १६ नामनखत १७ कान १८ सोना १९ खूबसूरत २० देखना २१ बाली २२-२४ नामनखत २३ खैंचना २५ बिजुली

२६ २६ मार्च २० तारीख २९

कराहिं नरवत सब सेवा अलग दीन्ह अस दोउ।
चाँद सूर्य अस कहँ औरे जगत का कोउ॥

बरनौं गीव कोंव की रीसी॥ कंचन तार जनु लाग्यो सोसी
कूंडे फेर जानु गयों गाढ़े॥ हरी पुछार ठग जनु ठाढ़े॥॥
जनु हियँ काढ़ि परेवा ठाढ़ा। तेहि ते अधिक भाव गयँ बाढ़ा
चाक चढ़ाय साँच जनु कीन्हा बाग तुरंग जानु गहि लीन्हा।
गयँ मयूर तमचोर जो हारा॥ उन्हे पुकारे साँझ सकारा
पुनि तेहि ठाँव परी तिखरेखा घूँट जो पीक लीक तस देखा
धन वह गीव दीन्ह बिधि भाउ यहि का कहिं लै को सिराउ

कराठ श्रीमुक्तावलमाला सोहे आभरन ग्रीव।
का होय हार कराठ लागे कै तप साधा जीव॥

कनक दराड दुइ भुजा कलाई जानहु फेर कंदेरै भाई॥॥
बादल गाभ की जानौं जोरी औ राती वह कमल हथोरी
जानो रकत हथोरी बूड़ी॥ रवि प्रभात तात वै जूड़ी॥
हियाँ काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथा रुधिर भरी अंगुरी तेहि साथा॥
औ पहिरे नग जड़ी अंगूठी। जग बिन जीव जीव वह मूठी॥
बाहू कङ्कन ताड़ सलोने॥ डोलत बाहु भाव गत लोने॥
जानो गति बैरिन देर वराय॥ बाहू डुलाय जीव लै जाय

भुज उपमा पौनारि न पूजी खीन भई तेहि चिंत
ठाँवहि ठाँव बेध भइ हृदय ऊब साँस लै निंत॥॥

कान १ दुनिया २ तारीफ़ ३ गरदन ४ कलग ५ सोना ६ खरादी ७ गरदन ८ मोर ९ दिल १० कबूतर ११ बहुत १२ गरदन १३ घोड़ा १४ मोर १५ मुरगा १६ जगह १७ गरदन १८-२४ ईश्वर १९ मुलाक़ात २० नामज़ेवर २१ मोती का हार २२ ज़ेवर २३ सोना २५ खराद़ी २६ लाल २७ लूह २८ सूर्य २९ भोर ३० दिल ३१ खून ३३ दुनिया ३४ नाम ज़ेवर ३५ खूबसूरत ३६-३७ तवायफ़ ३८ बराबरी ३९-४१

हियो थार कुच कंचन लाडू ॥ कनिक कचूर उदै कै चाडू ॥
बेधे भँवर कंट केतकी ॥ चाहैं बेध कीन्ह कंचुकी ॥
कुन्दन बेल साज जनु गूंदे । अमृत भरे रतन दुइ मूंदे ॥
जोवन बान लेहिं नहिं बागा ॥ चाहहिं हुलस हियें महँ लागा
अगिन बान दुइ जानो सांधे ॥ जग बेधे जो होहिं न बांधे ॥
उतंग जंभीर होय रखवारी ॥ छुइ को सकै राजा की बारी ॥
दाड़िम दाख फरी अब चाखा अस नारंग दहुँ का कहि राखा ।

राजा बहुत मुये तप लाय लाय भुइँ माथ ॥
काहू छूय न पारी गये मरोरत हाथ ॥ ॥ ॥

पेट पतरि जनु चन्दन लावा । कहँ कहँ केसर बरन सुहावा ।
खीर अहार न कार सुकमारा । पान फूल ले रहे अधारा ॥
श्याम भुअंगिन रोमावली नाभी निकस कमल कहँ चली
आय दुहौं नारंग बिच भये ॥ देखि मयूर ठमक रहि गये ॥
आय जुरी भवरन की पांती । चन्दन गाभ बास की माती ॥
गइ कालिन्दी बिरह सताई ॥ चलि पराग अरबेल बिच आई
नाभी कुण्ड सो बानारसी । सौंहें को होय मीच तेहि लिखी

शिर कावर तन काशी लै लै बहुत सीक तेह आस
बहुत धूंसै घूंट मैं देखी उत्तर न देइ निरास ॥

चोंटी पीठ लीन्ह वै पाछे ॥ जनु पहिर चली अपसरा काछे
मलयागिर की पीठ सँवारे ॥ बेनी नाग चढ़ा जनु कारे
लहरैं देत पीठ जनु चढ़ा ॥ ॥ चीर उढ़ावा केंचुल मढ़ा ॥

छाती १-२ सोना ३-४ सुराख ५ तथा ढंडी छाती की ६ नोक छाती के ढंडी की ७ सूराख ८ अंगिया ९ पोशाक १० दिल ११ दुनिया १२ नीबू १३ बेरी १४ अनार १५ अंगूर १६ खुशबू १७ रंग १८ दूध १९ काली नागिन २० यमुना २१ नाम मुकाम २२ मुकाबिल २३ मौत २४ धुआँ २५ जवाब २६ नाउम्मेद २७ इन्द्रपरी २८ धोती २९ चन्दन ३० चोटी ३१

चौंहूं काकहँ अस बेनी कीन्ही । चन्दन बास भुअंगहि लीन्ही

फूल का चढ़ा वह माथें ॥ तब सो छूटि अब छूट न माथे

काले कमल गहें मुख देखा ॥ शशि पाछे जनु राहु बिसेखा

को देखे पावै वह नागू ॥ सो देखे माथे मन भागू ॥

पन्नग जो पंकज मुख गहे खंजन तहँ शिर बैठ

छात सिंहासन राज धन ताकहँ होइ जो डीठ

लिंक खीन अस आहि न काहू । केहा कहूं न वह सर ताहू ॥

बसा लंक के पर चली जग झीनी । तेहि ते अधिक लिंक वह खीनी

परहँस पियर भये तहँ बसा । लियेडरव मानुष कहँ डसा

मानहुँ नलिन खंड दुइ भये । दुहुँ बिच लिंक तार रहि गये ॥

हिये सों मूड़ पर चली वह नागा । पैग देत कित सहँसक लागा

छुद्र घंट मोहहिं नर राजा । इन्द्र अखाड़ आय जनु बाजा

नाभ बीन गहे कामिनी ॥ गावहिं सबै राग रागिनी ॥

सिंहन जीता लंक शर हार लीन्ह बन बास

तेहि रिस रक्त पिये मानुष खाय मार के मांस

नाभी कुण्ड सो मलय समीरू । समुन्द भँवर जस भवै गंभीरू

बहुतै भँवा बौन्डर भये ॥ पहुँच न सके स्वर्ग कहँ गये ॥

चन्दन मांझ कुरंगिन खोजू । वेहि को पाव को राजा भोजू

को वह लाग हिवंचल सीझू । का कहि लिखी ऐस को रीझू

सोहे कमल सुगन्ध सरीरू ॥ समुन्द लहर सोहै तन चीरू

चोटी १ काला सांप २ ३ पकड़ना ४ चांद ५ सांप ६ कमल ७ पकड़ना ८ भमोला ९ कमर १० पतली ११ चीता १२ भंवरा १३ कमर १४ बहुत पतली १५ बहुत १६ कमर १७ बारीक १८ डाह १९ भंवरा २० कोकाबेली २१ कमर २२ छाती २३ डर २४ करधनी २५ नाम बाजा २६ पकड़े हुये २७ चीता २८ कमर २९ चन्दन की हवा ३० गहरा ३१ आसमान ३२ हरिनके पावें का

जनु लेंहारहिं लीन्ह जिव हरहिं चासहि ताहि
सुनना बोल न आव मुख करें चाहि चाहि

जहँ लग कुटुम्ब लोग औ नेगी । राजा राय आय सब बेगी ॥
जानवंत गुनी कारी आये ॥ ओझा वैद सयान बुलाये
चरचहिं चेष्टा परखहिं नारी ॥ नें नाहिं ओषद तहिं बारी
है राजा लक्ष्मण के करा ॥ सक्ती बान मोह है परा ॥
तहँ सो राम हनुमंत बल दोरी । को ले आव सजीवन मूरी ॥
विनय करहिं जेतो गढ़पती । का जीव कीन्ह कौन मत मती
कहो सो पियर बुझाहि पुनि खाँगा । समन्द सुमेरु और तुमहि माँगा

धावन तहाँ पठावें देहिं लाख दस रोक ॥
होय सो बेल जेहि बारी आनहिं सबै बरोक

जो भा चेत उठा बैरागा ॥ ॥ बावर जनो सोय उठ जागा
आय जगत बालक जस रोवा । उठा रोय हा ज्ञान सो खोवा ॥
हौं तो अहा अमरपुर जहाँ ॥ यहाँ मरन पुर आयों कहाँ ॥
कै उपकार मरन पर कीन्हा । मुक्ति जगाय जीव हर लीन्हा
सोवत रहा जहाँ सुख साखा ॥ कस न तहाँ सोवत बिधि राखा
अब जिव कहाँ यहाँ तन सूना । कब लग रहै यहि प्रान बहूना
जो जिव घटै काल के हाथा । कुदिन नेव पै जीवन साथा

उठहिं हाथ तन सरवर हिया कमल तेहि माहि
नैनहिं जानहु नेरे कर पहुँचत अवगाहि ॥

सबहिं कहा मन समझो राजा । काल सेतें कुछ जूझ न छाजा
तासों जूझ जात जो जीता ॥ जानत कृष्ण तजहि गोपिता

दुखदेना १ अल्ह २ चेहिरे का हालत ३ नज़दीक ४ सालिन्द ५ राजा ६ दूत ७ नक़द ८ जल्दी ९ दुनिया १० वैकुण्ठ ११ अहसान १२ चुपचाप १३ ईश्वर १४ बलग १५ तालाब १५ दिल १७ आँख १८ हाथ १९ गहरा २० मौत २१ लड़ाई २२

उमहिं मेंह काहू से कीजे ॥ नाउं मोहिं काहे जिव दीजे ॥
पहिलहिं सुख नेहे जब जोरा । पुनि हो कठिन निबाहत ओरा ॥
स्हास हाथ तन जैसि सरीरू ॥ पहुंच न जाय परा तस फेरू ॥
गगन दृष्टि सों जाइ पहुंचा । प्रेम अदृष्टि गगन ते ऊंचा ॥
ध्रुव तें ऊंच प्रेम ध्रुव ऊआ । शिर दे पाउं दिये सो छुआ ॥

तुम राजा औ सुखिया करो राज सुख भोग ।
यह रे पंथ सो पहुंचे सहे जो दुख बियोग ॥

सुवै कहा मन मस मोरा । करन प्रीति कठिन है काजा ॥
तुमहिं अबहिं जई घर पोई । कमल न भेंटहिं भेंटहिं कोई ॥
जानहि भवर ओ तेहि पंथ लूटे । जीव देहिं औ हिये न छूटे ॥
कठिन आह सिंहल का राजू । पाई नाहिं जूझ के साजू ॥
वह पंथ जाय जो होय उदासी । योगी जती औ तपी सन्यासी ॥
भोग किये पावत वह भोगू ॥ तज सो भोग कोइ करत न जोगू ।
तुम राजा चाहो सुख पावा ॥ जोगहि भोग करत नहिं भावा ।

साधन सिद्ध न पाई जौलों साधिन तप ॥
सो पै जानहि बापुरी सीस जो करनहिं कला । २७

का भाखे कहानी कथा । निकसे घीव न बिन दधि मथा ॥
औ लह आप हेरा खन कोई ॥ जौलहि हेरत पावन सोई ॥
प्रेम पहाड़ कठिन बिधि गढ़ा ॥ सो पै जाय सीस सों चढ़ा ॥
पंथ सूरी नगर उदा अंगूरू ॥ चोर चढ़ा के चढ़ि सूरू ॥

मुहब्बत १-२ मुशकिल ३ बदन ४ आसमान ५ निगाह ६ अदेख ७ असमान ८ नामनखत ९-१० एह ११ बिरह १२ मुशकिल १३ मुलाक़ात १४ कोताबे-ली १५ राह १६ मुशकिल १७ लड़ाई १८ राह १९ क़िसिम फ़क़ीर २०-२१-२२-२३ छोड़ना २४ फ़कीर २५ ख़्रिम २६ दूध २७ मुशकिल २८ ईश्वर २९ ख़ार ३० एह सूरी की ३१ नाम फ़क़ीर ३२

होत उयो रबि किरन निकासा। हनुवंत होय को देइ सु आसा।

तुम्ह सब सिद्धि मनावहु होय गणेश सिध लेहु
चेला कौन न चलावै तुले गुरु जेहि भेहु ॥ ४

तजा राज राजा भा जोगी ॥ औ किंगरी तन किया बियोगी
तन बिसँभर मन बावर लटा अरुझा प्रेम परी शिर जटा ॥ ७
चन्द्र बदन औ चन्दन देहा ॥ भस्म चढ़ाय कीन्ह तन खेहा
मेखल सिंह चक्र ढिंढोरे ॥ लीन्ह हाथ तिरसूल सँभारे ॥
कंथा पहिरि दंड कर गहो ॥ सिद्धि होय कहँ गोरख कहा ॥
मुन्द्रा श्रवण कंठ जपमाला कर उदियाँ काँध सिंह छाला
पाँवरे पाय लीन्ह शिर छाता खप्पर लीन्ह भेस के राता ॥

चला भीख माँगले कहँ साज किया तप जोग
सिद्धि होय पद्मावत पाँवै हिरदै जब कि बियोग

गनी कि कहहि कहा दिन न आजू दिन ले चलहि होय सिध काजू
प्रेम लुब्ध दिन घड़ी न देखा तब देखी जब होय सरेखा ॥
जेहि तन प्रेम कहाँ तेहि मासू कया न रक्त न नयनहि आसू
पंडित भुलान न जानहि चालू । जीव लेत दिन पूँछ न कालू ॥
सती कि बौरी पूँछे पाँडे ॥ औ घर बैठि न सेते भाँडे ॥
मरि जो चले गङ्गा गति लेई ॥ तेहि दिन कहाँ घड़ी को देई ॥
मैं घर बार कहाँ कर पावा ॥ घर कया पुनि अंते परावा

होरे परेवरु पखी जेहि बन मोर निबाहि ॥
खेल चला तेहि बन कहँ तुम अपने घर जाहि।

सूर्य १ छोड़ना २ हाथ ३ दुखी ४ बेकरार ५ मुहँ ६ राख ७ मस्त हाथी ८ गुदड़ी ९
हाथ १० पकड़ना ११ पूरा होना १२ नाम फ़कीर कामिल १३ बाला १४ कान १५
गरदन १६ सुमिरनी १७ चीते की खाल १८ खड़ाऊँ १९ सूत २० लाल २१ कामिल २२
कामिल २३ दिल २४ बुरा २५ नजूमी २६ पूरा २७ दीवाना २८ होशियार २९ बदन ३०

चहुँदिस आन सांडौंडी फेरी ॥ भइ कटकाई राजा केरी ॥
ज्ञानवंत अहहिं सकैसदकाला । सांभैंर लेहु दूहे जाना ॥
सिंहल दीप जाय सब चाहा ॥ मोल नपावब जहाँ बिसाहा ॥
सब निबहे पुनि आपन साँठी । साँठी बिन सोरहैं मुख माटी ॥
राजा चला साज कै जोग ॥ साजो बेग चलै सब लोग ॥
गर्ब जो चढ़ी तुरी के पीठी ॥ अब भुइँ चलहु स्वर्ग सोंडीठी ॥
मंत्री लीन्ह होहु सग लागू ॥ गुदर जाय सब होयहु आगू ॥

का निचिंतरे मनै अपनी चिन्ता आछ ॥
लेहु सजोग भा आगमन पुनि पछनास नपाछ ॥

बिनवै रतन सेन की माया ॥ माथे छात पाट नित पाया ॥
बसहिं नवौं निधि लक्ष पियारी । राज छाड़ि जन होहिं भिखारी ॥
निते चन्दन लागे जेहि देहा ॥ सो तन देखि भरब अब खेहा ॥
सब दिन रहे करत तुम भोगू । सो कैसे साधब तप जोगू ॥
कैसें धूप सहब बिन छाहाँ । कैसें नींद पड़े भुइँ माहाँ ॥
कैसें ओढ़ब काँथर कैंथा ॥ कैसें पाय चलत भुइँ पंथा ॥
कैसें सहब खनहिं खन भूखा । कैसें खाब कुरकुटा रूखा ॥

राजपाट दर पुरुष सब तुमहिं सों उजियार ॥
बैठि भोग रस माहिं के न चल तेहि अँधियार ॥

मोहिं यहि लोभ सुनाव न माया । काकर सुख काकर यह काया ॥
जो निर्यान तन होइ यह छारा । माटी पोष मरै को भारा ॥
का भूलौं यहि चन्दन चोवा । बैरी जहाँ अंग के रोवा ॥

चारौं तरफ़ १ फ़ौज २ सब ३ अरकान दौलत ४ पूंजी ५-६- जल्द ७ ग़रूर ८ घोड़ा ९ आसमान १० निगाह ११ सलाह १२ ग़ाफ़िल १३ फ़िकिर १४ होशियार १५ पहिले १६ अर्ज़ करना १७ नस्ल १८ हमेशा १९ सब दुनिया की दौलत २० हमेशा २१ राख २२ गुदड़ी २३ राह २४ नस्ल २५ फ़ौज २७

हाथ पाँय स्रवन औ आँखी ।। ये सब सराहिं आय पुनि साखी
सूनि सति तन बोलहिं दोखो कहो कोहू को यह गति मोखो
जो भल होत राज औ भोगू गोपचन्द नहि साधत जोगू
उन्हों सृष्टि जो देख परेवा । तजा राज कजरी बन सेवा

देखि अंत अस होयहि गुरु दीन्ह उपदेस ।।
सिंहल दीप जाब मैं माता तुम सो मोर अदेस [१०]

रोवैं नागमती रनिवासू ।। के तुम कंत दीन्ह बन बासू ।। [११]
अब को हमहिं कोहि भोगानी हमहू साथ होयहहिं जोगनी
की हम लावहु आपन साथा । की अब मार चलहु सहाथा ।
तुम अस बिछुड़े पीव पिरीता ।। जहवाँ राम तहाँ संग सीता ।।
जब लहि जिव संग छाड़िन कोया [१२] कोहिं सेव परवारहु पाया ।।।
भली पदमिनी रूप अनूपा [१४] ।। हमते कोई न आगर रूपा ।।
भौंहैं भली पुरुष न कोई डीठी [१५] जहँ जाना तहँ दीन्ह न पीठी ।।

दीन्ह असीस सबै मिल तुम माथे नित छात [१६]
राज करो चितौरगढ़ राखो पिय अहिवात ।

[१९] तुम तिरिया मत हीन तुम्हारी मूरख सोई मता घर नारी ।।
राघव जो सीता संग लाई ।। रावन हरी कौन सिध पाई ।। [२०]
यहि संसार स्वपन जस होई [२१] ।। [२२] अंत न आपन को काहि केरा ।।
राजा भरथरिहिं नहिं सुनी अयानी [२३] जेहि के घर सोरह से रानी ।।
[२४] कुच लीन्हे तरवा सहराई ।। भा जोगी कोउ संग न लाई ।।
जोगी काहि भोग सो काजू ।। चहीं न मेहरी चहै न राजू ।।

कान १ गवाही २ सूराख ३ पाप ४ नजात ५ नामराजा ६ संसार ७
छोड़ना ८ आखिर ९ सलाम १० खाविन्द ११ बदन १२ धोना १३
बेमिसाल १४ खूबसूरत १५ मर्द १६ देखना। १७ हमेशा १८ औरत
१९ कमाल २० देखना २१ आखिर २२ नादान २३ छाती की ढंडी २४

जूड़ि बैर कटा पै भीर बहि चाहा ॥ जोगिहि ताने भ्रात सों काहा

कहा न मानी राजा तजी सबाई भीर ॥
चला छांड़ि के रोवत फिर के दीन्ह न धीर ॥

रोवै माता पिरै न बौरा ॥
बार मोर जिया बर रता ॥
रोवहिं रानी तजहिं पराना ॥
चूरहिं गै औ भरन उरहारा ।
जा कहं कही रहसि के पीऊ
सेरी चहहिं पै मेर न पावहिं ।
घड़ी एक सुठ भयो अंदोरा ॥

रतन चला जग भा अंधियारा
सोले चला सुआ परबता ॥
फोरहिं बैरी का रहिं ररिहाना
अब का कहं हम कर बसिंगारा
सोई चला का कायहिं जीव
उठे आगे सब लोग बुझावहिं
पुनि पाछे बीता होय रोरी ॥

टूट मने नव मोती फूटि मने दस कांच ॥
लीन्ह समेटि सब अभरन होयगा दुख कर नांव

निकसा राजा सुन कै पूरे ॥
राय रंग सब भये बियोगी ॥
माया मोह हरी सें हाथा ॥
छांडहिं लोग कुटुम्ब सब कोऊ
संवरहिं राजा सोइ अकेला ।
नगर नगर औ गावहिं गावों ।
का कर घर का कर सद साया

छांड़ि नगर मेला होय दूरे ॥
सोरह सहस कुंवर भये जोगी
देखि न बूझ नियोन न साथा ।
भये निरास दुख सुख तज दोऊ
जेहि रे पंथ खेले होय चेला ॥
छांड़ चला सब ठांवहिं ठांवों
ताकर सब जा कर जिव काया

चला कटक जोगिन कर के गेरुवा सब भेस ॥
कोस बीस चारहु दिस जानहुं फूला टेस ॥

ठंडी रोटी काटु कड़ा १ गरस २ छोड़ना ३ सब ४ धीरज ५ लड़का ६ चतुर्भिया ७ ज़िन्दगी का सबस ८ तोता १० छोड़ना ११ चूड़ी १२ गरदन का ज़ेवर १३ छाती १४ ठौर १५ १६ ज़ेवर १७ पीर १८ राजा के भाई १९ दुखी २० हज़ार २१ आख़िर २२ छोड़ना २३ परमेश्वर २४ राह २५ जगल २६ बदन २७ फ़ौज २८ चारों

आगे सगुन सगुनयहिं[1] ताका ॥ दही माछ[2] रूपे कर टाका ॥
भरे कलश तरुनी[3] चलि आई ॥ दही लिये ग्वालिन गुहराई ॥
मालिन आय मौर ले गाथे ॥ खंजन[4] बैठ नाग के माथे ॥
दाहिन मिरग[5] आय गा धायें ॥ प्रतीहार[6] बोला घर बायें ॥
बिरस सँवरिया[7] दाहिन बोला ॥ बायें दिस गादर[8] नाहिं डोला ॥
बायें अकाशी[9] धूरे[10] आये ॥ लोंवा[11] दरश आय देखराये ॥
बायें कुररी[12] दाहिन कोचा[13] ॥ पहुँची[14] भुंजि जैस मन रोचा[15] ॥

जाके हैं सगुन होहिं अस औ गवने[16] जेहि आस ।
अष्टो महा सिद्धि पंथेहि[17] जस कवि कहा व्यास ॥

भयो पयान[18] चला तब राजा ॥ संख नाद[19] योगिन कर बाजा ॥
कहिन आज कुछ थोर पयाना[20] ॥ काल्ह पयान[21] दूर है जाना ॥
वह मिलान[22] जो पहुँचै कोई ॥ तब हम कहब पुरुष भल सोई ॥
है आगे परबत की बाटे[23][24] ॥ बिषम पहाड़[25] अगम सठ घाटे[26] ॥
बिच बिच कोह नदी औ नारा ॥ ठाँवहिं[27] ठाँव बैठ बटपारा[28] ॥
हनु[29] मत केर सुनत पुनि हाँका ॥ वहिं को पार होय को थाका ॥
अस मन जानि सँभारहु आगू[31] ॥ अगवा[30] केर होहु पछ लागू ॥

करहिं पयान[32] भोर उठि नितहि कोस दस जाहिं ।
पंथी[34] पंथा[35] जो चलहिं ते कित रहै ओठाहिं[33] ॥

नजूमी १ रुपिया दही में रखके २ जवान औरत ३ मसोला ४ हिरन ५ तीतर ६ साँढ़ ७ तरफ़ ८ सियार ९ चील्ह १० लोंवड़ी ११ कौवा १२ उल्लू १३ रोज़ी १४ चाहना १५ जाना १६ कामिल १७ राह १८ कूच १९ शंख की आवाज़ २० कूच तथा मरने का दिन २१ कूच दूर तथा कयामत का दिन २२ मिलना २३ जवांमर्द २४ राह २५ टेढ़ा २६ जहाँ कोई न पहुँच सके २७ जगह २८ राह लूटने वाले २९ बंदर ३० गुरू ३१ कूच ३२ हरसेज़ ३३ राह चलने वाले ३४ राह ३५

होत पयान जाय दिन केरा ॥ ॥ मिरगारन महिं दीन्ह बसेरा
कुशसोंठर भई सूरि संपती ॥ करवट आय बनी भई सेती ॥
बधा मिली जस भूमि मरोजा ॥ चलि दस कोस ओस तन भीजा
ठांवहिं ठांव सब सोवहिं चेला ॥ राजा जागे आप अकेला ॥ ॥
ओहि के हिये प्रेम रंग जामा ॥ ॥ का तेहि नींद भूंख बिसरामा
बन अंध्यार रैन अंध्यारी ॥ भादों बरन भयो अति सारी ॥
किंगरी गहे हाथ बैरागी ॥ ॥ पांय नैन भूलि चाहि लागी ॥

नयन लागि तेहि मारग पद्मावत जेहि दीप ॥
जैसे स्वांति बूंद कहं बन चौंधि कजल सीप ॥

सांखे लाग चलत तेहि बेरा उतरे जाय समुद्र की बाटा ॥
रतन सेन भा योगी यती ॥ सुनि भैरे आवा गजपती ॥
योगी आप कटक सब चेला ॥ कौन छाप कहं जाहु हि खेला ॥
भलहिं आय सब मांया कीजे पहुनाई कहं आय सु दीजे ॥
सुनहुं गजपती उत्तर हमारा ॥ हम तुम एके भाव निरारा ॥
सो नेहि कहं जेहि मूंह यह भावा जो निरास तेहि लाहु न लावा ॥
यही बहुत जो बोहित पाऊं ॥ तुमते सिंहल दीप सिधाऊं ॥

जहां मोहिं निज जाना कटक होंं लिये बोर ॥
जो रे जियों तो लै फिरों मरों तो कह की बौर ॥

कूच १ शाम के वक्त २ जंगल तथा क़ब्रिस्तान ३ नोशक और लिहाफ़ ४ तकिया ५ ज़मीन ६ जगह ७ रत्नसेन का मुराद परमेश्वर ८ दिल ९ आराम १० रात ११ नाम बाजा १२ पांव तार १३ आंख १४ राह १५ पपीहा १६ एक महीना १७ रस्ता १८ नाम राजा १९ फ़ौज २० जाना २१ मेहरबानी २२ आफ़त २३ डूकन २४ नाम राजा २५ जवाब २६ नाउमेद २७ नुक़सान २८ नाव २९ फ़ौज ३० दरवाज़ा ३१-३२

गजपति कही सीस बर मांगा ॥	रतनी बोलन होइ है खांगा ॥
यहि सब देउं आन पै गाही ॥	फूल सोई जो महेश्वर चढ़ी ॥
पै गुसाई सों एक नबाती ॥	मारग कठिन जाब केहि भांती
सात समन्द्र असूझ अपारा ।	मारहिं मगर मच्छ घड़ियारा
उठे हि लोरन जाय सभारी	भागहिं कोई निबहे बेपारी
तुम सुखिया अपने घर राजा	एत दुख जो सहो केहि काजा
सिंहलदीप जाय सो कोई ॥	हाथ लेहिं आपन जिव होई

खारि क्षीर दधि उदधि सुरा जल पुनि किलकिला कूत
कोचहि नाघ समन्द्र ये सातों है का कर असपूत ।

गजपति यहि मन स कुती सेवा	पै जेहि प्रेम कहां तेहि जीवा ॥
जो पहिले शिर दे पगु धरिये ॥	मुये कर का मीचु करिये ॥
सुख [illegible] क ल्प दुख सो भर लीन्हा	तौ पयान सिंहल कहं कीन्हा
भंवर जानि पै कमल पिरीती	जेहिं म हं बिथा प्रेम की बीती
औ जो समन्द्र प्रेम कर देखा	तें यहि समन्द्र बूंद बर लेखा
सातें समन्द्र सत लीन्ह सम्हारू	जो धरती का गरू पहारू
जो पै जी बाधं सत बेरा ॥	पर जिव जाय फिरे नहिं फेरा

रंग नाथ हौं जाकर हाथ वही के नाथ ॥
गहे नाथ सो खींचे फिरे न फेरे माथ ॥

प्रेम समुद्र जो अति अवगाहा	जहां न वार न पार न थाहा ॥
जो वह समुद्र गाह यहि परे ॥	जो अवगाह हंस होइ तरे

नाम राजा १ सिर २ महादेवजी ३ अर्ज़ करना ४ राह ५ मुशकिल ६ किस तरह ७ क़िसमत ८ खारी ९ दूध १० दही ११ मीठापानी १२ शराब १३ नाम समुद्र १४-१५ सरवती १६ कुदन १७ मौत १८ तोशा १९ कूच २० बराबर २१ खारी - मीठा पानी - दही - दूध - शराब - किलकिला - कूत ये सात समन्द्र है २२ ज़मीन २३ पकड़ना २४ गहिरा २५ - २६

हौं पद्मावत कार भिख संगा ॥ दृष्टि न आव समुद्र औ गंगा ॥
जेहि कारन गै काँथर कंथा ॥ जहा सो मिले जाउं तेहि पंथा ॥
अब यह समुन्द्र परो होय मरा ॥ प्रेम मोर पानी के करा ॥ ॥
मर भा कोइ कतहूं लैजाऊ ॥ यह की पंथ कोऊ धर खाऊ
अस मन जान समुन्द्र म हपर्यो ॥ जो कोइ खाय बेगि निसतरयौ ॥

स्वर्ग सीस धर धरती हिया सो प्रेम समुन्द ॥
नयन कौडिया होय रही लेले उठते हि बुन्द

कठिन बियोग जोग दुख दाहू ॥ जन्म जरत ही और न पाहू ॥
डर लज्यात हृदै गुगवानी ॥ देख कछू न आगु न पानी ॥ ॥
आग देखि वह आगे धावा ॥ पानि देखि वह सोहि धसावा
जस बावर न बुझाये बूझा ॥ कौन भांत जाय का सूझा ॥
मगर मच्छ डर मनन लेखा ॥ आपहि चहो पार भा देखा ।
औ नहि खाय वह सिह सिदूरा काँठे जाहि अधिक वह भूरा
काया माया संघ न आथी ॥ ॥ जेहि जिव सौपा सोई साथी ॥

जो कुछ दर्ब आह्ह संग दान दीन्ह संसार ॥
का जानी केहि की सत दई उतारे पार ॥ ॥

धन जीवन औ ताकर जिया ॥ ऊंच जगत महि जाकर दिया
दिया सो सब जप तप उपराही ॥ दिया बराबर कुछ जग नाही ॥
एक दिया ते दस गुन लाहा ॥ दिया देखि सब को सुख जाहा
दिया करे आगे उजियारा ॥ जहां न दिया तहां अंधियार

तिमाह १ वास्ते २ गरदन ३ गुदड़ी और कंठा ४ एह ५ मानिन्द ६ एसा ७ नासजान-कार जाता ८ आसमान १० सिर ११ जमीन १२ दिल १३ आँख १४ सतरह २० वर १५ मुश्किल १६ जुदाई १७ जलना १८ सामने १९ मगरमच्छ घड़ियाल २१ ज्यादा २२ बदल २३ दुनिया दौलत ७ रूपिया २५ ईश्वर २६ जिन्दगानी २७ दुनिया २८ ३० ऊपर २६

दिया मँदिर निशि करै उजोरा ॥ दिया नाहिँ घर मूसहिँ चोरा ॥
हातिम केरा दिया जो सिखा । दिया रहा धर्म न महिँ लिखा ।
दिया सो काज दोहूँ जग आवा ॥ यहाँ जो दिया वहाँ सब पावा ॥

निर्मल पंथ कीन्ह तेहि जहि रे दिया कुछ हाथ
कुछ जहिं कोई लैजायहि दिया जाय पैसाय ॥

खंड ग्यारहवाँ बोहित खण्ड

सत्त न डोल देखा गजपती ॥ राजा दत्त सत्त दोनहु सती ॥
आपन नाहिं कयों पी कंथा ॥ जीव दीन्ह अगमन तेहि पंथा
निश्चै चला भर्म डर खोय । सोंहस नहाँ सिद्ध तहँ होय ॥
निश्चै चला छाँड़ के राजू ॥ बोहित दीन्ह दीन्ह सब साजू ।
चढ़ा बेग सो बोहित पेली ॥ धन वह पुरुष प्रेम पंथ खेली
प्रेम पंथ जो पहुँचे पारा ॥ बहुरै न आय मिलै यहि छारा
तेहि पावा उत्तम कैलासू ॥ जहाँ न मीच सदा सुख बासू ॥

यहि जीवन की आस का जस सपना तिल आध
मुहम्मद जीअहि जो मुये ते पूरुष सिधि साध ॥

जस दिन रैन चलै गज भाँती बोहित चली समुन्द्र की पाँती
धावहिं बोहित मन उपराहीं ॥ सहस कोस एक पल महँ जाहीं
समुन्द्र अपार स्वर्ग जनु लागा स्वर्ग न खाल गिनै बैरागा ॥
तेत खन एक चाल्ह देखराये जनो धौलागिरि परवत आये
उठै हिलोर जो चाल्ह निराजे ॥ लहर अकाश लागि भुईं बाजे

मकान १ रात २ नाम सखी ३-४ पाक साफ़ ५ राह ६ ईमान ७ नाम राजा ८ सखावत ९ सच्चाई १० बदन ११ पहिले १२ राह १३ बहादुर १४ कामिल १५ नाव १६ सामान १७ जल्द १८ जहाज़ १९ मर्द २० राह २१-२२ लौटना २३ मीठा २४ बैकुण्ठ २२ मौत २६ मर्द २७ रात २८ हाथी २९ नाव ३०-३१ हज़ार ३२ आसमान ३३ ऊँचा ३४ नीचा ३५ कायफ़ ३६ नाम जानवर ३७ नाम पहाड़ ३८

राजा सिंघ कुँवर सब कहैं ॥ अस अस मच्छ समुन्द महँ अहैं
तेहि रे पंथ हम चाहत गवना ॥ होहु सञोत बहुर नहिं अवना।

गुरू हमार तुम राजा हम चेला तुम नाथ ॥
जहाँ पाउँ गुरु राखै चेला राखै माथ ॥ ॥

केवट हँसे सुनत को बँजा ॥ समुन्द न जानि कुँवाँ कर मेंजा
यहि तो चाल्ह न लागे कोहू ॥ का कहियो जब देखब रोहू ॥
सो अबही तुम देखे नाहीं ॥ जेहि मुख ऐसे सहस समाहीं॥
राज पंख तेहि पर मंडराहीं ॥ सहस कोस तिन कीपर छाहीं
ते वे मच्छ ठौर गहि लेहीं ॥ सावक मुख चारा ले देहीं ॥
गर्जै गगन पंख जो खोलहिं ॥ डोले समुन्द डहन जो डोलहिं
तहाँ न सूर्य न चान्द असूझा ॥ चढे सोई जो अगमन बूझा ॥

दस महँ इक जाय कोइ कर्म धर्म सत नेम ॥
बोहित पार होय जो तो है कुसल औ खेम ॥

बात कहत भइ देस गुहारी ॥ केवटहि चाल्ह समुन्द महँ मारी
हस्ती साथ सिंह सब ढीला ॥ दौड आय इक चाल्हहि लीला।
केवट लागि लागि सब बली ॥ फिरै न चाल्ह जाय बहि चली
बोहित सहस जाहिं चहुँ ओरा ॥ होय कलोल जाहिं तीर बोरा
सुनि के आप चढा सै राजा ॥ औ सब लोग देस मिलि बाजा
भाल बाम खाँडे दहु पाहीं ॥ ॥ जान पखाल बाज के चढहीं ॥
चारा लील जो मांछ्र बाझी। कहाँ जाय जो जाकर खाँझी ॥

राह १ ज़ाना २ होशियार ३ लौटना ४ मल्लाह ५ बानचीत ६ मेंडुक ७ नामजान-
वर ८ हज़ार ९ सीमुर्ग १० हज़ार ११ पकड़ना १२ बच्चा १३ आसमान १४
नया परमेश्वर की राह १५ दूर मंदेशी १६ नाव १७ खैरियत १८ नाखुदा अर्थात् म-
ल्लाह १९-२४ नामजानवर २०-२३-२६ हाथी २१ ज़ंजीर २२ ज़बरदस्त २५ नाव २७ हज़ार २८
ओर २९ पानी के नीचे ३० फौज ३१ पहुंचना ३२ नक्कार ३३ नामजानना ३४ छुरा -

मांछरकी मूरवहिंहदे तेहि साधे बिय बान ॥
सबहिं पहुंच के मारा चोलहिं तजा परान ॥

जस धौलागिरि परबत होई ॥ | तेही भांति उत्तरान्यो सोई ॥
सबदेस मिलि तैरहिं आना ॥ | लिये कुल्हाडी लोग जहाना ॥
जनु परबत कहं लागहिं चांटी ॥ | लेगये मांस रही सब काटी ॥
मांजरि परी कोस दस बेंडी ॥ | मांजरि कस जस स्वेत बरेडी ॥
नयन सो जानि कोटि की पवरें | कित अस गहें फिरे तेहि भवरें
रतन सेन से संधी कहे ॥ ॥ | अस अस मच्छ समुन्द्र महिं अहें
राजा तुम चाहा तहिं गवना ॥ | होहिं संयोग बहुरि नहिं अवना

तुम राजा औ गुरु हम सेवक औ चेरं ॥ ॥ ॥
कीन्ह चहें सब आयसु अब गवनी तहिं फेर ॥

राजें कहा कीन्ह मो प्रेमा ॥ ॥ | जहां प्रेम कहां कुशल छेमा ॥
तुम खेवा जो खेवहि पारहिं | जैसे आप तरहि मोहि तारहिं ॥
मोहिं कुशल का सोच न आता | कुशल होत जो जन्म न होता ॥
धरती स्वर्ग जांट पर दोऊ ॥ | जो यहि विच जिव राखत कोऊ
हौं अब कुशल एक पै मांगों ॥ | प्रेम पंथ सत बांधि न खांगों ॥
जो सत हियं तो पंथहिं दिया ॥ | समुन्द्र न डरै देखि मरजिया ॥
तहं लगि हेरों समुन्द्र ढंढोरों | जहं लगि रतन पदारथ जोरों ॥

सप्त पतार खोज के काढ़ौं वेद गरंथ ॥ ॥ ॥
सात समुन्द्र चढ़ि धावौं पदमावत जेहि पंथ ॥

पेट १ ज़हर २ नाम जानवर ३ छोड़ना ४ नाम पहाड़ ५ चूरी ६ सफेद ७ आंख ८ क़िले का दरवाज़ा ९ पकड़ना १० जाना ११ होशियार १२ लौटना १३ गुलाम १४ हुकम १५ जाना १६ खेवैयित १७-१८-१९ ज़मीन २० आसमान २१ सकी का पिल २२ एह २३-२६ कमी २४ दिल २५ देखना २७ लाल जवाहिर तथा पदमावत २८ सात पाताल २९ पोथी ३० राह ३१

खंड बारहवां सात समुद्र खंड

सायर तरे हिये सत पूरा ॥ ॥ जो जी सत कायर पुनि सूरा ॥
तहं सब बोहित पूर चलाई ॥ जहं सत पवन परव जनु लाई
सत साथी सत गुरु हम वारु ॥ सत गही ले लावे पारु ॥॥
सती नाक सब आगू पाछू ॥ जहं जहं मगर मच्छ औ काछू
उठे लहर जनु उठे पहाड़ा ॥ चढ़े स्वर्ग औ परे पताला ॥
डोलहिं बोहित लहरें खाई ॥ सहस कोस इक पल महं जाई
राजे सो सत हिरदे बांधा ॥ जेहि सत टेक करु गुर कांधा ॥

खारि समुन्द्र सब नांघा आये समुन्द्र जहं क्षीर
मिले समुद्र वे सातो बेहर बेहर नीर ॥ ॥

क्षीर समुन्द्र का बरनों नीरू ॥ स्वेत स्वरूप पियत जस खीरू
उलटहिं मारिणक मोती हीरा दर्ब देखि मन होय न धीरा ॥
मनो आन चाह दर्ब औ भोगू पंथ भुलाय बिनासे जोगू ॥
जोगी मनहिं ठहीं रस मारहि दर्ब हाथ के समुन्द्र पर्यारहि
दर्ब लेइ जो इहैं राजा ॥ ॥ जो जोगी तेहि के केहि काजा
पंथी पंथ दर्ब रिपु होई ॥ ॥ ठग बटपार चोर संग सोई ॥
पंथी सोई दर्ब सों रूसे ॥ ॥ दर्ब समेट बहुत अस मूसे ॥

क्षीर समुंद्र सब नांघा आये समुद्र दधि माहिं
जो है पंथ क बावर ता तेहि धूप न छांहि ॥

दधि समुंद्र देखत तस दहा ॥ प्रेम का लुब्ध दगध पै सहा

बहादुर १ दिल २ सच्चाई ३ नामर्द ४ नाव ५ हवा ६ मददगार ७ आसमान ८ जहाज़ ९ हजार १० दिल ११ दूध १२ अलग १३ पानी १४ तारीफ़ १५ सफ़ेद १६ दूध १७ राह १८ तैरना १९ क़ायम २० मुसाफ़िर २१ रास्ता २२ राह लूटने वाले २३ राह चलने वाले २४ अर्थात माल वा दौलत पास अपने न रक्खे २५ दही २६ राह २७ दीवाने २८ जलता हुवा २९ आशिक़ ३० आंच ३१

प्रेम जो डाढ़ा धनि वह जीव ॥ दधि जमाय मथि काढ़ै घीव ॥
दधि इक बूंद जामि सब खीरू ॥ कांजी बूंद बिनसि होय नीरू ॥
सांस डाढ़ मन मथनी गाढ़ी ॥ हिये चोट बिन फूट न साढ़ी ॥
जेहि जिय प्रेम चँदन तेहि आगी ॥ प्रेम बिहून फिरै डर भागी ॥
प्रेम की आग जरै जो कोय ॥ ताकर दुख न अंबिरथा होय ॥
जो जानहि सत आपहिं जारा ॥ निसत हिये सत करै न पारा ॥

दधि समुद्र पुनि पार भे पेमहि कहा संभार ॥
भाव पानी सिर परै आव परहिं अंगार ॥

आयउ दधि जल समुद्र अपारा ॥ धरती सरग जरै तेहि झारा ॥
आग जो उपनी ओही समुन्दा ॥ लंका जरी वही एक बुन्दा ॥
बिरह जो उपना ओहि तें गाढ़ा ॥ खिन न बुझाय जगत महँ बाढ़ा ॥
जेहि सो बिरह तेहि आग न डीठी ॥ सौंह जरै फिर देहि न पीठी ॥
जग महँ कठिन खड़ग की धारा ॥ तेहि ते अधिक बिरह की झारा ॥
अगम पंथ जो ऐसे न होई ॥ साथु कहे पावै सब कोई ॥
तेहि समुद्र महँ राजा परा ॥ जरा चहै पै रोवँ न जरा ॥

तलफै तेल कराह जिमि इमि तलफै सब नीर ॥
यह जो मलयगिरि प्रेम का बेधा समुद्र सरीर ॥

सुरा समुद पुनि राजा आवा ॥ महुआ मधु छाता दिखरावा ॥
जो तेहि पिये सो भांवर लेय ॥ सीस फिरै पंथ पैग न देय ॥

जला हुआ १ दही २-३ दूध ४ खटाई ५ पानी ६ रत्ती ७ दिल ८ बाराई ९ मकान १० आयात थान् खराब ११ कमहिम्मत १२ दिल १३ दही १४ नाम समुद्र १५ जमीन १६ आसमान १७ पैदा होना १८ १९ देखना २० सामने २१ दुनिया २२ मुश्किल २३ तलवार २४ ज्यादा २५ जहां कोई न पहुंच सके २६ राह २७ जिस तरह २८ इस तरह २९ पानी ३० चन्दन ३१ मगर ३२ ३३ सिर ३४ राह ३५ कदम ३६

प्रेम सुरा जेहि के जिय माहां । कित बैठे महुवा की छांहां ॥
गुड़ की पास दाँव रस रसा ॥ बैरी बेर मार मन गांसा ॥
बिरहिन दगध कीन्ह तन भाटे । हाड़ जराय दीन्ह जस काठे ॥
नयन नीर सों पोते केंवा ॥ तस मधु चुवै जो जस दिया ॥
बिरह सुरंगें भूंजे मासू ॥ गिर गिर पड़ें रकत के आंसू ॥

मुहम्मद जो प्रेम का हिये दीप नेहि राख ॥
सीस न देइ पतंग ज्यों तब लग चाख न चाख ॥

पुनि किलकिला समुद्र महं आई । गा धीरज देखत डर खाई ॥
भा किलकिल अस उठे हिलोरा । जनु अकास टूटे चहुं ओरा ॥
उठै लहर परबत की नाईं ॥ फिर आवै योजन लख ताईं ॥
धरती लेत स्वर्ग लहि बाढ़ा । सकल समुद्र जानो भा ठाढ़ा ॥
नीर होय तरि ऊपर सोई ॥ महा अरम्भ समुद्र महं होई ॥
फिरत नीर योजन लख ताका । जैसे फिरै कुम्हार का चाका ॥
आपरलै नेरा जब ही ॥ ॥ सो नाकहं पर लै नहीं ॥

गये औसान सबन के देख समुद्र की बाढ़
नीर होत जनु लीन रहा नयन अस काढ़

हीरामन राजा सों बोला ॥ यही समुद्र आय सत डोला ॥
सिंहल दीप जो नाहिं निबाहू । यही ठांउं सांकर सब काहू ॥
यहि किलकिल अस समुद्र गंभीरू । जेहि गुन होय सो पावै तीरू ॥
यही समुद्र पंथ मंझ धारा । खांडे की अस रैख हजारा ॥

आब १ कौंका २ चंगूर ३ बेरनाम मेवा फ़स्ली ४ लेजा ५ गर्म ६ भट्टी ७ आंख ८ आंसू ९ बदन १० शराब ११ सीस १२ खून १३ दिल १४ सिर १५ पांखी १६ नाम समुंद्र १७ आसमान १८ सब १९ पानी २० और २१ चमला- ख कोस २२ क़यामत २३-२४ हवास २५ आंख २६ नाम नौका २७ बदहवास २८ जगह २९ मुशकिल ३० नाम समुंद्र ३१ गहरा ३२ किनारा ३३ राह ३४

तीस सहस[1] कोसन की बाटा । अस सांकर चलि सकै न चाटा ।
खांड़े[2] चाहि पैन[3] पैनाई ॥ बार[4] चाहि पातर पतराई ॥
वही पंथ[5] सब काहू जाना । होय दूसरे बिसवास निदाना[6] ।

मरन जियन यहि पंथ[7] हियही आसे निरास[8] ।
पड़ा सो गयो पतारहि तरा सो गा कैलास[10] ॥

राजैं दीन्ह कटक[11] कहं बीरा ॥ सपुरुष[12] होहु करहु मन धीरा ॥
ठाकुर जेहिक सूर[13] भा कोई ॥ कटंक सूर पुनि आपहिं होई
जौं लहि सती न जिय सत बांधा । तौ लहि देइ कहार न कांधा ॥
प्रेम समुद्र महं बांधा बेरा ॥ यहि सब समुद्र बूंद जेहि केरा ॥
नाहीं स्वर्ग[14] न चाहौं राजू ॥ ना मोहिं नरक सि तें कुछ काजू
चाहौं वह कर दरसन पावा ॥ जेहि मो आन प्रेम पंथहि[15] लावा
काठ काहि गाढ़ का ढीला ॥ बूड़ न समुद्र मगर नहिं लीला

कीन्ह समुद्र अस लीन्हिसि भा पाछे सब कोय
कोइ काहू न सम्भारे आपन आपन होय ।

कोइ बोहित[18] जस पवन[19] उड़ाहीं ॥ कोई चमक बीज[20] पर जाहीं ॥
कोई भल जस धाव तुखारू[21] ॥ कोइ जैस बैल गरियारू[22] ॥
कोई हरू[23] जानि रथ हांका ॥ कोई गरु पहाड़ भा थाका ॥
कोई रेंगहि जानहु चांटी[24] ॥ कोई टूटि होहिं सर माटी ॥
कोई खाय पवन[25] कर झोला ॥ कोई गिरहि पात ज्यों डोला ॥
कोई परहिं भंवर जल माहीं ॥ फिरत रहहिं कोइ दिये न बाहीं
राजा कर भा आगमन[26] खेवा ॥ खेवक[27] आगे सुवा परेवा ॥

यह १-५-१६ तलवार २ ज्यादा ३ पानी ४ नादान ६ रास्ता ७ उम्दा ८ नाउमेद ९ नाम बैकुण्ठ १० फ़ौज ११ क़ायम १२ बहादुर १३-१४ बैकुण्ठ १५ श्री कृष्णचन्द्रजी १७ नाव १८ हवा १९ बिजुली २० घोड़ा २१ भारी २२ हलकी २३ चूंटी २४ हवा २५ आगे २६ मल्लाह २७

कोइ दिन मिला सबेरें कोइ आवा पछराति ॥
जाकर हुत जस साजु सो उतरा तेहि भाँति ॥

सातें समुद्र मानसर आये ॥ सत जो कीन्ह स हैस सिधि पाये ॥
देखि मानसर रूप सुहावा ॥ हियें हुलास पुरइन होय छावा ॥
गा अँधियार रैन मसि छूटी ॥ भा भिनुसार किरन रवि फूटी ॥
अस्ति अस्ति सब साथी बोले ॥ अन्ध जो अहे नैन विधि खोले ॥
कमल बिकसि तस बिहँसी देही ॥ भँवर दसन होय होय रस लेही ॥
हँसहि हँस औ करहि कुरेरा ॥ चुनहि रतन मुँ ताहल हेरा ॥
जो अस आव साधि तप योगू ॥ पूजी आस मान रस भोगू ॥

भँवर जो मन्सा मानसर लीन्ह कमल रस आय ॥
घुन जो हियाव न कै सका भूर काठ तस खाय ॥

खंड तेरहवाँ सात समुद पार भाव सिंहलदीप खंड

पूछा राजे कहु गुरु सुवा ॥ न जनों आज कहाँ दिन उवा ॥
पवन बास सीतल ले आवा ॥ कया दहत चन्दन जनु लावा ॥
कबहुँ न ऐसो जुड़ान सरीरू ॥ पड़ा अगिन महँ जानहु नीरू ॥
निकसत आव किरन रवि रेखा ॥ तिमिर गई निरमल जग देखा ॥
उठे मेघ अस जानहु आगे ॥ चमके बीज गँगन पर लागे ॥
तेहि ऊपर जनु ससि परकासा ॥ औ सो गँ चौचहं भया गिरासा ॥

सामना १ नाम तालाब जिसमें हंस रहता है २-४ हज़ार तरह की आराम ३ दिल ५ खुश ६ कमल ७ लाल ८ सियाही ९ सूर्य्य १०-२८ वाह-वाह ११ आंख १२ ईश्वर १३ खिलना १४-१५ कुलेल करना १६ जवाहिर जिसकी पैदाइश खान से होती है १७ मोती १८ हिम्मत बाँधना १९ नाम तालाब २० दिलेरी करना २१ हवा २२ ठंढी २३ बदन २४-२६ जलना २५ पानी २७ अँधियारा २८ पाक साफ़ ३० दुनिया ३१ बिजुली ३२ आसमान ३३ चांद ३४ रोशनी ३५ छोरे नखत ३६

और नखत चहुं दिस उजियारी ॥ ठावेहिं ठावं दीप अस बारी ॥

और दरिबन दिस नेरें कंचैन मेरु दिखाउ ।

जैसे बसंत रितु आवे तैसि बास जग आउ ॥

तुइं राजा जस बिक्रम आदी ॥ तुइ हरिचन्द बैन सत बादी ॥

गोपिचन्द तुइ जीता योगा ॥ औ भरथरी न पूज बियोगा ॥

गोरख सिद्धि दीन्ह तुहि हाथू ॥ तारी गुरु मुछन्दर नाथू ॥

जीति प्रेम तुइं भूंसि अकासू ॥ दृष्टि परा सिंहल कैलासू ॥

बेओ मेघ गढ़ लागि अकासा ॥ बजरी कटी कोटि चहुं पासा ॥

और नखत बहि के चहुं पासा ॥ सब रानिन की अहें उडांसा ॥

तेहि पर ससि जोग चहें चहि भरा ॥ राज मंदिर सोने नग जरा ॥

गगन सरोवर सहस कमल कुमुद तराई पास ।

तुइं रबि उवा भंवर होय पवन मिला ले बास ॥

सो गढ़ देखि गगन ते ऊंचा ॥ नयन देख कर ज्ञान न पहुंचा ॥

बिजरी चक्र फिरे चहुं फेरे ॥ औ जम काल फिरहिं यम घेरे ॥

धांय जो बांजा किये मन साधा ॥ मारा चक्र भयो दुइ आधा ॥

चांद सूर्य्य औ नखत तराई ॥ तेहि डर अंतरिख फिरे सबाई ॥

पवन जाय तहं पहुंचा चहा ॥ मारा तैसा लोटि भुइं रहा ॥

अगिन उठै जरि बुझै नियाना ॥ धुवां उठा उठि बीच सिलाना ॥

पानी उठा उठि जाय न छुवा ॥ फिरा रोय आय भुइं चुवा ॥

चारों तरफ़ १ हर जगह २ सोना ३ नाम पहाड़ ४ दुनिया ५ राजा विक्रमा-जीत ६ नाम राजा ७ सच बोलने वाला ८ नाम राजा ९-१० दुखी ११ नाम योगी १२-१३ ज़मीन १४ निगाह १५ क़िला १६ बुर्ज १७ महल १९ चांद २० छोटे नखत २१ आसमान २२ तालाब २३ हज़ार २४ कोका बेली २५ नखत २६ सूर्य्य २७ हवा २८ आसमान २९ आंख ३० बिजुली ३१ गैंद ३२ यमराज ३३ दौड़ना ३४ पहुंचना ३५ बीचोबीच ३६ सब ३७ नाहान ३८

गवन चहा सोहि के हेरा उतर दसो गये साथ ॥
शंकर धरा लैलाट मुड़ और को योगी नाथ ॥

तहाँ देव पद्मावत रामा ॥ ॥
भवर न जाय न पर वैनासा ॥
अबु सिख एक देउं तुहि योगी ॥
पहिले दरसन होय तो भोगी ॥
कंचन मेरु दिखावे जहाँ ॥
महादेव कर मंडफ तहाँ ॥
वह खंड जस परवत मेरू ॥
मेरुहि लाग होय तस फेरू ॥
माघ मास पाछल पख लागे ॥
श्री पंचमी होय यहि आगे ॥
उघरे महादेव कर बारू ॥
पूजन जाय सकल संसारू ॥
पद्मावत पुनि पूजन आई ॥
हैहै वह दिन दृष्टि मिराई ॥

तुम गवने वह मडफ कहहो पद्मावत पास
पूजे आय बसंत जो पूजे मन की आस ॥

राजे कहा दरसन जो पाऊं ॥
परवत काहि गगन कहं धाऊं
जेहि परवत पर दरसन लीन्हा
सिर सों चढ़ो पाय का कीन्हा
मोहि सो भावे ऊंचे ठाऊं ॥
ऊंचे लेवो प्रीतम नाऊं ॥
पुरुष चाहिय ऊंचहि याऊं ॥
दिन दिन ऊंचे राखे पाऊं ॥
सदा ऊंच पै सेये बारू ॥
ऊंचे सें कीजे व्योहारू ॥
ऊंचे चढ़ै ऊंच खंड सूझा ॥
ऊंच पास ऊंच मति बूझा ॥
ऊंचे संग संगत नित कीजे ॥
ऊंचे लाय जीव बलि दीजे ॥

दिन दिन ऊंच होय सो जेहि ऊंचे पर जाव
ऊंच चढ़ै जो खसि पड़े ऊंच न छाड़े काव

नीचे संग नित होय निचाई
जैसे हंस काग की नाई ॥
नीचे कबहुं न होय भलाई ॥
नीचे सों पर होय बुड़ाई ॥

सामने १ देखना २ सिर ३ उड़नेवाले जानवर ४ सलाह ५ सोने का पहाड़ ६
८-९ वीहड़ ७ दरवाज़ा १० सब ११ दीदार १२ जाना १३ आसमान १४
जगह १५ मर्द १६ हिम्मत १७ दरवाज़ा १८ हमेशा १९-२१ कुरबान २० गुमनामी

नीच न कबहूं जिय महं तांके[1] । नीच नहीं कबहूं मुख भाखे[2]
नीच न कबहूं आंवे काला ॥ नीचे चहे न एको लाजा ॥
नीचें का संग कबहूं न कीजे । नीचे पंथ[3] पाउं नहि दीजे ॥
नीचें नहिं कीजे ब्योहारू ॥ नीच न कबहूं दीजे भारू[4] ॥
नीचे केर न कीजे साथा ॥ नीचे गंहे[5] कुछु आव न हाथा

होय नीच नहिं कबहू जेहि ऊंचे मन भाउ
नीच ऊंच ते हंसी नीचे केर सुभाउ ॥

हीरो[6] मन दे बचा कहानी ॥ चला जहां पद्मावत रानी ॥
राजा चला संवरि[7] सो लंता[8] ॥ परबत कहं जो चला परबंता ॥
का परवत चढ़ि देखे राजा ॥ ऊंच मडफ सोने सब सांजा[9] ॥
अमृत फर सब लागि अपूरे ॥ औ तहं लागि सजीवन मूरे[10] ॥
चौमुख[11] मंडफ चहूं के वारा ॥ बेठे देवता चहूं दुवारा ॥
भीतर मंडफ चार खम्भ लागे ॥ जेहिं वे छुवे पाप तेहि भागे ॥
संख घंट नित[12] बाजहिं सोई ॥ औ बहु होम जाप तंह होई ॥

महादेव कर मडफ संकल[13] याचा आव
जस इच्छा मन जेहि की सो तैसी फल पाव ॥

खंड चौदहवां गवन मंडफ खंड राजा रतन सेन ॥

राजा बावर बिरह बियोगी ॥ चेला सहंस तीस[15] संग योगी ॥
पद्मावत की दरसन आसा ॥ दंडवत कीन्ह मंडफ चहुंपासा
पूर्ब द्वार[16] होय के सिर नावा ॥ नावत सीस[17] देव पुनि आवा
नमो नमो नारायण देवा ॥ का मे जोग सकों के सेवा[18] ॥
तुड दयाल[20] सब के ऊपर[21] आही ॥ सेवा केर आस[22] तुहि नाही

ख़याल करना १ मुंह से बोलना २ राह ३ बोझ ४ पकड़ना ५ नाम तोता ६
कौल ७ बन ८ तोता ९ सामान १० नाम बूटी ११ चार १२ हमेशा १३ सब-
१४ दुखी १५ हज़ार १६ दरवाज़ा १७ शिर १८ ख़िदमत १९ दयाकरनेवाला २२

छापा १० नम्बर २२

ना मोहिं गुन[१] न जीभ रस बाना	तुइ दयाल[२] गुन[३] निरगुन[४] दाता ॥
पुरवहु मोर दरस की आसा ॥	हौं मारग[५] जो धरौं स्वांसा ॥

तेहिं विधि विनय[६] न जान्यों जेहिं बिधि अस्तुति तोर
कर सुदृष्टि[७] औ कृपा इच्छा पूजै मोर ॥ १ ॥

के अस्तुति जो बहुत मनावा ॥	शब्द[८] को ऊठि मंडफ महं आवा
मानुस प्रेम भयो बैकुण्ठी ॥	नाहित काहि छार[९] एक मूठी ॥
प्रेमहि माहिं बिरह रस रसा ॥	प्रेम को घर मधु अमृत बसा
नहिं[११] धाय जो मरै तो काहा ॥	सत जो करै बैठि नहिं लाहा[१२] ॥
एक बार जो मन दै सेवा ॥	सेवहि फल प्रसन्न होइ देवा ॥
सुनि के शब्द[१४] मंडफ झंकारा	बैठा आय पुरब के द्वारा ॥
पिंड[१५] चढ़ाय छार[१६] जित आंटी	माटी होय अन्त जो माटी ॥

माटी मोल न कछु लहै औ माटी सब मोल
दृष्टि जो माटी सों करै माटी होय अमोल ॥

बैठि सिंह छाला होय तपा ॥	पद्मावत पद्मावत जपा ॥
दृष्टि[१८] समाधि वही सों लागी	जेहिं दरसन[१९] कारन बैरागी ॥
किंगुरी[२०] गहे बजावे झूरी ॥	भोर सांझ सुनि के नित पूरी
कंथा[२१] जरे आगिन जनु लाये	बिरह धंधार[२२] जरत न बुझाये
नयन[२३] राति[२४] निसि[२५] मारग[२६] जागे	चख[२७] चकोर जानु ससि[२८] लागे
कुण्डल गहे[२९] सीस[३०] भुंइ लावा	पांवर[३१] होउं जहां वै पावा ॥
जटा छोर के बार[३२] बहारौं ॥	जेहिं पंथ[३३] आव सीस तहं वारौं[३४]

हुनर १ दया करने वाला २ दाता ३ नादान ४ अर्थात उसी राह का दम बदम ढूंढने वाला हूं ५ तारीफ़ ६ निगाह अच्छी ७ आवाज़ ८ माटी ९ शराव १० बदराह ११ फ़ायदा १२ खुश १३ आवाज़ १४ बदन १५ बिभूत १६ निगाह १७-१८ वास्ते १९ पकड़ना २०-२१ हरीज़ २१ गुदड़ी २२ जंगल २३ आंख लाल २४ रात २५ राह २६ आंख २७ चांद २८ सिर ३० ३४ खडाउं ३१ दरवाज़ा ३२ एह ३३ न्योछावर

चारहु चक्र फिरे मन खोजत डंडे न रहू थिर बार ॥
होयके भस्म पवन संग धाऊं जहां सो प्रान अधार

पद्मावत तहं योग संजोगा ॥ परी प्रेम बस गहे बियोगा ॥
नींद न परी रैन जो आवे ॥ सेज केवांच जानु कोइ लावे ॥
दहे चन्द औ चन्दन चीरू ॥ दगध करे तन बिरह गंभीरू ॥
कल्प समान रैन ही बाढ़ी ॥ तिल तिल भर जुग जुग पर गाढ़ी
गहे बीन मकु रैन बिहाये ॥ ससि वाहन तिन रहे उनाये ॥
पुनि धुन संग ओर ही लागे ॥ ऐसी बिथा रैन सब जागे ॥ ॥
कहां सो भंवर कमल रस लेवा आय परी होय घरेल परेवा ॥

सो धनि बिरह पतंग भई जरा चहै तेहि दीप ॥
कंत न आव भृंग होय को चन्दन तन लीप ॥

परी बिरह बन जानो घेरी ॥ अगम असूझ जहां लग हेरी ॥
चहुं दिसा चितवे जनु भूली ॥ सो बन कौन जो मालति फूली ॥
कमल भंवर ओही बन पावे ॥ को मिलाय तन तपन बुझावे
अंग अंग अस कमल सरीरा ॥ हिये भा पियर प्रेम की पीरा ॥
चही दरस रवि कीन्ह बिकासू भंवर दिष्टि मन लाग अकासू
पूंछे धाय बारि कहु बाता ॥ तुई जस कमल करी रंग राता ॥
केसर बरन रंग भा तोरा ॥ ॥ मानो जनहिं भयो कुछ फोरा

पवन न पावै संचरी भंवर तेहां नहि बैठ ॥ ॥
भूलकुरंगिन कस भई जानु सिंह तुई डीठ ॥

चारों तरफ़ १ घड़ी २ क़ायम ३ हवा ४. अर्थात फ़क़ीरी का हाल ५ लेना ६ दुख ७ रात ८ जलना ९. ११ कपड़ा १२ भारी १२ बराबर १३ तिल के बराबर कम और ज़रन से ज़्यादा १४ पकड़ना १५ शायद १६ आख़िर १७ हिरन चांद के रथ का १८ हमेशा १९ आवाज़ २० कबूतर २१ पद्मावत २२ खाविंद २३ मुश्किल २४ हेरना २५ दिल २६ सूर्य २७ खिलना २८ निगाह २९ लौंडी ३० लड़की ३१ लाल

धाय सिंह पर खात्यो मारी ॥	की तस रहत अहै जस बारी ॥
जोबन सुनो कौन बेल बसंतू	तेहि बन परा हस्ति मैमंतू ॥
अब जोबन बारी को राखा ॥	कुंजर बिरह बिधांसे साखा ॥
मैं जानों जोबन रस भोगू ॥	जोबन कठिन संताप वियोगू ॥
जोबन गरुवा पेल पहारू ॥	सहि न जाय जोबन कर भारू
जोबन अस मनमंत न कोई	नवे हस्ते जो आंकुस होई ॥
जोबन भरि भादों जस गंगा ॥	लहरें देई समाय न अंगा ॥

परयो अथाह धाय हौं जोबन उदधि गंभीर

तहं चितवों चारहु दिस कोगहि लावे तीर

पद्मावत तुई समुद्र सयानी ॥	तुहि सरि समुद न पूजी रानी
नदी समाय समुद्र महं आई	समुद्र डोलि कहु कहां समाई
अबही कमल करी हिय तोरा	अई है भंवर न तो कह जोरा ॥
जोबन तुरी हाथ गहि लीजे ॥	जहां जाय तंह जाय न दीजे ॥
जोबन जोर मातं गज अहे ॥	गहहु ज्ञान अंकुस जिमि रहे
अबहिं बारि तुई प्रेम न खेला	का जानिस कस होय दहेला
गगन दृष्टि कर पाय तराहीं ॥	सूर्य देख कर आवत नाहीं ॥

जब लगि पीउ मिले तुहि साधि प्रेम की पीर

जैसें सीप स्वाति कहं तपे समुद्र मंझ नीर

दहन धाय जोबन औ जीव ॥	जानहु परा अगिन महं घीव
करवट सहों होन दुइ आधा ॥	सही न जाय बिरह कर दाहा
बिरह समुद्र बिसहर अस भारा	भंवर मेल जिव लहर न मारा

शेर ने बचा मारा है १ अर्थात् लड़काई में केसी थी २ तथा ३ हाथी मस्त ४-६ बागीचा ५ मुशकिल ७ दुख ८ बोझ ९ मस्त १० हाथी ११ समुद्र गहरा १२ चारों तरफ़ १३ पकड़ना १४ किनारा १५ बराबर १६ दिल १७ घोड़ा १८ जवानी १९ मस्त हाथी २० लड़की २१ भारी २२ आसमान २३ नज़र ३० चीव २५ पानी २६ जलना २७ दया २८

बिरह नाग होय सिर चढ़ डसा ॥ वही अगिन्न चन्दन महं बसा

जोबन पंखी बिरह बियाधू ॥ केहर भयो कुरंगिन खाधू ॥

कनक पानि कित जोबन कीन्हा औटन कठिन बिरह वह दीन्हा

जोबन जलहि बिरह मसि छुवा भू लहि भवर फिरहि मा सुवा

जोबन चन्द उवा जस बिरह भयो संग राहु ॥
घटतहि घटत खीन भय कहे न पारों काहु ॥

नयन जो चक फिरे चहुं ओरा चरचीं धांय समाय न कोरा ॥

कहिस प्रेम उपत्ती जो बारी ॥ बांधि सत्त मन्न डोलन भारी ॥

जेहि जिय मन्नहिं सत्त होय भारू परे पहार न हि बांके बारू ॥

सती जो जरी प्रेम पै लागी जो सत हिये तो सीरल आगी

जोबन चांद जो चौदह से करा बिरह की चिनगा सो पुनि जरा

पवंन बन्ध सो जोगी जत्ती ॥ काम बन्ध सो कौमिन सत्ती

आव बसंत फूल फुलवारी ॥ देव बार सब जेहहिं बारी ॥

तुम पुनि जाहु बसंत लै पूज मनावहु देव ॥
जिव पाये जग जन्म है पिय पाइ कै सेव ॥

जब लग अवध आय नेराई ॥ दिन जुग जुग बिरहिन कहं जाई

नींद भूख निस दिन गइ दोऊ ॥ हिये माझ जस कलपे कोऊ

रोंय रोंय जनु लागहिं चांटे ॥ सूत सूत बेधे जनु कांटे ॥॥

दगध कराह जरे जस घीव ॥ बेगि न आव मैलीगिरि पीव ॥

कौन देव कहं जाय परोसों ॥ जेहि सुमेरु हियें लाय गिरासों

परदार जानवर १ बहेलिया २ शेर ३ हिरन ४ खाना ५ सोना ६ पानी ७ मुशकिल ८ सियाही ९ तोता १० बारीक ११ कहि नहीं सकता १२ आंख १३ दाया १४ पैदा होना १५ लड़की १६ दिल १७ ठंढा १८ चांद चौदही के बराबर १९ हवा २० औरत २१ दरवाज़ा २२ लड़की २३ गुलसमन २४ हद २५ रात २६ चूंटी २७ सूराख २८ गरम २९ जल्द ३० चन्दन ३१ पूजन ३२ नाम पहाड़ ३३ दिल ३४

गुप्त जो फल सो सहि परगटें ॥ अब होय सुख चहहिं हम घटें
भइ संयोग जुरा अस मरना ॥ भूलहिं गई भोग का करना

जोबन चंचल ढीठ है करै न कीजै काज ॥
धन कुलवंत जो कुल धरै की जीवन सब लाज

तेहिं बियोग हीरामन आवा ॥ पद्मावत जानहु जिव पावा ।
कंठ लगाय सुआ सों रोई ॥ अधिक मोह जो मिले बिछोई
आग उठी दुख हिये गंभीरू ॥ नयनहिं आय चुवा होय नीरू
रही रोय जब पद्मिन रानी ॥ हंसि पूंछहिं सब सखी सयानी
मिले रहस भा चाहिं दूना ॥ किन रोई जो मिले बिछोना
तेहिक उतर पद्मावत कहा ॥ बिछुरन दुख जो हिये भर रहा
मिलत हिये आये सुख भरा ॥ वह दुख नयनै नीर होय ढरा ॥

बिछुरंता जब भेटे सो जानै जेहि नेह ॥
सुख सुहेला उगवै दुख झरै जिमि मेह ॥

खंड पद्मावती मुलाकात खंड पद्मावत और हीरामन

पुनि रानी हंसि कुशल पूछा ॥ कित गवनेहि कै पिंजर छूछा
रानी तुम युग युग सुख पाटू ॥ छाज न पंखी पिंजर ठाटू ॥
जो भा पंख कहां थिर रहना ॥ चाहि उड़ा पंख जो डहना ॥
पिंजर महं जो परेवा घेरा ॥ आय मंजार कीन्ह तहं फेरा
दिवसक आय हाथ पै मेला ॥ तेहिं डर बनो बास कहं खेला
तहां जाय व्याध भर सांधा ॥ छूट न पाव मींच कर बांधा
वे धर बेचा बाह्मन हाथा ॥ जंबूदीप गयो तेहि साथा ॥

छिपा १ जाहिर २ हर पल में भरा है कि दम बदम घटती है ३ मुलाकात ४ काम वाला ५ दुख ६ नाम मौता ७-८ बहुत पियार ९ बिछुड़ा हुआ १० दिल ११ भारी १२ आंसू १३ पानी १४ खुशी १५ जवाब १६ दिल १७-१८ आंसू १९ मुहब्बत २० इस तरह २१ बादल २२ खैरियत २३ कहाँ २४ तरह २५ सोहना २६ आनन्द पाइ २७-३० कायम २८ बाजू २९ बिल्ली ३१ एक दिन ३२ जाना

तहां चित्र चित्तौर गढ़ चित्रसेन कर राज ॥
टीका दीन्ह पुत्र कहं आप लीन्ह शिवसाज ॥

बैठि जो राज पिता कर ठाऊं ॥ राजा रतनसेन वह नाऊं ॥
का बरनो धन देस दुवारा ॥ जहं अस नग उपना उजियारा ॥
धनि माता औ पिता बखाना ॥ जेहि के बंस अंस अस आना ॥
लक्षन बतीसो कुल निरमला ॥ बरणि न जाय रूप औ कला ॥
वै हों लीन्ह अहा अस भागू ॥ चाहै सोने मिला सुहागू ॥
सु नग देख इच्छा भई मोरी ॥ है यह रतन पदारथ जोरी ॥
है ससि योग यही पै भानू ॥ तहं तुम्हार मैं कीन्ह बखानू ॥

कहां रतन रतना गढ़ कंचन कहां सुमेर ।
दई जो जोरी दुहूं लिखी मिली सो कौन हि फेर ॥

सुनि के बिरह चिनग वह परी ॥ रतन पाव जो कंचन करी ॥
कठिन प्रेम बिरहा दुख भारी ॥ राज छांड़ि भा योगि भिखारी ॥
मालति लाग भंवर जस होय ॥ होय बावर बिसरा बुध खोय ॥
कहेसि पतंग होय रस लेऊं ॥ सिंहल दीप जाय पग देऊं ॥
पुनि वह कोउ न छांड़ अकेला ॥ सोरह सहस कुंवर भय चेला ॥
और गिने को संग सहाई ॥ महादेव मढ़ मेला जाई ॥
सूर्य पुरुष दरसन की ताई ॥ चितवे चन्द चकोर की नाई ॥

तुम बारी रस जोग जहि कमल हि जस अरघान ।
तस सूर्य परकास कै भंवर मिलायो आन ॥

होरों मन जो कही यहि बाता ॥ सुनि के रतन पदारथ राता ॥

तसवीर १ राजतिलक २ मरना ३ बाप ४ जगह ५ तारीफ़ ६ पैदा होना ७ अक़बालवाला ८ पाक साफ़ ९ बयान करना १०-१५ उसका मालिया हुआ ११ जवाहिर लाल १२ चांद १३ सूर्य १४ सोना १५ सोने की अंगूठी १७ मुशाकिल १८ दीवाना १९ क़दम २० हज़ार २१ फ़ौज २२ मर्द २३ लड़की २४ औज़यगा २५

जैसे सूर्य देख होय ओपा ॥ तस भा बिरह कामदल कोपा

सुनि के योगी केर बखानू ॥ पद्मावत मन भा अभिमानू ॥

कंचन करी न कांचहि लोभा ॥ जो नग जड़ होय तस सोभा ॥

कंचन जो कसिये के ताता ॥ तब जानै वह पीत कि राता

नग कर मर्म सो जड़िया जाना ॥ जड़े जो अस नग हेरि बखाना ॥

को अस हाथ सिंह मुख घालै को यह बात पिता सों चालै ॥

स्वर्ग इन्द्र डर कांपै बासुक डरै पतार ॥।

कहं ऐसो वर प्रथमी माहिं योग संसार ॥।

तुइं रानी ससि कंचन कला वह नग रत्न सूर निरमला ॥

बिरह बिजोग बीज गा कोई ॥ आग जो छुवै जाय जर सोई ॥

आग बुझाय धूय जल गाढ़ै वह न बुझाय आग अति बाढ़ै॥

बिरह की आग सूर जर कपा ॥ रातहि दिवस जरै औ तपा ॥

खनहि स्वर्ग खन जाय पतारा थिर न रहै यहि आग अपारा ॥

धनि सुजीव दगधइमि सहा ॥ ऐसो जरै दूसर नहिं कहा ॥

सुलग सुलग भीतर होय स्यामा प्रगट होय नहिं काढ़ै नामा

काह कहों ओही सो जो दुख कीन्हनि मेट।

तेहि दिन आग करै यह बाहर जेहि दिन होय सुभेट

सुना जो अस धनि जरा काया नन भा सांचै नैयन भा मेया

देखौं जाय जरै जस भानू ॥ कंचन जरै अधिक होय बानू

उदय होना १ गुस्सा करना २ तारीफ ३ १० ग़रूर ४ सोने की अंगूठी ५ पीला ६ लाल ७ भेद ८ देखना ९ शेर ११ बाप १२ आसमान १३ नागराजा सांपों का १४ स्वर्गेन्द्र १५ जमीन १६ चन्द्रमा १७ सूर्य १८-२१ पाकसाफ १९ आग २० दिन २२ कभी २३ कायम २४ तपिश अर्थात् जलन २५ इसतरह २६ सियाह २७ ज़ाहिर २८ औरत अर्थात् पद्मावत २९ बदन ३० सांचा ३१ आंख ३२ आंसू ३३ सूर्य ३४ सोना ३५ कुन्दन ३६ रंग ३७

अब जो जरै[1] सो प्रेम बियोगी । हत्या मोहिं[2] जेहि कारन योगी ॥
हीरामन सो कही रस बाता ॥ सुनि के रतन[3] पदारथ राता ॥
योगी योग संभारहि छाला ॥ देहों भुक्ति[4] देहों जैमाला ॥
आव बसंत कुसल सो पाऊं ॥ पूजा मिस मंडफ कहं आऊं ॥
गुरु के बचन फूल हिय[5] गाथे ॥ देखों नयन[8] चढ़ाऊं माथे ॥

कमल बरन[6] तुम बरना मैं माना पुनि सोय ।
चांद सूर्य्य कहं चाही जोरी सूर्य्य वह होय ॥

हीरामन[10] जो कही रस बाता ॥ पाय पान भयो सुरख[11] राता ॥
चला सुवा तब रानी कहा ॥ भा जो पराउ सो कैसे रहा ॥
जो नित[12] चलै संवारहि पारवा ॥ आज जो रहा कालि को राखा ॥
ना जनों आज कहां दिन उआ ॥ आयहि मिस लै चलहि मिल सुवा[13] ॥
मिल के बिछुर मरन की आना[14] ॥ कित[15] आयहु जो चलहि निदाना[16] ॥
अनरानी[17] जो रहतो रांधा[18] ॥ कैसे रहों[19] बचन कर बांधा ॥
ताकर दृष्टि[20] ऐसो तुम्ह सेवा ॥ जैसे कुंज[21] मन सेज परेवा ॥

बसै मीन[22] जल धरती[23] अंबा बसै अकाश[24] ।
जो प्रीति पै दोउ मंह अंत[25] होहिं एक पास ॥

आवा सुआ बैठि जहं योगी ॥ मारग[26] नयन[27] बियोग[28] बियोगी[29] ॥
आय प्रेम रस कहा संदेशू ॥ गोरख[30] मिला मिला उपदेशू[31] ॥
तुम कहं गुरु मया[32] बहु कीन्हा । कीन्ह अदेस[33] आव कहं दीन्हा ।
शब्द[34] एक होय कहा अकेला । गुरु जस भृंगी[35] पतंग[36] जस चेला ।

दुखी १ सबब २ जवाहिर ३ सुरख ४ जिसके गले में पड़े उसी के साथ शादी हो ५ बहाना ६ दिल ७ आंख ८ रंग ९ नाम तोता १० लाल ११ हररोज़ १२ तोता १३ बराबर १४ कहां १५ जल्द १६ ऐ रानी १७ नज़दीक १८ कौल १९ निगाह २० नामज़ानवर परंद २१ मछली २२ ज़मीन २३ पानी २४ आख़िर २५ राह २६ आंख २७ जुदाई २८ दुखी २९ नाम फ़कीर ३० नसीहत ३१ मेहरबानी ३२ सलाम ३३ बात ३४ नाम

भृंगी ओही पंख पै लेई ॥ एकहि बार चैहि जिव देई ॥
ताकहं गुरु मैया भल कीन्हा नव अवतार जानो दीन्हा ॥
होय अमर असमर कै जिया भंवर कमल मिलिके मधुपिया

आवे ऋतु बसंत जब तब मधुकर तब बास
योगी योग जो इमि सहै सिद्धि समापत नास ॥

खंड सोलहवां बसंत खंड

दई दई कर सुरति गंवाई ॥ श्री पंचमी पूजी आई ॥
भयो हुलास नवल ऋतु माहां क्षण न सुहाय धूप औ छाहं
पद्मावत सब सखी हंकारी ॥ जाने वंत सिंहल की बारी ॥
आज बसंत नवल ऋतु राजा पंचम होय जगत सब साजा
नवल सिंगार बनो हन कीन्हा सीस परोसहिं सेंदुर दीन्हा ॥
बिकसे कमल फूल बहु बासा भंवर आय लुब्धे चहुं पासा
पियर पात दुख भरे निपैते ॥ सुख पलहा उपैनी होय रांते ॥

अवध आय सो पूजे जो इच्छा मन कीन्ह ।
चलहु देव मढ़ गोहने चहो सो पूजा दीन्ह ।

फिरे आन ऋतु बाजन बाजे ओ सिंगार बारिह सब साजे ॥
कमल करी पद्मावत रानी ॥ होय मालति जानो बिगसानी
नारी मन्द पहिर भल चोला भरी सीस सब नखत असोला
सखी कुंमोद सहस दस संगा ॥ सबै सुगन्ध चढ़ाये अंगा ॥
सब राजा रायन की बारी ॥ बैरन बरन पहिरे सब सारी ॥
सबै सरूप पद्मिनी जाती ॥ पान फूल सेंदुर सब रांती ॥

नाम कीड़ा १ पांखी २ मेहरबानी ३ नया जन्म ४ अकिल ५ हमेशा ज़िंदा ६ भंवरा ७ हूसतरह ८ कामिल ९ खुशी १० नया ११ बुलाना १२ जहां तक १३ लड़की १४-१५-३४ दुनिया १५ नया १६ दरख़्त १७ सिर १८ छोरव १९ खिलना २०-२८ लिपटना २१ झरना २२ पैदा २३ लाल २४ हद २५ साथ २६ नाम कपड़ा २८ सिर ३० को कादे लीउ १

...सा ३४ बटा ३३ आंखों ३५ लाल ३६

करैं कलोल सुरंग रंगीली ॥ औ चोवा चन्दन सब रेली

चहुं दिस रही बासना फुलवारी अस फूल
वे बसन्त सों फूली गा बसन्त वहि भूल

भई अहा पदमावत चली ॥ छत्तिस कुरि भई गोहन भली
भई गौरी संग पहिर पटोरा बाम्हनि आय सहस अंग मोरा
अग्रवारि गज गवन करेई ॥ बैसि पांव हंस गत देई ॥ ॥
चन्देलिन ठमकहि पगढारा । चलि चौहान होय झनकारा
चली सुनारि सुहाग सुहाती । औ कलवारि प्रेम मधु माती ॥
बानिन चली सिंदुर दिये मांगा कैथिन चली समायन आंगा
पटिवनि पहिर सुरंग तन चोला औ बरइन मुख खात तमोला

चली पवन संग गोहने फूल डार लिये हाथ
बिस्व नाथ की पूजा पदमावत के साथ ॥

ठठेरिन बहु टाट रकीन्ही ॥ चली अहीरिन काजर दीन्ही
गूजरि चली गोरस की माती ॥ बइ यनि चली भाग की ताती
चली लुहारिन बांकी नैना ॥ भाटिन चली मधुर अति बैना
गन्धिन चली सुगन्ध लगाये छीपिन चली सो चौर रंगाये
रंगरेजिन बहु रातीं सारी ॥ चली धुनि सों नाउन बारी ॥
मालिन चली हार लिये गाये तेलिन चली फुलायल साथे
किये सिंगार बहु बिस्वा चली जहं लग मूंदी बिकसीं कली ॥

नटनी डोमिन ढारिन सहनायन परकार ।
निरतत नाद बिनोद सों बिहसत खेलत नार

कमल सुभाय चली फुलवारी फर फूलन की इच्छा बारी ॥

ख़ुशी १ चारों तरफ़ २ छत्तीस क़ौम ३ साथ ४ गोर ब्राम्हनी ५ हज़ार ६ बदन ७ हाथी की चाल ८ क़दम ९ पाव १० बदन ११ हवा १२ साथ १३ ईश्वर १४ मीठी १५ बोल १६ लाल १७ खिलना १८ नाचना १९ गाना २० ख़ुशी २१

९।

आप आप महं करहिं जोहारू[१] । यह बसन्त सब कहं त्योहारू ॥
चहीं मनोरा[२] झूमक होई ॥ फार औ फूल लिया सब कोई
फाग खेल पुनि दाहब होली । सेंतत खेह[४] उड़ाबब झोली ॥
आज छांड़[३] पुनि दिवस न दूजा । खेल बसन्त लेहु के पूजा ॥
आ आय[६] सु पदमावत केरा ॥ फेर न आय करब हम फेरा ॥
तस हम कहं होय हैरब वारी । पुनि हम कहां कहां यह बारी

पुनि चलब घर आपने पूजा बिशेसर[७] देव ।
जेहिं को हिय खेलन्ता आज खेल हंस लेव ।

काहू गही[९] आँब[१०] की डारा ॥ कोई बिरह जाम्ब अति छारा[११]
कोइ नारंग[१२] कोइ झार[१३] चिरौंजी । कोइ कटहर[१४] बड़हर[१५] कोइ न्यौंजी
कोइ दाड़िम[१०] कोइ दाख[१८] खिरौरी[१९] । कोइ सुलेदाफर[२०] तुरंज[२१] जँभीरी
कोइ जैफर[२२] कोइ लौंग सुपारी । कोइ कमरख कोइ कौवा[२३] कारी
कोइ बिजौर[२४] कोइ नरियर चूरी । कोइ अमली कोइ महुवा खजूरी
कोइ हरफा कोइ चोर करौंदा ॥ कोइ अनार कोइ बेरि कसौंदा
काहू गही केला की घौरी ॥ ॥ काहू हाथ पड़ी निब कौरी ॥

काहू पाई नेरें काहू कहं गये दूर ॥ ९ ॥ ॥
काहू खेल भयो बिष[२६] काहू अमृत मूर ॥ ।

पुनि बीनहिं सब फूल सहीली । जो जेहिं आस पास सब बेली ॥
कोइ बघोड़ा कोइ चंप नेवारी । कोइ केतकि मालति फुलवारी
कोइ सतबर्ग[२७] गोंद औ कूना[२८] । कोइ चमेलि[२९] नागेसर[३०] बरना
कोइ सुगुलाल[३१] सुदरसन[३२] कूजा[३३] । कोइ सोन जरद[३४] भल पूजा ॥

साहेब सलामत १ रसम गाने औ बजाने की २ जलाना ३ राख-धूर ४ दिन ५ टुकना ६ बाग़ीचा ७ नाम देवता ८ लेना ९ आंब १० फागुन ११ नाम मेवा फस-ली १२-१३-१४-१५-१६ अनार १७ अंगूर १८ खिरनी १९ नाम मेवा २०-२१-२२-२३-२४ टुकड़ा २५ ज़हर २६ नाम फूल २७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४

कोइ सो बोलसरि पुहुप बकोरी । कोइ रूपमंजरी औ गोरी ॥
कोइ सिंगारहार तेहि पाहां ॥ कोइ सेवती कदम की छाहां ।
कोइ चन्दन फूलहिं जनु फूली । कोइ अजान बिरवा तर भूली ।

कोइ फूल पाव कोइ पाती जेहि के हाथ जेहि आंट
कोई हार चीर उरझानी जहां छुवै तहं कांट

फर फूलन सब डार ओढ़ाई ॥ झुण्ड बांध के पंचम गाई ॥
बाजत ढोल दुंद औ भेरें ॥ मांदर तूर झांझ चहुं फेरें ।
सींगि संख डफ सगरस बाजे ॥ बंसकार महुअर सुर साजे ॥
और कहा जित बाजन भले ॥ भांति भांति सब बाजत चले ।
रथहिं चढ़ी सब रूप सुहाई ॥ लिये बसन्त मड़ मंडफ सिधाई
नवल बसन्त नवल वे बौरी ॥ सेंदुर बूका करें धमारी ॥
खेलहिं चलहिं खेल चाचर होई । नाच कूद भूला सब कोई ॥

सेन्दुर खेह उठी तस गगन भयो सब रात
रातिसकल महि धरती राति बृक्ष बनपात

यहि विधि खेलत सिंहलरानी । महादेव मठ जाय तुलानी ॥
सकल देवता देखै लागे ॥ दृष्टि पाप सब उन के भागे
ये कैलास सुनैं अप्सरी ॥ कहां ते आव दूरि मुई परी ॥
कोई कहै पद्मिनी आई ॥ कोइ कह ससि औ नखत नराई
कोई कहै फूल फुलवारी ॥ फूली सबै देख के बारी ॥
एक सुरूप औ सेन्दुर सारी ॥ जानहुं दिया सकल महि बारी
मुर्छ परै जोई मुख जोहै ॥ मानहुं मिरग दवारहि मोहै ॥

नाम फूल १-२-३-४-५-६ नामालूम ७ कपड़ा ८ नाच बाजा ९-१० ११-१२-१३-१४-१५-१६ नया १७ लड़की १८ कभी १९ धूर २० आसमान २१ लाल २२ सब २३ ज़मीन २४ पहुंचना २५ सब २६ निगाह २७ चांद २८ छोटे तारे २९ लड़की ३० ज़मीन ३१ हिरन ३२

कोई परा भँवरा होय बास लीन्ह जनु चाँप ॥
कोइ पतंग भा दीपक कोइ अध जर तन काँप

पदमावत गइ देव दुवारा । भीतर मंडफ कीन्ह पैसारा
देवै संसै भा जिय केरा ॥ भागों केहि दिस मंडफ घेरा
एक जुहार कीन्ह औ दूजा । तिसरे आय चढ़ायसि पूजा
फर फूलन सब मंडफ भरावा । चन्दन अगर देव अन्हवावा
भरि सेन्दुर आगे भइ खड़ी ॥ परसि देव पुनि पायन पड़ी
और सहेली सबै बिवाहीं ॥ मो कहँ देव कितहु बर नाहीं
हौं निरगुन जेइँ कीन्ह न सेवा गुन निरगुन दाता तुम देवा

बर संजोग मोहिं मिर बहु कलस जाति हौं मान
जा दिन इच्छा पूजै बेग चढ़ाऊँ आन ॥

इच्छ इच्छ बिनती जस जानी धुनि कोर और डाह भई रानी
और को देय देव मा गयो ॥ शब्द कोइ मंडफ मह भयो
काटि पर्यार जैसे परेवा ॥ सो गयो ईस उतर को देवा ॥
भये जीव बिन नाउन ओझा बिस भई पूरि कालि भये गोझा
जो देखे जनु बिसहर डसा ॥ देख चरित पद्मावत हँसा ॥
भल हम आय मना वा देवा गा जनु सोय को माने सेवा
को इच्छा पुरवै दुख खोवा ॥ जेहि मत आय सो नन न सेवा

चहुँ दिस सरबी उड़ा बहि मो र दिक स न हिंडोल
धर कोई जीवन जाने मुख रे बकत कुबोल

ततैरवन आय सरबी बहरानी । कौतुक एक न देखहु रानी ॥
पूर्व द्वार मठ योगी छाये ॥ न जनो कौन देस ते आये

चम्पा १ पारखी २ सलाम ३ खाविन्द ४ मेहतर ५-७ हुनर ६ देनेवाल ८
खाविन्द लायक ९ आरजू १०-१२ जलूस १३ हाथ १३ जवाब २४ आवाज़
२५ छोड़ देना १६ देवता १७ जवाब १८ सांप १९ खिदमत २० चारों तरफ़ २१ सिर २२

एकादश २४ रवाना २५

जनु उन्ह योग तंत्र अब खेला। सिद्ध होय निसरे सब चेला॥
उन्ह महं जो एक गुरू कहावा। जनु गुड़ देइ काहू बौरावा॥
कुंवर बतीसों लक्षण राता॥ दसयें लखन कहै एक बाता।
जानो आहि गोपीचन्द योगी॥ कीधु आहि भरथरी बियोगी।
वे पिंगला गये कजरी आरन॥ ये सिंहला आवहिं केहि कारन

यह मूरत यह मुन्द्रा हम न देख अवधूत।
जानहुं होहिं न योगी कोइ राजा के पूत॥

सुनि सुबात रानी रथ चढ़ी॥ कहं अस योगि जो देखौं मढ़ी
लै संग सखी कीन्ह तहं फेरा। योगि आय जनु अपछरन्हि घेरा
नयन कचूर प्रेम मधु भरे॥ भइ सुदृष्टि योगी सो ढुरे॥
योगी दृष्टि दृष्टि सो लीन्हा॥ नयन रूप नयनहिं जिव दीन्हा
जो मधु छकत परा तेहिं पाले। सुध न रही वह एक पियाले
पड़ा भांत गोरख कर चेला। जिव तन छांड़ स्वर्ग कहं खेला
किंगरी गही जो हुत बैरागी॥ मरती बार वही धुन लागी॥

जेहि धन्ध जाकर मन लगे सपनेहुं सूझि सुधन्ध
तेहि कारन तपसी तप साधहिं करहिं प्रेम चित बंध

पद्मावत जस सुना बखानू॥ सहस किरा देखे तस भानू॥
मेलिस चन्दन मगु खन जागा। अधिकौं सोत सीर तन लागा।
तब चन्दन आखर हिय लिखी भीख लई तुम योग न सिखी
बार आय तब गा तुइ सोई॥ कैसे भुक्ति परापत होई॥

कामिल १ बत्तीस हुनर जानने वाला २ अंदाज़ से बात करता है ३ नाम योगी ४-५ नामरानी ६ जंगल ७ इन्द्र की परयां ८ आंख पियाले की तरह ९ शराब १० निगाह ११-१२ आंख १३ शराब १४ नाम योगी १५ आसमान १६ जाना १७ नाम बाजा १८ पकड़ना १९ वास्ते २० तारीफ़ २१ हज़ार २२ सूर्य्य २३ छिड़कना २४ शायद २५ बहुत २६॥ ठंढा २७ हर्फ़ २८ दिल २९ भीख मागना ३० दरवाज़ा ३१ रोज़ा ३२

अब जो सूर अहे ससि राता ॥ आयेचढ़ सोगगन पुनि साता
लिख सो बात सरिवन सो काही यहीठाँव हों बौरति रही ॥ ॥
परगट हों तो होय अस भंगू ॥ जगति दिया का होय पतंगू ॥

जा सों चँख होंसोई ठांव जिव देय ॥ ॥
यह दुख कत्तहुं न निसरों को हत्या असलेय

कीन्ह पयान सबहि रथ हांका परवत छाड़ सिंहलगढ़ ताका
बलि भये सबै देवता बैली ॥ हत्यारिन हत्या ले चली ॥
को अस हितू मुवे गहि बाही ॥ जो पै जिय आपन तत्त नाहीं
जोलह आपन जिव सब कोई बिन जिव कोई न आपन होई
भाइ बन्धु औ मीत पियारा बिन जिव घड़ी न राखे पारा
बिन जिव पिंड छार कर कूरा छार मिलावै सो हित पूरा
तेहि जिव बिन अब मर भा राजा को उठि बैठि करब सो काजा

परी कया भुइं लोट कहांरे जिव बलि भीउ
को उठाय बैठारे बांज पियारे जीव ॥॥

पद्मावत सो मन्दिर पैठी ॥ हंसत सिंहासन जायें बैठी ॥
निसे सोती सुनि कथा बहारी भा बिहान सब सखी हंकारी
देव पूज जस आयो काली ॥ सप्ना एक निसदेख्यों आली
जनु ससि उदय पूर्व दिस लीन्हा औ रवि उदै पश्चिम दिस कीन्हा
पुनि चल सूर चांद पहं आवा चांद सूर्य दुहुं भयो मिरावा
दिन औ रात जानहु भये एका राम आय रावन गढ़ छेका
नस कुछ कहा न जाय निवेदा अर्जुन बान राहु को बेधा ॥

सूर्य १- ६ चांद अर्थात् रान का आवे २ आसमान अर्थात् क़िला ३ जगह ४ वर्त ५ ज़ाहिर ६ नुक़सान ७ दुनिया ८ पारवी ९ आंख से देखो १० कूच ११ कुर्बान १२ ज़बरदस्त १३ दोस्त १४-१६ मुरदे की बांह पकड़े १५ रख नहीं सक्ता १७ बदन १८ राख १९-२० पहुंचता २२ रान २३ बुलाया २४ चांद २५ सूर्य २६ मुला -

जनहुं तंकसव लै सीहहं बिधासी बार ।
जागउठी अस देखत कहु सखीस्वप्न बिचार

सखी सो बोली स्वप्न बिचारी । काल्ह[4] जो गई देव कर बारू ॥
पूजि मनायो बहुत बिनानी ॥ परसन[6] आय भयो तुम्ह राती
सूर्य्य पुरुष चांद तुम रानी ॥ अस बर[8] दैव मिलावे आनी ।
पच्छों खंड कर राजा कोई ॥ सो आवे बर[9] तुम कहं होई ॥
कुछ पुनि जूझ लाग तुम रामा । रावन सेंत होय संग्रामा[10] ॥
चांद सूर्य्य सो होय बिवाहू ॥ बौरबिधांस बबेधे राहू ॥
जस ऊखा[12] कहं अनरुध मिला । मेट न जाय लिखा परबला[13]

सुख सुहाग है तुम कहं पान फूल रस भोग ॥
आजकाल्ह भाचा है[14] अस सपने का संजोग ॥

खंड सत्तरहवां सती खंड राजा रतनसेन

किये बसंत पद्मावत गई । राजा तब बसंत सुध भई
जो जागा न बसंत न बारी ॥ ना सो खेल न खेलनहारी ॥
नावहं की वह रूप सुहाई ॥ गई हिराय पुनि हेरि न आई
फूल झड़ी सूखी फुलवारी ॥ हैरट[17] परी उकटी सब छौंरी[18] ॥
कैं यह बसत बसंत उजारा ॥ गा सो चांद अथवा ले तारा ॥
अब तेहि बिन जग[19] भा अंधकूपा[20] । वह सुख छांह जरा दुख धूपा
बिरह दवा[20] को जरत सिरावा ॥ को प्रीतम सों करे मिलावा ॥

हिये देख जो चन्दन घुरा[21] मिलके लिखा बिछोह
हाथ मींज सिर धुन सो रोवे जो निचिंत अस सोय

जस बिछोह जल मीन दुहेला । जल हुँत काढ़ आगन महं मेला

लूटना १ हनूमानजी २ दरवाजा तोड़ा ३·११ महादेव के मंडफ ४ आजजी ५ खुश ६ मर्द ७ खाविन्द ८·९ लड़ाई १० नाम लड़की १२ जबरदस्त १३ ताबीर १४ बाग १५ निगाह १६·१७ जलजाना १८ दुनिया १९ कुवां २० आगे २१·२७ दिल २२ जुदाई २३·२५

चन्दन अंक दाग होय परे ॥	बुझहिं न ते आखर पर जेरे ॥
जेहि सिर आगे होय होय लागी	सब तन दाग सिंहे बन दागी ॥
जो अंग बन खंड बह ज्वाला।	औ तो जरहिं जेहि तेहि काला ॥
कित ते अंब लिखे जहं सोवा।	मंग अकिज तेहि करत बिछोवा।
नैस कुरिवान कंसा कोनला ॥	माधो नल हि काम कन्दला ॥
भयो अंब न लैं ते सोद मावत ॥	नयना मूंद छिपी पद्मावत ॥

आय बसंता छिप रहा होय फूलन की भेश ॥
केहि बिधि पाऊं भंवर होय कवन सो कौ उंदेस

रोवत सपन मास जनु चूरा ॥	जहं होय ठाढ़ होय तहं कूरा ॥
कहो बसंत सो कोकिल बैना।	कहां कुसुम जेहि बेधी नयना
कहो कुसुम जो परी जो हीरो ॥	काढ़ि लिहे जिव हिये पैठी ॥
कहे सो दरस परसि जेहि लहा।	जो सुबसंत करी लहि बहा ॥
पात बिछोह रूख जो फूला।	सो महुवा रोवे अस भूला ॥
टपकहिं महुव आंस तस परहीं	होय महुवा बसंत ज्यों झरहीं
मोर बसंत सो पद्मिन नारी ॥	जेहिं बिन भयो बसंत उजारी ॥

पावा नेवल बसंत पुनि बहु आरत बहु चोप ॥
ऐसो लजाना अंतें होय पात झरहिं होय कोप

अंर नदर बिसवासी देवा ॥	कित मैं आय कीन्ह न सेवा।
आपन नाव चढ़े जो देइ ॥	सो तो पार उतारे खेइ ॥
सुफल जानि पंग टेक्यो तोरा ॥	सुवा का सेमर तू भा मोरा
पाहन चढ़ि जो चहहि भा पारा ॥	सो ऐसें बूड़े मंझ धारा ॥

हर्फ़ १-२ और ३ हिरन ४ बाबद मुलाकात नहीं ५ राजा के रानी के लिये ६ माधो नल रानी कामकंदला के लिये ७ राजा नल रानी दमन के लिये दुखी ८ आंख ९ तस्वीर १० टूटना ११ आवाज़ १२ भंवर १३ नज़र १४ दिल १५ दीदार वाक़द सवोसी १६ जिसका उलटा कोटा होजा है १७ नया १८ दुख १९ आख़िर २० पै। २१ तोता। २२

पाहन सेवा कहां पसीजा ।। जन्म न पलवै जो जल भीजा
व वर सोई सु पाहन पूजा । सवाँत की भार लई सिर दूजा
काहे न पूजे सोई निरासा । मुयै जीत मन जाकर आसा

सिंह तरेंदा जेहिं गहा पार भये तेहि साथ ।।
ते पै बूड़े बाहिं भेड़ पूंछ जेहिं हाथ

देव कहा सुनि बौरे राजा ।। देवहि अगमन मारा गाजा
जो पहिले अपने सिर परी । सो का काहू के धर धरी
पद्मावत राजा की बौरी ।। आय सखिन सो भेंड फगुवारी
जैसु चांद गोहने सब तारा । परी भुलाय देख उजियारा
चमके दसन बीज की नाईं । नयन चक्र चमकाने भवाँई
हो तेहि दीप पतंग होय परा । जिव जिम काहू लै गैले भरा
फेर न जानो वहं का भई ।। कहं कैलास कि कहं अपसई

अबहूं मरों निंसासी हिये न आवै सास ।
रुपियाकी को चालै वैदहि जहां उपास ।।

अनहीं देव देउ का काहू ।। सुन के कथा मयो नहिं लाहू
हिनु पियारा मीत बिछोई । साथन लाग आप गा सोई ।।
का मैं कीन्ह जो कौंया पोषी । दोषन मोहिं आप निरदोषी
फाग बसंत खेल गइ गोरी ।। मोहिं तन लाग आग जस होरी
अब अस काहि छार सिर मेलों । छार हुतो फाग तस खेलों
कित तप कीन्ह छांड़िके राजू । औंहू गयो न भा सिधि काजू
पायों न होय योगी जती ।। अब सर चढ़ौं जरौं जस सती

पत्थर १ खिदमत २ मुशकिल समय का बोझ कौन दूसरा उठाता है ३ नाउमेद ४ मरना ५ और ६ पकड़ना ७ पहिले ८ बिजुली ९ · १५ दस्तगीरी १० लड़की ११ साथ १२ दांत १३ आंख १५ घूमना १६ जिस तरह १७ आसमान १८ छिपना १९ वैदम २० दिल २१ वदन २२ मेहरबानी २३ दोस्त २४-२५ जुदाई २६ तन पालना २७

आय प्रीतम फिरगया मिला न आय बसंत ॥
अब तन होरी लायके जार करों भसमंत ॥

कुहुकै नो पंख जैसो सरि साजा । वस सौबिंदि जरा चहि एजा ॥
सकल देवता आय तुलाने ॥ दहिं कस होय दैव अस्थाने ॥
बिरह अगिन बजरंग असूझा । जौं सूर न बुझावे बूझा ॥
तेहि के जरत जो उठे बिजोगी । तीनों लोक जरहिं तेहिं लागी ॥
अब को घड़ी चिनग तेहिं छूटे । जरहिं पहाड़ पहन सब फूटे ॥
देवता सबे भसम होय जाहीं ॥ छार समेटे पावन नाहीं ॥
धौंरों खोर्ग होय सब ताता ॥ है कोई यहि राखि बिधाता ॥

सुहम अरु चिनग प्रेम की सुन मँह गगन डिराय ।
धन बिरहिन औ धन हिया जहँ यह अगिन समाय ॥

हनुवंत बीर लंक जेहि जारी ॥ पवन उठी अहा रखवारी ॥
बैठि तहां भा लंका ताका ॥ छटये मांस वही उढ हांका ॥
तेहि की आग वहु पुनि जरा । लंका छोड़ि पलंका परा ॥
तहां जाय वह कहा संदेशा । पारवती औ जहां महेशू ॥
योगी आहि बियोगी कोई ॥ तुम्हरे मंडफ आग तेहि बोई ॥
जरी लंगूर सु राती उहां ॥ निकसि जो भाग भये करमुहां ॥
तेहिं बजरंग जोर हौं लागा । बैरअगज डिठा तो भागा ॥

रावन लंका मैं दहौं वे मोहिं दहने आय ॥
गंगन पहाड़ होन फेरौं कै को राखै गहि पाय ।

खंड अठारहवां पार्वती महेश खंड

ततखन पहुंचे आय महेशू । बाहन बैल कुष्टि कर भेसू ॥

नामचिड़िया १ चिता २ सब ३ पहुंचना ४ मकान ५ सख्त ६ बहादुर ७ तूक ८ पत्थर ९ जमीन १०-२६ आसमान ११-२४ गर्म १२ देवता १३ दिल १६ महीना १७ कहां १८ महादेवजी १९ दुमदी २० लाल २१ पत्थरसा बदन २२ जलाना २३-२४ राख

काँया कथा हड़ावर बाँधे । मुंड माल औ जनेऊ काँधे ॥
शेस नाग सोहै कंठ माला । तन बिभूत हस्ती कर छाला ॥
पहुंची रुद्र कमल की कटा । ससि माथे औ सिर पर जटा ॥
चंवर घंट औ डमरू हाथा ॥ गौरा पारबती धनि साथा ॥
औ हनुमंत बीर संग आवा । धरे भेष जनु बन्दर छावा ॥
औ तेहिं कहिन न लावहु आगी । ताकर सौंह जरहिं जेहि लागी ॥

कौ तप करै न पारहिं कीरि न सौंपहि योग ।
जियत जीव कस काढ़हि कहौ सो मोसों बियोग ॥

कहेसि को मुहिं बातहिं बिलमावा । हत्या केर न तोहिं डिरावा ॥
जरे दहु दुख जरौं अपारा ॥ निसि निर परौं जाय धक बारा ॥
जस भरथरी लाग पिंगला । मोकहं पद्मावत सिंहला ॥
मैं पुनि तज्यौं राज औ भोगू । सुनि सुनाउ कीन्हों तप योगू ॥
यह मठ सेयों आय निरासा । कौ सो पूज मन पूजन आसा ॥
तैं यह जिव डाँढ़े पर डाहा । आधा निकस रहा घट आधा ॥
जो अधिजर सो बिलंब न लावा । करत बिलंब बहु तदुख पावा ॥

सुनता बोल कहा मुख उठी बिरह की आग ।
जो महेश नहिं अमी बुझावत सकल जगत जल लाग ॥

पारबती मन उपजी चाऊ । देखो कुंवर केर सत भाऊ ॥
वहिं यह बीच कि प्रेमहिं पूजा । तन मन एक कि मारग दूजा ॥
भई सुरूप जानहु अपसरा । बिहंस कुंवर का आंचर धरा ॥
सुनो कुंवर मोसों एक बाता । जस रंग मोर न औरहिं राता ॥

गुदड़ी १ बदन २ हाँडी की माला ३ साप ४ गरदन ५ हाथी ६ चाँद ७ घंटी ८ क़सम ९ निबाहना १० बरबाद ११ दुख १२ शिहाई १३ नाम योगी १४ नाम रानी १५ छोड़ना १६ ख़िदमत १७ जलाना १८ महादेव जी १९ अमृत २० सब २१ पैदा होना २२ चाहना २३ राह २४ इन्द्र लोक की परी २५ हंसना २६ लाल २७

सो बिधि रूप दीन्ह है तोका । उठा सुभाव जाय शिव लोका
तबहीं तो कहं इन्द्र पठाई ॥ की पद्मिनि तुईं अपसर पाई
अब तजि जरन मरन तप योगू । मो सों मानि जन्म भर भोगू

हौं अपसर कैलाश की जेहि सर पूज न कोय ।
मो तजि संवर जो वह मरसि कौन लाभ तोहि होय

भलहिं रंग तोहि अपसर रांता । मोहि दूसर सो भाव न बाता
मोहं वह संवरि मुयें अस लेहा । नयन जो देखेसि पूछेसि कहा
अबहिं ताह जिव दिये न पावा । तोहि अस अपसर डाह मनावा
जो जिव देहों वहि की आसा । न जनो काह होय कैलासा
हौं कैलाश काहि लै करौं ॥ सो कैलाश लाग जेहि मरौं
वह की बूझि जीव निरबारौं ॥ सिर उतार न्योछावर डारौं ॥
ताकार चाह कहै जो आई ॥ दोउ जगत तेहि देउं बड़ाई ॥

वह न मोर कुछ आसा हौं वह आस करेउं
तेहि निरास प्रीतम कहं जिव न देउं का देउं

गौरी हंसि महेश सो कहा । निश्चै यहि बिरहानल दहा
निश्चै यहि वह कारन तपा ॥ प्रबल प्रेम न आछे छिपा ॥
निश्चै प्रेम पीर यहि जागा ॥ कसे कसौटी कंचन लागा ॥
बदन पियर जल टपके नयना । प्रगटे दोउ प्रेम के बयना ॥
यहि वह जन्म लाग के सीझा । चहै न औरहि ओही रीझा ।
महादेव देवन के पिता ॥ तुम्हरे शरण राम रण जिता
एहूं कहं तस मया करेहू ॥ पुर वहु आस कि हत्या लेहू

ईश्वर १ आवाज़ २ इन्द्र लोक में जोगी ३ इन्द्र लोक की परी ४ ६ छोड़ना ५-८ बराबर ७ फ़ायदा ९-११ लाल १० आरव १० देखा १३ न्योछावर १४ खबर १५ जहान १६ महादेव जी १७ बिरह की आग १८ जलना १९ सबब २० ज़बरदस्त २१ सोना २२ ज़ाहिर २३ आवाज़ २४ मेहरबानी २५

हत्या दुइके चढ़ा यहि कांधे औ तिनके अपराध
तिस रेकु लेहुं कि साथे जो शिलिये किये साध

सुनिके महादेव की भाखा । सिद्धि पुरुष राजें मन लाखा
सिद्धहिं अंग न बैठै माखी । सिद्ध पलक नहिं लावहिं आंखी
सिद्धहिं संग होय नहिं छाया । सिद्ध होय नहिं भूख न माया
जो जग सिद्धि गुसाईं कीन्ही । प्रगट गुप्त रहै को चीन्ही ॥
बैल चढ़ा कुष्टी कर भेसू ॥ कहिं राजें सत आहि महेसू ॥
चीन्ह सोई रहै तेहि खोजा ॥ जस बिक्रम औ राजा भोजा
के जिव तंत्र मंत्र सों हेरा ॥ गयो हिराय जो वह भा मेरा

बिन गुरु पंथ न पावै भूला सोई जो भेट ॥
योगी सिद्धि होय तब जब गोरख सों भेट

ततखन रतन सेन घबरा ॥ छांड़ि डफार पांय लै परा ॥
माता पिता जन्म कित पाला । जो अस फांद पेम गे घाला
धर्ती स्वर्ग मिले हुत दोऊ ॥ कित निरार कर दीन्ह बिछोऊ
पद के पदारथ कर हुत खोवा । टूटहि रतन रतन तस रोवा ॥
गगन मेघ जस बरसहिं भली । धर्ती पूर सलिल होय चली ॥
सायर उबट सिखर की पाटी ॥ चढ़ी पानि पाहुन हियें फाटी
बूंद पानि होय होय सब गिरे ॥ प्रेम फून्द कौऊ जन परे ॥

तस रोवे जस जिव जरै गोरे तो औ मास ।
रोम रोम सब रोवहिं सूत सूत भर आंस ॥

बातचीत १ मर्द कामिल २ बदन ३ दुनियां दौलत ४ दुनिया ५ जाहिर ६ छिपा हुवा ७ सूरत ८ महादेवजी ९ राजा बिक्रमाजीत १० तलाश ११ हेरवना-चाहना १२ एह १३ नाम योगी १४ यकायक १५ गरदन १६ ज़मीन १७ आसमान १८ · २३ अलग १९ लाल व जवाहिर २० हाथ २१ आंसु २२ आसमान २३ पानी २४ तालाब २५ धोबी का पाटा २६ पत्थर २७ छाती २८ खून २९ सूराख ३०

रोवत बूड़ उठा संसारू ॥
कहेसि मरोठ बहुत मैं रोवा
जो दुख सहै होय सुख ओका
अब तें सिद्धि भया सुध पाई
कहूं बात अब हूं उपदेसी ॥
जो लहि चोर सेंध नहिं देई
चढ़ै तो जाय पार वह खंदी

महादेव तब भयो मयारू
अब ईसर भा सारदि रोवा
दुख बिन सुख न जाय शिवलोका
दरपन काया छूटि गई काई
लाग पंथ भूले परदेसी ॥
राजा केर न मूसे पैई ॥
परे तो सेंध सीस सो मूंदी

कहों सो तोहि सिंहलगढ़ है खंड सात चढ़ाव
फिरा न कोई जीति जिय स्वर्ग पंथ दे पाव।

गढ़ तस बांक जैस तोर काया
पाई नाहिं जूझ हठ कीन्हे ॥
नौ पौरी तेहि गढ़ मझियारा
दसौं दुवार गुप्त एक नाके ॥
भेदी जाय कोई वह घाटी ॥
गढ़ तरि कुंड सुरंग तेहि मांहा
चोर पैठि जस सेंध संवारी ॥

पुरुष देखि ओही की छाया
जे पावा तें आपुहिं चीन्हे ॥
औ तहं फिरहिं पांच कुतवारा
अगम चढ़ाव बाट सुठि बांके
जो लहि भेद चढ़ै होय चांटी
तेवे पंथ कहों तोहिं पाहां ॥
जुवा पैंत जस लाय जुवारी

जस मरजिया समुंद धस मांह हाथ आव न बसीप
ढूंढ़ि लेहु जो स्वर्ग द्वारे चढ़ै सो सिंहल दीप ॥

मेहरबानी करने वाले १ कामिल २ चाहिला ३ बदन ४ नसीहत ५ एह ६ पूंजी ७ खाई ८ सिर ९ आसमान १० क़िला तथा बदन आदमी ११ पेच दार १२ बदन १३ मर्द १४ नौ दरवाज़ा तथा नौ सूराख़ बदन के आंख २ कान २ मुंह १ नथुना २ गुदा १ लिंग १ १५ दरमियान १६ पांच कोतवाल यहां मुराद काम-क्रोध-अहंकार लोभ और मोह से है १७ दस इन्द्रियां बदन की-कर्म इन्द्री ५ ज्ञान इन्द्री ५ - १८ छिपा हुवा १९ जहां किसी का दख़ल नहीं २० राह २१ बहुत टेढ़ा २२ चूंटी २३ दांव २५

दसौं दुवार ताल का लेखा । उलटि दृष्टि जो लाव सो देखा ।
जाय सो जाय सांस मन बन्दी । जस धसि लीन्ह कान्ह कालिंदी
तू मन नाथ मार के स्वांसा । जो पै मरहि आप कर नासा ।
प्रगट लोक चार कहु बाता ॥ गुप्त लाव मन जासों राता ॥
होंहूं कहत सबै मति खोई ॥ जो तू नाहिं आहि सब सोई
जीतहि जुरी मरै इक बारा ॥ पुनि को मीचु मरै को मारा
आपहि गुरु सो आपहिं चेला । आपहिं सब औ आप अकेला

आपहि मीच जिवन पुनि आपन तन मन आपै सोय
आपहिं आप करै जो चाहै कहां सो दूसर कोय

खंड उन्तीस हुवा राजा गढ़ छेंका खंड

सिधि गुटका राजै जो पावा । औ भई सिद्धि गणेश मनावा ।
जब शंकर सिधि दीन्ह कुटेका । परी हूल योगिन गढ़ छेका ॥
सबै पद्मिनी देखहि चढ़ी । सिंहल घेर गई उठि मढ़ी ॥
जस घर फिरा चोर मत कीन्ही । तेहि बिधि सेंध चाहि गढ़ दीन्ही
गुप्त चोर जो रहै सो सांचा । परगट होय जीव नहिं बांचा
पंवर पंवर गढ़ लाग केंवारा । औ राजा सों भई पुकारा ॥
योगी आय छेंक गढ़ मेली ॥ न जनौं कौन देस कहं खेली

भयो रजाय सु देखो को भिखार अस ढीट ॥
बेग बरज तेहिं आवहिं जन दुई चार बसीठ

नथा दस दरवाज़े बदन आदमी के १ निगाह २ योग की क्रिया पैर बायें की एड़ी दहने पैर से पकड़ सांस की नांदी के नीचे से रोक दो अंगुली से होंठ बीच की अंगुली से दोनों नथुने दोनों अंगूठों की अंगुली मे आंख दो अंगुली से कान के मूराख बन्द कर दुष्ट सुषमना नाम नांदी से खींच कर ब्रह्मांड पर सांस चढ़ा-ना ३ श्रीकृष्णजी ४ यमुना ५ जाहिर ६ छिपा ७ लाल ८ मैं भी ९ चाबिल १० मौत ११ फिर १२ दरवाज़ा १३ हुक्म १४ जल्द १५ वकील हैं

उत्तर बसीठ दुइ आय जुहारी
भये रजायसु आगे खेलहिं
अस लागहि केहि के सिर दीन्हें
यहां इन्द्रासन राजा तपा ॥
हो बनजार तो बनज बिसाहो
योगी होहु तो युक्ति सो मांगहु
यहां देवता आस के हारी ॥

की तुम योगी की बनजारी
गह तरु छांडि अंत होय मेलहिं
आयहि मरहि हाथ जिव लीन्हे
जाहि रिसाय सूर डर छिपा ।
भर ब्योपार लेहु जो चाहो ॥
भुक्ति लेहु लै मारग लागहु ।
तुम पतंग को आहि भिखारी

तुम योगी बैरागी कहन न मानहि कोह ।
लेहु मांग कुछ भिक्षा खेल अंत कहं होह

आन जो भीख हो आयो लिये
पद्मावत राजा की बारी ॥
खप्पर लिये बार भा मांगों
सोई भुक्ति परापत पूजा ॥
अब धर यहां जीव बहठउं ।
जस बिन प्रान पिंड है छूछा
तुम सो बसीठ राजा की चोरा

कस न लेवो जो राजा दिये ॥
हो योगी वह लाग भिखारी ।
भुक्ति देइ लै मारग लागो ॥
कहां जाउं अस बार न दूजा ।
भस्म होउं पै तजों न नाऊं ॥
धर्म लाग कहिय जो पूछा ।
साख हो हु यह भीख निहारा

योगी बार आव सो जेहि भिक्षा की आस ।
जो निरास दृढ़ आसन कित गवने केहि पास

सुनि बसीठ मन अपने रिसा
योगी ऐस कहे नहिं कोई ॥
वह बड़ राज इन्द्र कर पाटा

जब पीसत घुन जायहि पिसा
सो कछु बात योग ते होई
धर्ती परे स्वर्ग को चांटा

वकील १ सलाम २ हुक्म ३ जाना ४ किला ५ और जगह ६ सिरवाना ७ सूर्य्य ८ माल ९ तदबीर १० रोज़ी ११ राह १२ पांखी १३ चले जाउ और कहीं १४ भीख के वास्ते १५ लड़की १६ दरवाजा १७ भीख १८ रस्ता १९ जगह २० छोड़ना २१ बदन २२ शाख मेवा भरी २३ कहां जाऊं २४ लायक २५

जो यह बांत जाय तहं चली । छूटहिं अबहिं हस्ति[1] सिंहली ॥
औ छूटहिं तहं वज्र[2] के कूटा । बिसरे भुगते[3] होय[4] सब खूटा ॥
जहं लग हेरि[5] न जाय पसारी । तहां पसारैस हाथ भिखारी ॥
आगे देखि पांव धरि नाथा । तहां न देखि दृष्टि जहं साथा ॥

वह रानी जेहि जुगत महं तेही राज औ पाट[6] ।
सुंदर जाय राज घर योगिहि बन्दर काट[7] ॥

जो योगी सत बन्दर काटा । एके योग न दूसर बाटा ॥
और साधना आवै साधे ॥ योग साधना आपहिं दाधे[8] ।
सर[9] पहुंचाउ योग कर साधू ॥ दृष्टि[10] चाहि आग[11] मन होय हाथू ॥
तुम्हरे ज़ोर सिंहल के हाथी ॥ हमरे हस्ति[12] गुरू है साथी ॥
हस्ति ने[13] सें वह करत न बारा[14] । पर्बत करै पांव की छारा[15] ॥
ज़ोर गिरे[16] गह जोबंत[17] भये । जो गह गर्ब[18] करहिं ते नये ॥
अंत[19] जो चलना कोउ न चीन्हा । जो आवा सो आपन[20] कीन्हा ।

योगिहि कोह[21] न चाही तब न मोहिं रिस लाग ।
योग तंत ज्यों पानी काहि करै तेहि आग ॥

बसीठहिं[22] जाय कही सब बाता । राजा सुनत कोह भा राता[23] ॥
ठांवहिं[24] ठांव कुंवर सब मांखे[25] । कै अबलहिं ये योगी राखे ॥
अबहूं बेगहि[26] करो संयोऊ[27] । तस मारहु हत्या किन होऊ ॥
मंत्रिन[28] कहा रहो मन बूझे । पति न होय[29] योगिहि सो जूझे ।
वै मारे तो काह भिखारी । लाज होय जो मानो हारी ॥

हाथी १ पत्थर के गोले २ भीख मांगना ३ चारों तरफ़ ४ निगाह ५ तख्त ६ राह ७ जलाना ८ आख़िर ९ नज़र से ज़्यादा १० पहिल ११ हाथी १२ नाश १३ ढेर १४ राह १५ पहाड़ १६ जहांतक १७ ग़रूर १८ मरना १९ खुदबीनी की २० ग़ुस्सा २१ वकील २२ लाल २३ जगह २४ बोलाया २५ मल्ल २६ नदबीर २७ सनाहकार २८ बड़ाई २९ लड़ाई ३०

ना भल मुयें[1] न मारे मोखू[2] । दुहूं बात तुम्ह लागहि दोखू[3]

रहे देह जो गढ़[4] तर मेली । योगी कौन[5] आछ पुनि खेली

आछे देह जो गढ़ तरे जनि चालहु यह बात
नितहि जो पाहन भख करहिं अस केहु के मुख दांत

गये बसीठ[6] पुनि बहुर न आये । राजै कहा बहुत दिन लाये ॥

न जानों स्वर्ग[10] बात धौं काहा । काहु न आय कही फिर चौंहा[11]

पंख न कांया[12] पवन[13] न पाया । केहि बिधि मिलों होउं केहि छाया

संवर रकत नयनन्हि भर चुवा । रोय हंकारेसि[15] मांझी सुवा ॥

परी जो आंसु रकत की टूटी ॥ । रेंगि चली जस बीर बहूटी

बहीर रकत लिख दीन्ही पाती । सुवा जो लीन्ह चोंच भई राती

बांधी कंठ पड़ा[19] जस कांथा[20] । बिरहि के जरा जाय कहं नाथा

मसि[22] नयना लिखनी बरुनि[23] रोय रोय लिखा अकत्थ[24]
आखर[25] दहै[26] न कोइ छुवै सु दीन्ह परेवा हत्थ ॥

औ मुख बचन सो कहिस परेवा । पहिले मोर बहुत के सेवा ॥

पुनि रे संवार कहिस अस दूजी । जेइ बल दीन्ह देवतन[27] पूजी

सो अबहीं तबसे बल लागा । बल जिव रहा न तन सो जागा

भलहि हूसैं[29] हूं तुम्ह बल दीन्हा । जहं तुम तहां भाव बल कीन्हा

जो तुम मैया[30] कीन्ह पग धारा । हेरि दिखाय बान बिष मारा

जो अस जा कर आसा मुखी । दुख मह ऐस न मारै दुखी ॥

नयन[32] भिखार न मानहिं सीखा । अगमन[33] दौ लीन्ह पै भीखा

मरना १ नजात २ पाप ३ किले के नीचे ४ कितने आये औ चले गये ५ एलचेदो ६ हररोज़ ७ पत्थर ८ वकील ९ आसमान तथा किला १० खबर ११ बदन १२ हवा अर्थात् ज़ोर १३ बुलाया १४ दरमियानी १५ नाता १६ खून १७ लाल १८ गुस्दन १९ निशान २० आशिक़ २१ काजल आंखका २२ पलक २३ हाल २४ हर्फ़ २५ जलना २६ ज़ोर २७ मौजूद २८ ईश्वर २९ मेहरबानी ३० नज़र ३१

आगे ३२ भीख ३३

नयनन हिं नयन जो बिध गये नाहिं निकसे वे बान
हिये जो आखर तुम लिखी ते सठ घटहिं परान

ते बिष बान लिखूं कहं ताईं । रकत जो चुवा भीज दुनियाईं
जान सुकारीर तौ पसेऊ । सुखीन जान दुखी कर भेऊ
जिन न पीर तिन का कर चिंता । प्रीतम निठुर होहिं अस निंता
कासों कहूं बिरह की माया । जासों कहों होय जर राखा
बिरह आग तन जर मैं जरे । नयनें नीर सायर सब भरे ॥
पाती लिखी सँवरि तुम नामा । रकत लिखे आखर भय स्यामा
आखर जरहिं न कोऊ छुवा ॥ तब दुख देख चला लै सुवा

अयसठ मरो छूंछि गइ पाती प्रेम पियारे हाथ
भेट होत दुख रोय सुनावत जीव जात जो साथ

कंचन तार बांध गये पाती ॥ लै गा सुआ जहां धनि राती
जैसे कमल सूर्य्य की आसा । नीर कंठ बहु मरे पियासा ॥
बिसरा भोग सेज सुख बासू । जहां भंवर सब तहां हुलासू ॥
तब लगि धीर सुना नहिं पीऊ । सुना तो घड़ी रहे नहिं जीऊ ॥
तब लग सुख हिये प्रेम न जाना । जहां प्रेम का सुख बिसरामा
अगर चंदन दुख दहै सरीरू ॥ सोभा अगिन कया कर चीरू
कथा कहानी सुनि सुठ जरा । जानो घीव बसन्दर परा ॥

बिरह न आपन संभार मैल चीर सिर रूख ॥
पीउ पीउ करत रात दिन पपीहा मुख भै सूख

आंख १ तीर २ छाती ३ हर्फ़ ४ खून ५ काला सांप ६ लाल पसीना ७ भेद ८ अंदेशा ९ बदर्द १० अर्थात हमेशा से होते आये हैं ११ आंख की पानी तथा आंसू १२ तालाब १३ अर्थात काले हर्फ़ १४ खाली १५ सोने का तार १६ गरदन १७ अर्थात पद्मावत १८ खाविन्द १९ खुशी २० दिल २१ आराम २२ जलना २३ चंदन २४-२५ कपड़ा २६-२८ आग २७

ततखन गा हीरा मन आई ॥	मरत पियास छांह जनु पाई ॥
भल तुम सुआ कीन्ह है फेरा ॥	गाढ़ न जानहु प्रीतम केरा ॥
बात हिं जानो बिसम पहारा	हृदय मिला न होय निरारा ॥
मरम पानि कर जान पियासा	जो जल महं ता कहं का आसा
का रानी यहि पूछहु बाता ॥	जन कोइ होय प्रेम कर राता ।
तुम्हें दरश न लाग बियोगी	आहा सो महादेव मठ योगी ॥
तुम बसंत ले तहां सिधाई ।	देव पूज पुनि औ फिर आई ॥

दिष्टि बान तस मारेहु घायरहा तेहि ठांव ।
दूसर बार न बोलहि ले पद्मावत नांव ।

रुयें रुयें बान वै फूटी ॥	सूतहिं सूत रुधिर मुख छूटी ।
नयनन्हिं चली भिन्न की धारा	कंथा भीज भयो रतनारा ।
सूरज बूड़ उठा पै माता ॥	औ मंजीठ टेसू ब न राता ॥
भयो बसंत राती बन पती ॥	औ जेतने सब योगी यती ॥
भूमि जो भीज भया सब गेरू	औ राती तहं पंखे परवेरू ॥
राती सती अगिन सब कौंया	गगंन मेघ राती तंह छाया ॥
ढूंगुर भा पहाड़ जो भीजा ॥	पै तुम्हार नहिं रूम पसीजा ॥

तहां चकोर कोकिला तिनहिं हिये मया पैठ ।
नयनन रक्त भरायहि तुम फिर कीन्ह न डीठ

ऐसो बसंत तुम्ही पै खेलहु	रक्त पराये सेन्दुर मेलहु ॥
तुम तो खेल मन्दिर कहं आई	वह का मर्म जस जान गुसाई
कहेसि मरे को बारहिं बारा ॥	एकहि बार होहु जर छारा।

उसी वक्त १ नाम तोता २ मुशकिल ३ टेढ़ा ४ दिल ५ अलग ६ भेद ७ पानी ८ अर्थात् दीवाना ९ दुखी १० निगाह ११ जगह १२ सूराख १३ खून १४ आंख १५ गुदड़ी १६ लाल १७-२१ भोर १८ लाख १९ जंगली बूटी २१ ज़मीन २२ परिंद जानवर २३ बदन २४ आसमान २५ मेहा बानी २६ खून २७ भेद २८ ईश्वर २९ राख ३०

सेर रव चहा आगजो लाई   महादेव गौरी सुध पाई ॥
आय बुझाय दीन्ह पंथ तहां   मरन खेल कर आगम जहां।
उलटा पंथ प्रेम की बारा ॥   चढ़ै स्वर्ग जो परै पतारा ॥
अब धस लीन्ह चहौ तेहि आसा   पावै सांस कि मरै निरासा

पाती लिख सो पठई लिखा सबै दुख रोय ॥
धौं जिव रहै कि निसरै काह रजाय सु होय।

कहि के सुवा छोड़ दई पाती   जानहु दीप छूट तस ताती ॥
गेंड जो बांधा कंचन तागा   राती स्याम कंठ जर लागा ॥
अगिन स्वास सुख निसरै ताती   तरिवर जरहिं तहां को पाती
रोय रोय सुवे कही सो बाता।   रक्त की आंस भयो मुख राता
देख कंठ जर लाग सो केरा ॥   सो कस जरै बिरह अस घेरा ॥
जर जर हाड़ भये सब चूना।   तहां मांस को रकत बहूना ॥
वै तोहि लाग कया सब जारी   तपत मीन जल रहै न पारी

तुहि कारन वह योगी भस्म कीन्ह तन दाह
तू अस निंदुर निछोही बात न पूछी ताह

कहेसि सुवा मो सों सुनि बाता   चहों तो आज मिलों जस राता
पैसो मैंम न जानै भौरा ॥   जाने मर्म जो मर के होरा
हौं जानत हूं अबहूं कांचा ॥   ना जेहि प्रीति रंग थिर राचा।
ना जेहि भयो मैलगिर बासा   ना जेहि रबि होय चढ़ै अकासा
ना जेहिं होय भंवर कर रंगू ॥   ना जेहि दीपक होय पतंगू ॥
ना जेहि किरा भृंग की होई   ना जेहि आप जिये मर सोई ॥
ना जेहि प्रेम और इक भयो ॥   ना जेहि हिये माझ डर गयो

चिरा १ राह २ पहिले ३ दरवाज़ा ४ आसमान ५ टुकड़ा ६ निहाई ७ गर्मी ८ [illegible] ९ सोना १० लाल वा काला ११ पेड़ १२ बदन १३ मछली १४ [illegible] १५ [illegible] १६ [illegible] १७ बेदर्द १८-१९ [illegible] २० [illegible] २१ [illegible] २२ [illegible] २३

तोहिं का कहीं रतन वाहन जो है प्रीतम लाग
जो वह सुनें तहू धस का पानी का आग

पुनि धन कनक बाल मसि मांगी। उत्तर लिखत भीज तन्न आंगी
तस कंचन काहं चही सुहागा। जो निरमल नग होय सुलागा
हौं योगी मठ मडफ बहोरी तहवां कसन गंठ तुम्ह जोरी
गावसि आर देख के नयना। सखिन लाज का बोलो बयना।
खेल सिंसं मैं चन्दन घाला मगे जागेसि तो देवों जै माला
तबहूं न जागा गा तूं सोई ।। जागे भेंट न सोये होई ।।
अब जा ससि होय चढ़े अकासा। जो जिव देय सो आवे पासा।

तब लग भुक्ति न लेसका रावन सिय इकसाथ
कौन भरोसें अब कहीं जीव पराये हाथ ।।।।

अब जो सूर गगन चढ़ आवै ।। राहु होय तौ ससि कहं पावै
बहुतेहि ऐसा जीव पर खेला। तू योगी किन मांह अकेला।
बिक्रम धसा प्रेम के बारा ।। सपावत्त कहं गयो पतारा ।।
सुदी पच्छ खंडरावत लागी। गंगत्त पूर होय गा बेरागी ।।
राजकुंवर कांचन पुर गयऊ।। मिरगावत कहं योगी भयऊ
साधि कुंवर खंडावत योगू। मधुमालति कहं कीन्ह बियोगू
पेमावत कै सुरसर साधा ।। ऊषा लागि अनुरुध बर बांधा

हौं रानी पद्मावत सात स्वर्ग पर बास ।।।।
हाथ चढ़ौं सात तेहि के प्रथमै करै अपनास

तिपको रहने के वास्ते क्या कहूं १ पद्मावत २ क़लम ३ सियाही ४ जवाब ५ सोना ६ पावापाक ७ जाना ८ बेहोश ९ आवाज़ १० बहाना ११ एायद १२ चांद १३-१७ भौर १४ सूर्य्य १५ आसमान १६ राजा बिक्रमाजीत १८ खवाजा १९ नामरानी २० राजा भोज २१ नामरानी २२ नाम जगह २३-२५ नामराजा २४ नामरानी २६-२८ ३१ नामराजा २७-३२ भंवरा २९ दुखी ३० बेटी बानासुर ३३

बेटा श्री कृष्ण चन्द्र ३४ अनिरुद्ध ३५

हौं पुनि अहों ऐस तुम राती	आधी भेंट पिरिनम राती।
तोहूं जो प्रीति निबेहहि आंटा	भंवर न देख केत महं कांटा।
होहु पतंग आव गेहु दिया।	लेह समुंद धंस होय सराअया।
राति रंग जिमि दीपक बाती।	नयन लाव होय सीप सेवाती
चात्रिक होहु पुकार पियासा।	पियो न पानि सेवाति की आसा।
सारस हो बिछुरी जस जोरी॥	रैने होह जल चकई चकोरी
होहु चकोर दृष्टि सैं सि पाहं	औ रबि होह कमल वह माहं

होहूं ऐस तुम्ह राती सकेसि तो प्रीति निबाह
राहु बेध अर्जुन होय जीत दुरपदी ब्याह॥

राजा यहां तैस तप भूरा।	भा जर बिरह छार कर कूरा॥
जिव गंवाय सो गयो बिमोही॥	भा बिन जिव जिबदीन्हेसि ओही
कहां पिंगला सुखमन नारी।	सुन्न समाधि लाग गई नारी॥
बूंद समुंद जैसो हो मेरा॥	गा हेराय तस मिले न हेरा॥
रंग हि पान मिला जस होय	आपहि खोय रहा होय सोय
सुवै आय देखा भा नासू	नयन रक्त भर आये आंसू
सदा प्रीत मुं गौंहै करेई॥	वह न भूल भूला जिव देई

मूर सजीवन आन के औ मुख छिड़को नीर
गरुड़ पंख जस भारे अमृत बरसा कीर

मुवा जिया अस बास जो पावा	लीन्हेसि स्वांस पेट जिव आवा
देखिसि जाग सुआ सिर नावा।	पाति दीन्ह मुख बचन सुनावा
शब्द सुनाय अमी मुख मेला	गुरु बुलाव बेगि चल चेला॥
तोहि अलै कीन्ह आप भा केवा	हौं पठवा गुर बीच परेवा॥

लाल तथा खुश १ निवाह करना २ पकड़ना ३ सुर्ख ४ जिस तरह ५ आंख ६ पपीहा ७ रात ८ निगाह ९ चांद १० सूर्य ११ नाम भाई राजा युधिष्ठिर १२ रग १३-१४ जुल्म १५ नाम बूटी १६ पानी १७ तोता १८ बोल १९ जल्द २० भंवरा २१ केतकी २२ बिसवाली तोता २३

पवन स्वांस तो सो मन लाई । जोवै मारग दृष्टि बिछाई ॥
जस तुम कया कीन्ह दुइ दाहू । सो सब गुरु कहं भयो अगाहू ॥
तपावंत छाला लिख दीन्हा । बेग चलाव चहूं सिध कीन्हा ॥

औ अस कहि बेग चल आवो जीव बसै तुम नाउं ।
लखै तहि भीतर पैठहि हिरदय भीतर ठाउं ॥

सुनि पद्मावत की अस मया । भा बसंत उपनी नई कया ॥
सुवा का बोल पवन होय लागा । उठा सोय हनुवंत होय जागा ।
चांद मिले कहं दीन्हेसि आसा । सहस किरन सूर्य्य परकासा ।
पानि लीन्ह सीसहिं चढ़ावा । दृष्टि चकोर चांद जस पावा ।
आस पियासा जो जेहि केरा । जो झिझकार वही सो हेरा ।
अब यहि कौन पानि मैं पिया । भै तन पांख पतंग मरजिया ।
उठा फूल हिरदय न समाना । कंथा टूक टूक भर आना ।

जहां प्रीतम वे बसहिं यह जिव बलि तेहि बार ।
जो सो बुलावै पांव सों हम तहां चलै लिलार ॥

जो पंथ मिला महेश हि सेई । गयो समुंद ओहि धसि लेई ।
जहां वह कुंड बिषम औगाहा । जाय परा तहं पावन थाहा ॥
बावर अंध प्रेम कर लागू ॥ सौंह धसा कुछ सूझ न आगू ।
लीन्हेसि खींचि स्वांस मन मारा । गुरु मछंदर नाथ संभारा ।
चेला परी न छाड़हि पाछू ॥ चेला मच्छ गुरु जस काछू ।
जस धस लीन्ह समुंद मरजिया । उघरे नयन बरै जस दिया ॥
खोज लीन्ह सो स्वर्ग दुवारा ॥ बज्र जो मूंदे जाय उघारा ॥

हवा १ ढूंढना २ राह ३ निगाह ४ जलाना ५ खबर ६ दई मिला ७ खत ८ जल्द ९ काम पूरा १० आंख ११ राह १२.२३ दिल १३ जगह १४ मेहरबानी १५ पैदा होना १६ बदन १७ हजार १८ सिर १९ देखना २० गुदड़ी २१ न्योछावर २२ माथा २४ महादेवजी २५ टेढ़ा २६ खबर २७ सामने २८ आसमान २९ पत्थर ३०

बांक चढ़ाव सर्ग गढ़ चढ़त गये होय भोर
भई पुकार गढ़ ऊपर चढ़े सेंध दे चोर

राजै सुना योग गढ़ चढ़े ॥ पूंछी पास पंडित जो पढ़े ॥
योगी गढ़ जो सेंध दे आवहिं । बोलहु शब्द सुद्ध जस पावहिं
कहहिं वेद परिडत पढ़ वेदी । योग भंवर जस मालति भेदी
जैसे चोर सेंध सिर मेलहिं । तस ये दोऊ जीव पर खेलहिं
पंथ नहिं चलै वेद जस लिखी । स्वर्ग जाय सूली चढ़ सिखी ।
चोरि होय सूली पै मोखौ ॥ दे जो सूरी तेहि नहिं दोखौ ।
चोर पुकार बेध घर मूंसा । खोलो राज भंडार मंजूसा ॥

जस यहि राज मंदिर कहँ दीन्ह रैन होय सेंध
तैसो इन्ह कहँ मोख होय मारहु सूली बेध

खंड बीसवां · मंत्री खंड गन्धर्पसेन

रांध जो मंत्री बोले सोई ॥ ऐसो जो चोर सिद्ध पे कोई
सिद्ध निशंक रैन दिन मोहीं । ताका जहां तहां अपसोंही ॥
सिद्ध निडर पै अपने जीवा । स्वर्ग देव के नावहिं गीवा ॥
सिद्ध जाय पे जिव बध तहां । औरहिं मारन पंख अस कहां
सिद्ध अमर कांया जस पारा । जरहिं मरहिं पर जाय न मारा
चढ़ा जो कोप गगन उपराहीं । थोरे साज मरें ते नाहीं ॥।
जंबुके जूझ चढ़े जो राजा । सिंह साज के चढ़ें सो छाजा

छाँह काज कूसा का ... जो चढ़े सिसाय ॥
सिद्ध गिद्ध जहँ है रहि गगन महँ बिन छाकु छ ... विसाय

आवहु करहु कदरे मस साजू । चढ़ोंहि बजाय जहां लहि राजू

आसमान २ कढ़ो वया दंड ३ राह ४ नजात ५ पाप ५ राज ६ मई कामिल ७ फिरना ८ देखना ९ पहुंचना १० गरदन ११ हमे आगाज़िन्दा १२ वदन १३ आसमान १४ सियार १५ भेर १६ शेख १७ निगाहु १८ लशकर ने या ...

होइ संजोवल कुंवर जो भोगी	सब दल छेंक धरहु अब योगी ।
चौदिस लाख छत्रपति साजे ।	छपन कोटि दर बाजन बाजे ।
बाइस सहस सिंहली चाले ।	गिरि पहाड़ पुहुई सब हाले ॥
जगत बराबर वै सब चांपा ।	डराइन्द्र बासुकि हिय कांपा
पदम कोटि रथ साजे आवहिं	गह होय खेह गगन कहं धावहिं
जनु भौचाल चलत महं परा	कूर्महि पीठ टूटि हिया डरा ।।

छत्र गहे स्वर्ग छायगा सूरज गयो अलोप ।
दिन गहे रात अस देखी चढ़ा इन्द्र होय कोप

देख कटक औ मन मन हाथी	बोले रतन सेन के साथी ।।
होत आव दल बहुत असूझा	अस जानत कुछ होयहै जूझा
राजा तूं योगी होय खेला ।।	यही दिवस कहं हम भये चेला
जहां गाढ़ ठाकुर कहं होई ।।	संग न छाड़े सेवक सोई ।।
जो हम मरन दिवस मन ताका	आज आय पूजी वह साका ।
परजिव जाय जाय नहिं बोला	राजा सत सुमेरु नहिं डोला ।
गुरु केर जो आयसु पावहिं	सोंहें होहिं औ चक्र चलावहिं

आज करैं रण भारथ सत बाचा दे राख ।।
सत गुरु सत कौतुक सत भरैं पुनि साख

गुरु कहा चेला सिध होहू ।।	प्रेम बार होय करो न कोहू ।।
जा कहं सीस नाय के दीजे ।।	रंग न होय जूझ जो कीजे ।
जेहिं जिय प्रेम पानि भा सोई	जेहिं रंग मिले वही रंग होई ।
जो पै जाय प्रेम सों जूझा ।	कित तप मरहिं सिद्ध जेहि बूझा

मुक़ाबिला १ राजा २ फ़ौज ३-१२ हज़ार ४ पहाड़ ५ नाम राजा सांपों का ६ दिल ७ राख ८ आसमान ९-११ कछुवा १० मस्त १३ दिन १४ मुसीबत १५ मालिक १६ हुक्म १७ सामने १८ नाम हथयार १९ तमाशा २० दरवाज़ा २१ गुस्सा २२ सिर २३ पानी २४ लड़ाई २५

यहि सत बहुत तनूफ[1] नहिं करिये । खड़ग[2] देख पानी होय ढरिये ।
पानी काह खड़ग की धारा । लौट पान सोई जो मारा ॥
पानी सेतें आग का करई ॥ जाय बुझाय पानी जो परई ॥

सीसे[3] दीन्ह मैं आगमन[4] प्रेम पान सिर मेल ॥
अब तु प्रीति निबाहूं चलों सिद्ध होय खेल ॥

राजें छेंक धरी सब योगी । दुख ऊपर दुख सहै बियोगी[5] ॥
ना जिय धड़क हिये[6] कोई । ना जिय मरन जियन कस होई ॥
नाग फांस उन्ह मेली गीवं ॥ हर्ष[8] न बिसमौ अबकी जीवा ।
जौं जिव दीन्ह सो लेव निरासा । बिसरे नहिं जौ लह तन स्वासा ।
कंर[10] किंगरी तेहि तंत बजावा । यही गीत बैरागी गावा ॥
भलहिं आन गैये मेली फांसी । हिये न सोच रोसी रिस नासी ।
मैं गयें फांद वही दिन मेला ॥ जेहि दिन प्रेम पंथ होय खेला ॥

प्रगटे[13] गुप्ते[14] सकल[15] महं पूर रहा सो नाउं ॥
जहं देखों वह देखों दूसर नहिं कहं जाउं ॥

जब लग गुरु मैं अहा न चीन्हा । कोटि[16] अंतर पट बिच हुत दीन्हा ।
जो चीन्हा तो और न कोई ॥ तन मन जिव जोबन सब सोई ॥
हौं हौं कहत धोख अंतराही । जो भा सिद्ध कहां परछाहीं ॥
मारै गुरू कि गुरू जियावा । और को मार मरै सब आवा ।
सूरी मेल हस्ति गुरु परू । हौं नहिं जानों जाने गुरू ॥
गुरू हस्ति पर चढ़ सो पेखा । जगत जो नास्ति नास्ति सब देखा ।
अन्ध मीन[21] जस जल महं धावा । जल जीवन[22] जल दृष्टि[23] न आवा ॥

लड़ाई १ तलवार २ सिर ३ पहिले ४ दुखी ५ दिल ६-१२ गरदन ७-११ खुशी ८ दुख ९ हाथ १० ज़ाहिर १३ छिपाहुवा १४ सब १५ करोरों पर्दा का बीच १६ हाथी १७ देखना १८ दुनिया १९ नास होनवा-ला २० मछली २१ ज़िन्दगी २२ निगाह २३

गुरू मोर मोरे सिर दिये तुरंगहि ठाट ॥

भीख करे डुलावे बाहर नाचे काठ ॥

सो पद्मावत गुरु हौ चेला ॥ जोग तन्त्र जेहिं कारन खेला।

तज वह बाँर न जानों दूजा ॥ जेहि दिन मिलै याचा पूजा ॥

जीव काढ भुइं धरों ललाटू । वेहि कहं देउं हिया महं पाटू ॥

को मुहिं लै सो छुवावे पाया । नौ अवतार देहु नइ काया ॥

जीव चाहिं सो अधिक पियारी । मांगे जीव देउं बलहारी ॥

मांगे सीस देउं मैं गीवाँ ॥ अधिक तरे जो मारे जीवां

अपने जिव कर लोभ न मोही । प्रेम बार होय मांगो ओही ॥

दरशन वह कादिया जस हौं सुमिरवारी पतंग

जो करवट सिर सारी मरत न मोरों अंग ॥

पद्मावत कमला ससि जोती । हंसे फूल रोवे तब मोती

परजापत हंसी औ रोजू ॥ लागे दून होय निनें खोजू ॥

जबहि सूर्य्य कहं लागा राहू ॥ तबहि कमल मन भयो अगाहू

बिरह अगस्त जो बिसमो भयेउ । सरवर हरष सूख सब गयेउ ।

परगट ढार सके नहिं आंसू ॥ घुट घुट मांस गुप्त होय नासू

जस दिन मांझ, रैन होय आई । बिगसत कमल गयो मुरझाई

रातो बदन गयो होय सेतो ॥ भंवत भंवर रहि गई अचेता।

चितहिं जो चित्र कीन्ह धन रोंरों अंग समीप

सहस साल दुख आह भर मुरछ परी का मीप

घोड़े की बाग १ वासन २ छोड़ना ३ दरवाज़ा ४ सिर ५ दिल ६ नरक ७ नया जन्म ८ बदन ९ ज़्यादा १०-११ सिर १२ मदद १३ सिर उतारना १४ चांद १५ बाप पद्मावत १६ रोना १७ हररोज़ मलाप १८ तथा र[illegible] नसेन १९ तथा पद्मावत २० खबर २१ आग २२ तेज़ २३ तालाब २४ खुशी २५ ज़ाहिर २६ छिपा २७ लाल २८ सफ़ेद २९ याद ३० तसवीर ३१ पद्मावती

पद्मावत संग सखी सयानी । गनत के नखत पीर मसि जानी
जानेहु मरम कमल कर कोई । देखि बिथा बिरहिन की रोई ॥
बिरहा कठिन काल की कला । बिरह न सही काल पर भला
काल काढ़ि लै जीव सिधारा । बिरह काल मारे पर मारा ॥
बिरह आग पर मेले आगी । बिरह घाव पर घाव बिजागी
बिरह बान पर बान पसारा । बिरह रोग पर रोग संचारा ॥
बिरह साल पर साल नवेला । बिरह काल पर काल दहेला

तन रावन होय सिर चढ़ा बिरह भयो हनुमंत
जारे ऊपर जारे तजै न कै भसमंत ॥

कोइ कुमोद परसहिं कर पाया । कोइ मलयागिर छिड़कहिं काया
कोइ मुख सीतल नीर चुवावै । कोइ अंचल सों पवन डुलावै
कोइ मुख अमृत आनि निचोवा । जनु बिष दीन्ह अधिक धनि सोवा
जोवहिं स्वास खनहिं खन सखी । कब जिव फिरे पवन औ पंखी
बिरह काल होय हियें जो बैठा । जीव काढ़ि लै हाथे बैठा ॥
खनक मवन बांधि खन खोला । गहि सें जीभ मुख जाय न बोला
खनहिं बीज की बान न मारा । कंप कंप नारि मरे बिकरारा ॥

कहहूं बिरह न छाड़े भा ससि गहन गिरास
नखत चहूं दिस रोवहिं अंधेर धरन अकास

घड़ी चार इमि गहन गिरासी । पुनि बिधु हियें जोत परकासी
निसैस ऊभ भर लीन्हि स्वासा । भइ अधार जीवन की आसा
बिनवहिं सखी छूट ससि राहू । तुम्हरी जोत जोत सब काहू ॥

चांद यथा पद्मावत १ भेद २ कोका बेली ३ ... आग ४ सूराख ५ भरी ६
छोड़ना ७ चन्दन ८ ठंडा पानी १० बकुन ११ पद्मावत १२ हर घड़ी १३
दिल १४ हकना १५ बिजुली १६ बेकरार १७ चांद गहन १८ बुसनरह १९
ईश्वर २० दिल २१ रोशनी २२ बेहोश २३ कुछ खाया २४ चांद २५

तूं ससि बदन जगत उजियारी	कैहर लीन्ह कीन्ह अंधियारी
तू गज गामिनि गर्व गहेली ॥	अब कस अस सत छाड़ देहेली
तू हर लंके हराई केहर ॥	अब कस हार करेसि है हेहर ॥
तू कोकिल बैनी गज मोहा	को व्याध होय गही निछोहा

कमल करी तूं पद्मिन गई निसं भयो बिहान
अबहूं न संपुट खोलिस जौ रे उठा जग भान

भान नाउं सुनि कमल बिकासा	फिर के भंवर लीन्ह मधु बासा
सरदै चंद मुख जी भउ घेली।	खंजन नैयन उठी कर केली
विरह न बोलु आव मुख माई	मरमर बोल जीव बैरयाई ॥
डोल बिरह दारुन हिया कांपा	खोल न जाय बिरह दुख झांपा
उदधि समुंद जस तरंग देखावा	चर्ख घूमहिं मुख बान न आवा
यह सट लहर लहर पर धावा	भंवर परा जिव थाह न पावा
सखी आन बिय देद तौ मरनू	जिव न पेट मरन का डरनू ॥

खनै उठै खन बूड़े अस हिया कमल सकेत।
हीरामन हिं बुलावहि सखी कहन जिव लेत

चेरी धाय सुनत खन धाई।	हीरामन ले आय बोलाई ॥
जनहु बैद औषध ले आवा।	रोगी रोग मरत ज़िव पावा
सुनत असीस नयन धन खोली	बिरह बैन कोकिल जिमि बोली
कमल हि बिरह बिथा जस बाढ़ी	कैसर बरन पीर हियें काढ़ी ॥
कित कमल हि भा प्रेम अंगुरु	जो पै गहन लेह दिन सूरू ॥
पुरयन छांहि कमल की करी	सकल बिथा सुनि अस तुम हरी

चांद केसा मुंह १ दुनिया २ हाथी की चाल ३ गरूर ४ भारी ५ कमर ६ चीना ७ आवाज़ ८ बेदर्द ९ रात १० सूर्य्य ११ कात्तिक की पूरनमाशी का चांद १२ ममोला की आंख १३ आरी १४ मुशकिल १५ दिल १६ नामसमुंद १७ लहर १८ आंख १९ कभूं २० चंद २१ जिसतरह २२ पीला २३ सूर्य्य २४ मन

पुरुष गंभीर न बोलहिं काहू	जो बोलहिं तो आर निबाहू ॥

एतना बोल कहत मुख पुनि होय गई अचेत
पुनि के चेत संभारी वही कहत मुख लेत ॥

और दग्ध का कहूं अपारा	सती सो जरै कठिन अस भारा
होय हनुमंत पैठ है कोई ॥	लंका दाह लाग तन सोई ॥
लंका बुझी आग जो लागी	यहि न बुझै तस आंच बिजागी
जनहु अगिन के उठहिं पहारा	वै सब लागहिं अंग अंगारा ॥
कट कट मास सराग पुरावा ।	रतन की आस मास सब रोवा ।
खनक बार मास अस भूजा	खनहिं चपाय सिंह अस गूजा
यही दग्ध हुत उतम मरीजे	दग्ध न सही जीव पर दीजे ॥

कहं लग चंदन मलीगिर कांसां यार सब नीर ।
सब मिल आय बुझावहिं बुझै न आग सरीर

हीरामन जो देखेसि नारी ॥	प्रीति बेल उपनी हिय बारी
कहेसि न तुम कस होहु दहेली	उरझी जस प्रीति की बेली ॥
प्रीति बेल जन उरझे कोई ।	उरझा मुयें न छूटे सोई ॥
प्रीति बेल ऐसे तन डाढ़ा ॥	पलहत सुख बाढ़त दुख बाढ़ा
प्रीति बेल की अमर को बोई	दिन दिन बढ़ै छीन नहिं होई
प्रीति बेल संग बिरह अपारा	सरग पतार जरै तेहि भारा ॥
प्रीति अकेल बेल जहं छावा	दूसर बेल न संचरै पावा ॥

प्रीति बेल उरझाय जब तब सुजान सुख साख
मिले प्रीतम आयके दाख बेल रस चाख

पद्मावत उठ टेके पाया ॥	तुम हुत देखौ प्रीतम छाया

अरन्धेलोग १ गलन २ मुश्किल ३ जलाना ४ आग ५ सीख ६ कमी ७ शा ८ चन्दन ९ तालाब १० पानी ११ पैर १२ दिल १३ भारी १४ घटना १५ आसमान १६ बराबरी १७ अंगूर १८

कहत लाज औार हियेनजीउ	इक दिस आग दुसरदिस पीउ
तुम सो मोर खेवक गुरुदेवा	उत्तरों पार तेही विधि खेवा ।
सूरउदय गढ़ चढ़त भुलाना	गहने गहा कमल कुंभिलाना
ओहत होय मरो नहिं भूरी	यह सठ मरो जो नेरहि दूरी ।।
घट महं बकत बकत भा मेरू	मिलहिं न मिलहिं परा तस फेरू
दमन हिं नलहि जो हंस मिलावा	तब हीरामन नाउं कहावा -

मूर सजीवन दूर है सालै शक्ती बान ।।
प्रान मुक्ति अब होत हैं वेग देखावहि आन ।।

हीरामन मुहं धरा ललोंद ।	तुम रानी जुगजुग सुख पाट
जेहिं के हाथ जरी औ मूरी ।	सो योगी अब नाहीं दूरी ।।
पिता तुम्हार राज कर भोगी	पूजे बिप्र मरावे योगी ।।
पंवर पंवर कुतवाल से बैठा ।।	प्रेम क लुब्ध सुरंग होय पैठा
चढ़त रैन गढ़ होय गा भोरू ।।	आवत बार धरा कै चोरू ।
अब ले गये देय वह सूरी ।।	तेहि सो आग दहि बिथा तुम पूरी
अब जिव तुम कायें वह योगी	कया कारोग जान पै योगी

रूप तुम्हार योगी आपन पिंड कमावा फेर ।।
आप हेराय रहा तेहि खंड होय काल न पावे हेर ।।

हीरामन जो बात यहि कही ।	सूर्य्य की गहन चांद पुनि गही
सूर्य्य की दुख जो ससि होय दुखी	सो किन दुख माने करसुखी ।
अब जो योगि मरे मोहिं नेहा ।।	मोहिं वह साथ धर्त गगनेहा
रहे तो करों जन्म भर सेवा ।	चले तो यह जिव साथ परेवा

छाती १ इकतरफ २ मल्लाह ३ सूर्य्य ४ मुलाकात ५ रानीदमन ६ नाम राजा ७ नाम बूटी ८ सूराख ९ आखिर १० जल्द ११ सिर १२ हमेशा १३ नस्ल १४ जड़ १५ ब्राह्मन १६ ड्योढ़ी १७ प्रेमका भरा हुवा १८ दरवाज़ा १९ ख़बर २० बदन २१ चांद २२ मुहब्बत २३ ज़मीन - आसमान २४

कौन सो कर लै गहि गुरु सोई। परकाया प्रवेस जो होई ॥
पलट सो पंथ कौन बिध खेला। चेला गुरु गुरु होय चेला ॥
कौन खंड अस रहा लुकाई ॥ आवे काल हेरे फिर जाई ॥

चेला सिद्ध सो पावे गुरु सों करे अछेद ॥
गुरु करे जो कृपा कहे सो चेला भेद ॥

अनरानी तुम गुरु वह चेला। मोहिं पूछहु के सिद्ध नबेला ॥
तुम्ह चेला कहं परशन भई। दरशन देय मंडप चलि गई ॥
रूप गुरु कर चेले डीठा ॥ जित समाय होय चिंत अपेठा ॥
जीव काढ़ ले तुम अपसेई ॥ वह भा कया जीव तुम भई ॥
कया जो लाग धूप औ सेऊ ॥ कया न जान जान पे जीऊ ॥
भोग तुम्हार मिला वह जाई। जो वह बिथा सो तुम कहं आई।
तुम्ह वह की घट वह तुम माहां। काल कहां पावे वह छुहां।

अस वह योगी अमर भा परकाया परवेस।
आवे काल गुरु तन देखी फिर सो करे अदेस।

सुनि योगी की अमृत करनी। न्यौरी बिरह बिथा की मरनी।
कमल करी होय बिकसा जीव। जनु रबि उदय छूट गा सीव ॥
जो भा सिद्ध को मारे पारा ॥ नीबू रस ते जो होय छारा ॥
कहो जाय अब मोर संदेसू ॥ तजो योग अब होहु नरेसू ॥
जन जानहु हौं तुम सों दूरी ॥ नयनहिं मांझ गड़ी वह सूरी ॥
तुम प्रस्वेत घटे घट केरा ॥ मोहिं घट जीव घटत नहिं बेरा ॥
तुम कहं पौटे हिये में साजा ॥ अब तुम मोर दुहूं जुग राजा ॥

हाथ १ पकड़ना २ बदन ३ राह ४ देखना ५ कमाल ६ बुई नरगिस ७ नया ८ देखना ९ तसवीर १० छिपना ११ जाड़ा १२ हमेशा जिंदा १३ सलाम १४ आखिर १५ खिलना १६ सूर्य्य के उदय जाड़ा जाय १७ राख १८ छोड़ना १९ बहादुर २० पसीना २१ देर २२ तरुन २३ दिल २४

जोरीजियहिंमिलगलरहेंमरहिंतोएककहिंदोउ
तुमपैंजियजनहोयकुछमोजियहोयसोहोउ

खंड इकतीसवां-सूरी खंड रतनसेन

जुरे आय सब सिंहल सूरी ॥ बांध तपा आनो जहं सूरी ॥
देखरूपसब कोउ पछताना पहिले गुरु देय कहं आना ॥
राजकुंवर कोउ अहै बियोगी ॥ लोग कहें यहिहोय न योगी।
हिये सुमाल करे मरव जपा ॥ काहू लाग भयो है तपा ॥
सूरी देखि हंसा मंसूरू ॥ जस मोरे कहं बाजा तूरू ॥
जो जहं नहा बीज अस मारा। चमके दर्सन भयोउजियारा
मंग यहि होय नराजा भोजू॥ योगी केर करो पै खोजू

सब पूछहिं कहु योगी जात जन्म औ नाउ ।
जहांठंवरोवे कर हंसा सो कहु केह भाउ

हम योगी औ तपा भिखारी का पूछो अब जात हमारी ॥
गारि न कोंह मार नहिं लाजा योगी जात कोन हो राजा ॥
तेहिं की खोज परे जन कोई। निलज भिखार लाज जेहिंखोई
सूरी देखसो कुसनहिं हंसा। जाकर जीव मरे पर बसा ॥
आज भूमि तजे गगन बसेरा आन नेह सोंहोय निबेरो ॥
आजहि प्रान परेवा छूटा ॥ आज कैया पिंजर बंद टूटा ॥
आज प्रेम संग चला पियारा आन नेह सो होय नियारा ॥

आज अवध सर पहुंची गये जाउं सुख रैन ॥
बेगेहोहु मोहिं मारहु जन चालहु यहि बात

कहहिं सवरि जेहिं चाहेसिसंवरा | हम तुह करहिं केति कर भंवरा

योगी १ दुखी २ दिल ३ नाम बाजा ४ नामर्द कामिल ५ इज्जत ६ बिजुली ७ तलाश ८ शायद ९ गुस्सा १० जुदाई ११-१७ ज़मीन १२ छोड़ना १३ आसमान १४ बदन १५ उड़नेवाला १६ हद १८ बराबर १९ साल २० जल्द

कहेसि वही संवरों हर फेरा ॥	मुयें जीत आहो जेहि केरा ॥
औ सुमिरों पद्मावत रामा ॥	यहि जिव न्योछावर तेहि नामा
रक्त की बूंद कया जब अहही ॥	पद्मावत पद्मावत कहही ॥
रहे तो बूंद बूंद महं ठाऊं ॥	परहु तो सोई लैलै नाऊं ॥
रोंव रोंव तन तासो ओधा ॥	सूतहि सूत बेध जिव सोधा
हाड़हि हाड़ शब्द सो होई ॥	नस नस मांह उठै धुन रोई

खाय बिरह गा ताकर गूद मांस कियेहान
हौं पुनि सांचा होय रहा वह की रूप समान

योगिह जबहिं गाढ़ अस परा	महादेव कर आसन टरा ॥
औ हंसि पारबती सों कहा ।	जानहु सूर गहन अस गहा ।
आज चढ़े गढ़ ऊपर तपा ॥	राजें गहा सूर तब छिपा ॥
जग देखेगा कौतुक आजू	कीन्ह तपा मारे कह साजू
पारबती सुनि पायन परी ॥	चलो महेश देखें इक घरी ।
भेष भाट भाटिन कर कीन्हा	औ हनुमंत बीर संग लीन्हा ।
आय गुप्त होय देखन लागे ॥	वह मूरत कस सती सभागे

कटक असूझ देखके आपन राजा गर्ब करेय
दई की दसा न देखै वह, का कहं जय देयय।

आसन सो लिये रहा होय तपा।	पद्मावत पद्मावत जपा ॥
मन समाध तासों धुन लागी ।	जेहि दरसन कारन बैरागी ॥
रहा समाय रूप वह नाऊं ॥	और न सूझ बौरे जहं जाऊं ॥
औ महेश कहं करो अदेसू ॥	जेहि यह पंथ दीन्ह उपदेशू ॥
पारबती पुनि सत्य सराहा ॥	औ फिर मुख महेश कर ओहा

बदन १ जगह २ बेधना ३ सूराख ४ आवाज़ ५ स नामा ६ मुशकिल ७ सूर्य्य ८ योगी ९ तमाशा १० महादेवजी ११-१९ छिपकर १२ सती जानरह कायम १३ फ़ौज १४ सख्त १५ ईश्वर की तरफ़ १६ जीन १७ दरवाज़ा १८ सलाम २० राह २१

दबना २२

हिये[1] महेश[2] भई जो मेहेशी[3] । कित सिरनावांह ये परदेशी
मरतेहुं लीन्ह तुम्हारा नाऊं । तुम चित कीन्ह रहौ यहु[4] ठाऊं

मारतही परदेशी राख लेहु यहि बीर ॥
कोइ काहु कर नाहीं जो हो चलै न तीर ॥

लै संदेश सौरी गा तहां ॥ सूली देहिं रतन को जहां ॥
देख रतन हीरामन रोवा ॥ राजा जिव लोगन्ह हठ खोवा
देख रोदन हीरामन केरा ॥ रोवहिं सब राजा मुख हेरा ॥
मांगहिं सब बिधना सों रोई । कोउ पकार छुड़ावै कोई ॥
कहि संदेश सब बिपत सुनाई । बिकल बहुत कुछ कहि न जाई
काढ़ि प्रान बैठ लियेहाथा । मेरे तो मरौ जियों इक साथा ।
सुनि संदेश राजा तब हंसा ॥ प्रान प्रान घट घट महं बसा

हीरामन औ भाट दसौंधी भये जियपहुं कठाउं
चलसो जाय अब देखत है जहं बैठा राउ ॥

राजा रहा दृष्टि कै औंधी ॥ रहि न सका तब भाट दसौंधी
कहेसि मेल कै हाथ कटारी । पुरुष न आछें बैठि पिटारी ॥
कान्ह कोप कै मारा कंस ॥ गोकुल मांझ बजायहु बंसू
गन्धर्पसेन जहां रिस बाढ़ा ॥ जाय भाट आगे भा ठाढ़ा ॥
ठाढ़ देख सब राजा राऊ ॥ ॥ बायें हाथ दीन्ह बरम्हाऊ ॥ ॥
बोला गन्धर्पसेन रिसाई ॥ कैस जोगि कस भाट असांई[12]
जोगी पानि आग तू राजा ॥ आगहिं पानि जूझै[13] नहिं छाजा

आगबुझाई पानि सो जूझ न राजा बूझ ॥
तोरें बार खप्पर है लीन्ह भिक्षा देहि न जूझ ॥

योगि न होय आहि सो भोजू ॥ जानहु भेद करो सो खोजू ॥

दिल १ महादेवजी २ मेहरबानी ३ जगह ४ रोना ५ रोना ६ देखना ७ ईश्वर ८
कोशिश ९ निगाह १० आशिरवाद ११ बे अदब १२ लड़ाई १३ दरवाजा १४

भारथ होय जूझे जो ओधा ॥ होहिं सहाय आय सब जोधा
महादेव रन घंट बजावा ॥ सुनि के अस ब्रह्म चलि आवा
बासुकि फन पतार सों काढ़ा ॥ अष्टो कुली नाग भा ठाढ़ा ॥
छप्पन कोटि बसंदर बरा ॥ सवा लाख परबत फुरहरा ॥
चढ़े अस्त्र ले कृष्ण मुरारी ॥ इन्द्र लोग सब लाग गुहारी ॥
तैंतिस कोटि देवता साजा ॥ औ छान्बे मेघ दल गाजा ॥

नब्बे नाथ चलि आवहिं औ चौरासी सिद्ध ॥
आज महा भारथ रन चले गगन गरुड़ औ गिद्ध

भइ असा को भार औ भाऊ ॥ बाँये हाथ दिये बरम्हाऊ ॥
को योगी अस नगरी मोरे ॥ जो दे सेंध चढ़े गढ़ चोरे ॥
इन्द्र डरै नित नावै माथा ॥ जानत कृष्ण शेष जे नाथा ।
ब्रह्मा डरै चतुर मुख जासू ॥ औ पाताल डरै बलि बासू ॥
धर्ति डरै औ मेडफ मेरू ॥ चन्द्र सूर्य औ गगन गंभीरू
मेघ डरहिं बिजुली जेहि डीठी ॥ कूर्म डरै धर्ती जेहि पीठी ॥
चहों तो सब मैं कों धर केशा ॥ और को गिनै ज अनेग नरेशा

बोला भाट नरेश सुनि गर्ब न छाजा जीव ॥
कुंभकरन की खोपड़ी बूड़त बाचा भीव ॥

रावन गर्ब बिरोधा रामू ॥ ओही गर्ब भयो संग्रामू ॥
तस रावन अस को बरिबंडा ॥ जेहि दस सीस बीस भुजदंडा
सूरज जेहि की तपै रसोई ॥ नित बसंदर धोती धोई ॥

भारी लड़ाई १ मारना २ मदद ३ [illegible] ४ नाम राजा सांपों का ५-१० नाम हाथी ६ आग ७ मौजूद ८ हथियार ९ आसमान १० - ११ नाम राजा पक्षी ११ हुक्म १२ बे अदब १३ सलाम १४ चार मुंह १५ राजा दैत्य १६ नाम पहाड़ १७ निगाह २० कछुवा २१ फैं-[illegible] देना २२ गिनती २३ राजा २४ गरूर २५ बचना २६ नाम पहेलवान २७ सज़ा देना २८ लड़ाई २९ ज़बरदस्त ३० सिर ३१

सूक सुनैटा ससि मसधारा । पवन करै नित बार बोहारा ।
मींच लाय के पाटी बांधा ।। रहा न दूसर सपनै कांधा ।।
जो अस बज्र टरै नहिं टारा ।। सोउ मुवा दोइ तपसी करमारा
नाती पूत कोटि दस अहा । रोवनहार न एकौ रहा ।।

ओछ जान के काहू जन कोइ गर्व करेय ।
ओछे पार दैउ है जीत पत्र जो देय ।।

अब जो भाट वहां हुत आगे । बिनै उठा राजा रिस लागे ।।
भाट अहै ईश्वर की कला । राजा सब राखै कहं अकला ।।
भाट मींच पै आपनि दीसा । ताकहं कौन करै रिस रीसा ।।
भयो रजाय सु गन्धर्पसेनी ।। काहि मीच के चढ़ा नसेनी
कह आनी बानी अस पढ़े ।। करसि न बुद्ध भेर जो कढ़े ।।
जान भाट कित औगुन लावस । बांये हाथ राज बर भावस ।।
भाट नाउं का मारौं जीवा ।। अबहूं बोल नाय कै गीवा ।।

तू है रे भाट कै योगी तोहि यह वैहि क संग
कहां चढ़े अस पावा कहां भयो चित भंग

जो सत पूछेसि गन्धर्पराजा । सत पै कहौं परै नहिं गाजा ।।
भाटहिं काहि मींच सो डरना । हाथ कटार पेट हन मरना ।।
जंबू दीप चितावर देशू ।। चित्रसेन बड़ तहां नरेशू ।।
रतनसेन यहि ताकर बेटा ।। कुल चौहान जाय नहिं मेटा ।
खांड़ै अचल सुमेरु भारू ।। टरै न जो लागे संसारू ।। ।।
दान सुमेरु देत नहिं खांगा ।। जो वह मांग न औरहि मांगा
दाहिन हाथ उठायो ताही ।। और को अस बरंभावो जाही ।।

नाम गुरू राक्सों का १ चोपदार २ चांद मशालची ३ हला ४ दरवाज़ा ५ मौत ६ श्रीराम लक्ष्मण ७ गरूर ८ कम ज़ोर की तरफ़ ९ अर्ज़ १० शुकराविला न चाही ११ हुक्म १२ राजा १३ आकिल १४ बेहुनर १५ सलाम १६ गरदन १७ त्रिशुली १८ राजा १९ मलयागिर बहादुर २० कमी २१

नाउं महा पात्र सुहिं नेहेकि भिखारी डीठ।
ओरबर बाउनकेंहसिलाय खरि पै कहैं बसीठ॥

ततखन सुनि महेश मन लाजा। भाट कि रानेहोय बिनवा राजा॥
गंधर्पसेन तू राजा महा॥ हौं महेश मूरत सुनि कहा॥
पै जो बात होय भल आगे॥ कहा चहौं का भारिस लागे॥
राजकुंवर यहि होहिं न योगी। सुनि पद्मावत भयो बियोगी॥
जंबूदीपराज घर बेटा॥ जो है लिखा सो जाय न मेटा॥
तूं सुवे जाय वह आना॥ औ जाकर बिरोके तें माना॥
पुनिय ह बात सुनी शिवलोका। करसु बिवाह धर्म है तोका॥

खप्पर लिये भीख पै मांगे सुये न छोडे बार॥
बूझ देव जो कनक के कछ्री भीख देहि नहिं नार॥

ओहट होहरे भाट भिखारी। का तू मोहिं देय असगारी॥
को मोहिं योग जगत होइ पारा। जासो हेरा जाय पतारा॥
योगी यती आव जित कोई॥ सुनत त्रासै राज भा सोई॥
भीख लेहु फिर मांगो आगे॥ यहि सब रैन रहे गढ़ लागे॥
जस चहि इच्छा चहे तेहिं दीन्हा। नाहिं बेध सूली जिव लीन्हा॥
जो है अस साध होय जिव खोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा॥
सुर नर मुनि गुनि गंधर्प देवा॥ तेहिं को गिनै करहिं नित सेवा॥

मोंसों को सरबर करै औ सुनु रे झूठे भाट॥
छार होय जो चालों गज हस्तिन के ठाट॥

योगी घर मेले सब पाछे॥ उरये मोल आय रन काछे॥
मंत्रिन कहा सुनो हो राजा॥ देखहु अब योगिन कर काजा॥

शोख १ वकील २ लज्जा ३ महादेवजी ४ मानिंद ५ तारीफ़ ६ कहना मान ७ दुःखी ८ गुस्सा ९ दरवाज़ा १० सोने की कटोरी ११ झूठा १२ लायक़ १३ देख १४ डर १५ राग १६ चाहना १७ बावली १८ राख १९ हाथी मस्त २० हाथी २१

पहलवान २२ मुसाहब को २३

हनू जो कहा तुम कहहु न जूझू ॥ होत आव दर जगत असूझू ॥
रवन इक महं अुरमद हो बीना ॥ दर महं चढ़े जो रहे सो जीता ॥
के धीरज राजा तब कोपा ॥ अंगद आय पावं रण रोपा ॥
हस्ति पांच जो अगमन धाये ॥ ते अंगद धर सूंड फिराये ॥
दीन्ह उड़ाय स्वर्ग कहं गये ॥ लौट न फिरे तहहिं के भये ॥

देखत रहे अचंभो योगी हस्ती बहुर न आय ॥
योगिहि कर असजूझब भूमि न लागत पाय ॥

कहहिं बात योगिहि हम पाये ॥ छिन इक माहं दहन है धाये ॥
जौलहि धावहिं अस का खेलहु ॥ हस्तिहिं केर जूह सब पेलहु ॥
जो गज पेल होय रन आगे ॥ तस दग मेल करहु संग लागे ॥
हस्तिकी जूह आय अगसारी ॥ हनुमत तबै लंगूर पसारी ॥
जेहिं सो सैन बीच रन आई ॥ सबै लपेट लंगूर चलाई ॥
बहुतक टूट भये नो खंडा ॥ बहुतक जाय परे ब्रह्मंडा ॥
बहुतक भुवांन मोह अंतरीखा ॥ रहे जो लाख भये ते लेखा ॥

बहुतक परे समुद्र महं पतन न पावा खोज ॥
जहां गर्ब तहं पीरा जहां हंसी तहं रोज ॥

फिर आगे का देखे राजा ॥ ई अंबर केर घंट रण बाजा ॥
सुना संख जो बिस्नु अपूरा ॥ आगे हनुमत केर लंगूरा ॥
लीन्हे फिरहिं लोक ब्रह्मंडा ॥ स्वर्ग पताल लोक खंड खंडा ॥
बलि बासुक औ इन्द्र नरेन्द्रू ॥ राहु नखत सूरय औ चन्दू ॥
जानवंत दानव राक्षस पुरे ॥ ग्रहनो बज्र आय रण जुरे ॥

लड़ाई १ फौज २ पल ३ बालि का बेटा ४ हाथी ५ पहिले ६ आसमान ७ २२ जमीन ८ हलका ९ मस्त हाथी १० मुकाबिला ११ फौज १२ फिरना १४ बीच १५ गरूर १६ रोना १७ महादेवजी १८ ज़मीन १९ नामराजा दैत्य २० नामराजा सांप २१ राजा २२ पत्थर २३

ओहि कर गर्ब करत हुत राजा ।। सो सब फिर बैरी होइ साजा ।।
जहवां महादेव रण रवड़ा ।। श्रीय नायन्ह पायन पड़ा ।।

कोहि कारन रिस कीजिये हौं सेवक औ चेर ।।
जोहि चाही तेहि दीजिये बारि गुसाईं केर ।।

जब महेशउट कीन्ह बसीठी पहिले कड़ू अंत होय मीठी ।।।
तूं गंधर्व राजा जग पूजा ।। गुरा चौदह सिख देइ को दूजा
हीरामन जो तुम्हार परेवा ।। गा चितौर औ कीन्हस सेवा
तेहि बोलाय पूछौ वह देश । औ पूछौ योगी गह जस भेश ।
हमरे कहत रीस नहिं मानो जो वह कहै सोई पर मानो ।।
जहां बारि तहं आव बर आका करि ब्याह धर्म बड़ तोका
जो पहिले मन मान न बांधे । परखै रतन गांठ तब बांधे ।।

रतन छिपाये ना छिपे पारख होय सो परख ।
पात कसोटी दीजिये कनक कचोरी भेरव

हीरामन जो राजै सुना ।। रोष बुझाय हियै महं गुना ।।
अज्ञा भई बोलावहु सोई ।। पण्डित हूतें दोष नहिं होई ।।
एक कहत सहसेक दस धाये हीरामनहि बेग ले आये ।।।
खोला आगे आन मंजूसा ।। मिला निकसि बहु दिन का रूसा
अस्तुत करत मिला बहु भांती राजें सुना हिये भइ शांती ।।
जानो जरत अगिन जल परा । होय फुलवार रहस हिय भरा ।।
राजें मिल पूंछी हंस बाता ।। कस तन पियर बरन मुख राता

चतुर वेद तुम्ह पण्डित पढे शास्त्र बेद ।।।
कहां चढ़े योगी गढ़ आन कीन्ह घर भेद ।।

ग़रूर १ राजा २ वास्ते ३ लड़की ४ महादेव जी ५ वकालत ६ जान-
वर परिंद ७ यक़ीन ८ सोने की कटोरी ९ गुस्सा १० दिल ११ क़सूर १२ ह-
ज़ार १३ पिंजरा १४ बहुत तरह १५ तसल्ली १६ लाल १७ चार १८

हीरामन रसना रस खोला दै असीस औ अस्तुत बोला
इन्द्र राज राजेस्वर महा ॥ सुनि हिय रिस कछु जाय न कहा
पै जो बात होय भल आगे ॥ सेवक निडर कहै रिस लागे ॥
सुआ सुफल अमृत पै खोजा होय न बिक्रम राजा भोजा ॥
हौं सेवक तुम आदि गुसाईं ॥ सेवा करौं जियों जब ताईं ॥
जेइ जिव दीन्ह देखावा देसू ॥ सो पै जिय महं बसै नरेसू ॥
जो वह संवरै एकै तोही ॥।॥ सोई पंख जगत रति मोही ॥

नयन बैन औ स्रवन सब होतो र प्रसाद ॥
सेवा मोर यही नित बोलों आशिर बाद ॥

जो अस सेवक जेहि तप कसा तेहि क जीभ अमृत पै बसा ॥
तेहि सेवक के करम हि दोषू । सेवा करत करै पति रोषू ॥।
औ जेहि दोष निदोषहि लागा ॥ सेवक डरा जीव लै भागा ॥
जो पंछी कहवां थिर रहना ॥ तावै जहां जाय जो डहना ॥
सप्त दीप फिर देखेउ राजा ॥ जंबू दीप जाय तब बाजा ॥
तहं चितौर देखो गढ़ ऊंचा ॥ ऊंच राजसिर तोपहं पहूंचा
रतनसेन यह तहां नरेसू ॥ सो आन्यो योगी कर भेसू ॥

सुवा सुफल लै आनी है तेहि गुन मुख राति ॥
कयौ पति सो नासों सवरो बिक्रम बात ॥

पहिले भयो भाट सत भाखी पुनि बोला हीरामन साखी
राजा भा निश्चय मन माना बांधा रतन छोड़ कै आना ॥
कुल पूछा चौहान कुलीना ॥ रतन न बाधे होय मलीना ॥
हीरा दसन पान रंग पागी ॥ बिहसत सबन बीजै बर लागी

ज़बान १ दिल २ राजा बिक्रमाजीत ३ सबसे पहिले ४ राजा ५ लाल मुहं ६ आंख-ज़बान-कान ७ मेहनत की ८ क़ुसूर ९ गुस्सा १० बेक़सूर ११ क़ायम १२ बाज़ू १३ सातों मुल्क १४ पहुंचा १५ लाल १६ बदन १७ यक़ीन १८

सुंदर सवन बीन सो चांपे ॥	राजा सेने ठचरे सब भांपे ॥
आना काटर एक तुरवोरू ॥	कहा सुफेरि भयो असवारू ॥
फेरा तुरी छतीसो खुरी ॥	सबहिं बखनि सिंहल पुरी ॥

कुंवरबतीसो लक्षना सहेस किरानजस भान
काह कसौटी कसिये कंचन बारह बान ॥

देखसूर्य्य वर कमैंल संजोगू	अस्तु अस्तु बोला सब लोगू ॥
मिला सोवंश अंश उजियारा	भाविरो के औ तिलक संवारा
अनुरुद्ध को जो लिख जय मारा	को मेटै बाना सूर हारा ॥
आज मिली अनुरुध कहं ऊखा	देवइन्द्र दीन्हसिर दूखा ॥
स्वर्ग सूर भुई सरवर केवा ॥	बनखंड भंवरहोय रस लेवा ॥
पछमका बीर पूर्ब की बारी ॥	लिखी जो जोरी होय न निरारी
मानुष साज लाख मन साजा	सोई होय जो बिधि उपराजा ॥

गये बाजनन जो बाजत जिय मारन रन माह ।
फिर बाजनते बाजे मंगलचार उनाहे

बोल गुसाई कूर मैं माना ॥	कहिसे जुगन उत्तर कहं आना
माना बोल हरेषजिब बाढ़ा ॥	औ बिरो के भारीका गाढ़ा ॥
दोनो मिले मनावा भला ॥	पुरुष आप आप कहं चला ॥
लीन्ह उतारी जोहुत योगू ॥	जो तप करे सो माने भोगू ॥
वह मन चितजो ऐके अहा ॥	मारे लीन्ह न दूसर कहा ॥ ॥
जो अस कोई जिवपर छेवा	देवता आय करहिं तेहि सेवा
दिन दस जीवन जो दुखदेखा	भायुगयुग सुख जहां न लेखा

काजकी वाली १ सरदारी की वातें २ घोड़ा ३-४नारीफ़ ५ हज़ार ६ सूर्य्य ७ सोना खालिस ८ तथा रतन सेन ९ तथा पद्मावत के लायक १० वाह वाह ११ सौका १२-२१ सूर्य्य १३ तालाव १कमल १४ लड़का १५ लड़की १६ अलग १७ ईश्वर ने पैदा किया १८ जवाब १९ खुशी २० खेलना २२

रतनसेनका बरनों पद्मावतकर व्याह।
मन्दिर वो सवारो मन्दिर तोरा छाहू॥

खंड बाइसवां व्याह राजा रतनसेन और पद्मावत

लगन धरी औ रचा बिवाहू। सिंहल निवत फिरा सब काहू
बाजन बाजे कोटि पचासा॥ भा आनन्द सगरे कैलासा:
जेहि दिन कानितदेव मनावा। सोइ दिवस पद्मावत पावा॥
चांद सूर्य्य मन माथे भागू। औ गावहिं सब नखत सुहागू
रचरच मारािक मंड़ो छावहिं औ भुइं राति बिछाव बिछावहिं
चन्दन खंभ रचे चहुं पाती। मारािक दिया बरहिं दिन राती
घर घर मन्दिर रचे दुवारा॥ जहंतक नगर गीत भंकारा।

हार बार सब सिंहल जहं देखी तहं राति॥
धन रानी पद्मावत जाकर ऐसी बरात॥

रतनसेन कहं कपड़ा आये। हीरा मोति पदारथ लाये॥
कुंवर सहस संग अहे सभागे विनय करें राजा पहं लागे॥
जहिं लगा तुम साधा तप योगू लेहु राज मानो सुख भोगू॥
मज्जनं करहु विभूत उतारो करो अस्नान चित्त सब सारो
काढ़हु मुंद्रा फटक अभाऊ पहिरो कुराडल कनक जड़ाऊ
छोरहु जटा फुलायल लेहू॥ भारहु केस मुकट सिर देहू॥
काढ़हु कंथा चिरकुट लावा। पहिरहु राती दुगल सुहावा॥

पांवर तजहु देहु पग पैरी आवा बांक तुखार
बांध मोरछ चसिर बौं होहु असवार॥

साजा राजा बाजन बाजे॥ मदन सहाय दोउ दल गाजे॥

तारीफ़ करना १ जल्द २.१७ दिन ३ तथा सहेलया ४ जवाहिर ५ लाल ६-७.१५ हज़ार ८ चर्ज़ी ६ नहाना १० मस्वेर ११ बाली नाचीज़ १२ सोना १३ गुवड़ी १४ चेमड़ा १६

औ राता[१] सोने रथ साजा ।। भइ बरात गोहेन[२] सब राजा ।
बाजत गाजत भा असवारा ।। सब सिंहल ने कीन्ह जुहारा[३] ।
चहुँदिस मश्अल नखत तराईं[४] सूरज चढ़ा चांद की ताईं ।।
सब दिन तपे[५] जैसे हिय माहाँ । तैसि रात पाई सुख छाहाँ ।।
ऊपर छत्र राती[६] तस छावा ।। इन्द्र लोक सब सेवा आवा ।
आज इन्द्र अपसर[७] सों मिला । सब कैलाश होहि सोहला ।

धरती स्वर्ग चहूं दिस फूलही मशयार ।।।
बाजत आवे मंदिर[८] कहँ होहिं मंगलाचार ।।

पद्मावत धौराहर[९] चढ़ी ।। धौ कस रवि[१०] जाकहँ[११] शशि करी
देख बरात सखिन सों कहा । यह महँ कौन सो योगी अहा
कै सो योग लै औरै निबाहा । भयो सूर[१२] चढ़ चांद विवाहा ।
कौन सिद्ध सो ऐसो अकेला । जे सिर लाय प्रेम सो खेला ।
कासों पिता बचन अस हारी । उत्तर[१४] न दीन्ह दीन्ह तेहि बारी[१५]
का कहँ दई ऐसो जिव दीन्हा । जे जिद्द मार जीत रन लीन्हा ।।
धन पुरुष अस नवैं न नाये ।। औ सपरस[१६] हो देस पराये ।।

को बरवंड[१७] बीर अस मोहिं देख कर चाव[१८] ।।
पुनि जायहि जनवासहिं सखीरी बेग देखाव

सखी देखावहिं चमकहिं बाहू तू जस चांद सूर्य तोर नाहू[२०] ।
छिपा न रहे सूरज परकाशू ।।। देख कमल मन भयो बिकासू[२१]
वह उजियार जगत उपराही ।। जग उजियार सो तेहि परछाहीं
जस रवि[२२] देख उठै परभाता[२३] ।। उठा छत्र देखहिं सब राता[२४] ।।
वही मांझ भा दूलह सोई और बरात संग सब कोई ।।

लाल १-६ असाथ २ सलाम ३ छोटे सितारे ४ दिल ५ इन्द्र लोक की परी ७ आसमान ८ महल ९ सूर्य १०-१३-२२ चांद ११ आखिरनक १२ जवाब १४ लड़की १५ इतमीनान १६ ज़बरदस्त १७ चाह १८ जल्द १९ खाविंद २० खिलना २१

सहसहिं किरन रूप बिधि गढ़ा। सोने के रथ आवै चढ़ा ॥
मन माथे दरसन उजियारा। सौंहं निरख नहिं जाय निहारा॥
रूपवंत जस दरपन धन तू जाकर कंत ॥
चाही जैसो मनोहरा मिला सो मन भावंत॥

देखा चांद सूर्य्य जस साजा॥ सहसहिं भाव मदन तन गाजा।
हुलसे नयन दरस मद माते॥ हुलसे अधर रंग रस राते॥
हुलसा बदन ऊपर रवि आई॥ हुलसा हिया कांचुक न समाई॥
हुलसे कुंच कसनी बंद टूटी॥ हुलसे भुजा वलियां कर फूटी॥
हुलसी लंक कि रावन राजू॥ राम लषन दर साजहिं साजू॥
आज चांद घर आवा सूरू॥ आज सिंगार होय सब चूरू॥
आज कटक जोरा हन कामू। आज बिरह कर होय संघारू॥
अंग अंग सब हुलसे कोइ कतहूं न समाय।
ठावहिं ठांव बिमोही गइ मुरछा गन आय।

सखी संभार पियावहिं पानी राज कुंवर काहे कुंभिलानी॥
हम तो तोहि देखावा पीव॥ तू मुरझान कैस भा जीव॥
सुनहुं सखी सब कहें बिवाहू मोकहं जैसो चांद कहं राहू॥
तुम जानहुं आवे पिउ साजा। यह धमधम मोकहं सब बाजा॥
जेते बराती औ असवारा॥ यह सब मोरे चालनहारा॥
सो आगम देखनहीं झकी आपन रहन न देखें सखी॥
होय बिवाह पुनि होयहै गोना गवनब तहां बहुरि नहिं अवना॥
अब सो मिलन कित है सखी पहा बिछोवा टूट
तैसि गांठ पिउ जोरब जन्म न होयहै छूट ॥

हज़ार १-४ ईश्वर २ सामने देखना ३ कामपैदा हुआ ४ होंठ ६ सूर्य ७-९ दिल ८ अंगया १० छाती ११ चूड़ी १२ फौज १३-१५ लड़ाई १६ दर अंदशी १७ लोटके १८

आय बनावत बैठ बराता। पान फूल सेंदुर सब राता ॥
जहँ सोने कर चित्र संवारी। आन बरात तहां बैठारी ॥
मांझ सिंहासन पाट संवारा। दूलह आन तहां बैठारा ॥
कनक खंभ लागे चहुं पांती। मानिक दिया बरहिं दिन राती ॥
भयो अचल ध्रुव योग पंखेरू। फूल बैठ थिर जैसे सुमेरू ॥
आज दई हौं कीन्ह सुभागा। जस दुख कीन्ह नेग सब लागा ॥
आज सूर ससि के घर आवा। चांद सूर्य्य दोहु भयो मिलावा ॥

आज इन्द्र होय आयो सैं बरात कैलास।
आज मिली मुहिं अपसर पूजी मन की आस ॥

होय लाग ज्योनार पसारा। कनक पत्र पसरे पनवारा ॥
सोन थार मन मानिक जरे। राय रंक सब आगे धरे ॥
रतन जड़ाऊ खोरा खोरी। जन जन आगें सौ सौ जोरी ॥
गड़वन हीर पदारथ लागे। देख बिमोहे पुरुष सभागे ॥
जानहुं नखत करहिं उजियारा। छिप गये दीपक औ मसयारा ॥
भइ मिल चांद सूर्य्य की कला। भा उदोत तैसी निरमला ॥
जेहि मानुष कहं जोत न होती। तेहि भइ जोत देखि वह जोती ॥

पांति पांति सब बैठी भांति भांति ज्योनार।
कनक पत्र तर दोने कनक पत्र पनवार ॥

पहिले भात परोसे आना। जनहुं सुबास कपूर बसाना ॥
झोलहिं माड़ा आछी पोई। उजियर देख पाप गये धोई ॥
लुचई पूरि सुहारी पूरी। डूकतो ताती औ सुठ कंवरी ॥
खंडरा खांड जो रखे खंडे। बैरी अकोतर सो कहं हंडे ॥

लाल १ नसवीर २ बीचो बीच ३ नरूक ४ सोना ५। १३।१६ जवाहिरात ६ नामन खत जिसको कुनव कहते हे ७ कायम ८ नाम पहाड़ ९ सूर्य्य १० चांद ११ इन्द्रपरी १२ राजा के भाई १४ कटोरा-कटोरी १५ रोशनी १६ पाक साफ़ १७ रौनक १८ चौकि माड़ी २० किसमिस की २१

पुनि संधान आने बहु सांधी	दूध दही की मुरन्दा बांधी ॥
पुनि बांवन प्रकार जो आये	नहिं अस देखन कबहूं खाये
पुनि जावर पी भावर आई ।	घृत खांड का कहों मिठाई

जेवंत अधिक सुबासिक मुंह में परत बिलाय
सहस स्वाद सों पावैं एक कौर जो खाय ॥

जेवन आवा बीन न बाजा ।	बिन बाजहिं नहिं जेवैं राजा
सब कुंवरन पुनि खैंचा हाथू	ठाकुर जेवं तो जेवे साथू ॥
बिनय करैं पंडित न बिचवाना ।	काहे नहिं जेवहिं यजमाना
यह कैलाश इन्द्र कर बासू	जहां न अन्न न माछ र मासू
पान फूल आछी सब कोई	तुम कारन यह कीन्ह रसोई
भूख तो जेन अमृत है सूखा	धूप तो सीरि कनौबी रूखा ॥
नींद तो भुइं जनु सेज सपेती	छाड़ो का चतुराई येती ॥

कौन काज केहि कारन बिकल भयो यजमान
होइ रजाय सु सोई बेग देहि हम आन ॥१॥

तुम पंडित जानहु सब भेदू	पहिले नाद भयो तब बेदू ।
आदि पिता जो बिधि अवतारा	नाद संग जिव ज्ञान संचारा
सो तुम बरज नेक का कीन्हा	जेवन संग भोग बिधि दीन्हा
नयन बैन नासक दुइ श्रवना	यहि चारहुं संग जेवन अवना
जेवन देखा नयन सिरानी ॥	जीभहि स्वाद भुक्ति रस जानी
नासक सबै बासना पाई ॥	श्रवनहि का संवरत पहुनाई ।
तेहिं का होय नाद पै पोषा ॥	तब चारहुं कर होय संतोषा

अचार बहुत तरह का १ लडुवा २ खीर ३ मुरब्बा ४ हज़ार ५ खुराक ६ वास्ते ७ छोड़ाना ८ पेड़ा रहे धूप लगने पर भी ९ सफ़ेद बिछौना १० हुकम ११ जल्द १२ ब्रह्मा १३ ईश्वर १४ बदन में ज्ञान आई १५ शौक १६ आंख-मुंह-नाक-कान १७ खुराक १८ आसूदगी १९ करार २०

ओसब सुनहुं शब्द इक जिनहिं पड़ा कुछ सूझ ।
पण्डित नाद सुनहिं कहं बरजहिं कहो सो तुम का बूझ ॥

राजा उतर सुनहु अब सोई ॥ मैंहि डोले जो बेद न होई ॥
नाद वेद मद पैंड़ जो चारी ॥ काया महं ते लेहु बिचारी ॥
नाद हिये मन उपजी काया । जहं मद तहां पैंड़ नहिं छाया ॥
होय अनमद जूझ सो कारिये । जोन बेद आंकुस सिर धरिये ॥
योगी होय नाद सो सुना ॥ जेहि सुनि काम जरे चौगुना ।
किये ओ परमं नंत मन लावा । घूम मात सुनि और न आवा ॥
गये जो धर्म पंथ होय राजा । ताकहं पुनि जो सुने तो काजा ॥

जस मद पियें घूम को उनाद सुने पुनि घूम
तेहि ते बरजे नेक है चढ़े रहस के दूम ॥

भइ ज्यों नगर फिरा खड़ बानी । फिरा अगराजो कुह कहं बात्ती ।
पैरे पान फिरा सब कोई ॥ लाग्यो व्याह चार सब होई ॥
मांड़ो सोनकि गगन संवारा । वंदनवार लाग सब बौरा ॥
साजा पाट छत्र के छाहां ॥ रतन चौक पूरी तेहि माहां ।
कंचन कलस नीर भरि धरा । इन्द्र पास आनी अप्सरा ॥
गांठ दुलहिन दूलह की जोरी । दुहूं जगत जो जाय न छोरी ।
वेद पढ़ें पण्डित तेहि ठाऊं ॥ कन्या तुला राशि ले नाऊं ॥

चांद सूर्य्य दोउ निरमल दोउ संयोग अनूप
सूर्य्य चांद सों भूला चांद सूर्य्य के रूप ॥

दोहूं नाउं ले गावहिं बौरा । करहिं सो पद्मिनि मंगल चारा ।

बात १ जवाब २ ज़मीन ३ मस्ती ४ शरीयत ५-१६ बदन ६-९ दिल ७ मेहनत ११ राह ११ तारीफ १२ राग सुन्ने से दूनी कैफ़ियत होती १३ शरबत १४ असर १५ आसमान १६ दरवाज़ा १७ तख्त १८ जवाहिरात १९ सोना २० पानी २१ तथा राजा २२-२६ तथा पद्मावत २३-२७ पाक साफ़ २४ मिलना २५ लड़की २६

चांद के हाथ दीन्ह जयमाला	चांद आन सूरज गये घाला ।
सूरज लीन्ह चांद पहिराई ॥	हार नखत नेरहिं सो पाई ॥
पुनि धन भर अंगुलि जल लीन्हा	जोबन जन्म कंत कहं दीन्हा ।
कंत लीन्ह दीन्हा धन हाथा ।	जोरी गंठ दुहुँ इक साथा ॥
चांद सूर्य दुइ भांवर लीन्ही	नखत मोत न्योछावर कीन्ही
फिरहिं दोउ सत फेर गुते के ॥	सातहिं फेर गांठ सो एके ॥

भइ भांवर न्योछावर राज चार सब कीन्ह
दायज कहं कहां लाग लिखन जाय तन दीन्ह

रतन सेन जो दायज पावा ।	गन्धर्प सेन आय कंठ लावा
मानुष चित आन कछु निता	को रे गुसाईं न मन महं चिंता ।
अब तुम सिंहल दीप गुसाईं ।	हम सेवक अहैं सेवकाई ।
जस चित तोर गढ़ तुम्हरो देसू ।	तस तुम यहां हमार नरेशू ॥
जंबूदीप दूर का काजू ॥ ॥	सिंहल दीप करहु नित राजू ।
रतन सेन बिनती कर जोरी।	अस्तुति योग जीभ कहं मोरी
तुम गुसाइं जें छार छुड़ाई ।	की मानुष अत दीन्ह बड़ाई

जो तुम दीन्ह सो पावा जिवो जन्म सुख भोग
नाहर खेह पाय की हा योगी केहि योग ॥

धौरेहर पर दीन्हा बासू ॥	सात खंड जहवां कैलासू ॥
सखी सहंस दस सेवा पाई ।	जनहुं चांद संग नखत तराई
होय मंडल शशि के चहुं पासा	शशि सूरहि ले चढ़ी अकासा
चल सूरज दिन अथवे जहां	शशि निर्मल तू पावेसि तहां
गन्धर्पसेन धौरहर कीन्हा	दीन्ह न राजहि योगिह दीन्हा

तथा पद्मावत १५।१४ सूर्य्य तथा रतनसेन २।१३ गरदन ३ तथा सहेलियां ४ गीत वाले ६ राजा ७ अर्ज़ करना हाथ जोड़ के ८ धूप ९।१० महल ११ १७ हज़ार १२ छेः सिलोर १३ साफ़ १६

मिलीजाहिं शशि केचहुंपाहीं	सूर्य्य न चापे पावे छाहीं।
अब योगी गुरुपायो सोई	उतरा योग भस्म गा धोई॥

सातखंड धौरहर सात रंग नग लाग ॥१॥
देखतका के लाशहि दृष्टि पाप सब भाग

सात खंड सातों केलाशा।	का बरनों जस ऊतम बासा॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा॥	मलयागिर चन्दन सब लावा
चूनां कीन्ह और गजमोती	मोतिहिं चाह अधिक तेहिं जोती
बिस्वकर्महिं सें हाथ संवारा	सात खंड सातहिं चौपारा॥
अति निर्मल नहिं जाय बिशेषा	जस दरपन महं दरसन देखा
भुई गचजानहुं समुंदहिलोरा	कनक खंभ जनुरचा हिंडोरा
रतन पदारथ होय उजियारा	भूले दीपक औ मसियारा॥

तहां अपसर पद्मावत रतन सेन के पास॥
सात स्वर्गहाथ जनु आये औ सातों कैलास

पुनि तहं रतन सेन पग धारा।	जहां रतन नौ सेज संवारा॥
पुतरी गढ़ गढ़ खंभन काढ़ी	जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ी॥
काहू हाथ चंदन की खोरी॥	कोइ सेंदुर कोइ गहे सिंधोरी।
कोइ कुंकहि केसर लियेरहैं	लावें अंग रहस जनु चहैं॥
कोई लियें कुमकुमा चोवा	धन कब चहै ठाढ़ मुख जोवा
कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी	कोइ परमल अति सुगंध समीरी
काहु हाथ कस्तूरी मेदू॥	भांतिहिं भांति लाग सब मेदू॥

पांतिहि पांति चहूंदिस सब सोंधी कर हाट॥
माझ रचा इन्द्रासन पद्मावत कहं पाट॥

चंद तथा पद्मावत १ तथा राजा रिवल वतन करसका २ महल ३ निगाह ४ तारीफ़ ५ चन्दन ६ ज़्यादा ७ पाक साफ़ ८ सोना ९ जवाहिरात १० आसमान ११ कटोरी १२ बदन १३ देखना १४ हवा १५ मुश्क १६ अंबर १७ बीचोबीच १९

खंड तेरहवां मिलाप पद्मावत वो राजा रतनसेन

सात खंड ऊपर कैलासू ॥	तहंवा नारू सेज सुख बासू
चार खंभ चारहुं दिस धरे	हीरा रतन पदारथ जरे ॥
मोतिक दिया जड़े औ मोती	होय उजियार रहा तेहि जोती
ऊपर राता चंदवा छावा ।	औ सुइं सुरंग बिछावन बिछावा
तेहि मां पालंग सेज सुहासी	कीन्ह बिछावन फूलहि बासी
दोहुं दिस गेंदवा औ गलसोई	काची पाट भरीं धुन रोई ॥
फूलहिं भरे ऐसो केहि जोगू	को तहं पौढ़ मान रस भोगू ॥

अति सुकुमार सेज सो डासी छुवे न पावे कोय

देखत नवे खन हि खन पांव धरत कस होय

राजें तपत सेज जो पाई ॥	गांठ छोर धन सखिन छिपाई
अहे कुंवर हमरे अस चारू	आज कुंवर कर करब सिंगारू
हरद उतारि चढ़ावब रंगू ॥	तब निस चांद सूर्य सों संगू ।
जनु चात्रक मुख बूंद सेवाती	राजा चक चौहत तेहि भांती
योग छुटा जनो अपसर साथा	योग हाथ कर भयो बिहाथा
वे चतुरा कर ले अपसई ॥	सिर अमोल छीन ले गई ॥
बैठो खोय जरी औ बूटी ॥	लाभ न पाव मूल भइ टूटी ॥

खाय रहा ठग लाडू तंत मंत बुधि खोय ।

भा धौरा हि बनखंड ना हंस आव न रोय

अस तप करत गयो दिन भारी	चार पहर बीते जुग चारी ॥
पी सांझ पुनि सखी सो आई	चांद रहा अपनी जो तरई ॥
पूछहिं गुरु कहां रे चेला ॥	बिन ससि रे कस सूर अकेला

चारो तरफ १ जवाहिरात २-३ लाल ४ तकया ५ रेशम ६ बिछावना ७ पद्मावत ८ रस्म ९ रात १० पपीहा ११ होशयारी १२ छिपजाना १३ महल १४ जंगल १५ छोटे नखत १६ चांद १७ सूर्य १८

धातकमायसिखेतूं योगी। अबकसजसनित धातबियोगी[२]
कहांसो खोयहु बिरवालोना जेहि तेहोयरूप औ सोना ॥
कसहर्तार पारनहिं पावा। गंधक कहां कुरकटा खावा
कहां छिपायहु चन्द हमारा जेहि बिन रैन जगत अंधियारा

नयनकौडिया हियसमुंद गुरु सोनेहि महं जोति
मनमरजिया नहोय परे होयन आवे मोति

कापूंछोतुम धातनिछोहीं जोगुरु कीन्ह अंतरपट ओही
सिधि गुटका जोमोसों कहा भयोरांगसत हिये न रहा ॥
सोनरूप जासों दुखखोलों गयो भरोस तांबका बोलों ॥
कहं लोनाबिरवाकी जाती। कहि को संदेस आनको पाती
कीजोपार हरनार करेजे ॥ गंधक देख अबहिं जिवदीजे
तुमजोराकी सूर मयंकू॥ पुनि बिछोय सो लीन्हकलंकू
जोयह घडी मिलावें मोही सीसदेउं बलिहारी ओही॥

होय अबरक ईंगुरहुता फेर अगिनमहंदीन्ह
कायापीत होय कनक जो तुमचाहो कीन्ह

काबिसाय जोगुरुअस बूझा चकोव्यूह अभिमनज्यो जूझा
बिष जोदीन्ह अमृतदेखराई जेहिरे निछोहेंको पतियाई
मरेसो जानहोयतन सूना पीरनजाने पीर बिहूना ॥
पारनपाव जोगंधक पिया। सोहरनार कहो किमजिया।
हमसिधि गुटकाजानहिंनाहीं कौन धातपूछहु तेहिपाहीं।
अबतेहि बाजेरांग भाडोलों होयसार तो बैरगी बोलों
अबरक के तनईंगुर कीन्हा सोतन फेर आगिनमहं दीन्हा

दुखी १ भौडला २ रात ३ दिल ४ बेदर्द ५. १४ छिपाना ६ कलेजा ७ सूर्य ८ चांद ९ बदन १० सोना ११ नामकिला १२ बेटा अर्जुन १३ अलग १५ बिहूनउसके १६ फौलाद १७ निपतया १८

मिलत जो भीन न बिछुरहिं काया भीगन जराय
कै सो मिलै तन न तप बुभै कै अब मोहिं बुझाय

सुनिके बात सखी सब हंसी	जानहुं रैनै तरई परगसी ॥
अब सो चांद गगन महं छिपा	लालच कै किन पावस तपा ।
हमहुं न जानै धौं सो कहां ।	करब खोज औ बिनवब तहां
औ अस कहब आहि परदेसी	करमाया हत्या जन लेसी ॥
पदि तुम्हार सुनत भा छोहू	देव मनावहु होय अस ओहू ॥
तूं योगी तप कर मन जिता ॥	योगिहि कौन राज की कथा
यह रानी जहंवां सुख राजू ॥	बारह अभरन करै सो साजू

योगी दृढ़ आसन करइ अधर मन ठांव ॥
भोग न सुनै तो अब सुनि बारह अभरन नांव

प्रथम मंज्जन होय सरीरू ॥	पुनि पहिरै तन चन्दन चीरू
साज मांग सिर सेंदुर सारा ।	पुनि ललाट रचि तिलक संवारा
पुनि अंजन दोउ नयन करे ॥	पुनि कानन कुण्डल पहिरे
पुनि नासक भल फूल अमोला	पुनि राती मुख खाय तमोला
गेंये अभरन पहिरे जहं ताई	औ पहिरै कर कंगन कलाई ॥
कटि छुद्रावलि अभरन पूरा ।	पायन पहिरै पायल चूरा ॥
बारह अभरन यही लखाने ।	ते पहिरे बारहुं अस्थाने ॥

पुनि सोरहो सिंगार जस चारहु भोग कुलीन
दीर्घ चार चार लघु चार सुभर चहुं खीन ॥

पद्मावत जो संवारी लीन्ही	पूर्यो रात दई शशि कीन्ही ॥

बदन १ रात २ छोटे नखत ३ निकलना ४ आसमान ५ योगी ६ खर्ज़ करना ७ मेहरबानी ८-९ ज़ेवर १० मज़बूत ११ क़ायम १२ पहिले १३ नहाना १४ लाल १५ गरदन १६ हाथ १७ कमर १८ करधनी १९ पाज़ेब वा छड़े २० बड़े २१ छोटे २२ मोटे २३ पतला २४ पूरनमाशी २५

करि[1] मज्जन तन कीन्ह नहानू । पहिरयो चीर गयो छिप भानू[3]
रचि पत्रावल[2] मांग सेंदूरी ॥ और मोतिन औ[4] माणिक पूरी
चन्दन चीर पहिर बहु भांती । मेघ घटा जानहु बक[5] पांती
औ[6] जो रतन मांग बैठारा ॥ जानहुं गगन[7] टूट निशि तारा
तिलक लिलार[8] धरा नस दीठा । जनहुं दुइज पर नखत न बैठा
कानन कुण्डल खूंट[10] औ खूंटी । जानहु परी कचपची[11] टूटी ॥

पहिर जड़ाऊ ठाढ़ भइ कहि न जाय तस भाव
मानहुं दरपन गगन[12] भा तो शशि[13] तार देखाव

बांक नयन औ अंजन रेखा । खंजन[14] जानहु सरद ऋतु देखा
जो जो हेरैं[15] फेर चख[16] मोरी ॥ लै सरद महि खंजन जोरी
भौंहें धनुक धनुक पै हारा । नयन सांध जनु बानन मारा
बारन फूल नासक अति सोभा । शशि[17] मुख आय सूक जनु लोभा
सुरंग अधर औ लीन्ह तंबोरा[18] । सोहे पान फूल का[19] जोरा ॥
कुसुम गेंद अस सुरंग कपोला[20] । तेहि पर अलक[21] भुअंगिन डोला[22]
तिल कपोल अलि पंकज बैठा । बेधा सोई जो वह तिल दीठा

देख सिंगार अनूपे[23] बिधि बिरह चला तब भाग
काल कष्ट वह ऊनवा सब मोरे जिय लाग

का बरनौं[24] अभरन औ हारा ॥ शशि पहिरे नखतन की मारा
चीर चार औ चन्दन चोला । हीर हार नग लाग अमोला ॥
तेहि[25] झांपी रोमावल कारी ॥ नागिन रूप डसी हत्यारी ॥
कुच[25] कंचुकी[26] श्रीफल ऊभे । हुलसहिं चहहिं कंत हिय चुभे

उबटन १ सूर्य्य २ नामदाया ३ जवाहिर ४ बगुला ५ टीका ६ आसमान ७ १३ रात ८ माथा ९ बीरी १० बारनफूल ११ नाम छोटे नखत १२ चांद १४ १८ ममाला १५ देखना १६ आंख १७ होठ १९ गाल २० बाल २१ नागिन २२ बामसाल २३ ज़ेवर २४ छाती २५ अंगया २६

बाहहिं बाहू तोड़े सलोनी ॥ डोलत बांह भाव गत लोनी ॥
तरुवन कुमल कली जनु बाधे बसा लंक जान हुइ आधे ॥
छुद्र घंट कटि कंचन तागा । चलने उठहिं छतीसो रागा

चूरा पायल अनवट बिछिया पायन परी बियोग ॥
हियै लाय टुक हम कहं समदै नहिं तुल जात संजोग

अस बारह सोरह धनि साजी । छाजन ओर व्है पै छाजी ॥
बिनथहि सखी गहरि का कीजे जेहि बदी कन्त नाहि जिव दीजे ।
संवरि सेज धन मन भइ संका ठाढ़ ते वान टेकु कर लंका ॥
अनचीन्हा पिव कांपे मन माहां कासे कहब गहब जो बांहा ।
बारि बैस गइ प्रीति न जानी ॥ तरुन भई मैमंत भुलानी ॥
जोबन गर्ब न कछु मैं चेता नेह न जानों श्याम कि सेता ।
अब जो कंत पूछहि मत बाता कस मुख होइहै पीत कि राता

हौं बारी औ दुलहिन पिय सौं तरुन औ तेज
ना जानौं कस होयहै चढ़त कंत की सेज ॥

सुनि धन डर हिरदय तब ताई जौ लहि रहसु मिला नहि साई
कौन कली जो भंवर न राई डार न टूट पुहुप गरुआई ।
मात पिता जो ब्याहि सोई ॥ जन्म निबाहि कंत संग होई ॥
भरि भै बार चहै जहं रहा ॥ जाय न मेटा ता कर कहा ॥
ता कहं बिलंब न कीजै बारी जो पिय आयसु सोइ पियारी
चलहु बेगि आयसु भा जैसे ॥ कंत बोलावै रहै सो कैसे ॥
मान न कर थोरा कर लाड़ू ॥ मान करत रस मानै चाड़ू ॥

नाम ज़ेवर १-२-८-९ खूबसूरत ३ भंवर ४ कमर ५-७ १६ करधनी ६ दूखी
१० दिल ११ मुलाक़ात १२ पद्मावत १३ सोहना १४ देर १५ पकड़ना १७
जवान १८-२३ मस्त १९ जवानी का ग़रूर २० काला या सफ़ेद २१ लाल
२२ फूल २४ आवेंगे हमतक २५ हुक्म २६ जल्द २७ गुस्सा २८

साजनलिये पठाई आयसु जाय न मेट ।
तनमनजोबनसाजसब देइ चलीलै भेट ॥

पद्मिन गवन हंस गये दूरी ॥ हस्ति लाज मेलहिं सिर धूरी ॥
बदन देख घट चंद छिपाना । दशन देख के बीज लजाना ॥
खंजन छिप देख के नयना । कोकिल छिपी सुनत मधुबैना ॥
गींव देख कर छिपा मयूरू । लंक देख के छिपा सेंदूरू ॥
भौंह धनक जो छिपा अकारा । बेनी बासुक छिपा पनारा ॥
खङ्ग छिपी नासिका बिशेषी । अमृत छिपा अधर रस देखी ॥
पहुंचहिं छिपा कमल पौनारी । जंघ छिपा कदली होय बारी ॥

अप्सर रूप छिपाई जोहि चलै धनै साज ।
ज्ञानवंत गर्व गहेल जग सबो छिपी मन लाज ॥

मिली सो गोहन सखी नेराई । लीन्ह चांद सूरज प हं आई ॥
पारस रूप चांद देखुराई ॥ देखत सूर्य्य गयो मुरझाई ॥
सोरह किरन दृष्टि शशि कीन्ही । सहस किरन सूर्य्य कहं लीन्ही ॥
भारबिंब अस्त नेराई हंसी ॥ सूर्य्य नरहा चांद परगैसी ॥
योगी आहि न भोगी कोई ॥ खाय कटैं कटा गया परसोई ॥
पद्मावत निरमल जस गंगा । नाहिं युक्ति योगी सिखसंगा ॥
आय जगावहिं चेला जागहु । आवा गुरु पायं उठ लागहु ॥

बोलहिं शब्द सहेली कान लाग गहि माथ ।
गोरख आय ठाढ भा उठरे चेला नाथ ॥

गोरख शब्द सुद्ध भा राजा ॥ रामा सुनि रावन होय गाजा ॥

फुवत १ चाल २ हाथी ३ मुंह ४ दांत ५ बिजुली ६ मसोला ७ मीठी बोली ८ मरकत ९ कमर १० चीता ११ मास मान १२ चोटी १३ नाम राजा सांपों का १४ तलवार १५ होंठ १६ केला १७ पद्मावत १८ साथ १९ छोटे नखत २० २१ सूर्य्य २१ निगाह २२ चांद २३ हजार २४ खिलना २७ टुकडा गोटी २८ पान २९ आवाज ३०

गही बांह धनै सेजवां आनी। अंचल ओट रही छिप रानी ॥
सकुची डरी मुरी मन बारी। गहु न बांह रे योगी भिखारी ॥
ओहट हो योगी तोर चेरी ॥ आवै बास करकैटा केरी ॥
देखि बिभूत छूत मोहिं लागा। कांपै चांद राहु सों भागा ॥
योगी तोर तपसी कै कैया ॥ लागी चहै अंग मोर छुया ॥
बार भिखार न मांगेसि भीखा। मांगे आय स्वर्ग चह सीखा ॥

योगि भिखारी कोइ मंदिर न पैसै पार ॥
मांग लेहु कुछु भिक्षा जाय ठाढ़ हो बार ॥

अन तुम कारन प्रेम पियारी। राज छांड़ के भयों भिखारी ॥
नेह तुम्हार जो हियें समाना। चितौर सो निसरों होय आना ॥
जस मालत कहं भंवर बियोगी। चढ़ा बियोग चल्यों होय योगी ॥
भंवर खोज जस पावै केवा ॥ तुम कारन मैं जिव पर छेवा ॥
भयों भिखार नारि तुम लागी। दीप पतंग होय अंगयों आगी ॥
एक बार मरि मिले जो आये ॥ दूसर बार मरै कित जाये ॥
कित नेहि मीचै जो आस के जिया। भंवर कमल मिल के रस पिया ॥

भंवर जो पावै कमल कहं बहु आरत बहु आस
भंवर होय न्योछावर कमल देय हंस बास ॥

अपने मुहं न बड़ाई छाजा। योगी कतहुं होंगहिं न हिं राजा ॥
हौं रानी तूं योगि भिखारी। योगिहि भोगिहि कौन चिन्हारी ॥
योगी सबै छंद अस खेला ॥ तूं भिखार केहि मांह अकेला ॥
पवन बांध अपसवहिं अकासा। मनसहिं जहां जाहिं तहं बासा ॥
येही भांति सृष्टि बहु छरी। यही भेष रावन सिय हरी ॥

पकड़ना १ पद्मावत २ दूर हो ३ सूखा टुकड़ा रोटी ४ बदन ५-६ छाया ७ दरवाज़ा ८ आसमान ९ न पैठ सके १० वासें ११ दिल १२ डुबी १३ कमल १४ दुख १५-१७ मौत १६ सांस रोक के १८ छिपना १९ दुनिया २० श्री सीता २१

भवरहिं मींचु नेर जो आवा।	केतकि बास लेय कहं धावा
दीपक जोत देख उजियारी।	आय पंख होय परा भिखारी

रैनं जो देखे चन्द सुख मसि तन होय अलोप
तुहं योगि अस भूला होय राजा के रूप ॥

अनुधत तू ससेरि निशि माहीं	हौं दिनेर जेहि के तू छांहीं ॥
चांदहि कहां जोति औ काला।	सूर्य्य की जोत चांद निरमला
भंवर बास चंपा नहिं लेई ॥	मालति जहां तहां जिव देई ॥
तुम हुत भयेउ पतंग की किरों	सिंहल दीप आय उड़ परा ॥
सेयो महादेव कर बारी ॥।	नेंजा अन्न आ पवन अहारू
तुम सों प्रीति गांठि मैं जोरी ॥	कटै न कारे छुटै न छोरी ॥
सिते भीख रावन कहं दीन्ही	तू अस निठुर अन्तर पट दीन्ही

रंग तुम्हारे रात्यो चढ़ो गगन होय सूर ॥।
जहं शशि सीतल कहं तपो मन इच्छा धनपूर

योगि भिखार करेसि बहु बाता	कहेसि रंग देखो तुहि राता ॥
कपरा रंगे रंग नहिं होई ॥	हिये औट उपजे रंग सोई ॥
चांद को रंग सूर्य्य जो राता ॥	देखी जगत सांझ पर भाता
दग्धे विरह निन होय अंगारू	दहक आंच दग्धे संसारू ॥
जो मजीठ औटे बहु आचा	सो रंग जन्म न डोले राचा ॥
जरे विरह जो दीपक बाती ॥	भीतर जरि ऊपर होय राती ॥
जर पलास कोइला के भेसू ॥	तब फूला राता होय टेसू ॥

पान सुपारी खैर जहं मिले करै चकचून ॥
तब लग रंग न राचो जब लग होय न चून

भौत १ रात २७ सिपाही ३ गायब ४ अब पद्मावत ५ चांद ६ सूर्य्य ८-१६ बाक साफ ९ सानिन्द १० दरवाजा ११ छोड़ना १२ श्री सीताजी १३ औट १४ आसमान १५ लाल १७ दिल १८ और १९ जलाना २० रेंजा २१

भलेया का सुंआ का चूना ॥ जेहिं तन नेह दंध तेहि दूना ॥
हौं तुम नेह पियर भा पानू ॥ पेड़ी हुत सन रास बखानू ॥
सुनि तुम्हार संसार बडोना । योग लीन्ह तन कीन्ह गड़ोना ।
करहिं जो किंगरी लै बैरागी । नेवती होय बिरह की आगी ॥
फेर फेर तन कीन्ह भुजोना । औटि रकत रंग हिरदै रवना ।
सूखि सुपारी आमन मारा ॥ सारसौन जनु करवँट सारा ।
हाड़ चून मैं बिरहै दही ॥ जानै सोइ जो दाधै इमि सही

कैसो जानि बहु पीरा जेहि दुख ऐसो सरीर ।
रति पियासे जे अहहिं का जानैं पर पीर ॥

योगिहिं बहुत छंद औराही बूंद सेवाती जैसे पराही ॥
पड़हि भूमि पर होय कचूरू । पड़हिं कदल पर होय कपूरू ।
पड़हि समुंद खार जल ओही पड़हिं सीप सब मोती होही
पड़हिं मेरु पर अमृत होई ॥ पड़हिं नाग मुख बिष होय सोई
योगी भंवर निठुर ये दोऊ ॥ । केहि आपन भै कहो सो कोऊ
एक ठांव यहि थिर न रहाही । रस लै खेलै अंत कहं जाहीं ॥
होय गही पुनि होय उदासी ॥ अंत काल दोनों बिस्वासी ॥

तासों नेह जो दृढ़ करहिं थिर आछहिं सहदेस
योगी भंवर भिखारी दूर रहहिं अंदेस ॥

थल थल नग न होहिं जेहि जोती जल जल सीप न उपनहिं मोती
बन बन बृक्ष न चन्दन होई तन तन बिरह न उपजै सोई
जेहिं उपना सो औट मर गयो । जन्म निरार न कबहूं भयो

पद्मावत १ जलन २ बड़ाई ३ गड़ोना ४ हाथ ५ मेहिमान ६ भूंजना ७ सिर कटाना ८ इसतरह १० मक्र करना ११ ज़मीन १२ नरकचूर १३ केला १४ पहाड़ १५ जगह १६ काइम १७ जाना १८ बेसबर १९ मज़बूत २० सलाम २१ पैसा २२ अलग २३

जस अंबुज रवि रहे अकासा	जो प्रीति जानहु इक पासा ॥
योगी भंवर जो थिर न रहाहीं	जेहि खोजहिं तेहि पावें नाहीं
मैं तौ पावा आपन जीव ॥	छाड़ सेवातं जाय नहिं पीव ॥
भंवर मालती मिलै जो आई ॥	सो तजे आन फूल किन जाई ॥

चंपा प्रीति जो तेल है दिन दिन आकर बास
गलगल आपहि रायनो मुखहि न छाडे पास

ऐसैं राजकुंवर नहिं मानो ।	खेल सार पासा तब जानो ।
कच्चीबारहि बार फिरासी ॥	पकी तो फिर थिर न रहासी ॥
रहै न आठ अठारह भाखा	सोरह सत्त रहै सो राखा ॥
सतयें धरै सो खेलनहारा ॥	ढारा ग्यारा जासु न मारा ॥
तू लीन्हें आछे सि मन दुवा	औ जुग सार चहैसि पुनि छुवा
हौं नौ नेह रच्यों तेहि पाहां ॥	दसौं दाव तेरे हिय माहां ॥
तब चौपर खेलौं कै मया ॥	जो तू रहे ल होय सो लिया ॥

जेहि मिल बिछुरन औ तपन अंत न तेहि नेन
तेहि मिल कंचन को सहै पर बिन मिले न चैन

बोलो बचन नारि सुनि सांचा	पुरुख क बोल सपत औ बाचा
यहि मन लाग्यो तुहि अस नारी	दिन तुहि पासा औ निशि सारी
मैं पर बारह बार मनायों ॥	सिर सो खेल निपट जिव लायों
भल भांती मैं रचना राची ॥	मारेसि तोहि सबै कै काची ॥
पाकउठायों आस करीता ॥	हौं जीतहि हारा तू जीता ॥
मिलके जुग नहिं होहु निरारी	कहां बीच दो तौ दिनहारा ॥
अब जिव जन्म जन्म तुहिं पासा	चढ्यो योग आयों कैलासा ॥

कमल १ सूर्य २ कायम ३ छोड़ना ४ चौपर ५ दिल ६ मेहरवानी ७ जो मेरे साथ बाज़ी हार जाय ८ आखिर को सुख ९ सोना १० रात ११ अलग १२ दो-तीन-का क्या काम है १३

जाकर जिव बसि जेहिं सेतें नहि पुनि ताकर टेक ।
कनक सुहाग न बिछुड़हिं औ मिलहिं जस एक ।

सो हंसी धन सुनि के सत बाता । निश्चै तू मोरे रंग राता ॥ ॥
निश्चै भंवर कमल रस रसा । जो जेहि मन सो तेहि मन बसा ॥
जब हीरामन भयो सँदेसी । तूहु न मंडप गयो प्रदेशी ॥
ओर रूप नस देखु लोना ॥ जनु योगी तू मेली टोना ॥
सिधि गुटका जो होइ कमाई । पारे मेल रूप बसैयाई ॥ ॥
भुगति देन कहं मैं तुहि डीठा ॥ कमल नयन होय भंवर जो बैठा
नयन पुहुप तू औनि भासो भो रहा बेध नस उड़ि सन लोभी

जाका आस होय अस जाकहें नहि पुनि ताकर आस
भंवर जो दैहि कमल का कस न पाव रस बास ।

कौन मोह लों धौं हुत तोही ॥ जो तोहि बिथा सो उपनी मोही
बिन जल मीन तपै जस जीव ॥ चात्रिक भयो कहत पिउ पीव
भयों बिरह जस दीपक बाती । पंथ जोवत भई सीप सेवाती
डार डार ज्यों कोयल भई ॥ भयों चकोर नींद निशि गई ॥
तोरे प्रेम प्रेम तुहं भयो ॥ ॥ राती हेम अगिन ज्यों तयो ॥ ॥
हीरा दिपहिं जो सूर उदोती ॥ नाहित किन पाहन कहं जोती
रवि परकासे कमल बिकासा । नाहित किन मधुकर किन बासा

तासों कौन अंतरपट जो अस प्रीतम पीव ।
न्योछावर करों आपहूं तन मन जोबन जीव

हंस पद्मावत मानी बाता ॥ निश्चै तू मोरे रंग राता ॥ ॥
तू रज धनि कुल उजियारा ॥ अस कै चरणों मैं मैं तुम्हारा ॥

मददगार १ सोना २ पद्मावत हंसी ३ यकीन ४ मस्त ५ खूबसूरत ६ निगाह ७ पारा मिला के चांदी किया ८ भीख ९ देखना १० फूल ११ भंवरा १२ आशिक १३ पैदा होना १४ मछली १५ पपीहा १६ राह १७ रात १८ लाल सोना १९ चमक २० सूर्य २१ पत्थर २२ कोर २३ भेद २४

पैतूं जंबू दीप बसेरा ॥ काजानेसि कस सिंहल मेरा
काजानेसि सो मानसर केवा सुनि सो भंवर भाजि बपछेवा
नातूं सुनी न कोहू दीठी ॥ कैसे चित्र होय चित पैठी ॥
जोलहु अगिन करै नहिं भेदू तोलहि औट चुवहिं नहिं भेदू ।
कहं शंकर तूं ऐसु लखावा । मिला अलख तस प्रेम लखावा

जेहिके सत संघाती ना करडर सो अमेट ॥
सो सत कहु कैसे भा दुहुं साथ सो भेंट ॥

सत्त कहूं अब सुनि पद्मावती जेहां सत्त पुरुष तहां सरसुती
पायो सुवा कहे वै बाता ॥ भा निश्चै देखन सुख राता
रूप तुम्हार सुन्यों अस नीका नाजेहिं चढ़ा काहु कहं टीका
चित्र कियो पुनि लैले नाऊं नयनहिं लाग हिये भा ठाऊं ॥
हौं भा सांच सुनत वह घड़ी । तुम होय रूप आय चित चढ़ी
हौं भा काठ मूर्ति मन मारे । जहं जहं कर सब हाथ तुम्हारे ॥
तुम जो डुलावहु सोई डोला । पवन स्वांस जो दीन्ह तो बोला

कोइ सोवै कोइ जागै अस हो गयो बिमोंहि ॥
प्रगट गुप्त न दूसर जहं देखौ तहं तोहि ॥

बिहसीं धन सुनके सत भाऊ हौं रामा तूं रावन राऊ ॥
रहि जो भंवर कमल की आसा कस न भोग माने रस बासा
जस सत कहा कुंवर तूं मोही । तस मन मोर लाग पुनि तोही
जब हुत कहि गा पंखि संदेशी । सुन्यों कि आवहि परदेशी ॥
तब हुत तुम बिन रहै न जीव । चात्रिक भयो कहत पिउ पीव
भयो चकोर सो पंथ निहारे । समुंद सीप जस नयन पसारे
बिरह भयो दहि कोयल कारी डार डार जिमि पीउ पुकारी ॥

नाम तालाब १ कमल २ मानसर खिला ३ देखना ४ तसवीर ५ शीला ६ अजर ७ ईश्वर ८ लाल ९ दिल १० दीवाना ११ जाहि वाछिपा १२ हंसी पद्मावत १३ पपी

कौन सो दिन जब पिउ मिले यह मन रहा जासु
वह दुख देखै मोर सब हौं दुख देखौं तासु ॥ ॥

कौन्ह सत भाव भई कंठ लागू । जनु कंचन औ मिला सुहागू ॥
चौरासी आसन पर योगी ॥ खटरस बन्धक चतुर सो भोगी
कुसुम माल अस मालति पाई । जनु चंपा गहि डार नवाई ॥
कली बेंध जनु भंवर लुभाना । हना राहु अरजुन के बाना ॥
कंचन करी जड़ी नग जोती ॥ बरमा सों बेधा जनु मोती ॥
नारंग जानि कीर नख दिये ॥ अधर आम्ब रस जानहु लिये
कौतुक केलकरहिं दुखनसा । कुंदहि कुरलहिं जनु सरहंसा

रही बसाय बासना चोवा चन्दन मेद ॥
जो अस पद्मिन रांवी सो जाने यह भेद ॥

रतनसेन सो कंत सुजानू ॥ खटरस पण्डित सोरह बानू ॥
तस होय मिले पुरुष औ गोरी । जैसी बिछुड़ी सारस जोरी ॥
रची सार दोनों इक पासा ॥ होय जुग जुग आवहि केलासा
पिय धन गहि दीन्ही गल बांहा । धन बिछुड़ी लागी उर मांहा ॥
ते छूक रस नव केल करेहीं ॥ चोक लाय अधरन रस लेहीं ॥
धन नव सात सात औ पांचा । पूरुब दस ते रह किम बांचा ॥
लीन्ह बिधंस बिरह धन साजा । औ सब रचन जीत हत राजा ॥

जबहुं औट के मिल गये तस दोनों भये एक
कंचन कसत कसौटी हाथ न कोऊ टेक ॥

चतुर नार चित अधिक चहूंटी । जहां प्रेम बाढ़ी किम छूटी ॥

दीन्ह १ रोमा २-१६ कुसुमकी बेंकी कीतरह छाती ३ पकड़ना ४ कली से भंवा वे सुआद किया ५ तीरनिशाने में गई ६ सोने की कली वा बरमे मोती की तरह बरमां से बेधा ७ जीना ८ होंठ ९ कुतेल १० गालाव ११ अलग १२ भोगना १३ चौपड़ १४ होंठ चूमना १५ पद्मावत हारी १६ राजा जीता १७ लूटना १८ पकड़ना २० बहुत २१

पै पीय बैन एक सुनि मोरा। चाखो पिय मधु थोरा थोरा

प्रेमसुरा सोई पै पिया ॥ लखै न कोऊ कि काहूं दिया

सुवा दारु मधु जेइक बारा दूसर बार लेत बेसभारा ॥

एक बार जो पीके रहा ॥ सुख जीवन सुख भोजन लहा

पान फूल रस रंग करीजे ॥ अधर अधर सों चाखा कीजे

जो तुम चाहो सो करो ना जानों भल मंद।
जो भावै सो होय मोहिं तुम पिय चहे अनन्द

सुनि धनि प्रेम सुरा के पिये। मरन जियन डर रहिन हिये

जहं मधु तहां कहां निसतारा की सुधुमर हा की मतवारा ॥

सो पी जानि पिये जो कोई पै न अघाय जाय पर सोई।

जा कहं होय बार इक लौंहा रहै न वह बिन ओही चाहा

अर्ब दर्ब सब देइ बहाई ॥ कै सब जाय न जाय छिपाई ॥

रातहिं दिवस रहै सब भीजा लाभ न देख न देखी छीजा

भोर होत तब पलुहु सरीरू ॥ पाय घुमर हा सीतल नीरू ॥

एक बार भर देहु पियाला बार बार को मांग
मुह मद किस न पुकारे ऐस दाव जेहि खांग

भयो बिहान उठा बिसराई ॥ चहुं दिस आई नखत नराई

सब नेशि सेज मिला शशि सूरू हार चीर बलया भे चूरू ॥

सुधनि पान चून भई चोली रंग रंगील निरंग भइ झोली ॥

जागत रैन भयो भिनसारा भई बेसै भार सोन वेकरारा ॥

अलक कुरंगिन हिरदय परी नौरंग छुइ नागिन बिस भरी।

बान १ शराब २ अगर ३ ठीक ४ पद्मावत ५-२० दिल ६ फ़ायदा ७-८ दिन ९ नुकसान १० नशा ११ ठंढा पानी १२ कमी १३ सूर्य तथा रत्न १४-१८ सहेली १५ रात १६ चांद १७ चूड़ी १९ बेरौनक २१ रात २२ [illegible] २३ चौसार २४ छाती २५ नया छातियों २६

सब चरणन मेरेगज भा लोचनखिंव सरोज
सत्य कहो पद्मावत सखी परी सब खोज ॥

कहीं सखी आपन सत भाऊ । हौं जो कहत कस रावन राऊ ।
कापी भंवर पुहुप पर देखे ॥ जनु शशि गहन तैसि मुहिं लेखे
आज मर्म मैं जाना सोई ॥ जस पियार पिय और न कोई ॥
डर तब लग जु हुं मिला न पीव भौनु की हृष्टि छूट गा सीव ॥।
जातरवन् भानु लीन्ह परकासू कमलकली मन कीन्ह बिकासू
हिये छोंह उपैना औ सीवै ॥ पियन रिसाय लेव पर जीव ॥
हनजो अपार बिरह दुखदूखा जनहुं अगस्त्य उदे घि जल सूखा

हमहूं रंग बहुजानव लहरें जेत समुंद ॥
पिय ले गये खनुराई सको न एको बुंद ॥

कर सिंगार तापन कहं जाऊं ओही देखों ठौवहि ठाऊं ॥
जो जिय महं तो वही पियारा । तन महं सोई न होय निरारा
नयन हिं महं तो वही समाना देखों जहां न देखों आना ॥
आपुहि रस आपहि पै लेइ ॥ अधर सहस लागे रस ईइ ॥
हियाथार कुच कंचन लाडू अगमन भेंट दीन्ह के चाडू
हुलसी लंक लंक सो लसी । रौंवन रहस कसौटी कसी ॥
जोबन सभे मिलावह जाई हैरी बिच हुन गयो हेराई ॥

जस कुछ दीजै धरनैं कहं आपन लेह संभार
तस सिंगार सब लीन्हेसि कीन्हेसि मोहिं ठैार

खुशबू १ दलमल २ आंख ३ कुंदरू की तरह लाल ४ कमल ५ तथा औरत मर्द की सुहबत ६ फूल ७ चांद ८ भेद ९ सूर्य्य १० निगाह ११ जाड़ा १२ रोशनी १३ खिलना १४ दिल १५ मेहरबानी १६ पैदा १७ खिदमत १८ समुद्र १९ दांत २० जगह २१ अलग २२ होंठ २३ छाती २४ सोने के लड्डू बासी थालियां २५ पहिले २६ पियार २७ खुशहाली २८ कमर २९ तथा राजा ३० धरो

हि० ४१ पद्मावती

ए री छबीली तुहिं छबलागी । नैनै गुलाल कंत संग जागी ॥
चंप सुदरसन अस भा सोई ॥ सोन जर्द जस केसर होई ॥
बैठि भंवर कुच नारंग बारी । लागी नख अछरैं रंग धारी ॥
अधर अधर सौं भीजन तंबोरी । अलकावल मुरमुर गई मोरी ।
राय मुनी तुम्ह औ रत मुही ॥ अलिमुख लाग भई फुल जुही ॥
जैस सिंगार हार सों मिली ॥ मालति ऐसि सदा रहि खिली ॥
पुनि सिंगार रस करौ नेवारी । कदम सेवती पियहिं पियारी ।

गेंद कली सम बिकसी ऋतु बसंत औ फाग ।
फूलहु फरहु सदा सुख औ सुख सुफल सुहाग ॥

कहि यह बात सखी उठ धाई । चंपावत कहँ जाय सुनाई ॥
आज निरंग पद्मावत बारी ॥ जीव न जानि पवन अधारी ॥
तरक तरक गा चन्दन चोला । धड़क धड़क डर उहै न बोला ।
अहै जो कली कमल रसपूरी । चूर चूर होय गई सो चूरी ॥
देखो जाय जैसि कुंभलानी । सुनि सुहाग रानी बिहँसानी ।
लै संग सबही पद्मिन नारी ॥ आई जहँ पद्मावत बारी ॥ ॥
आय रूप सबही जो देखा ॥ सोनै बरन होय रही सो रेखा ।

कुसुम फूल जस मारी निरंग देख सब अंग ।
चंपावत भइ बारी चूंबू केश औ संग ॥

सब रनवास बैठि चहुं पासा । शशि मंडल जनु बैठ अकासा ।
बोली सबहिं बारि कुंभलानी । करहु सिंगार देहु खंडै बानी ॥
कमल कली कोमल रंग भीनी । अति सुकुमार लंक कै छीनी ।
चांद जैसि धन बैठि गिरासी ॥ सहस किरन होय सूर्य्य बिकासी ।

आंख१ खाविन्द२ पीली३ छाती४ लड़की५ नाखून लगनेसे रंग जाना रहा६
होंठपर पानकी लाली७ बाल८ लाल९ सुर्ख मुंह१० भंवर११ नामचिड़या१२
बराबर१३-१४ खिलना१५ माय पद्मावत१६ बेरंग१७-२७ हंसना१८ पीता१९ चां-

२०प्रभावत २२ कोमलपतली २३

गोहि के भार गहन असगही । भइ निरंग मुखजोत नरही ॥
इही बार कुछ पुन्य करेहू ॥ औ ले औ तन्यासहि देहू ॥
भर के थार नरवत गज मोती । वरनी कीन्ह चांद की जोती ॥

कीन्ह आगंजासवन औ सुखदीन्ह नहानु
पुनि भइ चांद जो चौदस रूपगयो छिप भानु

पटवहिं चेर आनसब छोरी ॥ सारी के चुक पहिर पटोरी ॥
फूंदेंया और कंस्या रोती ॥ छायल पिडवाही गुजराती ॥
चकवा चीर मंखोना लोने । मोतिन लाग औ छापे सोने ॥
सुरंग चीर भल सिंहल दीपी । कीन्ह जो छापा धनवह छीपी ॥
पेमचो डुरयां और बेदरी ॥ श्यांमसेत पीरी औ हरी ॥
सातंरग सो चित्र चितेरें ॥ भर के दीठ जाहिं नहिं हेरें ॥
चंदनौत औ खरदुक भारी । बांसपूर झिलमिलकी सारी ॥

पुनि आभरन बहु काढ़ा आनो भांति जड़ाव
फेर फेर सब पहिरहिं जैस जैस मन भाव

रतन सेन गये अपनी सभा । बैठे पाट जहां अठखंभा ॥
आय मिले चितौर के साथी । सभै बिहंस के दीन्ही हाथी ॥
राजा कर भल मानहु भाई । जै हम कहं यहि भूमि देखाई ॥
जो हम कहं नहिं राजनरेशू ॥ तब हम कहां कहां यह देशू ॥
धनि राजा तुई राज बिशेखा । जेहि की राज अय सुख कुछ देखा ॥
भोग बिलास सभी कुछ पावा । कहां जीभ जस अस्तुति आवा ॥
अब तुम आय अंतर पट साजा । दरशन कहं न तपावहु राजा ॥

किसके मुलाकात के तुकसे १ बैरंग २ दरवाज़ा ३ न्योछावर ४ खुशबूदार
उपटन ५ सूर्य ६ दारोग़ा तोशाखाना ७ अंगिया ८ रेशम ९ नाम कपड़ा १०
-११-१३-१४-१५-१६-१८-१९-२०-२७-२८ लाल १२ खूबसूरत १७ काला २१
सफ़ेद २२ नसवीर २३ निगाह २४ किसम लेहगा २५-२६ ज़ेवर २९ नस्ल ३०

कामिनि ३२ पताका ३२

नयन सेरान भूखगढ़ देखदरस तुम आज ॥
नव अवतार आजसब भयो औ सब भैनये काज

हंसक राज रजाय सुदीन्हा ॥ मैंदरशन कारन तपकीन्हा
अपनी योग लाग अस खेला । गुरु भा आप कीन्ह तुम चेला
अहक मोर बैर षाऊ तु देखहु । गुरु चीन्ह के योग बिशेषहु
जो तुम तप साधा मुहिंलागी । अबजन हियें होहु बैरागी ॥
जो जेहिं लाग सहे तप योगू ॥ सो तेहिके संग मानें भोगू ॥
सोरह सहस पद्मिनी मांगी ॥ सबै दीन्ह नहिं काहू खांगी ।
सबक धौरहर सोनें साजा । सब अपने अपने घर राजा ॥

हस्ति घोर औ कापर सबहिं दीन्ह बड़ साज ।
भये गृहस्त सब लखपती घर घर मानहुं राज

पद्मावत सब सखी बोलाईं ॥ चीर पटोर हार पहिराईं ॥
सीसें सबन के सेंदुर पूरा ॥ । सीस पूर सब मांग सिंदूरा ॥
चन्दन अगर चित्र सब भरीं । नयसे चार जानहुं औतरीं ।
जानु कमल संग फूली कोईं । औ सो चांद संग तरईं उईं ।
धन पद्मावत धन तोर नाहू ॥ जेहिं अभरन पहिरा सब काहू ।
बारह अभरन सोरह सिंगारा । तेहि सोहे पिय शशि मनयारा
शशि सुकलंकी राहुहि पूजा तुद्ध निकलंक न कोइ सं दूजा

काहू बीन्न गहा करे काहू नाद मृदंग ॥
सब दिन अनन्द बधावा रहस कूद इक संग

पद्मावत कहि सुनहुं सहेली ॥ हौं सो कमल तुम कुमुदैन बेली
कलश मानि हौं तेहि दिन आई पूजा चलो चलावहिं आई ॥

औरसटंडी १ नई पैदाइश २ हुक्म ३ वास्ते ४ जथा रोजा ५ दिल ६ हुक्म ७ हजार ८ कमी ९ महल १० घोड़ा ११ रेशम कपड़ा १२ सिर १३ जनसवी ऐके बराबर १४ छोटे नरतक १५-१७ कोकाबेली १६-२३ जाविंद १८ जेवर १९

साँझ[1] पद्मावत का जो बिवाहू। जनु परभात[2] उठैनि[3] भानू॥
आसपास बाजत चौंडोला[4]। दुंदु[5] मृदंग[6] झाँझ डफ ढोला।
एक संग सब सोंधी भरी॥ देव दुवार उतर भई खरी।
सै सो हाथ देव अन्हवावा॥ कलश सहस इक घृत भरावा।
पोता मंडफ अगर औ चन्दन। देव भरा अँगरज औ बिन्दन।

कै प्रणाम आगे भई बिनय कीन्ह बहु भाँति।
रानी कहा चलहु घर सखी होत है राति॥

भइ[13] निशि धनि[14] जस शशि परकासी। राजै देख भूमि फिर बसी॥
भइ कटकाई सरद शशि आवा। फेर गगन रवि चाहीं छवा॥
सुनि धनि धनक[20] भौंह कर फेरी। काम कटाक्ष[21] मैं कोर न हेरी॥
जानहुँ नैके बीच पै खाँचो॥ पिना सहौं आज न बाचौं॥
काल्हि न होय रहै सुख रामा। आजु करो रावन[25] संग्रामा॥
सैन सिंगार मुहँ है सजा॥ गज गति चाल अँचल गत धुजा।
नयन समुंद खड्ग नाशिका[29]। सरबर[30] जूझ को मो सों जित्ता।

हौं रानी पद्मावती मैं जीता सुख भोग॥
तू सरबर[31] कर तासों जस योगी तोहि योग॥

हौं अस योगि जान सब कोऊ। बीर सिंगार जिते मैं दोऊ॥
वहाँ तो हनू बीर घट माहीं॥ यहाँ तो काम कटक तुम्ह पाहीं।
वहाँ तो हैये चढ़के मैंहि मंडो॥ यहाँ तो अँधर अमीं रस खंडो।
वहाँ तो खड्ग नरिंदहि मारों। यहाँ तो बिरह तुम्हार सँहारों॥

बीच१ भोर२ लाल सूर्य्य३ नाम बाजा४-५-६ सहेली७ ह
दंडवत्११ आजजी१२ रात१३ पद्मावत१४-२० चाँद२१ रो
१८ आसमान पर सूर्य्य तथा कोठे पर आता १९ हमजा२
भौंह चढ़ाके न बचौंगे २३ कसम २४ रावन की तरह लड़े
तलवार २८ नाक २९ बराबरी ३०-३१ मैदान लड़ाई- बाभे

नयन सेराने भूँख गइ देख दरस तुम आज ॥
नव अवतार आज सब भयो जो सब मैं तयेकाज

हंसके राज रजाय सुदीन्हा ॥ मैं दरशन कारन तपकीन्हा
अपनी योग लाग अस खेला गुरु भा आप कीन्ह तुम चेला
अहक मोर बैर षा जलु देखुइ गुरु चीन्ह के योग बिशेषइ
जो तुम तप साधा मुहिं लागी अब जनि हियें होहु बैरागी ॥
जो जेहिं लाग सहै तप योगू ॥ सो तेहिके संग मानै भोगू ॥
सोरह सहस पद्मिनी मांगी ॥ सबै दीन्ह नहिं काहू खांगी ।
सबक धौरहर सोने साजा । सब अपने अपने घर राजा ॥

हस्ति घोर औ कापर सबहिं दीन्ह बड़ साज ।
भये गृहस्त सब लखपती घर घर मानहुं राज

पद्मावत सब सखी बोलाई ॥ चीर पटोर हार पहिराई ॥
सीस सबन के सेंदुर पूरा ॥ । सीस पूर सब मांग सिंदूरा ॥
चन्दन अगर चित्र सब भरी नये चार जानहुं औतरी ।
जानु कमल संग फूली कोंई । जो सो चांद संग तरइं उई ।
धन पद्मावत धन तोर नाहू ॥ जेहिं अभरन पहिरा सब काहू ।
बारह अभरन सोरह सिंगारा । तोहि सोहे पियें शशि मनयारा
शशि मुकलंकी राहुहिं पूजा तू द्द निकलंक न कोइ संदूजा

काहू बीन्त गहा करे काहू नाद मृदंग ॥
सब दिन आनन्द बधावा रहस कूद इक संग

पद्मावत कहि सुनहुं सहेली ॥ हौं सो कमल तुम कुमैदनवेली
कलश मानि हों तेहि दिन आई पूजा चलो चढ़ावहिं जाई ॥

धौरहरी १ नई पैदाइश २ हुकन ३ बाके ४ नया राजा ५ दिल हुलसौ ७ हलास ८ कमी ६ महल १० घोड़ा ११ क्रिस्म कपड़ा १२ सिर १३ जसवीरके बराबर १४ छोड़दे नरतक १५-१७ कोकाबेली १६-२३ ताविंद १८ जेवर १९

संभ पद्मावत काजो बिवाहू । जनु परभात उठे रवि भानू ॥
आस पास बाजत चौंडोला । दुंद मृदंग झांझ डफ ढोला ॥
एक संग सब सोंधी भरी ॥ देव दुवार उतर भई खरी ॥
सैं सो हाथ देव अन्हवावा ॥ कलश सहस इक घृत भरावा ॥
पोता मंडफ अगर औ चन्दन । देव भरा अरगज औ बिन्दन ॥

केप्रणाम आगे भई बिनय कीन्ह बहु भाँति ।
रानी कहा चलहु घर सखी होत है राति ॥

भइ निशि धनि जस शशि परकसी । राजै देख भूमि फिर बसी ॥
भइ कटकई सरद शशि आवा । फेर गगन रबि चाहीं छावा ॥
सुनि धनि भौंह धनक कर फेरी । काम कटाक्ष मैं को रन हेरी ॥
जानहु नवै बीच पै खाचौं ॥ गिना सवहीं आजन बाचौं ॥
काल्ह न होय रहे सुख रामा । आज करौं रावल संग्रामा ॥
सैन शृंगार सुहूं है सजा ॥ गज गन चाल अंचल गन धुजा ।
नयन समुंद खड्ग नाशिका । सरबर जूझ को मोसों जित्ता ।

हौं रानी पद्मावती मैं जीता सुख भोग ॥
तू सरबर कर तासों जस योगी तेहि योग ॥

हौं अस योगि जान सब कोऊ । बीर शृंगार जिते मैं दोऊ ॥
वहां तो हनू बीर घट माहीं ॥ यहां तो काम कटक तुम्ह पाहीं ।
वहां तो हिये चढ़ के मंहि मंडो ॥ यहां तो अधर अमीरस खंडो ।
वहां तो रकत नंदहि मारों । यहां तो बिरह तुम्हार संहारों ॥

बीच १ भौंर २ लाल सूर्य्य ३ नाम बाजा ४-५-६ सहेली ७ हज़ार ८ घी ९ खुशबू १० दंडवत् ११ आज्ञा १२ रात १३ पद्मावत १४-२० चांद १५ रोशनी १६ ज़मीन १७ हुकुम १८ आसमान पर सूर्य्य तथा कोठे पर आना १९ ग़मज़ा २१ कोर से देखना २२ भौंह चढ़ाके न बचौगे २३ क़सम २४ रावन की तरह लड़ो २५ फ़ौज २६ २७ हाथी २८ तलवार २९ नाक २९ बराबरी ३०-३१ मैदान लड़ाई वा भोग ३२ हनुमानजी ३३

रोशन॥ १९ कविता ३६ १०

वहां तो गज[1] पेलों होय केहर[2] ॥ यहां तो कुँच[3] कामिल कर हेहर
वहां तो लूटों कटक[4] खंडारू ॥ यहां तो जीत तुम्हार सिंगारू
वहां तो कुंभस्थल गज नाऊं ॥ यहां तो गजाकलस हिकर लाऊं

पड़ा बीच[6] तब धरधर प्रेमराज के टेक ॥
मानो भोग छहू ऋतु मिलहैं नो हियएक

खंड चौबीसवां छहू ऋतु बारह मास

प्रथम बसंत नवल ऋतु आई । सुऋतु चैत बैशाख सुहाई ॥
चन्दन चीर पहिर धन अंगा ॥ सेंदुर दीन्ह बेहंसि भर मंगा ॥
कुसम हार औ परमल[9] बासू ॥ मलयां गिर छिड़का कैलासू
सूर[11] सपेती फूलन दासी ॥ धन औ कंत मिले सुख बासी
पिय संजोग[12] धन जोबन बारी । भँवर पुहुप[13] संग करहिं धमारी
होय फाग भल चाचर जोरी । बिरह जराय दीन्ह जस होरी ॥
धन शशि[14] सीर[15] तपै[16] पिय सूरू[17] । नखत सिंगार होंहिं सब चूरू ॥

जेहि घर कंया ऋतु भली आव बसंता नित्त
सुख भर आवहिं देवहरे[18] दुःख न जाने कित्त

ऋतु ग्रीषम की तपन नहिं तहां । जेठ असाढ़ कंत घर जहां ॥
पहिरें सुरंग चीर धन झीना । परमल[19] मेद रहो तन भीना ॥
पद्मावत तन सीर[20] सुबासा ॥ नैहर राज कंत घर पासा ॥
औ बड़ जूड़ तहां सोनौरा[21] ॥ अगर पोत सुख नैन उहारा[22] ॥
सेतै[23] बिछावन सूर[24] सपेती ॥ भोग बिलास करहिं सुख सेती
अधौरं[25] तंबोर कपूर भीमसेना । चन्दन चरच लाव जिन वैना

हाथी १ शेर २ औरत की छाती से काम ३ फ़ौज ४ नाम हाथी ५ प्रेम ने बीच बचाव कर दिया ६ पहिले ७ पद्मावत ८ खुशबूदार ९ चन्दन १० तोशक तहखा ११ मुलाकात १२ फूल १३ चांद १४ ठंडा १५-२० गर्म १६ सूर्य १७ महादेव जी १८ बहुत खुशबू २० रानके रहने का मकान २१ फ़र्श २२ सफ़ेद २३

मानु नन्द सिंहल सब कहूं ॥ भागवंत कहं सुख अनचहूं ॥

दाड़िम देख लागि हिरस बास हि आंब छुहार
हरिय तन सोट काज जो अस चाखन हार ॥

ऋतु पावस बरसे पिय पावा ॥ सावन भादों अधिक सुहावा
पद्मावत चाहत ऋतु पाई ॥ गगन सुहावन भूमि सुहाई
कोकिल बैन पांत बग छूटी धन निसरी जनु बीरबहूटी
चमक बीज बरसे जल सोना दादुर मोर सबद सुठ लोना
रंगराती पीतम संग निशि जागी गरजे गगन चौंक कंठ लागी
सीतल बूंद ऊंच चौपारा ॥ हरियर सब देखे संसारा ॥
मलै समीर बास सुख बासी बेल फूल सेज सुख दासी ॥
हरियर भूमि कुसम्भी चोला । औ धन पिय संग रचो हिंडोला

पवन झकोरे हिहरषे लागे सीतल बास ॥
धन जानी यह पवन है पवन सो अपने आस

आय सरद ऋतु अधिक पियारी नाउं कुवार कातिक उजियारी
पद्मावत भई पून्यों कला ॥ चौदह चांद उई सिंहला ॥
सोरह किरन शृंगार बनावा नखत भरा सूर्य शशि पावा
भा निरमल सब धर्ती अकासू सेज संवार कीन्ह बल दासू ॥
सेत बिछावन औ उजियारी हंस हंस मिलहि पुरुष औ नारी
सोने फूल प्रथ्वी फूली ॥ पिय धन सों धन पिय सों भूली
खंजन दे खंजन दिखावा ॥ होय सारस जोरी रस पावा ॥

यह ऋतु कंथा पास जेहिं सुख तिनके हिय मांह
धन हंस लागी पिय गले धन गल पिय के बांह ॥

अनार १ अंगूर २ तोता ३ बरसात ४ बदन ५ आसमान ६ जमीन ७.२३ बगुला ८ प-
मावत ९ बिजुली १० मेढक ११ आवाज १२ गान १३ आसमान १४ हवा १५ जमीन १६
ढूब १७ बदन १८ पूरन माशी का चांद १९ चांद २० साफ २१ सफेद २२

सातवां २४ मसला २४

आय शिशिर ऋतु तहां न सीऊ। अगहन पूस जहां घर पीऊ॥
धैन औ पिय महँ सैव सुहागा। दुहूं अंग एकै मिल लागा॥
मन सों मन तन सों तन गहा। हिये सों हिय बिच हार न रहा॥
जानहुं चन्दन लाग्यो अंगा। चन्दन रहै न पावै संगा॥ ॥
भोग करहिं सुख राजा रानी। वह लेखे सब बरस जुड़ानी॥
जूझ दुहूं जोबन सों लागा॥ बिच हुत सैं व जीव ले भागा॥
दुइ घट मिल एकै होय जाहीं। ऐसे मिलहिं न बहीं न अघाही

हंसा केल करहिं ज्यों सरवर कूंदनहि दोऊ॥
सब पुकारे पार भा जस चकवी कबिछोउ

ऋतु हेमंत संग पियो पियाला। मानहुं फागुन सुख सब साला।
सूरे सपती महं दिन रानी॥ दगल चीर पहिरहिं बहु भांती।
घर घर सिंहल होय सुख भोजू। रहा न कतहूं दुख कर खोजू॥
जहं धन पुरुष शीत नहिं लागा। जानहुं काग देख सर भागा
जाय इन्दु सों कीन्ह पुकारा। हौं पद्मावत देस निसारा॥
यहि ऋतु सदा संग मैं सोवा। अब दरशन ते मोर बिछोवा।
अब हंसि के शशि सूरहिं भेटा। रहा जो शीत बीच कुत मेटा॥

भयो इन्दु कर आयसु पै सहावहिं भइ सोय
कोहू काहू की पीर ना कोहि काहू की होय

नागमती चितौर पथ हेरा॥ पिय योगी पुनि कीन्ह न फेरा
नागर नारि काहु बस परा॥ तें बिमोहि मो सों चित हरा॥
सुवा कौंल होय लेगा पीव॥ पीव न जान जान पर जीव॥
भयो नरायण बावन किरा॥ राजकरन नल राजा छरा॥

जाड़े का मौसिम १ पद्मावत २ जाड़ा ३-६ बदन ४ छाती ५ सारी दुनिया ६ लड़ाई ७ जवानी ८ तालाब १० सुख से कलोल ११ तो थक लहाफ १२ अलग १३ चांद १४ सूर्य १५ हुक्म १६ तसवीर १७ राह देखना १८ मोह लेना १९ मौत

करतबान लीन्हो कै छंद ॥ मर थोंहि भयो भिलमिलानन्द ॥
मानत भोगगोपि चन्द भोगी । लै चँपसबोजलधर यागा ॥
लैके कंथ भा कुरा लोपी ॥ कठिन बिछोह जियहि किमि गोपी ॥

सारस जोरी कि महरी मार गयो कितनखाग ॥
भुर भुर सांजर धन भई बिरह की लागी आग ॥

पिय बियोग अस बावर जोव । पपिहा जस बोलै पिय पीव ॥
अधिकै कास देंध सो कामा । हरि लै सुवा गयो पिय नामा ॥
बिरह बान तस लागत डोली । रक्त पसीज भीज तन चोली ॥
संग ही हीर हार हिये बारी ॥ हहर प्रान तजी अब नारी ॥
खनै ढूक आव पेट महँ सासा । खनहि जाय जिव होय निरासा ॥
पवन डुलावहिं सींचहिं चोला । फिर के नारि समुझ मुख बोला ॥
प्रान पयान होत को राखा । कोयल औ चातिक मुख भाखा ॥

आह जो मारी बिरह की आग उठी तेहि हाग ।
हंस जो रहा सरीर महँ पांख जरे तब भाग ॥

पाटमहादेव हिये निहारु ॥ समझ जीव चित चेत संभारु ॥
भंवर कमल संग होय मिलावा । संवर नेह मालति पुनि आवा ॥
पपीहा स्वांति सों जैसी प्रीती ॥ टेक प्यास बांध जिय सेती ॥
धरती जैसि गगन सो नेहा ॥ पलट फेरे बरखा रितु मेहा ॥
पुनि बसंत रितु आवन वेली । मुस सुमंध कर सारस बेली ॥
जन अस जीव करो सतूं बारी ॥ वह तेंवर पुनि उठहिं संवारी ॥
दिन दस बिन जल सूखा कासा । पुनि सोइ सरवर सोइ हंसा ॥

मिलहिं जो बिछुड़े साजन कैकी भेंट कहंत ।
तपत मिरगसर जिमि सहैं ते अद्रा पलहंत ।

नाम राजा १ नाम योगी २-४ दुखपाया ३ छिपना ५ खाविन्द ६ कोआ ७ नागमता ८ दुख ९ बकुत १० जलना ११ छोड़ना १२ पल १३ कूट १४ पपीहा १५ नरवन १६

दिन २० आसमान १८ भवर १ रौंद २०

चढ़ा असाढ़ गगँन[1] घन[2] गाजा । साजा बिरह दुंद दल बाजा ॥
धूम[3] स्याम धौरी घन धाये । सेत[4] धुजा बक पाँति देखाये
खड़्ग[5] बीजु[6] चमकै चहुँ ओरा । बुन्द बान बरसहिं घन घोरा ।
उनई घटा आय चहुँ फेरी ॥ कंत उबार मदन[7] हौं घेरी ॥
दादुर[8] मोर कोकिला पीऊ ॥ गिरहि बीज घट रहै न जीऊ ॥
पुष्य नक्षत्र सिर ऊपर आवा ॥ हौं बिन नाँह[10] मंदिर को छावा
अद्रा लाग बीज भुइं लेई ॥ मोपिय बिन को आदर देई ॥

जेहिं घर कंता ते सुखी तेहि गारू तेहि गँर्ब
कंत पियारे बाहरे हम सुख भूला सर्ब ॥

सावन बरस मेह[12] चैन वानी ॥ भरन परी हौं बिरह झुरानी ॥
लाग पुनरबस पीउ न देखा ॥ भइ बावर कहँ कंत सरेखा ॥
रकतौं[14] की आंस परहिं भुइं टूटी ॥ रेंग चली जनु बीर बहूरी ॥
सखिन रचा पिय संग हिंडोला । हरिया भूमि[15] कुसुंभी चोला ॥
हियँ[16] हिंडोल जस डोलै मोरा ॥ बिरह झुलाव देइ झकोरा ॥
बाट असूझ अथाह गँभीरी ॥ जिव बावर भा फिरै भँभीरी ॥
जग जल बूड़ जहां लग ताकी ॥ मोर नाव खेवक बिन थाकी ॥

परबत समुंद अगम बन औ बीहर घन ढँख ॥
किम कर भेटूं कंत तुम ना मो पाव न पंख

भर भादों दूभर अति भारी ॥ कैसे भरौं रैन अँधियारी ॥।
मंदिर सून पिय अनत ही बसा ॥ सेज नाग भइ दहि दहि डसा ॥
रहौं अकेल गहे इक पाटी ॥ नयन पसार मरों हिय फाटी ॥
चमक बीज घन गरज तरासा ॥ बिरह काल होय जीव गिरासा

आसमान १ बादल २ भूरी-काली सफ़ेद ३ सफ़ेद पताका ४ बगुला ५ तलवार ६ बिजुली ७ कामदेव ८ मेंढक ९ खाविन्द १० गरूर ११ जुलाहुवा १२ हेमशिखा १३ लोहू १४ जमीन १५ दिल १६ राह १७ गहरी १८ मल्लाह १९

बरसे मेघा झकोर झकोरी । मोरदुइ नयन चुवैं ज्यों ओरी ॥
धनि सूखे भर भादौं माहां ॥ अबहूं न आय न सीचेसि नीहां ॥
फुहँ बा लाग भूमि जल पूरी ॥ आँक जवास भई हौं झूरी ॥

जल थल भरे अपूर सब धनी गगन मिल एक
धन जोबन औगाह महं दय बूड़ा पिय टेक ॥

लाग कुंवार नीर जस घटा ॥ अबहूं आवो प्रीतम लुटा ॥
तुहि देखौं पिय पलुहै कया ॥ उतरा चीत बहुर कर मया ॥
उये अगस्त्य हस्ति तन गाजा । तुरी पलान चढ़ै रन राजा ॥
चित्रा मीन मीन घर आवा ॥ कोकिल पीव पुकारत पावा
स्वाति बूंद चातक मुख परी ॥ सीप समुंद मोती बहु भरी ॥
सरवर संवर हंस चल आये ॥ सारस कुरलैं खंजन देखाये ॥
भई निरास कास बन फूले ॥ कंत न फिरे बिदेसहिं भूले

बिरह हस्ति तन सालै घाय करे तिन चूर ॥
बेगि आय पिय बाचहि गाजहि होय बसे दूर ॥

कातिक सरद चन्द उजियारा । जग सीतल मो बिरहिन जारा ·
चौदह किर न चन्द परकासू । जनहु जरै सब धर्ति अकासू
तन मन सेज करै इक दाहू ॥ सब कंह चन्द भयो मो राहू ॥
चहूं खंड लागे अंधियारा ॥ जो घर नाहीं कंत पियारा ॥
अबहूं निठुर आव यहि बारा ॥ परब देवारी होय संसारा ॥
संग झुमक गावहिं अगमोरी । हौं झुरवौं बिछुरी जेहि जोरी ॥
जेहि घर पिय सो मनोरा पूजा । मो कहं बिरह सौत दुख दूजा ॥

नाम नक्षत्र १-४-११-१३-१४-१६ और तथा नागमती २ स्वाति ३
ज़मीन ५ आसमान ६ गहिरा ७ पानी ८ लोटके - ९ बदन हरा हो जाय १०
मेहरबानी १२ घोड़ा १५ मछली १६ पपीहा १८ तालाब १९ ममोला २०
हाथी २१ छेदना २२ जल्द २३ शोर २४ रोशन २५ जलाना २६ कामना २७

सखी मानें त्योहारसब गायें देवारी खेल ॥
हौं का खेलों कंत बिन रही छार सिर मेल ॥

अगहन देवस घटा निशि बाढ़ी । दोपहर रैन जाय किम गाढ़ी
अब धन देवस बिरह भा राती । जरों बिरह जस दीपक बाती ॥
कांपा हियो जनावा सीवें ॥ तौ पै जाय होय संग पीव ॥
घर घर चीर रचे सब काहू ॥ मोर रूप सब लैगा नाहू ॥
पलट न बहुरा गा जो बिछोई । अबहूं फिरे फिरे रंग सोई ॥
बज्र अगिन बिरहिन हिय जारा । सुलग सुलग दगधे भइ छारा
यह दुख दगध न जाने कंतू । जोबन जन्म करे भस मंतू

पिय सों कहो संदेसरा ए भंवरा ए काग ॥
सो धन बिरहिन जर गई तेहक धुवां हम लाग

पूस जाड़ थर थर तन कांपा । सूर्य्य जुड़ाय लंक दिस तापा ॥
बिरह बाढ़ भा दारुन सीव ॥ कंप कंप मरों लेइ हर जीव ॥
कंत कहां हो लागो हियरे ॥ पंथ अपार सूझ नहिं नेरे ॥
सौर सपेती आवे जूड़ी ॥ जानहु सेज हिमंचल बूड़ी ॥
चकई निश बिछुड़े दिन मिला । हौं दिन रात बिरह कोकिला ।
रैन अकेल साथ नहिं सखी ॥ कैसें जियें बिछोही पखी ॥
बिरह सुजान भयो तन जाड़ा । जियन खाय औ मुये हिन छाड़ा

रक्त ढुरा मांसू गिरा हाड़ भये सब शंख ॥
धन सारस होइ रर मुई आय समेटहिं पंख

लाग्यो माघ परे अति पाला । बिरहा काल भयो जड़ काला ।
पहल पहल तन रुई जो झांपे । पहल पहल अधिको हियें कांपे

खाक १ ८ दिन २ रात ३-४ दिल ५ जाड़ा ६ गोविन्द ७ जलना ८ उत्तर तरफ १० टेढ़ा ११ छाती १२ राह १३ नायक लहाफ़ १४ पाला की तरफ़ १५ तथा नागमती १६ बकुन १७ दिल १८

आय सूर होय तपरे नाहां । तुह बिन जाड़ु न छूटे माहां ॥
यही मांह उपजी रस मूलू । तो सु भंवर मोर जोवन फूलू ॥
नयन चुवहिं जस महावट नीरू । तेहि बिन आग लाग सिर चीरू ॥
टपटप बूंद परहिं जनु ओला । बिरह पवन होय मारे झोला ॥
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा । गींव न हार रहे होय डोरा ॥

तुम बिन कंता धन हरुवी तन तन बर अडोल ।
तेहि पर बिरह जराय के चहे उड़ावा झोल ॥

फागुन पवन झकोरे महा । चौगुन सीव जाय नहि सहा ॥
तन जस पियर पात भा मोरा । तेहि पर बिरह देइ झकझोरा ॥
तरवर झरहिं झरहिं बन ढांखा । भइ ओपंत फूल फर साखा ॥
करहिं बनाफंत कीन्ह हुलासू । मो कहं जग भा दून उदासू ॥
फाग करहिं सब चांचर जोरी । मो तन ने लाय दीन्ह जस होरी ॥
जो पै पियहि जरत अस भावा । जरत मरत मुहिं रोस न आवा ॥
रात दिवस निरभै जिय मोरे । लै ग्यो निहार कंत जो नोरे ॥

यह तन जारों छांर के कहों कि पवन उड़ाव ।
मग तेहि मारग होय परे कंत धरे जहं पाव ॥

चैत बसंता होय धुमारी । मो लेखे संसार उजारी ॥
पंचम बिरह पन जस मारी । रक्त रोय सगरे बन ढारी ॥
बूड़ उठे सब तरवर पाता । भीज मंजीठ टेसु बन राता ॥
बौरे आम्ब फेर अब लागी । अबहूं संवरि घर आव सभागी ॥
सहसे भाव फूली बनपती । मधुकर फिरे संवरि मालती ॥
मो कहं फूल भये सब कांटे । दृष्टि हरी जनु लागहिं चांटे ॥

सूर्य्य १ खाविन्द २ पानी ३ कपड़ा ४ जोड़ा ५ गरदन ६ हलकी तिनका से ७ जाड़ा ८ पेड़ ९-११-१८ पैदा १० दिन १२ नशा न्यो छावरहे १३ राख १४ शाखा १५ राह १६ तीर खैंच के १७ लाख १९ लाल २० हज़ार २१ भंवर २२ कली २३

भरजोबन भइ नारंगसाखा	सो अब बिरहजात है चाखा ॥

घरनै पैवा आवजस आय परो पिय दूर ॥
नार परायेहाथ है तुमबिन पावन कूर ॥

भा बैसाख तपन अतिलागी	चोलाचीर चंदन भा आगी
सूरजजरत हिमंचल ताका ।	बिरह बिजोग सौंह रथ हांका
जरत बचासिहोय पिय छांहा	आयबुझाव अंगारहिं मांहा
तुहिंदरसनहोयसीतलनारी	आय आगसों कर फुलवारी ॥
लाग जरै जरै जस भारू ॥	फिरफिर भूंजेसि तज्यों नबारू
सरवर हिया घटतनितजाई	तरक तरक होय होय भरआई
बेहिरतहिया करहु पियटेको	हेरिड मया कर मिलवहु एका

कमलजो विकसत मानसर बिन जल गयो सुखाय
अबहूं बेलि फिरपल्हवै जो पिय सीचहिं आय

जेठ जरौ जग भुनहि लुवारा ।	उठहि बौंडरा परहिं अंगारा ॥
बिरह गाजि हनुमत होय जागा	लंकादाह करै तन लागा ॥
चारहु पवन झकोरै आगी।	लंकादाह पलंका लागी ॥
दह भई श्याम नदी कालिन्दी	बिरह की आग कठिन असमुन्दी
उठै आग औ आवै आंधी ॥	नयन न सूझ मरों दुख बांधी
अधजर भई मासतन सूखा	लागो बिरह काल होय भूखा
मांस खाय अब हाडहि लागा	अबहूं आव आवत सुन भागा

गिरि समुंद शशि मेघ रवि सहि न सकें यह आग
मुहम्मद सती सराही जरै जो अस पिय लाग ॥

तपै लाग अब जेठ असाढ़ी	भइ मोकहं यहि छांजन गाढ़ी

जवानी १ कबूतर २ भारी ३ सामने ४ ठंडा ५ दरवाज़ा ६ तालाब ७ दिल ८ छाती फटना ९ मदद १० निगाह ११ खिलना १२ बिजुली १३ जलाना १४ यमुना १५ चांद १६ सूर्य्य १७ छावना १८

नून नून बर मा भूरो खरी	मा बबा दुख आगर जरी ॥
बंध नाहि औ खंड न कोई	नांग न आव कहों कोहि रोई ॥
सांठ नांठ लग बात को पूछा	बिन जिय फिरे मूंज तन छूछा ॥
भई दुहेली टेक बहूनी ॥	थांभ नांह ठठ सके न थूनी ॥
बरषहि मेह चुवहि नयनाहा	छपर छपर होई बिन नाहा ॥
कोरी कहां ठाठ नव साजा ॥	तुम बिन कांत न छाजन छाजा

अबहूं हेरि मयाकर नाथ निठुर घर आव
मंदिर उजाड़ होत है नव के आय बसाव

रोय गंवाई बारह मासा ॥	सहस सहस दुख इक इक सांसा
तिल तिल बरस बरस पर जाई	पहर पहर जुग जुग न सराई ॥
सो नहि आव पिय रूप मुरारी ॥	जासो पाव सुहाग सुनारी ॥
सांझ भई झुर झुर पथ हेरी	कौन सो घरी करो पिय फेरी ॥
दहि कुइला भइ कंत सनेहा	तोला मांस रहा नहि देहा ॥
रक्त न रहा बिरह तन गिरा ॥	रती रती होय नयनहि ढुरा ॥
पाय लगी जोरे धन हाथा ॥	जोरा नेह जो राये नाथा ॥

बरस देवस धन रोय के हार परी चित झंख।
मानुष घर घर बूझ के पूछो निसरी पंख

भई पुंछार लीन्ह बनबासू ॥	बैरिन सौन दीन्ह चिल बासू
हो रबि बान बिरह तन लागा	जो अबहूं आवे घर कागा ॥
हारिल भई पंथ मैं सेवा ॥	अब तुहि पठवों कौन परेवा
धौरी पांडुक कहि पिय ठाऊं	जो चित रोख न दूसर नाऊं

तिनकी बराबर १पत्नी २रूपिया पास नहीं ३दुबली ४बेसहारा ५खा-विन्द ६छावनी ७निगाह ८मेहरबानी ९हजार १०मालूम होना ११साम-ने १२सह १३जलना १४नागमती १५दिन १६जानवर परिंद १७-२२ मोर १८चिल्लाना १९तिनका २०नाम चिड़िया २१ २३-२४-२५

जाय बिवाही पिय कंठ[1] लुवा । करै मिलाव सोई गोरेवा[2] ॥
कोकिल[3] भई पुकारत रही ॥ महर[4] पुकार लीन्ह लै दही ॥
पेड़ निलौरी[5] ओ जलहंसा[6] ॥ हिरदय[7] बैठ बिरह लग नसा

जेहि पंखी के नेर होय कहै बिरह की बात
सोई पंख जर तरवर जाय होहि नहि पात ॥

कुहुक कुहुक जस कोइल रोई[8] रत्त[9] आंस घुंगची बन बोई ॥
भइ करमुखी नयन तन राती को सिराव बिरहा दुख तांती[10] ॥
जहं जहं ठाढ़ होय बनबासी तहं तहं होहिं घुंगचिहि की रासी
बूंद बूंद महं जानौ जीव ॥ गूंजा गूंज करहिं पिय पीव ॥
नेह दुख भई पलास निपाती लोहू बूड़ उठी होय राती[11] ॥
राती बिंब[12] भये नेहि लोहूं ॥ परवर पाक फटे हियें[13] गोहूं ॥
देखों जहां सोइ होय राता ॥ जहं सो रतन कहै को बाता ॥

ना पावस[14] व हि देसरे नाहि हेवंत न बसंत ॥
ना कोकिल न पपीहरा जेहि सुन आवे कंत

फिर फिर रोय कोई नहिं डोला आधी रात बिहंगम[15] बोला ।
तुइ फिर फिर दाहे[16] सब पांखी केहि गुन रैन न लावेसि आंखी
नागमती केहि कारन[17] रोई ॥ कासों कहूं जो कंत बिछोई[18]
मन चिन्त हियें न उत्तर मोरे नयन कजल चंध[20] रहे न मोरे
कोइ न जाय तेहि सिंहल दीपा जेहिं से बात कहं नयना सीपा
योगी होय निसरा सो नाहूं[21] । तब हुन कहा संदेस न काहूं
तिन पूछों सब योगी जंगम कोइ निज बात न कहै बिहंगम

गले लगाया १ तथा मर्द २ नाम चिड़िया ३-४-५-६ दिल ७ पेड़ ८ लाल आंख ९ जली हुई १० लाल ११ कुंदरू १२ छाती १३ बरसात १४ नाम चिड़िया १५ जलाना १६ राज १७ वास्ते १८ अलग १९ आंख २० ख़ाविन्द २१

चारों[1] वनो उजार भये सकस संदेसा टेक
कहौं विरह दुख आपन बैठ सुनहु दंडरक ।

तासों दुख कहिये हो बीरा । जेहि सुनके लागै पर पीरा
को होय भीम देन को लेहा । को सिंहल पहुँचावे चहा ॥
जहाँ सो कंत गये होय योगी । हौं किंगरी भइ झूर वियोगी
वह सुनके सूरी कर मेटा । हौं भइ भस्म न आवस मेटा
कथा जो कहै आय पिय केरी । पांवर होउं जन्म भर चेरी ॥
वह के गुन संवरत भइ माला । अबहुं न बहुरा उड़गा छाला
विरह गुरु इ खप्पर के हिया । पवन अधार रहै सो जिया ।

हाड़ भई झुर किंगरी नसैं भई सब तांति ।
रोंव रोंव तन धुन उठै कहौं बिथा तेहि भांति

पद्मावत सों कह्यो बिहंगम । कंत तुभाय रहै जेहि संगम
तू घर घरनि भई पिउ हरता । मोहि तन जप दीन्ही चौबरता
राखन वारे के सोनो कहं भयो । ए[10] ढंट लंक मोहि कै कियो ॥
तो कहं चैन सुख मिल सीता । मो कहं हिये दुंद दुख पीता ॥
हमहूं व्याह तोर संग पीऊ ॥ । आ[11]पहि पाय जान पर जीऊ
अबहूं कर माया जिव फेरो । मोहि जियावहु कुपिय मेरो
मोहि भाग सो काज न प्यारी । सौ[12]हे हरि की चाह न हारी ॥

सौंन न होस आहनू बैरिन मोर कंत जेहि हाथ
आन मिलाव एक बेर कैसे तोर पाय सोमाथ

रतन सेन की मां सरस्वती ॥ । गोपि चन्द जस मैनावती ॥
अंधरी बूढ़ी सुठ दुख रोवा ॥ । जो[13]बन रतन कहां हे गयरवावा

चारों तरफ १ नाम पहेलवान २ दुखी ३ मुलाकात कर ४ जूनी ५ दिल ६
नाम चिड़िया ७ घरवाली ८ सोना ९ राखा १० अपना पैर जानके मेरी ज़िन्दगी चाह ११ सूधी निगाह १२ जवानी १३

जोबन[1] अहा लीन्ह सो काढ़ी । भइ बिन टेक[2] करै को गाढ़ी ॥
बिन जोबन भई आस पराई । कहां सो पूत खंभ होय आई ॥
नयन दीठि[3] नहिं दिया बराहीं । घर अंधियार पूत जो नाहीं ॥
कोरी[4] चला श्रवन की ठाऊं ॥ टेक देह बह टेको पाऊं ॥
तुम श्रवन होय कांवर सजी । डार लाय सो काहे[5] बंजी ॥

श्रवन भवन कै रसुई[6] माता कांवर लाग ।
तुम बिन पानि न पावै दसरथ लावै आग ॥

लै सो संदेश बिहंगम चला । उठी आग नागरी[7] सिंहला ॥
बिरह बिजोग[8] बीज कौ टेगा । धूंम[9] सो उठा श्याम[10] भये मेघा ॥
भरा गगन[11] लूक तस छूटी ॥ होय सब नखत[12] गिरहिं भुई[13] टूटी ॥
जहं जहं भूमि[14] जरी भा रेहू ॥ बिरह कि दग्ध भई जनु खेहू ॥
एहु केन जस लंका जरी ॥ औटहु चिनग चांद महं परी ॥
जाय बिहंगम[15] समुंद[16] डफारा ॥ जरे मच्छ पानी भा खारा ॥
बांदी[17] बन बीहड़ जल सीपा ॥ जाय नेर भा सिंहल दीपा ॥

समुंद तीर तरवर[18] इक जाय बैठ तेहि रूख ॥
जब लग कहि न संदेसा तब लग प्यास न भूख ॥

रतन सेन बन करत अहेरा ॥ कीन्ह वही[19] तरवर तर फेरा ॥
सीतल वृक्ष समुंद के तीरा । अति[20] ऊंच औ छांह गंभीरा ॥
तुरी[21] बांध के बैठ अकेला ॥ साथी और करहिं सब केला ॥
देखत फिरै सो तरवर साखा । लाग सुनै पंखिन की भाखा ॥
पंखिन महं जो बिहंगम अहा । नागमती जो ताको दुख कहा ॥

जवानी १ बेसहारे २ निगाह ३ नाम ब्राह्मन जो अंधी अंधा मां बाप को कांवर में लिये रहता था ४ छोड़ देना ५ राजा दसरथ ६ ना नागरी चिड़िया ७ २५ जहां बिरह की बिजुली वहां बिजुली क्या दु धामनी कौन ८ धुआं ९ काला १० आसमान ११ ज़मीन १२ जलना १३ राख १४ चिल्लाना १६ जलाना १७ पेड़ १८ शिकार १९

दोहा २०

पूँछहिं सबै कहौं गम नामा । अहो मीत काहे तुम श्यामा
कहेसि मीत मासिक दुइ भये जंबूदीप तहां हम गये ॥

नगर एक हम देखा गढ़ चितौर वह नाउ ॥
सो दुख कहौं कहाँ लग हम तहँ ढह नहिं ठाँउ ॥

योगी होय निसरा सो राजा । सून नगर जानहु धुन्द बाजा
नागमती है ताकर रानी ॥ जरै बिरह जस कोयल बानी
अब लग जर भइ होय छारा कहीं न जाय बिरह की झारा
हियो फाट वह जबहिं कुहुके परैं आंस सब होय होय लूके ॥
चहूँ खंड छिटकी वह आगी । धर्ती जरत गंग जै कहँ लागी ॥
बिरह दवौन को जरत बुझावा जहाँ लाग सो हेरें धावा ॥
हौं पुनि तहाँ सुनत ढिग लागा ॥ तन भा श्याम जीव लै भागा

का तुम हँसो गर्ब कै करहु समुंद महँ केल
मीन अन्ह बिरही बसपरहिं दहो अगिन जल मेल

सुनि चितौर राजमन गुना ॥ बिधि संदेश मैं कासों सुना ।
को गरबैत पर पंखी बेसा ॥ नागमती कर कहै संदेसा ॥
को तूं मीत मन चेत बसेरू ॥ देवकि दानो पवन परबेरू ॥
कहु बूझ शिव बाचा तोही ॥ सो निज बात आन कहु मोही
कहाँ सो नागमती तुइँ देखी ॥ कहेसि बिरह जस मरौ बिशेखी
हौं राजा सोई भा योगी ॥ जेहि कारन वह ऐस बियोगी ॥
जस तूं पंखी हौं दिन भरौं ॥ चाहौं कबहिं जाय उड़ परौं ॥

पलक आंख नेहि मारग लागी दुनहु रहहिं
कोउ न संदेशी आवहिं नेहि क संदेस कहाहिं

नाम चिड़िया १ देस २ दो महीने ३ जलना ४ जगह ५ अंधियारा ६ राख ७ लूक ८ छाती ९ आसमान १० आग ११ गरूर १२ पेड़ १३ महादेव जी १४ दुखी १५ जानवर परन्द १६ गह १७

पंखिहि कहा संदेस बियोगू ॥	योगी भया न जानेहि भोगू ॥
धनी संग न संगे पूरे ॥	पानी बूड़ रान दिज भूरे ॥
तेल बैल जस बायें फिरे ॥	परे भंवर मंह सौंह न टरे ॥
तुरी नाउँ दाहिन रथ हांका ।	बायें फिरे कुम्हार का चांका ।
तुहि अस नाहिं जो पंख भुलाना ।	उड़े सो आव जगत महं जाना ।
एक दीप का आयों तोरें ॥	सब संसार पायं तर मोरें ॥
दहिने फिरे सो अस उजियारा ।	जस जग चांद सूर्य औ तारा ।

मुहम्मद बायें दिसं तजी एक श्रवनि दे कीन्ह ।
जब ते दाहिन होय मिला बोल पपीहा पांख ॥

हौं धुव अचल सो दाहिन लावा ।	फिर सुमेर चितौर गढ़ आवा ।
देखों तोरे मंदिर घमोई ॥	मात तोर आंधर भइ रोई ॥
जस श्रवन बिन अंधी अंधा ।	तस रर मुई तोहि बिन बंधा ॥
कहेसि मरों को कांवर लेय ।	पूत नाहि पानी को देय ॥
गई प्यास लाग तुहि साधा ।	पानी दीन्ह दसरथ के हाथा ।
पानी न पियें आग पै चाहा ॥	तोहि अस पूत जन्म अस लाहा ॥
भागीरथी होहु कर फेरा ॥	जाय संवार मरन की बेरा ॥

तू सपन मन ताकर अस परदेस न लेहि ॥
अब ताई मुई होय ही मुयहि जाय गन देहि ॥

नागमती दुख बिरह अपारा ।	धर्ती स्वर्ग जरे तेहि झारा ॥
नगर कोट घर बाहर सूना ॥	न्यौं जहोय घर पुरुष बहूना
तं का बरू परा बस टोना ॥	भूला योग छरा तेहि योना ॥
वह तेहि कारन मर भइ भारा ।	रही नाक होय पवन अधारा ॥
कहु बी लहि लै मो कहं खाऊ	मांस न कौया जो रुच काहू ॥

दुख१ सामने२ घोड़ा३ तरफ़४ कान५ नाम सितारा६ पहाड़७ नाममा ताापता मक्ता८ गंगाजी९ परमेश्वर नकेर१० खाली११ बदन१२

बिरह मयूर नाग वह नारी । तूं मंजोर कर बेग गुहारी ।।
मांस गिरा सांजर होय परी । योगी अबहूं पंहुच लै जरी ।।

देख बिरह दुख ना करै मैं सो तजो बनबास ।
आयो भाग समुंद मंह तोह न छाड़े पास ।

अस पुनि जरा बिरह कर गठा । मेघ श्याम भये धूम जो उठा ।।
दाढ़ा राहु केतु गा दाढ़ा ।। सूरय जरा चाँद जर आधा ।।
औ सब नखत तराई जरी ।। टूटहिं लूक धर्ति महं परी ।।
जरै सो धर्ती ठांवहि ठाऊं ।। दहक पलास जरै तेहि दाऊं ।।
बिरह स्वांस तस निकसी झारा । दहि दहि परबत होहिं अंगारा ।
भंवर पतंग जरे औ नागा ।। कोकिल भुजैल औ सब कागा ।
बन पंखी सब जीव लै उड़े ।। जल पंखी जल मंह डुब बूड़े ।।

हम हूं जरत तंह निकसा सकुंद भायो आय
समुंद जरा पानि मा खारा धूम रहा जग छाय

राजे कहा रे स्वर्ग संदेसी ।। उतर आव मोंहि मिल परदेसी
पाय टेक तुहि लावों हियरे । परम संदेश कहा होय नेरे ।।
कहा बिहंगम जो बनबासी । किन गही ने होय उदासी ।।
जेहि तरै बरा तरनुम आसन कोऊ । कोकिल काग बरा बरदोऊ ।।
धर्ती मंह बिष चारा परा ।। हारिल जान भूमि परहरा ।।
फिरों बियोगी डार हिं डारा ।। करों चले कहं पंख संवारा ।।
जेहिं घरी घटन नित जाहीं ।। सांझ जीव है दैवस हिं नाहीं

जोलहि फेर मुक्त है परीं न पिंजर मांह ।।
चाहुं बेग थल आपन है जेहि बीच निबाह ।।

मोर १ बिहार २ जल्द ३ १८ मदद ४ बूटी ५ छोड़ना ६ ठैर ७ जलना ८ छोटे नखत ९ हारिल १० दिल ११ नाम चिड़िया १२ पेड़ १३ यहि चिड़िया पेड़ नहीं छोड़ती पानी पीने में भी लकड़ी चोंच में लिये रहती १४ जमीन छोड़ी १५ दिन १६ जान १७

कहि संदेस बिहंगम चला ॥ आगलाय सगरे सिंहला ॥
घड़ी बीत राजा घर आवा ॥ भा अलोप पुनि हेरि न आवा ॥
पंखी नाउं न देखा पांख ॥ राजा रोय फिरा के सांख ॥
अस हेरत वह पंख हेराना ॥ दिन कह मनहिं अस कर पयाना ॥
जो लहि आन पिंड इक ठाऊं ॥ एक बार चितौर गढ़ जाऊं ॥
आवा भंवर मंदिर जहं केवा ॥ जीव साथ लेगयो परेवा ॥
तन सिंहल मन चितौर बसा ॥ जिव बेसम्भर नाग जिमि डसा ॥

जैत नारि हंस पूछी अमी बचन जिमि निन
रस उतरा बिष चढ़ रहा ना वह चैन न मैन

बरस एक तहं सिंहल रही ॥ भोग बिलास कीन्ह अस चही ॥
भाउ दास जो सुना संदेसू ॥ संवरि चला मन चितौर देसू ॥
कमल उदासी देखा भंवरा ॥ थिर न रही मालति मन संवरा ॥
योगी औ मन पवन परावा ॥ कित थिर रहे जो चित उचावा ॥
जो जिव काढ़ दे आपन कोई ॥ योगी भंवर न आपन होई ॥
चला कमल मों लेति हिये घाली ॥ अब कित थिर आछी अलि आली ॥
गंध्रपसेन आय सुनि बारी ॥ कस जिव भयो उदास तुम्हारी ॥

मैं तुमही जिव लावा दीन्ह नयन महं बास ॥
जो तुम होहु उदासी यह का कर कैलास ॥

रतनसेन बिनवा कर जोरी ॥ अस तुति योग जीभ ना मोरी ॥
सिंहस जीभ जो होहिं गुसाईं ॥ कीन जाय अस्तुति जह ताईं ॥
कांच किरा तुम कंचन कीन्हा ॥ तब भा रतन जोति तुम दीन्हा ॥
गंग जो निरमैल नीर कुलीना ॥ नार मिले जल होय मलीना ॥

नामचिड़िया १ गायब २ निगाह ३ देखना ४ कूच ५ बदन ६ जगह ७ कमल तथा पद्मावत ८ जानवर परिन्द ९ मीठी बात १० कायम ११ तय पद्मावत १२ दिल १३ भंवर १४ दरवाज़ा १५ हज़ार १६ सोना १७ नाक साफ़ १८ पानी १९

नसहैं[1] यहा मलीनी कैला।	मिला आय तुम्ह मानिरमैला[2]
पान समुंद मिला होय मोती[3]	पापहरा निरमल भइ जोती[4]॥
तुम मन आवा सिंहल पुरी॥	तुम तें चढ़ा राज औ कुरी[5]

सात समुंद तुम राजा[6] सरन पाव कोइ खार॥
सबै आय सिर नावहिं जहां तुम्हारा पार॥

ओ मो[7] बिनय अब करौं[8] गुसाई	तब लग कया जीव जब ताई॥
आवा आज हमार परेवा[9]॥	पाती दीन्ह आन पानदेवा॥
राज काज औ भइ उपराही॥	सैंच[11] माइ अस कोऊ नाहीं॥
आपन आपन करहिं सोलीको[12]	एकहि मार एक चहि टीका॥
भई अमावस नखनहि राजू।	हम कहं चन्द चलावहु आजू
राज हमार जहां चल आवा॥	लिख पठई अब होय पुरावा
तहां नेर दहिल्ली सुलतानू॥	होयहै भोर उठै जो भानू॥

रहहु[15] अमर महि गगन लग औ जो लहहु[16] स आव
सीस[17] हमार तहां निति जहां तुम्हारे पाव॥

राज सभा पुनि उठी सवारी।	अनबिनती राखी पत भारी
भाइन मांझ होय जनि फूटी॥	घर के भेद लंक अस टूटी॥
बिरवा लाय न सूखै दीजे॥	पावै पानि हिये[19] सो कीजे॥
अन राखा तुम दीपक लेसी॥	पै न रहै पाहुन परदेसी॥
जाकर राज जहां चल आवा	उहीं देस पै ना कहं भावा॥
हंस देउ नयन घाल कै राखहि	एसु भाखयहि जीभ न भाखहि
देवस देहु से कुसल सिधावहिं	दीर्घ आयु[20] होय पुनि आवहिं

बेरोशनी १ पाक साफ़ २ सोना ३ साफ़ ४ उजल ५ बराबर नहीं कोई ६ नखत ७ अर्ज़ करता ८ बदन ९ क़ासिद १० दुशमन ११ हद १२ सूर्य्य १३ हमेशा ज़िन्दा १४ ज़मीन-आसमान १५ सिर १६ हमेशा १७ निगाह १८ दिनरात दो १९ बड़ी उमर हो २०

सबहि बिचार परा अस भा गवने कर साज ॥
सिद्ध गणेश मनावहिं बिधि पूरबे मन काज

बिनय करै पद्मावत बारी ॥ हों पिय कमल सो गोंदे वारी ।
मुंहि अस कहां सो मालति बेली कदम सेवती चंप चमेली ॥
औ सिंगार हार जस तागा ॥ पुहुप कली अस हिरदय लागा ।
हों सु बसन्त करों नित पूजा ॥ कुसुम गुलाल सुदरसन गूजा ।
बकचुन बिनवों रोस बिमोही । सुनि बकाव तज जाही जूही ॥
नागेसर जो मन है तोरी ॥ पूज न सकै बोलसर मोरी ॥
हों सदबर्ग लीन्ह मैं शरना ॥ आगे करु जो कंत तुहि करना ।

केते नारि समझावै भंवर न कांटे बेध ॥
कहे मरौं पै चितौर जग्य करौं असुवमेध

गवन चार पद्मावत सुना ॥ उठा धसक जिव औ सिर धुना ।
गहबर आय नयन भर आसू छाड़ब यहि सिंहल कैलासू ।
छाड़ों नैहर चल्यों बिछोही यहे देवस हों हू तह रोई ॥
छाड़ों आपन सखी सहेली । दूर गवन तज चल्यों अकेली
जहां न रहन भयो निज चालू होतेहि कस न तहां भा कालू
नैहर आय काहि सुख देखा ॥ जनु होय गयो स्वपन का लेखा
गवन पार सो पिता नि छोहा किन बिबाह के दीन्ह बिछोहा

हियै आय दुख बाजौ जिव जानहु गा छेक ॥
मन ते वान दे रोये हों मंडप कर टेक ॥ ॥

पुनि पद्मावत सखी बोलाई सुनि के गवन मिली सब आई
मिलहु सखी हम तहवां जाही जहां जाय पुनि आवन नाहीं ।

ईस्वर १ चर्ज करना २ फूल ३ छानी ४ नारिफ़ सुनि गुल्ला नहीं आता ५ तथा नागमती ६ तथा राजा ७ अलग ८ दिन ९ बेदर्द १० जुदाई ११ दिल १२ पंछुचा १३ ईस्वर का नाम लाबी करके १४

सात समुंद्र पार वह देश ॥ कित रे मिलन कित आव संदेश ॥
अगम पंथ परदेश सिधारी ॥ न जनौं कुशल कि बिथा हमारी ॥
पितैं निछोहैं कीन्ह हिय मांहा । तहां को हमैं राखै गहि बांहा ॥
हम तुम एक मिलै संग खेला । अंत बिछोहैं आन गये मेला ॥
तुम अस हित संगात पियारा । जियत जीव नहिं करौं निरारा ॥

कंत चलाई का करौं आयसु जाय न मेट ॥
पुनि हम मिलहिं कि ना मिलें लेहु सहेली भेट ॥

धनै रोवत रोंई सब सखीं ॥ हम तुम देख आप कहं झखीं ॥
तुम ऐसी जहं रही न पाहीं ॥ पुनि हम काहि जो आहि पराहीं ॥
आदिं पिता जो रहा हमारा ॥ बहुं न यहु दिन हियैं बिचारा ॥
छोंहे न कीन्ह निछोंही ओहूं ॥ का हम दोष लाग इक गोहूं ॥
मैं गोहूं कर हियौं चराना । पै सो पिता नाहियें छोहाना ॥
औ हम देखा सखी सरेखे । यहि नैहर पाहुन का लेखे ॥
तब तेहिं पिय नेहर ना चाहा । जेहि ससुरार अधिक होय ताहा ॥

चालन कहेंहम अवतरीं चलन सिखा नहिं आय ॥
अब सो चलन चलावै को राखै गहि पाय ॥

तुम बारी पिय भोज के राजा । गर्ब कोध वही पै छाजा ॥
सब फल फूल वही की साखा । चहै सो तोड़ै चहै सो राखा ॥
आयसु लेहु रहौ नित हाथा । सेवा करु लाय भुइं माथा ॥
बर पीपर सिर ऊभ जो कीन्हा ॥ पाकर तिन सूखी फर दीन्हा ॥
बंवै बोइ सीसै भुइं लावा ॥ बड़ फल सुफर वही पै पावा ॥

मुश्किल राह १ दुख सुख का हाल २ बेमेहरी ३ दिल ४ ।३ जुदाई ५ गरदन में डाला ६ चलन ७ तुकन ८ पद्मावत ९ आदम १० मेहरबानी ११ बेदर्दी १२ बाप १३ आयस १४ छानी फटी १६ मेहरबान १७ बहुत फायदा १८ पेदा १९ पैर बाड़ के २० राजा भोज २१ गरूर २२ कुबत २३ बलंद २४ बांह २५ सिर २६

आंब जोफर के नवे तराही ॥ तब अमृत भा सबउ पराही ॥
सोइ पियारी पियहि पिरीती । रहे जो आयसु सेवा जीती ॥

पोथी काढ़ि गवन दिन देखे कौन दिवस है चाल
दिसाशूल औ चक्र योगिनी सोंहें न चलिये काल

आदित शुक्र पश्चिम दिस राहू । बेफै दक्षिन लंक दिस दाहू ॥
सोम सनीचर पूरब न चालू । मंगर बुद्ध उत्तर दिश कालू ॥
आवेश चला चहे जो कोई । औषद कहूं रोग नहीं होई ॥
मंगल चलत मेल मुख धनिया । चले सोम देख दरपनिया ॥
शुक्रहि चलत मेल अबराई । बेफे चले दक्षिन गुड़ खाई ॥
आदित तंबोल मेल गुख खंडी । बाय बरंग सनीचर खंडी ॥
बुध दधि किये चलहु भोजना । औषद यहि न आन खोजना ॥

अब सुनु चक्र योगिनी ते मुद्द थिर नरहाइ
तीसे दैवस चन्द्रमा आठो दिसा फिराइ ।

बारह उनेइस चार सताइस ॥ योगिन पश्चिम दिसा गिनाइस
नौ सोरह चौबिस औ एका ॥ पूरब दक्षिन कोन तेहि देखा ।
तीन ग्यारह छबिस अठारा ॥ योगिन दक्षिण दिशा बिचारा
दुइ पचीस सत्रह औ दसा ॥ दक्षिन पश्चिम कोन बिचबसा
तेइस तीस आठ पन्द्रहा ॥ योगिन होहि पूर्व सामहा ॥
चौदह बाइस उनतिस सात ॥ योगिन उत्तर दिसा कहं जात
बीस अठाइस तेरह पांच ॥ ॥ उत्तर पश्चिम कोन नह बाच

इकइस औ छह योगिन उत्तर पूरब के कोन ॥
यह गुन चक्र योगिनी बाच जो चहे सिधि होन

पंद्रीं वां नवे पूर्ब पर भाये ॥ दूइ जदसमी उत्तर पराये ॥

हुक्म १ सामने २ इनवार ३ उत्तर तरफ ४ सोमवार ५ जरूरत ६ दही ७
कायम ८ दिन ९ परेवा और नवीं को जाना मना १० दुइज दसमी उत्तर मना ११

नवें चन्द्र[1] जो पृथ्वी बासा ॥ दसयें चंद्र जो रहे अकाशा ॥
ग्यारें चंद पूर्ब फिर जाय ॥ बहु कलेस[2] सों देव स[3] भंजाय ॥
[4]मेशुन भरैन[5] रुव नो भली ॥ मिरगसर मोल पुनर्वस[6] बसी ॥
पुष्यजेष्ठ[11]हस्ति चन्द्रे[12]राधा ॥ जो सुख चाहे पूजे साधा ॥

तिथ नक्षत्र औ बार[13] इक अस्सा नै खंड भाग ॥
[14]आदि अंत बुध सो यह दुख सुख[15] अंक न लाग ॥

[5]परवा छठ एकादश नन्दा ॥ [16]दुइज सत्तमी द्वादश भन्दा ॥
[17]तीजे अष्टमी तेरस जया ॥ चौथ[18] चतुरदस नौमी रक्ता ॥
[19]पूरन पूनों दसमी पांचें ॥ सुकें[20] नेंन्द बुधि भानाचें ॥
[21]शनि सो हस्ति नखत सिथिल हिये ॥ बीफे[22] पुष्य श्रवन शशि को हिये ॥
[23]भरैन रेवती बुधि अनुराधा ॥ भई[24] अमावस रोहिनि साधा ॥
राहु चन्द्र[25] भूमि संपनि आये ॥ चन्द्र गहन नब लाग सजाये ॥
[26]मुनि रेणी गज अरा लीजे ॥ सिधि योग गुरु परना कीजे ॥

[27]जेहि नक्षत्र होय रवि वही अमावस होय ॥
बीच परेवा जब मिले सूर्य ग्रहन न बहोय ॥

चलहु चलहु[28] भा पिय कर चालू ॥ घड़ी न देख लेत जिव कालू[29] ॥
समुंद[30] लोक धने चढ़ी बेवाना ॥ जो दिन डरे[31] सो आय तुलाना ॥
रोवहिं मता पिता औ भाई ॥ कोउ न टेके[32] जो कंत चलाई ॥
रोवहिं सब नैहर सिंहला ॥ लेब जाय के राजा चला ॥

जोमी को चांद का बास जमीन पर १ दिन बीते २ नाम नक्षत्र ३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२ सातों मुल्क १३ अव्वल से आखिर तक खुशी १४ परेवा छठ एकादशी सफ़र करना अच्छा १५ दुइज सत्तमी द्वादसी बुरा है १६ तीज अष्टमी तेरस जीत १७ चौथ चतुरदस नौमी डर १८ पूरनमाशी-दसमी-पंचमी अच्छा १९ खुशी २० शनिवार को हस्ति नक्षत्र अच्छा २१ नाम नक्षत्र २२-२३-२४ जमीन २५ स्याह का विचार २६ सूर्य २७ ... सेन २८ मौत २९ पद्मावत ३० पहुंचा ३१ ... ३२

तजा राज रावन का गयो ॥	छाड़ा लंक भभीखन लियो
फिरी सखी भेंट नज फेरा ॥	अंत कंत सों भया गुरेरा ॥
कोइ काहू का नाहिं निधाना	मया मोह बांधा उरझाना ॥

कंचन कया सो नारि की रहीन तोला मास ।
कंत कसौटी घाल के चूरा गढ़े कि हांस ॥

जो पहुंचाय फिरा सब कोऊ	चला साथ गुन अवगुन दोऊ
औ संग चला गवन सब साजा	वहीं दई अस पारे राजा ॥
डोली सहस चली संग चेरी ॥	सबै पद्मिनी सिंहल केरी ॥
भल पटोर खरबार संवारी ॥	लाख चार इक भरी पेटारी ॥
रतन पदारथ माणिक मोती	काढ़ि भंडार दीन्ह रथ जोती ॥
परख सो रतन पारिख हिं कहा	इक इक नग सहसै बर लहा ॥
सहस पांत तुरयन की चली ॥	औ सो पांति हंसिन सिंहली ॥

लिखनी लाग जो लेखा कहे न पारहिं जोर
अर्ब खर्ब औ नील संख साहस पदम करोर ॥

देख दर्ब राजा गर्वाना ॥	दृष्टि मांह कोइ और न आना
जो मैं होब समुंद के पारा ॥	को है मोहिं जगत संसारा ॥
दर्ब गर्ब लोभ बिष मूरी ॥	दत्त न रहे सत्य हो दूरी ॥
दत्त सत्य पै दोनों भाई ॥	दत्त न रहे सत्य पुनि जाई ॥
जहां लोभ तहं पाप संघाती ॥	संचे मरै आन की थाती ॥
सिद्धि दर्ब आग के थापा ॥	कोइ जरा जार कोइ तापा ॥
काहू चांद काहि भा राहू ॥	काहू अमृत बिष भा काहू ॥

छोड़ना २ मुलाकात अंत ३ सोने की तरह बदन ४ पद्मावत ५ नामज़ेवर ६ पाप और पुन्य ७ ईश्वर पार लगावे ८ हज़ार डोली लौंडी ९ कपड़ा १० छाती ११ हीरा जवाहिर १२ जौहरी १३ सारी दुनिया की क़ीमत १४ हज़ार कतार घोड़ा १५ हाथी १६ गरूर किया १७ निगाह १८ बराबर १९ देना २० सचाई २१ जोड़ना २२ [illegible] २३

तस भूला मन राजा लोभ पाप अन्धं कूप ॥
आय समुंद ठाढ़ भा होय दानी के रूप ॥

बोहित भरी चला लै रानी ॥ दान मांग सत देखी दानी ॥
लोभ न कीजे दीजे दान् ॥ दान हि पुन्य होय कल्यान् ॥
दर्ब दान देई विधि कहा ॥ दान मोक्ष होय दुख न रहा ॥
दान आहि सब दर्ब कि जूरू ॥ दान लाभ होय बांचे मूरू ॥
दान करूर सामें भ नीरा ॥ दान गहे लै लावे तीरा ॥
दान करन दे दुइ जग तरा ॥ रावन संचो अगिन महं जरा ॥
दान मेरु बढ़ लाग अकोरा ॥ सेंतें कुबेर बूड़ मंझ धारा ॥

चालिस अंश दर्ब जहं एक अंश महं सोर ॥
नाहिन जरै कि बूड़ै को निशि मूसहि चोर ।

सुनि सुदान राजे रिस मानी ॥ कै बौराय सबौरे दानी ॥
सोई पुरुष दर्ब जेहि सेंते ॥ दर्ब कुतें सुनि बानें ऐते ॥
दर्ब तें गर्ब करे जो चाहा ॥ दर्ब तें धर्म स्वर्ग निबाहा ॥
दर्ब तें हाथ आव कैलासू ॥ दर्ब तें अपसर छांड़ न पासू ॥
दर्ब तें निरगुन हो गुनवंता ॥ द्रव्य तें कुब्ज रूप रुपवंता ॥
द्रव्य रहे भुईं दिपे ललारा ॥ अस मन द्रव्य दिये को पारा ।
द्रव्य तें धर्म कर्म औ राजा ॥ द्रव्य तें सुद्ध बुद्धि बल काजा ॥

कहा समुंद रे लोभी बैरी दर्ब न हि झांप ॥
भयो न काहु आपन मूंद पिटारी सांप ॥

आधे समुंद आय सो नाहीं ॥ उठी बाउ आंधी उपराहीं ॥
लहरें उठी समुंद उलथाना । भूला पंथ स्वर्ग नियराना ॥

अन्धा कुवा १ नाव २ दान देने वाला ३ भलाई ४ ईश्वर ५ नजान ६ न्यो- छावर ७ असिल जमा ८ पानी में नचावै ९ नाम राजा १० जोड़ना ११ नाम पहाड़ १२ आसमान १३ जमा करना १४ रान १५ ग़रूर १६ बदसूरत १७ माथा

कुदिन[1] आय जो पहुंचे काहू । पहुंन[3] उड़ाय बहै सो बाऊ ।।
बोहित भई लंक[4] दिश नाकी । औगह छांड़ कुमारग हांकी
जो ले भार निबाह न पारा ।। सो का गहै करे कन्धारा ।।
द्रव्य भार संग काहि न उठा ।। जेहैं तौं नाही सो रूठा ।। ।।
गहि परबान[10] लै पंखन उड़ा । सोर मोर जे कीन्ह सो बूड़ा ।।

द्रव्य जो जानहि आपना भूलहि गर्व मनाहिं
जो रे उठाय न लै सकहिं बूड़ चलहिं जल माहिं

खेवट[11] एक बिभीषन केरा ।। आव[12] मच्छ कर करन अहेरा ।।
लंका कर वोहि राक्षस कारा । आवै चला होय अंधियारा ।
पांच मूंड दस बांही ताही ।। धड़ भा सेत लंक जब दौंही
धुवां उठै मुख सांस सेधाना । निकसै आग कहै जो बाना ।।
फेकारें मूड़ चंवर जनु लाये । निकस दांत मुंह बाहर आये
देह रीछ की रीछ डेराई ।। देखत दृष्टि धाय जनु खाई
राते नयन निडर जो आवा ।। देख भयावन सब डर खावा

धर्ती पाय सर्ग सिर जानु सहैसा बाहु ।।।
चांद सूर्य औ नखत महं अस देखै जस राहु

बोहित बही न मानहिं खेवा । राक्षस देख हंसा जनु देवा ।।
बहुरे दिनहिं बार[20] मह दूजी । जगत केर आय भुख पूजी
यह पद्मिनी बिभीषन पावा । जानहु आज अयोध्या छावा
जानहु रावन पाई सीता ।। लंका बसी राम रन जीता ।।
मच्छ देख जैसे बके आवा ।। टोय टोय मुहं पाव उठावा ।

कुदिन १ पत्थर २-१० नाव ३-१९ लंका की तरफ ४ राह ५ जब तक हो सका ६ गरूर ७ मल्लाह ८-११ मोड़ना ९ शिकार १२ काला १३ जलना १४ सांस के साथ १५ निगाह १६ लाल आंख १७ नाम राजा जिसके हजार हाथ थे १८ खुश-हुवा २० पेट भरा २१ बगुला २२

आय नेर होय कीन्ह जोहारू । पूछा के सुकुशल व्योहारू ॥
जो बिस्वास घातका देवा । बहु बिस्वास करे की सेवा ।

कहां मीत तुम भूलेहि औ आय हु काहे घाट ।
हौं तुम्हार अस सेवक लाय देउं तुहि बाट ।

गढ़ पर जिव बावर होई ॥ जो भल बात कहै भल सोई
राजें राक्षस नेर बोलावा ॥ आगें कीन्ह पंथ जनु पावा ॥
बहु बसा वाराक्षस कहं बोला । पेग टेक भूमि सब डोला ॥
तूं खेवक खेवक ऊपराही ॥ बोहित तीर लाव गहि बांही
तुहि तें तीर घाट जो पाऊं ॥ नवे यही तेडर पहिराऊं ॥
कुण्डल श्रवन देउं नग लाई । महरा की सोंपों महराई ॥
तस राक्षस तीर पूरों आसा । रक्षसा इद की रहे न बासा ॥

राजें बीड़ा दीन्हो नहिं जानी बिस्वासै ॥
टूक आपनी भुख कौन न होय मच्छ कर दास

राक्षस कहा गुसाईं बिनानी ॥ भल सेवक राक्षस की जाती
छीन लंक दही श्री रामा ॥ सेव न छांड़ देह भइ श्यामा
अबहूं सेव करे संग लागे ॥ मानुख भूल होहिं नहिं [illegible] ॥
सेतबन्ध राघव जहं बाधा । तेहते चढ़ौं मारे ले बाधा ॥
पै अब तुरत दान कुछ पाऊं । तुरत गही वह बांध चढ़ाऊं ॥
तुरत जो दान पान हंस दीजे ॥ थोरा दान बहुत पुन कीजे ॥
सेवकाय जो दीजे दानू ॥ दान नाहिं सेवा बर मानू ॥

दे बाचा सत नास्ता हत निरमल जेहि रूप ॥
आंधी बहुत उड़ायके मार गयो अन्धकूप

खेयित १ शाबाश २ यकीन ३ एह ४ - ६ दुख ५ खुशी ७ खड़ा हुवा ८ जमीन ९ मल्लाह १० नाव ११ नाम जेवर १२ कान १३ एतबार १४ भूख वास्ते १५ जलाना १६ काला १७ बोझ ले जासकता १८ खिदमत १९ खिदमत काह-

जहां समुंद मंझ धार मंडारू फिरे पानि पातार कुम्भारू ॥
फिर फिर पानि वही ठांव मरे फेर न निकसे जो नहं परे ॥
वही ठांव महिरावन पुरी ॥ हलकानि यमकानर चुरी ॥
वही ठांव महिरावन मारा । परे हाड़ जनु पड़े पहारा ॥
परी रीड़ जेहि ना कार पाठी । सेतबंध अस आवदीठी ॥
राक्षस आन तहां के जुड़े ॥ बोहिन भंवरचक महं पड़े ॥
फिरे लाग बोहिन जस आई जस कुम्हार घर चाक फिराई ।

राजै कहा रे राक्षस जान बूझ बौरास ॥
सेतबंध यह देखवे कस न तहां लै जास

सुनि बावर राक्षस तब हंसा जानहु स्वर्ग टूट भुइं गसा ॥
को बावर तुम और हु देखा ॥ जो बावर भुख लाग सरेखा ॥
बावर तुम जो भुख कहं आनी तेहि न समझी पंथ भुलानी
पंख जो बावर रहि घर माटी । जीभ चलाय भखे सब चोंटी
महिरावन की रीर जो परी ॥ कहा सो सेतबंध बुधि हरी ॥
यहि सो याहि महरावन पुरी जहवां स्वर्ग नेर घर दूरी ॥
अब पछुतावह दर्ब जस जोरा करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरा ।

जेहि जियत महिरावन लेत जगत कर भार
जो मर हाड़ न लेगा अस होय परा पहाड़ ।

बोहिन भवहिं भवे सब पानी नाचे राक्षस आस तुलानी ॥
बूड़हिं हस्ति घोर मानेवा ॥ चहुंदिश आय जुरे मसखवा
ततखन राज पंखिइक आवा सिखरै टूट तस डैन डुलावा
परा हष्टि वह राक्षस खोटा नाकिस जैसु हस्ति बड़ मोटा

बीचोबीच १ यम फांस २ पुल ३ नाव ४-६ आसमान ५ भुक्खे पस आये ६ एह ७ चींटी ८ उम्मेद पूरी हुई १० हाथी ११-१८ आदमी १२ तुरन्त १३ सीमुर्ग १४ पहाड़ १५ बाजू १६ निगल १७

आय बही एसस पर टूटा ।। गहि लै उड़ा भंवर जल छूटा ।
बोहित टूक टूक सब भई ।। ऐसु न जाना वहुं कुहं गई ।।
भये राजा रानी दुइ पारा ।। दोनो बहे चले दुइ बारा ।।

कायाँ जीव मिलाय के मार किये दुइ खंड ।
तन रोवत धर्ती चला जीव चला ब्रह्मंड ।

मुर्छ परी पद्मावत रानी ।। कहं जिव कहं पिव ऐस न जानी
जानु चित्र मूरति गहि लाई पाट परी बही तस जाई ।।
जन्म न पवन सही दुख बारा नैहि सो परा दुख समुद अपारा
लक्ष्मी मांस समुंद की बेटी ।। नाकहं लच्छ होय जें भेटी ।।
खेलत रही सहेली सेती ।। पाट जाय लाग नैहि रेती ।।
कहेसि सहे ली देखो पाटा । मूरत आय लाग बहि घाटा
जो देखहिं तिया है स्वांसा ।। फूल मुवा पै मुई न बासा ।।

रंग जो राती प्रेम की जानहु बीर बहूट ।।
आय बही दधि समुंद मैं पै रंग गयो न छूट

लक्ष्मी लक्षण बतीसो लखी कहेसि न मरी संभारहु सखी
कागद पतिरी जैसो शरीरा ।। पवन उड़ाय परी मंझ नीरा
लहर झकोर उड़हि जल भीजा नैह रूप रंग नहिं छीजो ।।
आप सीस लै बैठी कोरा ।। । पवन डुलावे सखि चहुं ओरा
फरकी समझ परा तन जीउ । मांगेसि पानि बोल कै पीउ ।।
पानि पियाय सखी मुख धोई पद्मिन जान कमल संग कोई
तब लक्ष्मी दुख पूछ तिलोही तिया समुझ बात कहु मोही

देखि रूप तोर आगर लाग रहा चित मोर ।।
केहि नगरी की नागर काहि नाउं धन तोर

पकड़ना १ नाव २ राह ३ बदन ४ आसमान ५ तसवीर ६ दौलत ७ मुर्झाना ८ लाल ९ सब गुन जानने वाली १० पानी में ११ नुकसान १२ सिर १३ गोद १४

नयन पसारचेत धैनचेती देखीकाहसमुंद की रेती ॥
आपन कोउ न देखेसि नहां पूंछेसि को तुम को हम कहां
अ है जो सखी कमल संग कोई सो नाहीं ओहिं कहां बिछोई ॥
कहां जगत मन पिया पियारा जस सुमेरु बिधि गरु संवारा
ताकर गरवी प्रीति अपारा ॥ चढ़े हियें जनु चढ़े पहारा ॥
रहे नगरवी प्रीति सो झांपी कैसे जियों भार दुख चांपी ॥
कमल कली की जोड़ी नाहीं दीन्ह बहाय उदधि जल मांहीं

आवा पवन बिछोह का पात परा बिकरार ।
नरेंवर तजी जो चूरवै लागे केहि की डार ।

कहेसि न जानहिं हम तोर पीउ हम तूं पद्द रहा नहिं जीउ ॥
पाट परी आय तूं बही ॥। ऐसो न जानहिं धौ कहं अही
तब सुधि पद्मावत मन भई संवरि बिछोह मुरछ मरगई
नयनह रकत सुराही ढारा ॥ जनहु रक्त सिर काट पवारा
खनहि चेत खन होइ बिकरारा भा चन्दन बन्दन सब छारा
बावर होय सो परी पुनि पाटा देहु बहाय कोन जोहिं घाटा ॥
को सोहिं आग देय रब होरी जियत न बिछुड़ै सारस जोरी

जेहिं सरमार बिछोंगा देहु वही सिर आग ।
लोग कहैं यहि सरे चढ़ी हों सो जरों पिय लाग

कौया उदधि चितैं पिय पाहां देखों रतन सो हिरदय मांहां
जनहु आहि दरपन मम हिया तेहि महं बैठे देखावे पिया
नैयन नीर अंजन सुठ दूरी ॥ अब तेहि लाग मरों सुठ भूरी
पियहृदय महं भेट न होई को रे मिलाव कहों केहि रोई

पद्मावत १ कोकाबेली २ अलग ३-९-११ पहाड़ ४ ईस्वर ५ दिल ६-१२
ख्वाबिन्द ७ समुंद्र ८ पेड़ १० जानवर लवह कर कौड़िया १२ कयौं १३ आरव १४
चिता १५ बदन १६ समुद्र १७ आंसू १८ मुलाक़ात २०

स्वांस पास निन आवे जाई।	सोत संदेश कहे मोहिं आई
नयन कौड़िया भई मंड़राही।	थिरक मार पै आवहिं नाहीं॥
मन भंवरा वह कमल बसेरी।	होय मरजिया न आये हेरी॥

सायी आथ नियाथ जो सके न साथ निवाह
जो जिय जारे पिय मिले भेटरे जिय जर जाहि

सती होय कहं सीस उघारी	घन महं बीज घाव जिमि मारी
सेंदुर जरै आग जनु लाई॥	सिर की आग संभार न जाई
छूट मांग सब मोति पराई॥	बारहिं बार गिरहिं जनु रोई॥
टूटहिं मोति बिछोह के भरे	आवन बूंद गिरहिं जनु भरे
फेर फेर कर जोवन करा॥	जानहुं कनक आगिन महं जरा
आगिन मांग पै देह न कोई॥	पहुंन पवन पान सम होई॥
खीन लंक टूटी दुख भरी॥	बिन रावन केहि बर होय खरी

रोवत पंख बिमोहीं जनु कोकिला आरंभ
जाकर कनक के लुटा सो बिछुड़ी प्रीतम खंभ

लक्ष्मी लाग बुझावे जीव -	ना मर वाहिन मिलहि तोर पीव
पियो पानि होय पवन अधारी	जस हों तुहूं समुंद की बारी
मैं तोहि लाग लेन खटवादू	खोज बीपैंत जहां लग घादू
हों जोहि मिलों ताहि बड़ भागू	राज पाट औ देउं सुहागू॥
कहि बुझाय के मंदिर सिधारी	भई ज्योनार न जेवें नारी॥
जेहि रे कंत कर होय बिछोवा	कानेहि नींद भूख सुख सोवा।
जीव कुमार पीउ लेआहा॥	दरशन देव लव चित चाहा

जो माल के साथी थे १ सिर २ बादल ३ बिजुली ४ बिरह ५ जवानी ६ सो-ना ७ महिमान ८ हवा-पानी ८ तेहैं ९ पतली कमर १० तथा राजा रतन सेन ११ नाकून १२ मोह जाना १३ बेकरार १४ सोना १५ लड़की १६ बाप १७ पद्मावत १८ जुदाई १९

लक्ष्मीं जाय समुंद पहं ये बातें सब काल ।
कहा समुद अहे घट मोरें आन मिलावों काल

राजा जाय तहां बहि लागा ।	जहां न कोइ संदेशी कागा
तहां एक परबत हा धूंगा ॥	जहं वा सब कापूर औ भूंगा ॥
तहं चढ़ हेरो कोइ न साथा ।	दृव्य समेट कुछ लाग न हाथा
रहा जो रावन केर बसेरा ॥	गा हेराय कोइ मिलन हेरा ॥
डाढ़ मार के राजा रोवा ॥	कें चितौर गढ़ राज बिछोवा
कहां मोर सब द्रव्य भंडारू ।	कहां मोर सब कटक कंधारू
कहां तुरंग मोर बोकाबली	कहां मोर हस्ति सिंहली ॥

कहं रानी पद्मावत जीव बसे जेहि मांहि
मोर मोर के सबोयों भूल गर्ब औ गांहि

चंपा भंवरा गुरु जो मिलावा ।	मांगे राजा बेग न पावा ॥
पद्मिन चाह जहां सुनि पाऊं	परों आग औ पानि धसाऊं ॥
ढूंढो पर्बत मेरु पहारा ॥	चढ़ों स्वर्ग औ परों पतारा ॥
कहां सो गुरु पाऊं उपदेशी	आगम पंथ बारहे न्य संदेशी
परों आय यह समुंद अथाहा	जहां न वार न पार न थाहा
सीता हरन राम संग्रामा ॥	हनुमत मिला जितातब रामा
मोहिं न कोइ बिनवों केहि रोई	कोसहाय उपदेशिक होई ॥

भंवर जो पावे कमल कहं मन औरत बहु केल
आय परा कोइ हंसि तहं चूर किये सो बेल

कासों पुकारों का पहं जाऊं ॥	गाढ़े मीत होय तेहे ठाऊं ॥
को यह समुंद मथे बलवाढ़ा ।	को मथ रतन पदारथ काढ़ा ॥

० वापहाड़ १ देखना २ सकाम ३ अलग ४ फ़ौज भारी ५ घोड़ा ६ हाथी ७ गहरा ८ जल्द ९ बीहड़ १० आसमान ११ राह बतानेवाला १२ मुश्किल राह १३ मिन्नत १४ दुख १५ प्यारा दोस्त १६ जाहर १७

कहां सो ब्रह्मा बिस्नु महेशू	कहां सुमेरु कहां वह शेषू ॥
को अस साज देइ मोहिं आनी	बासुकि दाम सुमेरु मथानी ॥
को दधि समुंद मथै जस मथा	करनी सारन्त कहियै कथा ॥
जो लहि मथैन कोइ देइ जीव।	सूधी अंगुरिन निकसै घीव
लै जग मोर समुंद भा बटा ॥	गाढ़ परै तौ लै पर गटा ॥ १०

लील रहा अब ढील हेय पेर पदारथ मेल ॥
को उजियार करै जग झांपा चन्द उघेल ॥

एगुसांई तू सिरजनहारू ॥	तुइ सिरजा यह समुंद अपारू
तुइ अस गगन अन्तरिक्ष राखा	जहां न टेक न थूनि न खाभा
तुइ जल ऊपर धरती राखी ॥	जगत भार लै भार न थाकी ॥
चांद सूर्य औ नखत हिं पानी	तोरे डर धावहिं दिन राती ॥
पानी पवन आग औ माटी ॥	सबकी पीठ तोरहे सांटी ॥
सोइ मरत औ बावर अन्धा ।	तोहिं छांड़ चित औरहि बन्धा ।
घट घट जगत तोरहै दीठी ॥	हौं अन्धा तेहि सूझ न पीठी ॥

पवन हियै भा पानी पानि हियै भइ आग
आग हियै भइ माटी गोरख धन्धे लाग ।

तुइं जिव तन मिलवस देइ आऊ	तुही बिछोंव सकरोसि मिलाऊ
चौदह भूवन सो तोरे हाथा ।	जहं लग बिछुड़ी आव इक साथा
सब कर मर्म भेद तोहि पाहां ।	रोउं जमा व सिट्टूटी जाहां ॥
जानेसि सबे अवस्था मोरी ।	जस बिछुड़ी सारस की जोरी
एक मुई एक मुई सो दूजी ॥	रहा न जाय आयु अब पूजी ॥

महादेव जी १ पहाड़ २ नाम राजा सांपों का ३-४ रस्सी ५ बेखौफ ६ लाल जवाहिर ७ ईश्वर पैदा करने वाला ८ आसमान १० बीचों बीच में लटका हुआ ११ सहारा १२ कोड़ा १३ मिगाह १४ हवा १५ दिल १६ जुदाई १७ सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन १८ भेद १९ हाल २० उमर तमाम २१

भूरत तपत दग्ध का मरौं ॥ कलेपौं माथ वेग निसतरौं ॥
मौं सो लै पद्मावत नाऊं ॥ हुइं कौनेर करौं सिइक ठाऊं ॥

दुख तो पिरीतम देखये सुख नाहें सोवे कोय।
यही ठांउ तन डरपै मिलन बिछोवा होय ॥

काहे केउठा समुद महं आवा। काढ़ कटार गीव लै लावा ॥
कहा समुंद पाप अब घटा ॥ ब्राह्मन रूप आय परगटा ॥
तिलक दुआदस मस्तक दीन्हे। हाथ कनक बैसाखी लीन्हे ॥
मुन्द्रा श्रवन जनेऊ कांधे ॥ कनक पैत्र धोती तरि बांधे ॥
पांवरि कनक जड़ाउ पाऊं ॥ दीन्ह असीस आय तेहि ठाऊं ॥
कहूं कुंवर मोसे सत बाता ॥ काहे लाग करौसि अपघाता ॥
परेहुसि मरौसि कि कौनेउ लाजा। आपन जिव देहु सकेहि काजा ॥

जन कटार कंठ लावेसि समझ देख मन आप।
सकत जीव जो काढ़ेसि महा दोष औ पाप ॥

को तुम उत्तर देय हो पांड़े ॥ सो बोलै जाकौं जिव मांड़े ॥
जंबूदीप केर हौं राजा ॥ सो मैं कीन्ह जो करत न छाजा ॥
सिंहलदीप राज घरबारी ॥ सो मैं जाय बिवाही नारी ॥
लखबोहित दायज ते भरी। नग अमोल औ सब निरमेरी ॥
रतन पदारथ मानिक मोती। हती न खागी संपति ओती ॥
बहल घोड़ हस्ती सिंहली ॥ औ संग कुंवर लाख दुइ बली ॥
तेहि गोहन सिंहल पद्मिनी। इक सो एक चाह रूपमनी ॥

पद्मावत जग रूप मन कहं लग कहूं उहेल ॥
ते समुंद महिं खोयों हौं का जियों अकेल ॥

जलाना १ सिर कटाना २ जल्द ३ जान ४ ईश्वर ५ जगह ६ जुदाई ७ गरदन ८ ज़ाहिर ९ सोने की लाठी १० कान में बाली ११ सोने की पटरी १२ खड़ाऊं १३ खुदकुशी १४ निन्दा से हंसी १५ पाप १६ जवाब १७ बदन में जान १८ सजावार १९ नाव २० साफ़ २१

तुहीं एक मैं बावर भेटा[1] ।।	जैस राम दशरथ कर बेटा ।।
वहू नारि कर पड़ा बिछोवा[2]	यही समुंद महं फिर फिर रोवा ।।
पुनि जो राम रोवाई भामरा ।	तब एकांत भयो मिल तरा[3] ।।
तस मर होहु मूंद अब आंखी	लावौं तीर[4] टेक[5] बेसारवी ।।

बावर अन्ध प्रेम का लुब्धा सुनत वही भा बार ।
निमय[6] एक महं लेगा पद्मावत जेहिं घार ।।

पद्मावत कहं दुख तस बीना ।	जस अशोक बिरवा तरि सीता
कनक[7] लता दुइ नारंग भरी ।।	तेहि क भार उठ सकै नहिं खरी
तेहि पर अलक[8] भुअंगिन डसा	सिर पर चढ़े हिये परगसा[9] ।।
रहि मृनाल[11] टेक दुख दाढ़ी ।	आधी कमल भई शशि आधी
नलिनि खंड दुइ तस करहाऊं	रोमावली[13] बिछूक कहाऊं ।।
रही दूट जिमि कंचन[14] तागू ।।	को पिय मिलवे देइ सुहागू ।।
पान न खावै करै उपासू ।।	फूल सूख तन रही न बासू ।।

गगन[15] धर्ति जल बूड़ गये बूड़त होय निसास ।
पिय पिय चातृक[16] ज्यों रटी मरे सेवांन पियास

लक्ष्मी चंचल नारि परेवा[17] ।	जेहि सत होय छरै के सेवा ।।
रत्नसेन आवे जेहि घाटा[18] ।।	अगम[19] न जाय बैठ तेहि घाटा
और भई पद्मावत रूपा ।। ।	कीन्हेसि छांह जरै जेहि धूपा
लखसो कमल भंवर होय धावा	स्वांस लीन्ह वह बास न पावा ।।
निरखत[20] आय लक्ष्मी दीठी[21] ।।	रत्नसेन तब दीन्ही पीठी ।।
जो भल होत लक्ष्मी नारी ।।	तज[23] महेश किन होन भिखारी

मुलाक़ात १ जुदाई २ बहुत कोशिश किया ३ किनारा ४ लाठी पकड़ ५ मस्त ६ पल ७ सोने की डाली नथा छाती ८ बाल नागिन की तरह ९ छाती १० कमर पकड़ के ११ चांद १२ कमल १३ छाती के बाल १४ सोना १५ आसमान ज़मीन १६ पपीहा १७ सच्चे को छलती १८ राह १९ पहिले २० देखना २१ देखा २२ म

पुनि धनि फिर आगे होय रोई ॥	पुरुष पीठ कस दीन्ह निछोई ॥

हौं रानी पद्मावत सात सैन मुइ पीउ ॥
आयस मुंद महं कांइ अब रोय देत मैं जीव ॥

मैं हौं सोई भंवर औ भोजू ॥	लेन फिरों मालिन कर खोजू ॥
मालति नारि भंवर अस पीउ	कहं वह बास रहै थिर जीव ॥
का तुइं नारि करेसि अस रोई ॥	फूल सोई पै बास न होई ॥
भंवर जो सब फूलन कर फेरा	बास न लै मालतिहि हेरा ॥
जहां पाव मालति कर बासू ।	वारी जिव दै होवै दासू ॥
कित वह बास पवन पहुंचावै ।	नव तन होय पेट जिव आवै ॥
हौं वह बास जीव बलि देऊं ॥	और फूल की बास न लेऊं ॥

भंवर मालतिहि पै चहै कांट न आवै दीठ ॥
सौंहैं भाल खाये हिये पै फेरै नहिं पीठ ॥

तब हंस कह राजा कहं डाऊं ॥	जहां सो मालति चल लै जाऊं
लैसो आय पद्मावत पासा ।	पानि पियाई मरन पियासा ॥
पानी पियो कमल अस सपा ।	निकसा सूर्य्य समुद महं छिपा
मैं पावा पिय समुद के घाटा ।	राज कुंवर मनि दिपै लिलाटा ।
दसनै दिपै जगमग हीरा जोती ॥	नयन कौंवल भरे जनु मोती ॥
भुजा लंक उर केहर जीता ॥	भूएनि कान्ह देख मोपिता
जस लछमन तपत लौं मन नहिं भूका	तस बिन प्रान पिंड है सूखा

जस तुइं पद के पदारथ तैस रतन तुहि योग ॥
मिला भंवर मालति कहं करहु दोउ दिश भोग

पदक पदारथ खीन जो होती	सुनतहिं रतन चढी मुख जोती

पद्मावत रूप लक्ष्मी १ बेदई २ राजा भीज ३ पता ४ कायम ५ देखना ६ खो- खाव ७ नया बदन ८ निगाह ९ सामने कांटा १० छाती ११ सिर १२ सैन १३ कटोरी १४ बांह-कमर-छाती चीताकीसी १५ सनीसमन १६ बदन १७ खाली १८

जानहु सूर्य कीन्ह परकासू ॥ दिन बहुरा भा कमल बिकासू ॥
कमल जो बिहस सूर्य मुख दरसा । सूर्य कमल दीन्हें सो परसा ॥
लोचन कमल श्री मुख सूरू । भयो अनंद दुहूं रस मूरू ॥
मालति देख भंवर गा भूली ॥ भंवर देख मालति बन फूली ॥
देखा दरस भये इक पासा ॥ वह वह कीं वह वह की आसा ॥
कंचन दाह दीन्ह तनु जीव ॥ उगवा सूर्य छूट गा सीउ ॥

पाय परी धनि पीय के नयनन सों छल भेर ॥
अचरज भयो सबन कंह भइ शशि कमलहिं भेट

अब काहू कहं होय बिछोऊ ॥ जस वै मिले मिलै सब कोऊ
पद्मावत जो पावा पीऊ ॥ जनु मरजिये परा तनु जीऊ ॥
के न्योछावर तन मन वारे । पायन्ह परी घाल कै नारे ॥
नव अभरन आर दीन्ह बिधि आज । रही छार भई मानुस साजू ॥
राजा रोय घाल गिर पागा । पद्मावत के पायन लागा ॥
तन जिय महं बिधि दीन्ह बिछोऊ । अस न गरी तब चीन्ह न कोऊ
सोई मार छार के मेटा ॥ सोई जियाय कराये भेंटा ॥

मुहम्मद मीत जो मन बसे नेही मिलावे धान
संपत बिपति पुरुष कहं काह लाभ का हानि

लक्ष्मी सों पद्मावत कहा ॥ तुम प्रसाद पायो जो चहा ॥
जो सब खोय जाहिं हम दोऊ । जो देखै भल कहै न कोऊ
जे सब कुंवर आय हम साथी । औ जिन हेरत घोर आवाथी
जो पावें सुख जीवन भोगा । नाहि न मरन भरन दुख रोगा

रोशनी १ खिलना २ निगाह ३ आंख ४ सूर्य ५ रोनो खुशहुवे ६ नया पद्मावत ७ तथा राजा ८ सोना चोराहुवा ९ जाड़ा १० चांद ११ जुदाई १२ गरदन १३ नई पैदायश १४ ईश्वर १५-१८ राख १६ गलेमें पगड़ी १७ धूर १९ फायदा २० नुकसान २१ हाथी २२

तब लक्ष्मी गइ पिता के ठाऊं । जो यहि कारन बबुड़ सो पाऊं ।
तब सोजरी अमृत ले आवा । जो मरहिं न सो छिड़कि जिआवा ।
एक एक केहीन्ह सो आनी । भा सतोष मन राजा रानी ।

आय मिले सब सामा हिलमिल करहिं अनन्द ।
भई प्रात सुख संपति गयो छूट दुख धन्ध ।

और दीन्ह बहु रतन पखाना । सोन रूप जो मनहि न आना ।
जो बहु मोल पदारथ नाऊं । का तेहि बरनि कहूं गुन ठाऊं ।
जेहि कर रूप भाव को कहा । इक इक के नग सूंदे बा लुहा ।
हीर फार बहु मोल जो अही । ते सब नग चुन चुन के गही ।
जो इक रतन भुनावै कोय । करै सोइ जो मन महं होय ।
द्रव्य गर्व मन गयो भुलाई । हमें सम लच्छ मनहि नाहें आई ।
लघु दीरघ जो द्रव्य बखाना । जो जेहि चहो सोइ तेहि माना ।

बड़ औ छोट दोउ सम स्वाम कारजी सोय ।
जो चाही जेहि काज कहं वही काज सो होय ।

खंड उन तीसवों समुद और लक्ष्मी खंड

दिन दस रही जाय पहुनाई । पुनि भइ बिदा समुद सों जाई ।
लक्ष्मी पद्मावत सो भेटी । जो सो कहा अपनी सो बेटी ।
समुंद दीन्ह पान कर बीरा । भरके रतन पदारथ हीरा ।
और पांच नग दीन्ह बिसेखी । श्रवन सुनी नयन नाहि देखी ।
एक सो अमृत दूसर हंसू । औ तीसर पंखी कर बंसू ।
चौथ दीन्ह सावक सादूरू । पांचो परस जो कंचन मूरू ।
तुरत तुरंग दोउ चहाई । जल मानुस अगवा संग लाई ।

वाप १ सजीवन मूर २ जो मर गये थे ३ सब ४ पत्थर ५ जवाहिर ६ रंग ७ दुनिया कामील ८ लेना ९ गरूर १० हमारे बराबर कोइ नहीं ११ छोटे बड़े १२ जवाहिर १३ कान १४ मोर का बच्चा १५ सोना १६ घोड़ा १७

भेट समुंदैन तब किये फिर नाथ के साथ ॥
जस मानुष तब हो फिर जब सो आय जगन्नाथ

जगन्नाथ दरसन कहं आये । भोजन रांधा भात पकाये ॥
राजै पद्मावत सो कहा ॥ सांठ नांठ कुछ गांठ न रहा ॥
सांठ होय जासों सो बोला ॥ नांठ जो पुरुष पात ज्यों डोला
सांठे रंक चले भोराई ॥ नाठ रांव सब कह बोराई
सांठे आव गर्ब तन फूला ॥ नाठे हि बोल बुद्धि बल भूला ॥
सांठे जाग नींद निशि जाई ॥ नांठे काहु होय सो धाई ॥
सांठे दृष्टि जोत हो नयना ॥ नाठ होये मुख आव न बेना ॥

सांठे है सिंघन तन नाठे हि आगर भूख ॥
बिन गंठ वृक्ष निपंत ज्यों ठाढ़ ठाढ़ पै सूख

पद्मावत बोली सुन राजा ॥ जीव गये धन कौने काजा ॥
रहा द्रव्य तब कीन्ह न गांठी पुनि कित मिले लच्छ जो नाठी
मुर्ख सांठ गांठ जो करे ॥ सांकरे परे साईं उपकरे ॥
जेहि तन परख जाय जहं नाका पैग पहार होय जो थाका ॥
लक्ष्मी रहा दीन्ह मोहि बीरा भर के रतन पदारथ हीरा ॥
काढ़ एक नग बेगी भजाऊ बहुरे लच्छ फेर दिन पाऊ ॥
द्रव्य भरोस करे जन कोई ॥ सांठ सोई जो गांठी होई ॥

जोर कटक पुनि राजा घर कहं कीन्ह पयान ॥
देवसहिं भांनु अलोप भा बासुक इन्द्र सकान

मुलाकात १ लक्ष्मी २ दौलत गई ३ दौलत ४ बेदौलत ५ मर्द ६ कमीना माल-
दार ७ अकड़के ८ राजा ९ गरूर १० बेदौलत ११ मालदार १२ राज १३ ग़रीब
१४ निगाह १५ दिल १६ आवाज़ १७ दिलजमई १८ ग़रीब १९ बकुत २० बेरुपया
२१ बेपत्ता २२ दौलत जाती रही २३ दौलत होने के समय २४ तंगी २५ काम आवे २६
क़दम २७ जल्द २८ दौलत २९ फ़ौज ३० कूच ३१ दिन ३२ सूर्य ३३ नाम राजा सांप

चितौर आव नेर भा राजा ॥ फिरा जियन इन्द्रासन गाजा ·
बाजन बाजे होय खंडोरा ॥ आवहिं बहल हस्ति औ घोरा
पद्मावत चंडोल जो बैठी ॥ पुनि गइ उलट स्वर्ग सों दीठी ॥
यहि मन ऐंठा रहै न सूधा ॥ बिपत न संवरै संपति लुब्धा ॥
सहस बरष दुख सहै जो कोई घड़ी एक सुख बिसरै सोई ॥
योगिन यही जान मन मारा तेहूं न यह मन मरै अपारा ॥
रहै न बांधा बांधा जेही ॥ तेलियां मारडार पुनि तेही ॥

मुहम्मद यहि मन अमर है केहु कि न मारा जाय
कहां सदाशिव आवें घटते घटत बिलाय ॥

कुंवर जो बहि बाहि घाटन लागी बहु बेकरार सोय जनु जागी ॥
बिकल अचेत चेत तिन कहा संग साथ नहिं दूसर रहा ॥
कहां रहे आये हम कहां ॥ जानी नहीं कि जायहिं कहां ॥
जागहिं दया दृष्टि के आपी ॥ खोल सो नयन दीन्ह बिध आपी
जेहि के संग पद्मिनी बांची । बहुत अनंद बहुत रत नाची
सब संगी मिले आय जग साथा सबै आय के नावहिं माथा ॥
अति दुख मिले आयके राजा सोई ते गये उनके काजा ॥

सो हीरामन रत्न रवि सो पद्मावत लाल ॥
सो पद्मावत सो कुंवर सो प्रीतम प्रतिपाल ॥

नागमती कहं अगम जनावा गई सो तपन बरषा जनु आवा
रही जो मुद्द नागिन जस तूंचा । जिव पायें तन की भइ सुचा
सब दुख जस केचुल गा छूटी होय निसरी जस बीरबहूटी ॥
जस भुइं दहि असाढ़ पलुहाई परहिं बूंद औ सौंध बसाई ॥

और १ हाथी २ आसमान ३ निगाह ४ दौलत में दीवाना ५ हजार ६ संखिया ज़हर ७ हमेशा ज़िन्दा ८ मेहरबानी की निगाह ९ खुश १० नाच ११ शाद १२ स्वांके काम को १३ सूर्य्य १४ आगम १५ चमड़ा १६

वही भाँति पलही सुखबारी । उठी करलिन्ह कोंप संवारी ॥
फूल सगंग जिमि बाढ़ लेई ॥ जोबन लाग हिलोरें देई ॥
काम धनुक सर दे भइ ढाढ़ी । भागेउ बिरह रहे जो बाढ़ी ॥

पूछहि सखी सहेली हृदय देख आनन्द ॥
आज बदन तुम निर्मल कहां उवा है चन्द ।

अब लगि रही पवन रहि ताना । आज लाग मोहिं सीतल गाता
मोहिं फुलसी जस पावस छाहां । तस फुलास उपेना जिय माहां
दसौं दावँ के गा जो दसहरा । पलटा सोई नाव लै महरा ॥
अब जोबन गंगा होय बाढ़ा ॥ औटन कठिन मार सब काढ़ा
हरियर सब देखे संसारा ॥ । नई चौर जनु भा अवतारा ॥
भागेउ बिरह करत जो दाहू । भा मुख चन्द छूटगा राहू ॥
लौ कहिं नयन हार हियें खिला । कोधौं हितू आय के मिला ॥

कहत हिं बान सखिन सो नहीं खेन आवा भाट
राजा आय नेर भा मंदिर बिछावो पाट ॥

सुनत हिं रतन राजा कर नाऊं । भा फुलास सब ठावहिं ठाऊं ॥
पलट राज नु बरखा रितु राजा ॥ जस असाढ़ आवै दर साजा ॥
देखत सो छत्र भई जग छांहा । हंसि मेघ छत्र दिये जग मांहा ॥
सैन पूर आई घन घोरा ॥ । रहस चाव बरषे चहुं ओरा
धनि स्वर्ग अब होय मिलावा । भरहिं पुखर औ ताल तलावा ।
उठी लहक मैं हिं सुनि तेहि नामा । टांवहिं टांव दूब अस जामा ॥
दादुर मोर कोकिला बोले ॥ हुत जो अलोप जीभ सब खोले

उसीतरह १ बागीचा २ कमान-तीर ३ दिल ४ मुंह ५ पाकसाफ़ ६ गर्म हवा ७ उड़ा बदन ८ ज़मीन ९ बरसात १० खुशी ११ पैदा होना १२ नई तरह १३ जलाना १४ दिल १५ मुस्त १६ तख़्त १७ फ़ौज १८-२० हाथी १९ ज़मीन आसमान २१ ज़मीन २२ मेढ़क २३ गायब २४

भये असवार प्रथमे मिले चले सब भाय ॥
नदी अठारह खंडा मिली समुंद कहं जाय ॥

बाजत गाजत राजा आवा । नगर चहूं दिशि बाज बधावा ॥
बिहँस आय माता सो मिला । रामहि जनु भेटी कौसिला ॥
साजे मंदिर बन्दन बारा । औ बहु होय सो मंगल चारा ॥
पद्मावत कर आव बिमानू । नगमति देह कउठो तस भानू ॥
जनहु छांह महं धूप देखाई । तैस झाँर लाग जो आई ॥
सही न जाय सौन की भारा । दूसर मंदिर दीन्ह उतारा ॥
भई उहां चौखंड बखानी ॥ रतनसेन पद्मावत आनी ॥

पुहुप सुगंध संसार महं रूप बखान न जाय ।
हेम सैन उग्र गाजना जगत पात पहिराय ।

बैठ सिंहासन लोग जोहारा । निर्धनो निरगुन द्रव्य बोहारा ॥
अगनित दान निछावर कीन्हा । मंगतन दान बहुत के दीन्हा ॥
तुरी[११] हस्ति[१३] लै मह्मावत मिले ॥ तुलसी लै उपरोहित चले ॥
बेटा भाय कुंवर जेत आवहिं । राजा हंस हंस गले लगावहिं ॥
नेगी गेंज मिले अरकाना ॥ पंवर थ बाज घर मैसेयाना ॥
मिले कुंवर कापर पहिराये ॥ दे कर द्रव्य तिन घरहि पठाये ॥
सबकी दसा भई पुनि दुनी । दान डांग सबै जग सुनी ॥

बाजे पांचे शब्द नित सिद्ध बखाने भाट ॥
छतिस गोरी षट दरशन आय जुरे वह पाट ॥

सब दिन राजा दान देवावा । भइ निशा नागमती पहं आवा ॥

पहिले १ चंडोल २ सूर्य्य ३ आग ४ चारो तरफ़ मशहूर ५ फूल ६ मिस्ल बर्फ़ सफ़ेद बहार के मौसिम में हरे हरे पत्ते लहराते हैं ७ गरीब ८ बेहुनर ९ जमा करना १० बेहिसाब ११ घोड़ा १२ हाथी १३ हक़दार १४ मस्त १५ शकल १६ स्वेशान और इन्आम १७ नगारा·शहनाई·करना·तुरही·झांझ·१८ तरफ़ १९ योगी·जंगम·संन्यासी·मलगासी·जोगिया·दरवेश·२० मंगता २१

भंवर पुरुष अस रही न राखा । अनें दाख महुवा रस चाखा ॥
नत्ता गेसर फूल सुहावा । कमलबसें धीसो मन लावा ॥
चौखन्ह वाय भौं अरगजा । मोहू बिसाय धवहि नहि राजा

काह कहूं हं तो सों कुछ नहिं तोरे भाव ॥
यहां बात मुख मो सों वहां जीव वह ठांव ।

दुख कि कथा कहि रैनि बिहानी । भयो भोर जहं पद्मिन रानी
भानु देख शशि बदन मलीना । कमल नयन राती तन खीना
रयन नखत गिन कीन्ह बिहानू । बिमल भई देखी जस भानू
सूर्य हंसा शशि रोयउ फारा । टूट आंस जस नखतहिं तोरा
रही न राखी होय निसासी ॥ तहवां जाउ जहां निशि बासी
हौं कै नेह कुवां महं मेली ॥ सींचहि लाग भुरानी बेली
भये दुहु नयन रहँट की घरी । भरे लेहारे छूछो भरी ॥

सुख सरवर हंस जल घटा तो होय बिछोय
कमल प्रीति नहिं पैहौ सूख बेल पर होय

पद्मावत तुहं जीव पराना ॥ जियतें जगत पियार न आना
तुहं जिम कमल बसी हिय माहां । हौं होय भौंर बेधा तोहि पाहां
मालति कली भंवर जो पावा । सो तज आन फूल कित भावा
मैं हों सिंहल की पद्मिनी ॥ सा तें पूज जंबु नागनी ॥
हों सुगन्ध निरमल उजियारी । वह बिस भरी डेरावन कारी
मोरी बास भंवर संग लागहि । वह देखत मानुषडर भागहि
हों पुरुषेन कीचित वन दीठी । जोहके जियें अस आहों पेठी

मर्द १ अंगूर २ चोवा ३ खुशबू ४ रात बिताई ५ सूर्य ६ चांद ७-११ ला-
ल ८ पतली कमर ९ रंज ज्यादा हुवा सूर्य को देखके १० माला १२ रास १३
तालाब १४ जुदाई १५ छोड़ना १६ दिल १७ भंवर १८ बराबरी १९ पाक-
साफ़ २० मर्द २१ देखना २२ जिसकी हों उसके दिल में बैठी हूं २३

ऊंची ठंव जो बैठे कौ न नीचे संग ।।१।।
जहा सोन नागिन धर गई काला करै सो अंग

पलही नागमती की बारी ।। सोने फूल फूल फुलवारी ।।
जानवंत पंखे रहि सब देहे ।। सबै पंख बोलत कहुं कहे ।।
सैरो सुवा महर कोकिला । रहसत आव पपीहा मिला ।
होरल शब्द महोके सुहावा । कागकुराहर करहिं सो आवा
भोग बिलास कीन्ह अति फेरा बासहिं रहसहिं करहिं बसेरा ।
नाचै पांडुक मोर परेवा ।। निफल न जाय काहि की सेवा
होय उजियार बैठ जस तपै ।। खूसट सूरख न देखावे छिपै ।।

संग सहेली नागमति अपनी बारी मांहि ।।
फूल चुनहिं फल तोड़हि रहस कूद सुख कांहि

जाही जूही तेहिं फुलवारी ।। देख रहस रहि सकी न बारी ।।
हूते न बाल न हिये समानी पद्मावत सों कही सो आनी
नागमती है अपनी बारी ।। भंवर मिला रस करै संवारी ।।
सखी साथ सब रहसहिं कूदहिं औ सिंगार हार सब गूंदहिं ।।
तुम जो बकावल तुम्ह सों लड़ना बकौरन कहा चहो जस करना
नागमती नागेसर रानी ।। । कमल न आछो अपनी बानी
जस सेवती गुलाल चमेली तैसि एक जन बहु अकेली

अब सुंदर सन गूजा तब सन बरो योग ।।
मिला भंवर नागेसर सेते बही देहि सुख भोग

सुनि पद्मावत रिस न संभारी सखिन साथ आई फुलवारी
दोउ सौत मिल पाट जो बैठी हिय बिरोध मुख बातें मीठी

जगह १ बागीचा २-११ चिड़िया ३ जलना ४ तोता-मैना ५ नाम चिड़िया
६-७-८ कौवा की बोली ९ दिल १० तुम को जो कहना या करना है सो करो
१२ नया नागमती वा रानी १३ नया पद्मावत १४ नरबन १५ कुमनी १६

भंवर पुरुष अस रही न राखा । जने दाख महुवा रस चाखा ॥
न नागेसर फूल सुहावा । कमल बसें धौ सो मन लावा ॥
चौं अन्हवाय भौं अरगजा । मोह बिसाय धवहिं नहिं राजा ॥

काह कहूं हं तोसों कुछ नाहिं तोरे भाव ॥
यहां बात मुख सो सों वहां जीव वह ठाँव ।

दुख कि कथा कहि रैन बिहानी । भयो भोर जहं पद्मिन रानी ॥
भानु देख शशि बदन मलीना । कमल नयन राते नित खीना ॥
रयन नखत गिन कीन्ह बिहानू । बिमल भई देखी जस भानू ॥
सूर्य हंसा शशि रोयड फारा । टूट आंस जस नखतहिं तारा ॥
रही न राखी होय निसासी ॥ तहवां जाउ जहां निशि बासी ॥
हौं के नेह कुवां महं मेली ॥ सींचहि लाग झुरानी बेली ॥
भये बुड़ नयन रहंट की घरी । भरे लेहौं छूछी भरी ॥

सुख सरोवर हंस जल घटा तो होय बिछोय ।
कमल प्रीति नहिं पैछरे सूख बेल पर होय ।

पद्मावत तुहं जीव पराना ॥ जियते जगत पियार न आना ॥
तुहं जिम कमल बसी हिय माहां । हौं होय अलि बेधा तोहि पाहां ॥
मालति कली भंवर जो पावा । सो तज आन फूल कित भावा ॥
मैं हों सिंहल की पद्मिनी ॥ सरि ने पूज जंबू नागनी ॥
हौं सुगन्ध निरमल उजियारी । वह बिष भरी डेरादन कारी ॥
मोरी बास भंवर संग लागहिं । वह देखत मानुष डर भागहिं ॥
हौं पुरुषन की चितवन दीठी । जेहि के जिये अस आहों पैठी ॥

मर्द १ अंगूर २ चोवा ३ खुशबू ४ रात बिताई ५ सूर्य ६ चांद ७ - ११ लाल ८ मलती कसर ९ रंज ज्यादा हुवा सूर्य को देखके १० माला १२ रात १३ तालाब १४ जुल्द १५ कोड़ना १६ दिल १७ भंवर १८ बराबरी १९ पाकसाफ २० मर्द २१ देखना २२ जिसकी हैं उसके दिल में बैठी हूं २३

ऊंची ठांव जो बैठे करै न नीचै संग ॥ ॥
जहां सोनागिन्न धर गई काला करै सो अंग

पलहीं नागमती की बारी ॥ सोने फूल फूल फुलवारी ॥
ज्ञानवंत पंखे रहि सब देहे ॥ सबै पंख बोलन कह कहे ॥
सैरा सुवा महर कोकिला । रहसत आव पपीहा मिला ।
हारिल शब्द महोके सुहावा । काग कुराहर करहिं सो आवा
भोग बिलास कीन्ह अति फेरा वासहिं रहसहिं करहिं बसेरा ।
नाचैं पंडुके मोर परेवा ॥ निफल न जाय काहि की सेवा
होय उजियार बैठ जस तपै ॥ खूसट मूरख न देखावै छिपै ॥

संग सहेली नागमति अपनी बारी मांहि ॥
फूल चुनहिं फल तोड़हिं रहस कूद सुख कांहि

जाही जूही तेहि फुलवारी ॥ देख रहस रहि सकी न बारी ॥
हूते न बासन हिये समानी पद्मावत सों कही सो आनी
नागमती है अपनी बारी ॥ भंवर मिलास करै संवारी ॥
सखी साथ सब रहसहिं कूदहिं और सिंगार हार सब गूदहिं ॥
तुम जो बकावल तुम्ह सों लड़ना वकैन कहे चहे जस करना
नागमती नागेसर रानी ॥ । कमल न आछी अपनी बानी
जस सेवती गुलाल चमेली जैसि एक जन बहू अकेली

अब सुदंरसन पूजा तब सते बरी योग ॥
मिला भंवर नागेसर देन बही देहि सुख भोग

सुनि पद्मावत रिस न संभारी सखिन साथ आई फुलवारी
होउ सौत मिल पाट जो बैठी हिय बिरोध मुख बातें मीठी

जगह १ बाग़ीचा २-११ चिड़िया ३ जलना ४ तोता-मैना ५ नाम चिड़िया ६-७-८ कौवा की बोली ८ दिल १० तुम को जो कहना या करना है सो करो १२ तथा नागमती वा राजा १३ तथा पद्मावत १४ तरुवन १५ कुसमनी १६

बारी हँदि मैं रंग सो आई । पद्मावत हँस बात चलाई ॥
बारी सुफल चाहै तुम रानी । है लाई पै लाय न जानी ॥
नागेसर जो मालति जहाँ ॥ सुगन्धराव नहिं चाहै तहाँ ॥
रहा जो मधुकर कमल पिरीता । लागेउ आय करील की रीती ॥
जहं अमली बांकी हिये माहाँ । जहं न भाव नारंग की छाहाँ ॥

फरहिं फूल के फर जहाँ देखहु मनहिं बिचार ।
आँब लाग जेहिं बारी जम्बु लाग तेहिं बार ॥

अस तुम कहीं नीक यह सोभा । पै फल सोई भंवर जेहि लोभा ॥
श्याम जाम्ब कस्तूरी चोवा । आँब जो ऊँच हृदय तेहि रोवा ।
तेहि गुन अस भइ जाम्ब नेवारी । लाई आन सौंभ के बारी ॥
जल बाढ़े बहिया जो आई ॥ है बांकी इमली सिर नाई ॥
कुकस पराई बारी दोखी ॥ तजो पानि धावहु मुख सूखी ॥
उठे आग दोउ डार अभेरा ॥ कौन साथ तुम्हें बैरी केरा ॥
जो देखी नागेसर बारी ॥ लाग मरी अब सूगा सारी ॥

जो सरवर जल बाढ़ रहै सो आपनी ठाउँ ॥
तजौं नागेसर को दहि जाउँ न तुम्हें अंबराउ ॥

तेहि अंबराउ लीन्ह का जूरी । काहे भई नीब मुख मूरी ॥
भई बैर कित कुटिल कटीली । तेंदू कीन्ह चाह बकसीली ॥
नारंग दाख न तुम्हरी बारी ॥ देख मरहिं जेहि सूगा सारी ॥
जो न सदा फर तुरंज जँभीरा । कटहर बड़हर लौका खीरा ॥

फुलवारी खुआरंग देख १ भंवर कमल का आशिक २ दिल ३-४ काली जामुन कुरक ४ बीच ५ जो मैं जवाब दीं तो पानी छोड़ दे और मुंह सूख जाय ६ जो मेरे बाग को नागेसर देखे ७ तो नामिला ८-९ तालाब ६ जो गेसर छोड़ तो बाग न जाऊं १० बाग ११ मुकाबिल १२ नीबू ऐसी कड़वी १३ बेगन जंगली सेवर कांटा डार अच्छा होना १४ अंगूर १५

कमल जो हिरदय रावां केसर । तोहि न सरे पूजी नागेसर ॥
जहं कटहर कोउ नव पूछी । बड़ पीपर का बोलहिं छूछी ॥
जे फल देखी सोई फीका ॥ ताकर काह सराहे नीका ॥

रहु तूं अपनी बारी मोसों जूझ न बांझ ॥
मालति उपम न पूजी पुनि कार खेजा खान

जो कटहर बड़हर बड़ बेरी ॥ तोहि अस नाहिं जो को काबेरी
श्याम जामु मोर तुरंज जंभीरा । कड़ुई नीब तू छांह गंभीरा ॥
नरयरि दाख वही कहं राखों । गलगल जाउँ सौति नहिं माखो
तोरें कहे होय मोर काहा ॥ फरे वृच्छ कोउ ढेल न बाहा ॥
नवे सदा फर सो नित फरै ॥ दाड़िम देख फाट हिय मरै
जे फर लौंग सुपारी छुहारा । मिर्च होय जो सहै न पारा ॥
हौं सुपान रंग पूज न कोई ॥ बिरह जो जरै चून जरि होई ॥

लाजहिं बूड़ मरेसि नहिं ऊभ उठावसि बांह ॥
हौं रानी पियराजा तो कहं योगी नांह ॥

हौं पद्मिनी मानसर बैठी ॥ भंवर मरै लव कहिं मोर सेवा ।
पूजा जोग दई हौं गढ़ी ॥ सब महेशी के माथे चढ़ी ॥
जानो जगत कमल की करी । तोहि अस नहिं नागिन बिस भरी ।
तुइं सब लिये जगत के नागा । कोयल भेश न छाड़ेसि कागा
तू भुजैल हौं हंस की जोरी ॥ मोहि तोहि सोनि पोत की बोरी
कंचन केली तन तू जग बिना ॥ जहां फ्लौंरथ सोह न हिं फेना ॥
तुइं तो राहु हौं शशि उजियारी दिनहि न पूजी निशि अंधियारी

दिल १ बराबर २। पूरा० कटहर बलंद ३ तारीफ ४ अंगूर ५ इसी वास्ते सवाहे ६ सौत का मुंह से नाम न लो ७ अनार ८ छाती ९ खाविन्द के बिरह मैं जल के चूना हुई १० बलंद ११ खाविन्द १२ नाम तालाव १३ कमल १४ हंस १५ सोने की अगूठी १६ लाल १७ पन्ना १८ चांद १९ रात २१

ठाढ़ होसि जेहि ठाई मसि लागे तेहि ठाउं ॥
तेहि डर रांध न बैठों जनु सांवर होय जाउं ॥

कमल सो कौन सुपारी रोटा ॥
रही न भाँपे आपन गटा ॥
कमल पत्र दाड़िम तेरा चोली ।
ऊपर लाल भीतर पियरा ॥ ।
यहां भंवर मुख बातहि लावसि
तब निश तप तप सूरोंसि पियासी
सेज बां रोय रोय निश भरसी ॥

जेहि के हिये सहस दस कोठा
सरवन उघेल चहे पर गटा ॥
देखेसि सूर देश है खोली ॥
जारों वही हरद अस हेरा ॥ ।
वहां सूर्य्य कहहंस हंस लावसि ।
भोर भये पावेसि पिय बासी ॥
नूं मोसों का सखर करसी ॥

सूर्य्य किरन तोहि रांवी सोंवर लहर न फूल ॥
भंवर यहां तोह पावे धूपें देह तोर भूल ॥ ॥

मैंहीं कमल सूर्य्य की जोरी ॥
हों वह आपन दरपन लेखों ।
मोर विकोस वहक परकाशू
हों वह सों वह मोसों रांती ॥
कमल के हिरदे महं जो गटा
ता कर सेवसे तेहीं पै आवा
तुम डडेभ्र जेहि भीतर मांखी

जो पिय आपन तेहि का चोरी
करों सिंगार भोर मुख देखों ॥
मुडूंजर मरोसि निहार अकाशू
त्तिमिर बिलाय होत परभाता ॥
हरेयरि हार कीन्ह का घटा ॥
कार रंय न किन देखे पावा ॥
चाहहिं उदहि मरन की पांखी

धूप न देखी बिष भरी अमृत सो सर पाव
मोहि नागिन डस सो मरे लहर सूर्य्य की आव

सिया हों १ सुपारी सरवन के सामने कमल की क्या हकीकत २ कमल अपना गटा नहीं छिपा सक्ता ३ सरवन उधेर डाले तब जाहिर हो ४ अनार ५ सूर्य्य है लाल ७ हलदी की तरह जलानी हूं रात ९-१९ बराबर १०।११।१२।१३ के सूर्य्य से जल १३ खिलना १४ सुश १५ अन्धियारी १६ भोर १७ दिन १८ हो कमल गटा का हार १९ दिन सबका नुकसान १६ दिन २० गोलर २२

फूलहिं कमल भानु के उये। पानी मैल होय जड़ छुये ॥
फिरहिं भंवर जिस लोनय नाहां। नील विसायंध सवतो पाहां
मच्छ कच्छ दादुर नेहि आसा। वक औ पंख बसहिं तेहिं पासा
तेजे पंवल वास नुहिं लिये ॥ पानी मांह सो विसोयंध भये
मोहि जियारे चांद होय ठई ॥ बदने कलंक डोंब ले छुई
औ मोहिं मोहिं निशदिन करवीचू। राहु के हाथ चांद की मीचू ॥
सहस बार जो धोवै कोई ॥ तोहू बिसायंध जाय न धोई

काह कहूं वह पिय सो मोहिं सिर धोरसि अंगार
तेहि के खेल भरोसे तूं जीती मैं हार ॥

तेर अकेल का जीत्यों हार। मैं जीता जग केर अगार ॥
बदन जित्यों जो शशि उजियारी। बेनी जित्यो भुवंगिनं कारी ॥
औ मैं जीते मृग के नयना। कंठ जित्यों कोकिल के बैना
भौंह जित्यों अर्जुन धनकारी। ग्रीव जित्यों तम चोर पुकारी
नासिक जित्यों पुहुप तिल सुवा। सूक जित्यों बेसर होय उवा ॥
दासिन जित्यों दसन चमकाहीं। अधर रंग रबि जीत्यो साही ॥
केहर जित्यों लंक मैं लीन्ही। जित्यों मरोल चाल वै दीन्ही

पुहुप बास मैं लै यागर निरमल अंग बसाय।
नागिन मस आसौ लुबुध मरोसि किहां को जाय

का तोहिं गर्व अगार पराये ॥ अबहीं लेहि लोट सब ठाये
हों सांवर सलोन मोर नयना। सेत चीर मुख चातृक बैना।
नासिक खरग फूल धुवं तारा। भौंहें धनुक गगन को हारा

संख्ये १हिलाने से पानी मैला होता २मेढक ३बगुला ४चांद में सियाही ५राज ६ मौत ७हजार ८बार ९नागिन १०अर्जुन ११मुर्गी-मोर १२नाक १३फूल १४ना मनक्षत्र १५-२७बिजुली १६दांत १७होंठ १८चीना १९कमर २०हंस २१फूल २२चन्दन २३आर्जू खावीन्द के पास जाने की खबरी २४गुलर २५सफेद २६

कहान २८

हीरा दसन स्वेत औ श्यामा । छिपै बीजु जो बिहँसै रामा ॥
बिदुम रंग अधर रस राती ॥ जो दामिन अस रवि महँ नाती
चाल गयंद गर्ब अनि भरी ॥ बिसोलंक नागेसर करी ॥
सांवर जहां लवन सुठ नीकी । कोसर बान न करिस जो फीकी ॥

पुहुप बास हों पवन अधारी कमल मोर निरहेल
चहों केश धर नाऊं तोर मरन मोर खेल

पद्मावत सुनि उतर न हीं सही । नागमती नागिन जिम कही
तैं वह कहि वह वैं कहं कहा ॥ काहु कहीं तस जाय न कहा ॥
दोउ नवल भर जोबन गाजें । अपर मानु अखवारें बाजे ॥।
भा बाहुन बाहुन सो जोरा ॥ हिय सों हिय कोइ बाग न मोरा
कुंच सों कुच भइ सौंह अनी । नवहिं न नायें टूटहि तनी ॥
कुंभस्थल दोउ गज से मंता । दोनो ऊभर परे चौदंता ॥।
देव लोक देखत हुत ठाढ़े ॥ लागबान हिये जाहिं न काढ़े ॥

जनहु दीन्ह ठगलाडू देख आय तस मीचै ।
रहा न कोइ धरहरिया केरै जो दोउ महं बीच

पवन श्रवन राजा के लागा ॥ कहेसि लड़ें पद्मिन औ नागा
दोनो सौत श्याम औ गोरी ॥ मरहिं तो कहं पावसि अस जोरी
चल राजा आवा तेहि बारी ॥ जरत बुझाई दोनो नारी ॥
एक बार जेहि पिय मन बूझा । सो दूसरे सों काहे क जूझा ॥
ऐसो ज्ञान मन न जान न कोई । कैं बहु रात कबहु दिन होई ॥
धूप छांह दोउ इक रंगा ॥ दोनो मिले रहे इक संगा ॥

दांत १ सफ़ेद-काला २ बिजुली ३ मूंगा ४ हैंठ ५ लाल ६ अनार ७ सूर्य्य ८ हाथी ९ गुरूर १० भंवरा की कमर ११ बाबर १२ फूल-हवा के सहारे १३ तरु ताज़ा १४ बाल १५ जवाब १६ परी इन्द्र लोक १७ छाती १८ नोक सामने १९ महरम के बन्द २० नाम हाथी मस्त २१ दिल २२ मौत २३ पछाड़ने वाला २४ कान

अूझेव छाड़हु बूझौ दोऊ ॥ सेवे करहु सेवा फल होऊ ॥

गंगयमुन तुम नारि दोउ लिखी मुहम्मद योग
सेव करहु मिल दोनो तो मानहु सुख भोग ।

अस कहि दैसो नारि मनाई । बेहँसि दोऊ तब कंठे लगाई ।
लै दोउ संग मंदिर महं आई ॥ सोन पलंग नहं जाय बिछाई
सीझी पांच अमृत ज्योनारा । औ भोजन बावन परकारा ।
हुलसी सरस खिचिबयार खाये भोग करत बेहसी रहसाये
सोन मंदिर नगमति कहं दीन्हा रूप मंदिर पद्मावत लीन्हा ॥
मंदिर रतन रतन के खंभा ॥ बैठा राज जोहारे सभा ॥
सभा सो सबै सुमन कहा साई अस गुरु जो भल कहा

बहु सुगंध बहु भोग सुख कुरलहि केलकराहिं
दुहु सो केल नित मानी रहस अनन्द दिन जाहिं

जाई नागमती नगसेनी ॥ ॥ ऊंच भाग ऊंचो दिन रैनी ॥
कँवलसेन पद्मावत जाई ॥ जानहु चन्द धर्ति महं आई
पंडित न बहु बुधवंत बोलाये राशबर्ग औ गिरह गिनाये ॥
कहिन बड़े दोउ राजा होहीं ऐसे बूत देसे सब मोंही ॥
नवे खंड के राजा जाहीं ॥ सौ कुछाईं होय दल माहीं
खुल भंडार कछु दान दैवावा दुखी सुखी कर मान बढ़ावा
याचक लोग गुनीजन आये अरु आनन्द के बजे बधाये

जनि कुछ पावा जोनि बिन औ दै चले असीस
पुत्र कैलत्र कुटुंब सब जीवहिं कोटि बरीस ॥

राघो चेतन्न चेतन महा ॥ आयउ ठर के राजा पह रहा

लड़ना १ खिदमत २ गले लगाया ३ अंगूर ४ अच्छी बात कही ५ वह अच्छा जिसको गुरु पसंद करे ६ नागमती से नगसेन पैदा हुवा ७ पद्मावत से कमलसेन ८ बलमें दसगुना ९ आपुसमें फ़रेब १० बेटा औरत सा

चितचिंतो जानै बहु भेऊ ॥ कवि ब्यास पंडित सहदेऊ ॥
बरनी आयराज की कथा ॥ पिंगल महं सब सिंहल मथा ॥
जो कबि सुनै सीस सो धुना । श्रवन नाद बेद कबि सुना ॥
दृष्टि सो धर्म पंथ जेहि सूझा । ज्ञान सो परम अर्थ मन बूझा ।
योग जो रहै समाधि समाना । भोग जो गुनी बीर गुन जाना ।
बीर सुरि स मारै मन कूहा । सोइ सिंगार कंत जो चहा ॥

वेद भेद जस बोरचि चितचिंता तस चेत ॥
राजा भोजै चतुरदस भा चेतन सों हेत ॥

घड़ी श्रवन होय जो आई ॥ चेतन की सब चेत भुलाई ॥
भादों एक अमावस सोई ॥ राजै कहा दुइज कब होई ॥
राघौ के मुख निकसा आजू । पंडितन कहा काल्ह बड़ राजू ।
राजै दूहूं दिसा फिर देखा ॥ पंडितनै बावर कौन सरेखौ ।
भुजा टेक के पंडित बोला । छांड़हि देस बचन जो डोला ।
राघौ करी जो धनी पूजा ॥ चहे सुनाव देखावै दूजा ॥
तेहि ऊपर राघौ बैरवाचा । दुइज आज तौ पंडित साचा ।

राघौ पूजा जो धनी दुइज देखायस सांझ ॥
वेद पंथ जे नहिं चलहिं ते भूलहिं बन मांझ ॥

पंडितन कहा परा नहिं धोखा । कौन अगस्त समुद्र जेहि सोखा ।
सो दिन गयो सांझ भई दूजी । देखी दुइज घड़ी वह पूजी ॥
पंडितन राजा दीन्ह असीसा । अब कस ये कंचन औ सीसा ।
जो यहि दुइज काल्ह की होती । आज तेज देखन शशि जोती ।

दिल का हाल १ भेद २ कबताई में व्यासजी ३ पंडिताई सहदेव ४ बयान ५ कैद ६ सिर ७ कान में वेद नाद की तरह सुना ८ निगाह ९ अकिल मुशकिल बात दरयाफ्त करना १० बहादुर ११ नाम पंडित १२ चौदह विद्या जानने वाला राजा भोज की तरह १३ बुरी १४ कौन पंडित नादान १५ होशयार १६

बात १७ मानि पूजा १८ कसम १९ और २०

आवा रही चेतन धौरहर के पास ॥ ॥
कसि न जाती नेहि हृदय बिजुली बसे अकास ॥

पद्मावत जो झरोखे आई ॥ नेहि कलंक जस शशि देखराई
तत्खन राघो दीन्ह असीसा ॥ भयो चकोर चंद मुख दीसा ॥
पहिरे शशि नखतन की मौरा । धर्ती सर्ग भयो उजियारा ॥
औ पहिरे कर कंकन जोरी ॥ नग जो लाग तेहि तीस करोरी
कंकन एक कान्ह दै डारी ॥ काढ़त नाहूं गये हारी ॥ ॥
जनकु चांद टूट लै तारा ॥ छूट्यो स्वर्ग काल कर धारा ॥
जनहु टूट बिजुली भुइं परी । उठा चौंधि राघो चित हरी ॥

परा आय भुइं कंकन जगत भयो उजियार ॥
राघो बिजुली मारा देसंभर कुछ न संभार ॥

पद्मावत हंस दीन्ह झरोखा । अब जो मुनी मरै मुहिं दोखा
सबै सहेली देखीं धाई ॥ चेतन चेत जगावें आई ॥
चेतन परा न आवै चेतू ॥ सबहिं कहा यहि लाग परेतू ॥
कोइ कहि कांपै औ संपातू । कोइ कहि आहि मिरगी बातू ॥
कोइ कहि नाग पवन कर भोला । कै सहि समुझ न चेतन बोला
पुनि उठाय बैठारे छाहां । पूंछहि कौन पीर जिय माहां
धौं काहू के दरसन हरा ॥ कै ठग धूतै भूत जे हिहरा ॥

कै तोहि काहू दीन्ह कुछ कै रे डसा तोहि सांप
कहो सो चिन है गय चेतन देह तेर कस कांप

भयो सुचित चेतन जब चेता । नयन झरोखे जीव सकेता
पुनि भौ बोला मति बुधि खोवा । नयन झरोखा लाये रोवा ॥

महल १ दिल २ देख ३ चांद ४-६ तुरंत ५ माला ७ ज़मीन आसमान ८ आप ९ मुड़ी १० मिरगी का रोग ११ फालिज १२ किसी ठग या दगाबाज़ [illegible] १३ [illegible] छिपकलिया १४ कुंभला या कुम्हला १५

बावर फेर सीस पै धुना ॥ आपन कहि न पराई सुना ॥
जानहु लाइ काहु ठगौरी ॥ खनै पुकार खनै बांधै बौरी ॥
हौरे ठगा यहि चितौर माहां । कासो कहों जाउं केहि पाहां ।
यहि राजा सठ बड़ हत्यारा ॥ जें राखा यहि ठग बटपारा ॥
नाकोइ बरजै न लाग गुहारी ॥ अस यहि नगर होय बटपारी

दृष्टि रही ठग लाइ कै अलक फांस परजीव ॥ ।
जहां भिखारी न बाचै तहां बचै को जीव ।

कित धौराहर आय झरोखे । लै गयो जिव दच्छना के धोखे
सर्ग सूर औंछि कीं अजोरी । नौहि तें अधिक देउ कोहि जोरी
औछि सूर रहि जो होत वह जोती । दिन पहाड़ हत रैन न होती
तेहि कैर मोहि कै बाल दीन्हा । दृष्टि जो पड़ी जीव हर लीन्हा
नयन भिखार ढीठ सत छूड़ी । लाग तहां बान हियें गड़ी ॥
नयनहि नयन जीव घसमाने । सीसै धुनहि निसरै नहि ताने
नबहिं न नाये निलज भिखारी । तबहूं बुरी लाग मुख गारी ॥

कित कर मुखी नयन भै जीव हरा तेहि बाट
सरवर नीर बिछोह ज्यों तरक तरक हिय फाट

सखिन कहा चेतन बेसभारा । हियें चेत जिय जास न मारा ।
जो कोइ पावै आपन मांगा ॥ ना कोइ मरै न काहु खांगो ॥
वह पद्मावत एसी सुरूपा ॥ बरन न जाय काहु के रूपा ॥
जें चीन्ही सो गुप्त चल गयऊ । पागट गुप्त जीव बिन भयऊ ।
तुम अस बहुत बिमोहित भये धुन धुन सीस जीव दै गयउ

सिर १-२ १ जादू २ कभी ३ धूप ४ राह लूटनेवाले ५ मना करनेवाला ६ निगाह ७ बाल ८ गखन ९ महल १० सूर्य ११-१६ चांद १२-१५ ऐयनी १३ बहुत १४ बोलाना १७ शोर १८ ईमान छुड़ाने वाले १९ दिल २० नाला व का पानी घटे से २२ कमी २३ छिपा २४ जाहिर वा छिपा २५ आशिक २६

बहुनहिं दीन्ह नाय के गींवा । उतेरन देहु मार के जीवा ॥
तुहूं पुनि मरन होय जर भई । अबहिं उघेल कान की कई ॥
कोई मांगमारे ना पावे कोइ बिन मांगा पाव ॥
तू चेतन औरहि समभावे बहु तुहि को समभाव ॥

भयो चेत चित चेतन चेता । बहुर न आय सहैं दुख सेता ॥
गेवत आय परे हम जहां ॥ गेवत चले कौन सुख तहां ॥
जहवां बकु सो सूजिर केरा ॥ कौन रहन पर चलैं सबेरा ॥
अब यहि भीख तहां होय मांगो । रतन देइ जगजन्म न खांगो ॥
औ अस कंकन जो पाऊं दूजा ॥ दारिद हरै आस मन पूजा ॥
देहिली नगर आव तुरकानू । शाह अलाउद्दीं सुलतानू ॥
सोन जरी जेहि की टकसारा । बारह बानी परहिं दिनारा ॥
कमल बखाना जाय तहं जहं अलि अलाउद्दीन
सुनके चढ़े भौन होय रतन होय जल मीन ॥

खंड बत्तीसवां देहिली गवन राघो चेतन ।

राघो चेतन कीन्ह पयाना ॥ देहिली नगर जाय तुलाना ॥
आय शाह के द्वारे जो पहुंचा । देखा राज जगत पर ऊंचा ॥
छत्तिस लाख तुरुक असवारा । तीस सहस हस्ती दरबारा ॥
जहं तकु तपै जगत पर भानू । तहं लग राज करै सुलतानू ॥
चहूं खंड के राजा आवहिं ॥ ठाढ़ झुराहिं जुहार न पावहिं ॥
मन तेवान के राघौ झूरा ॥ नाहिं उबार जिया डर पूरा ॥
जहां झुरान दियो सिर छाता ॥ तहं हमार को चालै बाता ॥
वार पार नहिं सूझै लाखन उमर अमीर ॥
अब खुर खेह जाव मिल आय परे यहि भीर

शाहून १ जवाब २ चंदेशा ३ कमी ४ बारह ५ महूण पद्मावत की तारीफ ६ भंवर ७ दर्द ... मछली ८ कूच ९ दरवाजा १० हजार ११ हाथी १२ चारों [illegible]

बादशाह मन ज्ञाना बूझा ॥	स्वर्ग पताल हिये सें सूझा ॥
जो राजा अस सजग न होई ॥	काकर राज कहां कर कोई ॥
जगत भार वह एक संभारा	तौ थिर रहै सकल संसारा ॥
औ अस वह के सिंहासन ऊंचा	सब काहू पर हष्टि जो पहुंचा ॥
सब दिन राज काज सुख भोगी ।	रात फिरै घर घर होय योगी ॥
राव रंक जहं तक सब जाती ॥	सबकी चाह लेइ दिन राती ॥
पंथी परदेसी जब आवहिं ॥	सबकी चाह दूत पहुंचावहिं ।

यह बात तहं पहुंची सदा छत्र सुख छांय
ब्राह्मन एक द्वार है ठाढ़ा कंकन जड़ाऊ हाथ

मयां शाह मन सुनत भिखारी	परदेशी कहं पूछ हंकारी ॥
हम पुनि जाना है परदेशा ॥	कौन पंथ गवनब केहि भेशा
देहिली राज चिन्त मन काढ़ी	यहि जग जो सिन्धु की साढ़ी
सेनै मिलाय छाछ के फेरा ॥	मथा शिव लीन्ह महिउ कहं केरा
यहि देहिली किन होय होय गये	कैके गर्व खेह मिल गये ॥
यहि देहिली का रही ढिलाई ।	साढ़ी काढ़ ढील जब ताई ॥
सबन लंक ज्ञार सब नापा ॥	रहा न जोबन औन रूनोंपा ॥

भीख भिखारी दीजये का ब्राह्मन का भाट
अंजा भई बोलावहु धर्त्ती धरा ललाट ॥

राघो चितन हत जो निरासा ।	तनखेन बैगे बोलावा पासा ॥
सीसै नाय के दीन्ह असीसा	चमकत नग कंकन कर दीसा
अजा भई सो राघो पाहां ॥	नुई मंगन कंकन का बाहां ॥

जमीन - आसमान १ दिल २ होशियार ३ कायम ४ निगाह ५ अमीर ग़रीब ६ खबर ७ - ८ मुसाफ़िर ९ मेहरबानी १० बोलाना ११ एह १२ अंदेशा १३ नमी १४ गरूर १५ धूर १६ नरमी १७ जवानी १८ हुक्म १९ मा... ..मा- अमेर २१ मुरन्त २२ जल्द २३ सिर २४ मांगनेवाला २५

राघौ फेर सीस भुइं धरा ॥ जुग जुग राज भानु को करा ॥
पद्मिन सिंहिल दीप की रानी रतन सेन चित्तौर गढ़ आनी ॥
कमल न सो पूजी जेहि बासा रूप न पूजी चन्द अकासा ॥
जहां कमल शशि सूर न पूजा ॥ के हिं सरदेउं और को दूजा ॥

सो रानी संसार मन द छुना कंकन दीन्ह ॥
अक्षर रूप देखाय के जीव भरोखे लीन्ह ॥

सुनके उत्तर शाह मन हंसा ॥ जानहु बीजे चमक परगसा ॥
कांच जोग जो कंचन पावा । संगन ताहि सुमेर चढ़ावा ॥
नागु भिखार जीभ मुख बांची अबहिं संभार बात कहु सांची
कहं अस नारि जगत उपराहीं जेहि के सेर सूर्य शशि नाहीं
जो पद्मिन तुइं मंदिर मोरे ॥ सातो दीप जहां कर जोरे ॥
सप्त दीप महं चुन चुन आनी सो मोरे सोरह से रानी ॥ ॥
जो उन्ह महं देखो सड़क दासी देख लाज होय लोन बिलासी

चहूं खंड हों चक्कवे जस रवि तपे अकाश
जो पद्मिन मोरे मंदिर अपर तो कैलाश

तुम बड़ राज छत्रपति भारी सुन ब्राह्मन हों अहों भिखारी
चारहु खंड भीख का बाजा उदय अस्त तुम्ह ऐसो न राजा
धर्म राज औ सत कुल माहां झूठ जो कही जीभ गहि बाहां
कुछ जो चार सब कुछ उपराही सो यहि चहूं दीप महं नाहीं ॥
पद्मिन अमृत हंसे सदूरु ॥ सिंहल दीप मलहिं सो मूरु ॥
सातों दीप देख हों आवा ॥ तब राघौ चेतन कहवा ॥
औ होय नरा रवो धोखा ॥ कहों सो सब नारिन गुन दोखा ।

सिर १ सूर्य २ बराबरी ३-६-१२ चांद ४-१३ सूर्य ५ परी इन्द्र लोक ७ जवाब ८ बिजुली ९ सोना १० नाम पहाड़ ११ हाथ १७ चारो तरफ़ १५ सारी दुनिया का राजा १६ सूर्य १८ ऊंचा १८ लाल शेर १९ असिल २० हुकम २१ ऐब हुनर २२

यहां हस्तनी सिंहनी औ चित्रनि बनबास
कहां पद्मिनी पद्म सिर भंवर फिरैं चहुपास

खंड तेतीसवां स्त्री बरनन

पहिलै कहों हंसनी नारी ॥ हस्ती की पर कीरत सारी ॥
सिर औ पाय सुभ गये कोटी ॥ ऊरु की खीन लंक की मोटी ॥
कुंभस्थल गज अमित अमाहीं ॥ गवनैं गयंद ढाल जनु बाहीं ॥
दृष्टि न आवै आपन पीऊ ॥ पुरुष पराये ऊपर जीऊ ॥
भोजन बहुत बहुत रति चाऊ ॥ अचै बाई सो थोर सुभाऊ ॥
मधु जस मद बसाय पसेऊ ॥ औ बिसवास धरै जस देऊ ॥
डर औ लाज न उसको हिये ॥ रहै जो राखे आंकुश दिये

गज गति चलै चहूं दिश लाय जगत कह चौख
कहि हस्तनी नारी ये सब हस्तनि के दोख ॥

दूसर कहों सिंहनी नारी ॥ करै बहुत बल अल्प अहारी
उर अति सुभ खीन अति लंका ॥ गर्ब भरी मन धरै न संका ॥
बहुत रोष चाही पिय हना ॥ आगे घाल न काहू गिना ॥
अलंकार अपनी वह भावा ॥ देख न सकै उंगार परावा ॥
सिंह की चाल चलै डग ढीली ॥ रोवां बहुत जांघ औ फीली ॥
मोट मांस रुच भोजन तासू ॥ औ मुख आव बिसायंध वासू ॥
दृष्टि तराहीं हेरै आगें ॥ जनु मथ बाह रहै सिर लागें ॥

सेज वो मिलत सो स्वामी लावै उर नख बान
यहि गुन सबै सिंह के वह सिंहन सुलतान ॥

तीसर कहों चित्रनी नारी ॥ महा चतुर रस प्रेम पियारी ॥

कमल १ हाथी २ सुभाव ३ मोटा ४ गरदन ५ छाती ६ पतली ७ कमर ८-२४ नाम झषी ९ चाल १० निगाह ११ बाह १२ सफाई १३ शहद १४ खयाल १५ हाथी १६ पियार १७ ऐब १८ थोड़ा १९ खुराक २० छाती २१ थोड़ी २२ बारीक २३ गुरूर २४ गुस्सा २६ सूरत

रूपस्वरूप शृंगार सवाई ॥	अपसर जैसि रही अछवाई
रोषै न जानै हस्ता सुखी ॥	जंह अस नारि कंत सो सुखी
आपन पुरुष की जानै पूजा ॥	एक पुरुष के जान न दूजा ॥
चन्द्र बदन रंग कुमकुन गोरी ।	चाल सोहाय हंस की जोरी ॥
खीर खांड कुछ अल्प अहारू	पान फूल से बहुत पियारू ॥
पद्मिन चाहि घाट दुइ कूरा ।	औरु सबै वह गुणा निरमरा ॥

चवितिनि जैसु कुमुदरंग औ बासना अंग ॥
पद्मिन बास चंदन जस भंवर फिरहिं तेहि संग

चौथे कहों पद्मिनी नारी ॥	पद्म गन्ध शशि दई संवारी
पद्मिन जात पद्म रंग ओई ॥	पद्म बास मधुकर संग होई ॥
ना सुठ लांबा ना सुठ छोटी ।	ना सुठ पात र ना सुठ मोटी ॥
सोरहा करन रहे बनी ॥ ॥	सो सुलतान पद्मिनी गुनी ॥
दीर्घ चारु चार लघु सोई ॥	सुभ्रम चारु चकु खीनी होई ॥
औ शशि बदन देख सब मोहा	चाल मरौल चलत गत सोहा
खीर अहार न कर सुकवारा ।	पान फूल के रहे अधारा ॥

मो हु विर न मम वृरन औ सोरहो शृंगार ।
अब यह भांति वरनके जैस बरनै संसार

प्रथम केश दीरघ सिर सोहें ॥	औ दीरघ अंगुरी कर सोहें ॥
दीरघ नयन तीख तहं देखा	दीरघ गीव कूएठ त्रिय रेखा ॥
पुनि लघु दसन होहिं जनु हीरा	औ लघु कुच उतंग जंभीरा ॥
लघु लैलाट दुइज परकासू ॥	औ नाभी लघु चन्दन बासू

इन्द्रलोक की प । १ सफाई २ गुस्सा ३ खाविन्द ४ मुंह ५ कोकावेली ६ ८ दूध ७ थोडी खुराक ८ ज्यादा ९ दाडिमा १० नाक साफ ११ कमल १३ चांद १४ भंवर १५ बडे १६ २४ २५ छोटे १७ मोटा १८ पतला १९ चांद २० हंस २१ पहिले २२ बाल २३ हाथ २६ छोटे २७ दांत २८ छाती २९ माथा ३०

नासिक खीन खर्ग की धारा । खीन लंक जनु केहर हारा ॥
खीन पेट जानो नहिं आंता । खीन अधर बिद्रुम रग राता ॥
सुभ कपोल देख मुख सोभा । सुभ्र नैंत ब देख मन लोभा ॥

सुभ्र कलाई अति बनी सुभ्र जंघ गज चाल ।
सोरह शृंगार बरनके करहिं देवता लाल ॥

यहि पद्मिनि चितौरजो आनी । कुन्दन काया द्वादसै बानी ॥
कुन्दन कनक नाहि नहिं बासा । वह सुगंध जस कमल बिकासा ॥
कुन्दन कनक कठोर सो अंगा । वह कोमल रंग पुहुप सुरंगा ॥
वह छुइ पवन बृक्ष जेहि लागा । सोई मलै गिर भयो सभागा ॥
काहु न मूठ भरी वह देही ॥ अस मूरत केदई उरैही ॥ ॥
सबै पठैनै रचित्र केहारी ॥ वह करूप कोइ लरवीन पारी
कया कपूर हाड़ सब मोती ॥ तेहि तें अधिके दीन्हबिधि जोती

सूर्य्य किरन जस निरमल तेहि ते अधिके सरीर ।
सौंह दृष्टि नहिं जाय कर नयन नहिं आवै नीर ॥

शशि मुख जबहि कहे कछु बाता । उठत तंत सूरज जस राता ॥
दसेन दसनन सो किरनी फूटहिं । सब जग जानि फुल झरी छूटहि
जानहु शशि महं बीज देखावा । चौंध परयो कुछु कहै न आवा ॥
कौंधत रहि जस भादौं रैनी ॥ श्याम रैनं जनु चलै उड़ैनी ॥
जनु बसंत ऋतु कोकि बोली । सरस सुनाय मार सैर डोली
जनु अमृत होय बचन बिकासा । कमल जो बास बास धन वासा
यहि सर सीस जो नाग बेहरा ॥ जाय सरन बेनो होय परा ॥

नाक १ पतली २ तलवार ३ पतली कमर ४ चीता ५ होंठ ६ मूंगा ७ लाल ८ मोटा
गाल ९ चूतर १० लालच ११ बदन १२ खालिस १३ सोना १४ १६ खिलना १५ २३
फूल १७ चन्दन १८ बनाना १९ दूती २० बहुत २१ पाक साफ २२ निगाह
सामने २३ पात २४ चांद २५ २८ लाल २६ दांत २७ बिजुली २९ रात ३० जुगनू

सदेस मनोहर जाय मरजे देखै तस चोर ॥
पहिले सो दुख बरन के बरनो बहुर सिंगार

कित हों रहा काल कर काढ़ा। जाय धौरहर तर भा ठाढ़ा॥
कित वह आय झरोखे झांकी। नयन कुरंगिन चितवन बांकी॥
वे हिसी शशि तरई जनु परी। के सो रैन छूटै फुल झरी॥
चमक बीज जस भादों रैनी। जगत दृष्टि भर रही उडैनी॥
कामकंदा सृ दृष्टि बिस बसा। नागिन अलक पलक मुंह डसा॥
भौंह धनु कर पलकाजल बूड़ी। वह भइ धानुक हो भइ उड़ी॥
मार चली मारत हूं हंसा॥ पाछे नाग रहा हौं डंसा॥

काल घाल पाछे रखा गडुर न मंतर कोय।
मोर पीठ वह बैठा कासों पुकारों रोय॥

बेनी छोर झार जो केसा॥ रैनि होय जग दीपक लेसा॥
सिर हुत बिसहर परी भुइ बारा। सगरे देस भयो अन्धियारा॥
सक पकाहिं बिस भरे पसारे। लहराहिं भर लहकाहिं अनि कारे॥
जानहुं लोटहिं चढ़े भुअंगा॥ बेधी बास मलैगिर संगा॥
लरहिं मुरहिं जनु मानहिं केली। नाग चढ़े मालति के बेली॥
लहरै देइ जानु कालिन्दी॥ फिर फिर भंवर भये चित बन्दी॥
चंवर धरत आछी चहुं पासा। भंवर न उडहिं जो लुब्धे बासा॥

हेरु चंधेर घनौं बिजु चमक जब बहि चीर गहि झांप।
के सनाग किन देख मैं संवर सेवर जियू कांप॥

मांग कनक जो सेंदुर रेखा॥ जनु बसंत राता जग देखा॥

उम्मेद१ चाल२ महल३ हिस्न४ चीद५ कोरे नरवन६ बिजुली७-८ निगाह९ जुगनू१० तिरछी चितवन१० निगाह११ बाल१२-२० पलक१३ तीर अंदाज१४ निशाना१५ चोरी१६ पत१७ चिराग रौशन१८ सोप१९-२० चन्दन२१ यमुना२२ दिल फसाना२३ लपटना२४ बादल२५ सोना२८ लाल२९

गइ पद्मावेलु पाटी धारी ॥ औरे चचित्रौ बिचित्र संवारी ॥
भई उरेह पुहुप सब नामा ॥ जनु बक बिरवर घन श्यामा ।
यमुना मांभ सरस्वती मांगा दुहुं दिस दियेत रंगन गांगा ॥
सेन्दुर रेख सो ऊपर राती ॥ बीरबहूटैन की जस पांती ॥
बलि देवता भये देख सेंदूरू ॥ पूजी मांग भोर उठ सूरू ॥
भोर सांभ रबि होय जो राती वही देख राता भा गाता ॥

बेनी कारी पुहुप ते निकसी यमुना आय ॥
पूज इन्द्र आनन्द सों सेंदुर सीसे चढ़ाय ॥

दुइज ललाट अधिक मन करा शंकर देख माथ मुंह धरा ॥
यहि नित दुइज जगत महं दीसा जगत जोहारे देइ असीसा ॥
शशि जो होय नाहिं सरवर छाजे होय सो अमावस छिप मन लाजै
तिलक संवार जो चन्दन रचे दुइज मांभ जानहु कचें बचे
शशि पर करवट सारा राहू ॥ नखतहिं भरा दीन्ह पर दाहू ॥
पारस जोति ललाटहि ओती । दृष्टि जो करै होय तेहि जोती
औ जो रतन मांग बैठारा ॥ जानहु गगन टूट निसतारा ॥

शशि औ सूर जो निर्मल तेहि ललाट की रूप ।
निशि दिन चलहिं न सरवर पावैं तपत पहोंचहिं धूप

भौहें धनुक श्याम जनु चढ़ा पनच कोर मानुष कह गढ़ा ॥
चन्द कि मूठ धनुक वह ताना काजर बीज बरौनि बिष बाना
जा सों हेर जाय सो मारी ॥ गिरवर टरहिं सो भौंहहिं टारी
सेन बन्ध जे धनुक बिडारा वह धनुक भौंहहि सों हारा

नाम दरया १ बहुत अच्छी २ फूल ३-१४ बगुला ४ बादल सियाह ५ लहर ६ लाल ७-११-१२ कुरबान ८ सूर्य्य ९-१८-२२ बदन १३ सिर १५ माथा १६ ज्यादा १७ चांद १९-२१-२७ बराबर १६-३१ नाम नखत २० रोशनी २२ माथा २३ निगाह २४ टीका २५ आसमान २६ साफ २८ रात ३० गायब ३२ निशाना ३३ बिजुली ३४ पलक केश

हारा धनुक जो बेधा राहू ॥ और धनुक कोइ गिनै न काहू
कित सो धनुक भौंहें मैं देखा लाग बान तिन आव न लेखा
तिल बानहि झांझर भा हिया जो अस मार सो कैसें जिया ॥

सोतै सोत तन बेधा रोंउ रोंउ सब देह ॥
नस नस महं भइ सालहि हाड़ हाड़ भये बेह ॥

नयन चित्र वह रूप चितेरे ॥ कमल पत्र पर मधुकर फेरे ॥
समुंद तरंग उलटहिं जनु राती डोलहिं औ घूमहिं मद माती
सरद चंद महं खंजन जोरी ॥ फिर फिर लरहिं बहोर बहोरी
चौंल बिलोल डोल वह लागी थिर न रहहिं चंचल बैरागी ॥
निरखि अघाहिं न हत्या हेते फिर फिर श्रवनहि लाग मते ॥
अंग स्वेत मुख स्याम सो आहीं तिरछे चलहिं सूध नहिं होहीं
सौंल गंधर्प लौलकारही ॥ उलटे चलहिं स्वर्ग कहं जाहीं

अस वे नयन चक्र दुइ भंवर समुद उलथाहिं
जनु जिव घालहिं डोले लै आवहिं लै जाहिं

नासिक खड़ग हरी धन कीरू जोग श्रृंगार जिता औ वीरू
शशि मुख सौंहि खड़ग गहि रामा रावन सों चाहै संग्रामा ॥
दुहु समुंद महं जनु रचि वीरू ॥ सेतु बंध बांधा नल नीलू ॥
तिलक फूल अस नासिक तासू औ सुगन्ध दीन्ही बिधि बासू
करन फूल फूलै उजियारा ॥ जनहु सरद शशि सोहिल तारा
सोहिल चौंह फूल वह ऊंचा धावहिं नखत न जाइ पहुंचा
न जनों कैसे फूल वह गढ़ा । बिकैसे फूल सब चाहहिं चढ़ा

अर्जुन की कमान १ दिल २ सुराख ३ . ४ ५ भवरा ६ लहू ७ लाल ८ फूलमाली
का बोड़ ९ मसाला १० चंचल ११ कायम १२ देखना १३ कान से सलाह १४ स्फे-
द १५ देखना १६ आरजू १७ आसमान १८ नाक १९ तलवार २० जोता २१ श्याम-
ते २२ सेतु २३ पुल २४ नामवर २५ ईश्वर २६ ज्यादा २७ खिलना २८

अस वह फूल बास का आगर भा नौ सदा ससुंद
जौनि फूल वह फूलहिं नेसब भये सुगन्द ॥

अधेर सुरंग पान अस खीनी । राती सुरंग अमी रस भीनी ॥
आछहिं वेहंस त बोल सो राती जनु गुलाल देखै वेहसाती ॥
मौणिक अधर दसन जनु हीरा बैनै रिसाल खांड मुख बीरा ॥
काढ़ी अधेर डाम सो चीरी ॥ रुधिर छुवै जो खावै बीरी ॥
ढारे दसन रसहिं रस कीली । रसि भरी वह सुरंग रंगीली ॥
जन प्रभात राति रवि रेखा । बिकसै बदन कमल जनु देखा
अलक भुवंगिन अधरहिं आखा गहे जो नागिन सो रस चाखा

अधर अधर रस पेम का अलकें भुवंगिन बीच
तब अमृत रस पावे जब नागिन कहं खींच

दसन श्याम पानहिं रंग पाके बिकसत कमल फूल अनि ताके
ऐसि चमक मुख भीतर होइ जनु दाड़िम औ श्याम सकोइ
चमके दसन वेहस जो नारी बीज चमक जस निसि अंधियारी
सेत श्याम अस चमकत दीठी श्याम हीर दुहु पांयन बैठी ॥
कै सो गही अस दसन अमोला और बीज वेहस जो बोला ।
रतन भीजि रंग मैंसि भइ श्यामा ओही छात पदारथ नामा
कित वे दसन देख रंग भीने । लेगइ जोति नयन भय खीने

दसन जोति होय नयन मग हृदय मांक्ष सो पैठ
परगट जगत अंधियार जनु गुप्त वही मैं दीठ

नाक १ होंठ २-९-१२-१८ पनला ३-२६ लाल ४-७ अमृत ५ हंसना ६ मूंगा ८ दांत १०-१४-२२-२४ मीठीबोली ११ खून १३ और के समय लाल सूर्य १५ मुंह १६ जुल्फों की नागिनी होंठों तक पड़ी रहिनी १७ बाल १९ खिलना २१ अनार २३ बिजुली २४ रात २५ सफेद-सियाह २६ मिस्सी २७ लाल नाम ऊधी को सजावार २८ हान २९ राह ३० दिल ३१ जाहिर ३२ छिपा ३३

रसनो सुनहि जो कहि रस बाता । कोकिल बैन सुनत मन राता ।
अमृत कोंप जीभ जनु लाई ॥ पान फूल अस बात सुहाई
चातृक बैन सुनत हो शांती । सुने सो परै प्रेम मधु मांती
बिरवा सूख पाव जस नीरू ॥ सुनत बैन तस पलहि सरीरू
बोल सेवाँत बूंद जनु परही ॥ स्रवन सीप सुख मोती भरही
धनवे बैन जो प्रारा अधारू । भूखे श्रवराहि दीन्ह अहारू
उन्ह बैनहि की काहि न आसा । मोहहिं मिरग बहसतेहि स्वासा ।

कंठ सारदा मोही जीभ सरस्वती काहि ॥
इन्द्र चांद रवि देवता सबै जगत सुख चाहि

श्रवरा सुनहि जो कुन्दन सीपी । पहिरे कुण्डल सिंहलदीपी ॥
चांद सूर्य्य दुहु दिस चमकाहीं । नखतहिं भरी निरखि नहि जाहीं
खिरा खिरा करहिं बीजु अस कांपी । अमर मेघ महं रहहिं न झांपी
सूक शनीचर दुहुं दिस मते ॥ होहिं निरार न श्रवराहि हुते
कांपत रहहिं बोल जो बैना ॥ श्रवराहि जनु लागहिं फिर नयना
जो जो बात सखिन सो सुना । दुहुं दिस करहिं सीस वे धुना ॥
खूंट दोउ धुव तेरई खूटी ॥ जानहु परहिं गचपंची टूटी ॥

वेद पुराण ग्रंथ जिन सब सुने सिख लीन्ह ॥
नाँद बिनोद राग रस बंदक श्रवरा वही विधि दीन्ह

कमल कपोल वही अस छाजे । और न काहि दई अस साजे ।
पुहुप पंग रस अमी संवारी ॥ सुरंग गेंद नारंग रतनौरी ॥ ॥
पुनि कपोल बायें तिल परा । सो तिल बिरह चिनग के करा

ज़बान १ आवाज़ २-७-९ लाल ३ पपीहा ४ पानी ५ कान ६-८-१२ गला १० सूर्य्य ११ देखना १३ हरसाइन १४ बिजुली १५ अलग १६ बाली १७ नखत १८ छोटे नखत जो चांद के आसपास होते हैं १९ गाते बजाते का शौक़ ईश्वर नेरिया २० माल २१-२४ फूल २२ लाल २३ गालिब्द २५

जोतिल देख जाय जर सोई । बाये हृष्टि काह जन होई ॥
जानहु भंवर पद्म पर टूटा ॥ जीव दीन्ह औ वहीं न छूटा ॥
देखत तिल नयनहि गा काढ़े औरन सूझे सो तिल छाड़े ॥
तेहि पर चूलक मंजूरी डोला छुवै सो नागिन सुरंग कपोला

रक्षा करै मयूर वह नागिन हियें पर लोट ॥
कोहि जंग को उछुइ सकै दुइ पर्वत की ओट ॥

गीव मयूर केर जस ठाढ़ीं ॥ कौंड़ फेर कैड़ों काढ़ी ॥ ॥
धनि वह गींव का बरनो करा बांक तुरंग जान महि धरा
घरैं परेवा गींव उठावा ॥ चहै बोल तमचोर सुनावा
गींव सुराही के अस भये ॥ अमी पियाला कारन नये ॥
पुनि तेहि ठांव परी तिये रेखा नेहि सो ठाउं होय जो देखा ॥
कनक तार सोने की करा । साज कमल तेहि ऊपर धरा ।
सूर्य्य किरन हुत गींव निरमली देइ पैग जान हिये चली ॥ ॥

नागिन चढ़ी कमल पर चढ़ के बैठ कमंठ ॥
कर पसार जो काल कहं सो लागैं वह कंठ ॥

कनक दंड दुइ बनी कलाई डांड़ी फेर कमल जनो लाई ॥
चंदन गाभ की भुजा संवारी जनो सो बेल कमल पौनारी ॥
तेहि डांड़ी संग कमल हथोरी एक कमल की दोनो जोरी ॥
सहजहि जानहुं मेंहदी रची मुक्ताहल लीन्हे जनु घुंगची ॥
कर पल्लव जो हथोरिन साथा वै सब रक्त भरी तेहि हाथा
देखत हिया काढ़ जिव लेई ॥ हिया काढ़ के जान न देई ॥

निगाह १ कमल २ बाल ३ लाल गाल ४ निय हवाती ५ मोर ६ कमी ७ दुनिया ८ पहमड़ तथा छाती ९ गरदन १० . २० खराद ११ खरादी १२ घोड़ा १३ कबूतर १४ चिड़िया १५ आह १६ . १८ तीन लकीर १७ सोना १९ साफ़ २१ क़दम २२ जान सो गुज़र जाय २३ हाथ २४ सोने की डंडी २५ नाल २६ मोती २७ अंगुली

कनक अंगूठी औ नग जड़ी ॥	वै हत्यारैन नखतहिं भरी ॥

कैसी भुजा कलाई तेहि बिधि जायन भाख
कंकन हाथ होय जहँ तेहि दरपन का साख

हिया थार कुच कनक कचूरा	जानहुँ दोऊ श्रीफल जूरा ॥
एक पाट वै दोनों राजा ॥	श्याम छत्र दोनहुं सिर छाजा
जानहुँ दुई लटू इक साथा	जग भा लटू चढ़ै ना हाथा ॥
पातर पेट आहि जनु पूरी ॥	पान अधार फूल अस गोरी
रोमावलि तेहि ऊपर जूमा	जानहुँ दोऊ शाम औ रूमा
अलक भुअंगिन तेहि पर लोटा	हिय का रूप एक खेल दुइ गोटा
बान पुकार ऊठे कुच दोऊ ॥	नाग सरन दहु पावै कोऊ

कैसहि नवहिं न नायें जोबन गर्ब उठान ।
जो पहिले कर लावै सो पावै रस मान ॥॥

भृंग लंक जनु मांझ न लागा	दुइ खंड नलिन मांझ जनु नागा
जब फिर चले देख वह पाछे ।	अपसरै इन्दर जनु काछे ॥
जोह चले मन आपल लाऊ	अबहुं हृद्दि लाग वह भाऊ
बहीं गवन छिप अपसर भई ।	भई अलोप ना परगट भई ॥
हंस लजाय समुंद कहं खेली	हंसी लाज धूर सिर मेली
जगत सुनी देखी महूं ॥ ॥	उदय अस्त नारि न कहूं ॥
महिमंडल तो ऐसो ने कोई	ब्रह्मंडल जो होय तो होई

बरनों नारि जहां लग दृष्टि झरोखे आय ॥
और जो अहे अदृष्टि धन सो मोहि बरन न जाय

सोना १ नया नग २ सीना ३ छाती ४-१४ सोने की कटोरी ५ नारयल ६ तखत ७ दुनिया ८ नाम मुल्क ९ बाल १० नागिन ११ छाती १२ तीर १३ ग़फ़र १५ हाथ १६ मुख १७ भंभीरी १८ कमर १९ कोकाबेली २० परी २१ आरोपी होगे २२ निगाह २३ ग़ायब २४ ज़ाहिर २५ हाथी २६ स्वर्गलोक २७ नज़र २८ नज़र में नहीं

काधन कहैंजैसो सुकमारा । फूलके छुवैहोय बिकारारा ॥
पखुरींकाढ़ै फूलन सेती ॥ सोईडांसी सेर सपेती ॥ ।
फूलसमूंचा रहै जो पावा ॥ व्याकुलहोयनींद नहिं आवा ।
सहै न खीरखांड़ औ घीउ ॥ पान अधार रहै तनजीव ॥
नस पानन की काढ़ैहेरी ॥ अधर नगड़े फांस वह केरी
मकरीक तारताहि कर चीरू । सो पहिरें जरजाइ शरीरू ॥
पालंगपानकि आछे पाटा । नैन विछाय चलै जोबाटा ॥

कहां नयन ज्योरारवों पलक न लाऊं ओट
प्रेमकालुब्धा पावे काहि सो बड़ का छोट

जोराघो धन बरन सुनाई । सुना शाह मुरछागत आई
जनु मूरत वह परगट भई ॥ दरस देखाय नाहि छिप गई
जोजो मंदिर पद्मिनी लेखे ॥ सुना सो कमल कुमुद जो देखे
होय मालती धनै चित पैठी औरपुहुप कोइ आवन दीठी
मनहोय भंवर भयो बैरागा । कमल छाड़ चित औरन लागा
चांद की रंग सूर्य्य जस राता । और नखत सो पूंछ न बाता
तब अलि अलाउदीं जगसूरू । लेऊं नारि चित्तौर के चूरू ॥

जो वह मालति मानसर अलिन मेलीन्हीं घात
चितौर महं जो पद्मिनी फेरवही कहु बात

ए जगसूर कहूं तुम पाहां ॥ और पांच नग चितौर माहां
एक हंस है पंख अमोला । मोती चुनै पदारथ बोला ॥
दूसर नग जो अमृत बसा ॥ सब बिष हरै जहां लग डसा
तीसर पोहन पारस बखाना लोह छुवै होय कंचन बाना

बिछाना १ विछौना २ दूध ३ होंठ ४ कपड़ा ५ बदन ६ तरुन ७ ज़ेर
अंदाज़ ८ आशिक ९ ज़ाहिर १० कौंकावेली ११ पद्मावत १२ फूल १३
लाल १४ भंवर १५।१७ सूर्य्य १६।१९ नखअमूल १८ लाल २० पारसपत्थर २१

चौथ कहे सांदूर अहेरी ॥ जोहि बन हस्त धरै सब घेरी
पांचों है सोत हां लागना । राजपंखि पंखी गरजना ॥
हरनि रोभ कोउ बांचन भागा । जस सुघान ते सउड भागा ।

नग अमोल अस पांचो मान समुद कह दीन्ह
इस बंदत तहिं पाई जोरे समुद धुस लीन्ह ॥

पान दीन्ह राघो पहिरावा ॥ दस गज मत्त घोर सो पावा ॥
और दूसर कंकन कर जोरी । रतनजो लाग वह तीस करोरी
लाख दिनार देवाई जेवां ॥ दारिद हरा समुंद की सेवा ॥
हौं जेहि दिवस पद्मिनी पाऊं ॥ तोहि राघो चितौर बैठाऊं ॥
पहिले कर पांचों नग मूठी ॥ सो नग लेउं जो कैनक अंगूठी ।
सुजा वीर पुरुष बरियारू ॥ ताजन नाग सिंह असवारू ॥
दीन्ह पत्र लिख बेग चलावा । चितौर गढ राजा पहं आवा ।

राजै पत्र बचावा दिरपा लिखी अनेग ॥
सिंहल कोजो पद्मिनी पठै देव तेहि बेग ॥

खंड चौतीसवां लड़ाई राजा और बादशाह

सुन अस लिखा उठा जर राजा । जानो देव तड़प घन गाजा ॥
का मुहि सिंह देखावस आई । कहें तो शारदूल धर खाई ॥
भलहि जो शाह भूमपति भारी । मांगन कोउ पुरुष की नारी ॥
जो सो चक्कवै ताकहं राजू ॥ मंदिर एक अपन कंह साजू
अछर जहां इन्द्र पै आवे ॥ और जो सुने न देखे पावे ॥
कंस का राज छिता जो गोपी ॥ कान्ह न दीन्ह काहु कहं गोपी

शेर सुर्ख १·२० हाथी २ सीमुर्ग ३ जास जानवर ४ शिकरा ५ खिलअत ६ हाथी मस्त ७ अशरफी ८ दक्षिना ९ खिदमत १० दिन ११ राज पर बैठाऊं १२ सोना १३ ज़बरदस्त १४ कोड़ा १५ जल्द १६ मेहरबानी १७ बादल १८ बिजुली १९ ज़मीन का मालिक २१ तमाम दुनिया का राजा २२ किला २३ परी २४

श्री कश्यप २५

कोमोहिं तें असं सूर अगारा ॥ चढ़ै स्वर्ग धुस परै पतारा ॥

कालिहिं जीव मराउँ सब जन आनका दोस ॥
जो तस बूझे जस समुंद जल सो बुझाय बिन ओस ॥

राजा अस न होहु रिस राता ॥ सुनहो सूझ न जरकहु बाता ॥
मैं होंय हां मरे कहं आवा ॥ बादशाह अस जान पठावा ॥
जो तोहि भार न औरहि दीन्हा ॥ पुनि सो काल्ह उतर बांह दीन्हा ॥
बादशाह कहं ऐस न बोलू ॥ चढ़ै तो परै जगत महं डोलू ॥
सूरहि चढ़त लागु नहिं बारा ॥ दहै आग तेहि स्वर्ग पतारा ॥
परबत उड़हि सूर के फूकें ॥ यह गढ़ छार होय इक झोकें ॥
धंसै सुमेर समुंद गा पाटा ॥ भूमि डोल शेष फन फाटा ॥

ता सो कौन बड़ाई बैठ न चितौर खासि ॥
ऊपर लेहु चंदेरी का पद्मिनि इक दास ॥

जो पै घरनि जाय घर केरी ॥ का चितौर का राज चंदेरी ॥
जेई लेई घर कारन कोई ॥ सो घर देइ जो योगी होई ॥
हौं रन थंभूर नाथ हमीरू ॥ कल्पि माथ जे दीन्ह सरीरू ॥
हौं सो रतनसेन सक बन्धी ॥ राहु बेधि जीत सैर बन्धी ॥
हनुमत सरिस भार जे कांधा ॥ राघो सरिस समुद जे बांधा ॥
बिक्रम सरिस कीन्ह जे साका ॥ सिंहलदीप लीन्ह जो ताका ॥
जो अस लिखा भयो नहिं ओछा ॥ जियत सिंह की गह को मोछा ॥

दर्ब लेतौ मानो सेव करो गहि पाव ॥
चाहै नारि पद्मिनी तौ सिंहलदीपहि जाव ॥

सूरमा १ आसमान २ पाप ३ प्यास बुझे ४ लाल ५ दुशमन ६ जबाब ७ मूर्ख ८ नाम बाजा ९ धूर १० नाम पहाड़ ११ ज़मीन १२ औरत १३ जो कोई किसी की औरत लैले १४ नाम क़िला १५ नाम राजा १६ सिर कटाना १७ बरन १८ मशहूर १९ निशाना जीत दुपदी ब्याही २० बराबर २१ बोझ २२ श्री राम

राजा १ ... विक्रमादित्य ... २४

बोलनराजा आपजनाई ॥ लीन्हउदयागेर औरछिताई
सप्तदीपराजा सिरनावहिं ॥ औसैन चलोपद्मिनी आवहिं
जाकर सेवकरे संसारा ॥ सिंहलदीप लेन किनबारा
जन्न जाने सियह गढ़ मोपाहीं जाकर सबे नोर कुछ नाहीं
जेहि दिन आयु गढ़ के छेकी सरबस लेइ हाथ कोटकी ॥
सीसन भार खेह के लागे ॥ सो सिर भार होय दुख आगे।
सेवाकर जोजियननोहि भाई नाहितफेर मांख होयजाई।

जाकरजीवदीन्ह पै आगमेन पावैसीसैजोहार
तेहिकरनी सबजानै काह पुरुषका नारि

तुर्कजाय कहि मरै नधाई होयेइ सकंदर की नाई ॥
सुन अमृत कंज लीबन धावा हाथ न चढ़ा रहा पछतावा।
औनेहिदीप पतंग होयपरा आगेन भाड़ पांव दे जरा ॥
धर्तीलोह स्वर्ग भातांवा ॥ जीवदीन्ह पहुंचत करलावा
यहचित्तौरगढ़ सोइ पहारू ॥ सूरउवै दहककहेय अंगारू ॥
जैबरइसकंदर सरकीन्ही ॥ समुंद लियाधसजस वेलीन्ही
जोचढ़ आनीजायजिताई ॥ तबका भै सोजीत जिताई !!

महंसमुझ यहि आगमेन सजराखागढ़साज
काल्हहेयजेहि आवन सोचल आवै आज

सुरजा पलट शाहपह आवा। देवनमानेबहुत मनावा ॥
आगजोजरे आगपे सूझा ॥ जरत रहै नबुझायेबूझा

अपनी तारीफ़ १ नाम मुल्क २-३ सानो मुल्क ४ फ़ौज ५ किला को घेरे ६ सब ७ रोकना ८ सिर ९-१३ धूर १० गुस्सा दिली ११ पहिले १२-२३ कियाकूवा १४ बादशाह १५ नामबादशाह १६ जहां अमृत है १७ पांखी १८ आसमान १९ हाथ २० सूर्य्य २१ जैसे सिकंदर ने दुख पाया २२ जबबादशा आयेंगे २३ नामपहलवान २५

ऐसेसाथ नें नावै देवा ।। चहै सुलेमां माने सेवा ।।।।
सुनके असराने सुलतानू । जैसे तपै जेठ कर भानू ।।।
सहसा करानरोष्ठैनस भरा । जेहिंदिस देखै तेहिंदिस जरा
हिन्दू देवकाहू वर खांचा । सरक न आप आगसों बांचा
यहिंजग आगजो भरमहिंलीन्हा सोसंग आग दुहूंजग कीन्हा

> रवैधभीरजसजरबुझा चित्तोरपरैसो आग
> फेर बुझाये ना बुझै जौरे देवेसके लाग ॥

लिखीपत्रि चारहुं दिस धाये जहंतक उमरा बेगबोलाये
दुन्द घाव भाइन्द्र सकाना डोला मेरू शेष अकुलाना
धर्तीडोल कूर्मरवा भरा ॥ महनां मथ समुंदमहं परा
शाह बजाय चढ़ाजगजाना तीस कोस भापहिल पयाना
चित्तौर सौंहै बारगहताती जहंलग सुना कूच सुलतानी
उठसरेवान गगनेलहिंछाई आनहु रानेमघ देखाई ।।
जोजहंतहं सोता असजागा आयजोहार कटक सबलागा

> हंसि धारऔदेपुरुष जहंतक बेसुराऊर
> जहंतहंलीन्ह पलाने कटकेसुरह असक्षूर

चलेसहंस बेसक सुलतानी तीखेतुरंग बांक कनकाती ॥
परवरी चलीजो पातनहि पांती । बरनबरन औ भांतहिं भांती
कालेकुमैत नीलेसेपती ।।। खिंगकुरंग बोज़ देरकेतीती ॥
अबलक अबरसलखी शिराजी चौघेरचालसमुंद सबताजी

नामबादशाह १लाल२-२१सूर्य्य३हज़ार४गुस्सा ५घमंड६ भागना ७ दु-
नियामें आगसेजलायाजायगा ८नामकिला ९दिन १० जल्द ११नामबाजा
१२नामपहाड़ १३नाम राजा सांप १४कछुवा १५उलटपलट १६कूच १७
सामने १८ख़ीमा १९आसमान २०फ़ौज २२-२४-२६हाथी २३खच्चर २५टी-
ड़ी २७हज़ार कुरसी २८तेज़ घोड़ा २९निशान ३० घोड़ोंकीकिस्म ३१से ४२

किरमेज़ नुकराजरदा भले । रूपकरान बोलसर चले ॥
पचकल्यान संजाव बखानी । महिसायर सब उनचुन आनी ॥
मुशकी औ हिरमंजि इराकी । तुरकी कही अंधार बुलाकी ॥

सिर औ पूंछ उठाये चहुं दिस स्वास उनाहिं ॥
रोष भरे जस बावरे पवन की बास उड़ाहिं ॥

लोहे सार हस्त पहिराये ॥ मेघ श्याम जनु गरजत आये ॥
मेघहि चाहि अधिक वे कारे ॥ भयो असूझ देख अन्धियारे ॥
जस भादों निशि आवे दीठी ॥ स्वर्ग जाय हरके तेहि पीठी ॥
सोरह लाख हस्ती जब चाला ॥ परवत सरस चले जगहाला ॥
चले गैंड़ माते मद आवहिं ॥ भागहिं हस्ति गंध जो पावहिं ॥
ऊपर जाय गगन सिर धंसा ॥ औ धरती नर कहं धसमसा ॥
भा भोंचाल चलत गज गाजी ॥ जहं पग धरहिं उठे तहं पानी ॥

चलत हस्ति जग कांपा चांपा शेष पतार ॥
कूर्म जे धरती लिये रहा बैठ गयो गज मार ॥

चले सो उमर अमीर बखाने ॥ का बरनो जस उनके बाने ॥
खुरासान औ चला हरेऊ ॥ गौर बंगाला रहा न केऊ ॥
रहा न रूम शाम सुलतानू । काश्मीर ठट्टा मुलतानू ॥
जहं तक बड़ बड़ तुरक की जाती ॥ मांडो वाली और गुजराती ॥
पटना उड़ेसा के सब चले ॥ लेगज हस्ति जहां लग भले ॥
कवंरू कामत औ पंड़वाई ॥ देवगढ़ लेन उदयगिर आई ॥
चला सो परवत और कमाऊं ॥ खिसया नगर जहां लग नाऊं ॥

घोड़े की किस्म १ से १५ तक - सब दुनिया - ८ घोड़े की ज़ात ६ से १५ तक - गुस्सा १५ डर १६ भूल लोहे की १७ हाथी १८-२३-२४ काले बादल १९ बहुत २० रात २१ आसमान २२-२५ कछुवा जिसके ऊपर ज़मीन है २६ नाम मुल्क २७ - से ४५ तक

उदयं अस्त लहि देश जो को जानै नेहि नाउं
सातोंदीपन वो खंड जुरे आयइ कठाउं ।

धनसुलतान जोहि कसंसार । वही कटक अस सजु अपारा
सबैतुर्क सिरताज बखाने । तबल बाज औ बांधे बाने ॥
लाखन मीर बहादुर जंगी । चि चकमानी तीरखदंगी ॥
जोभारवोल रागसों मढ़े ॥ लेजम घालइ राकहि चढ़े ॥
चमकै परवरी सारि संवारी ॥ दरपन चौंहि अधिक उजियारी
बरनबरन औ पातहिं पानी । चुलीसो सैनो भांतहि भांती
बीहं बौहर सबकी बोली ॥ विधियहि कहां कहां सों बोली

योजन सैंस सतकर इक इक होय पयान
अगिलहिं जहां पयानहो पछलहिं हां मिलान

डोलेगढ़ गढ़पति सब कांपे ॥ जीवन पेट हाथ हियें चांपे ॥
कांपा रनथंभोर डडोला ॥ नरवैं रगयो कुराय तबोला ॥
चूनागढ़ औ चंपौतेरी ॥ कांपा मांडो लेन चंदेरी ॥
गढ़ गवालियर महं परी मथानी । औ कन्धार मथा होय पानी
कालिंजर महं परा भगाना । भाग उजे गैढ़ रहा न थाना ।
कांपा बांदो नर दुरौनी ॥ डरहं हतास बिजैगिर मानी
कांपउदयगढ़ देवगैढ़ डेरा ॥ तबसो छिपाय आप कहं धेरा

गढ़ गढ़पति जहं तक सबै कांप डोल जसपात
का कहं बोलसौं है भा बादशाह कर छात ३६

चित्तौर गढ़ औ कंभलनेरी ॥ साजे दोनों जैसि सुमेरी ॥

पूरब से पश्चिम तक १ सातों मुल्क २ जगह ३ फौज ४ बयान ५ तसवीर ६ ना-म तीर ७ मूरतांन से मढ़ी ८ घोड़ा ९ निशान १० ज्यादा ११ फौज १२ अलग १३ ईश्वर १४ कोस २८ १५ कूच १६ किलादार १७ दिल १८ नाम किला १९ पेड़ २० नाम मुल्क २१ से ३४ तक सामने ३५ नाम पहाड़ ३६

दूतन कहा आयजहं राजा	चढ़ा तुर्क आवै दर साजा ॥
सुनराजा दौड़ाई पाती ॥	हिन्दू नाउं जहांलग जाती ॥
चित्तौर हिन्दुन कर अस्थाना।	शत्रु तुर्क हठकीन्ह पयाना ॥
आवसमुंदरहे ना बांधा ॥	मैंहों मेड़ भार सिरकांधा
पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई।	नाहितसब कहंमार चढ़ाई ॥
जौलहि मेड़ रहे सुख साखा।	टूटे बार जायनहिं राखा ॥

सतीजोजियमहंसतधरे जरै नछाड़ै साथ
जहंबीड़ा तहं चून है पानसुपारी काथ ॥

करतजोरहे शाहकी सेवा।	तिन्ह कहं पुनि अस आव परेवा।
सबहोयएक मते जोसिधारे	बादशाह कहं आनजोहारे ॥
है चित्तौर हिन्दुन कीमाता।	गाढ़ परे तजे जाय न नाता ॥
रतनसेनहै जूं है साजा ॥	हिन्दुन मांझ आहिबड़राजा
हिन्दुन केर पतंग कइलेखा	दौरपरहिं आगजो देखा ॥
कृपाकरहु तो कारहुसंभीरा	नाहितहमहिं देहुहंसबीरा।
पुनिहमजाहिं मरहिंवहठाऊं	मेटनजायलाजकरनाऊं ॥

दीन्ह शाहहंसबीरा और तीनदिनबीच ॥
तेहिंसीतलकोराखै जिन्हे अगिनमहं मीच

रतन सेन चित्तौर महं साजा।	आयबजायबैठ सबराजा ॥
तोमरबैस पनवार सवाई ॥	औगहलोत आय सिरनाई
सूरजी औ बघवान बघेली	अगरवार चौहान चंदेली ॥
गहरवार परहार सूकेरे ॥	कालहंस औठकुराय जुरे ॥

बादशाह १ फ़ौज २ मकान ३ दुशमन ४ कूच ५ बोझ ६ दरवाज़ा ७ दूत ८ एक सलाह ९ मुशकिल १० छेड़ना ११ मौत कासामान १२ सेहरवानी १३ माफ़ १४ जम्ह १५ तीनदिनकीमोहलत १६ ठंढ १७ मौत १८ राजपूतोंकी ज़ात १९ से ३४ तक

आगे ढाढ़ बजावहिं ढाढ़ी ॥ पाछें धजा मरन की गाढ़ी ॥
बाजहिं सृंग संख औ तूरा ॥ चन्दन घोरी भरे सेंदूरा ॥
सज संग्राम बांध सब साका छाड़ा जियन मरन सब ताका

गगने धरति जो टेका तेहिं का गरू पहार ।
जो लहि जिव काया महं परे सो अंगवे भार ॥

गढ़ तस सजा जो चाहे कोई बरष सात लग खांग न होई
बांकी चाहि बांक गढ़ कीन्हा औ सब कोट चित्र सम लीन्हा
खंड खंड औ खंड सवारे ॥ धरे बिषम गोलन के मारे ॥
ठांवहिं ठांव लीन्ह सब बांटी रहा न बीच जो संचरै चांटी
बैठे धानुक कंगुरन कंगुरा । भूमि न आंटी अंगुरिन अंगुरा
औ बांधे गढ़ गढ़ मतवारे ॥ फाटे भूमि होहिं जो ढाढ़े ॥
बिच बिच बुर्ज बने चहुं फेरी बाजै तबल ढोल औ भेरी

भा गढ़ राज सुमेरु जस सरग छुवे पै चाह
समुंद न लेखे लावे गंग सहस मुख काह

बादशाह हठ कीन्ह पयाना इन्द्र भंडार डोल भय माना
नव्वे लाख सवार जो चढ़ा ॥ जो देखा सो लोहे मढ़ा ॥
बीस सहस घुमरहिं निशाना गुल कंचन फेरे असमाना ॥
बैरख ढाल गगन का छाई ॥ चला कटक धरती न समाई
सहस पांति गज मस्त चलावा धुसत अकास धसत भुइं आवा
वृक्ष उचार पेड़ सों लीन्ही ॥ मस्तक झार तार मुख दीन्ही
चढ़हि पहारहिं भय गढ़ लागू बनखंड खोह न देखहि आगू

नाम बाजा १-२।१९-२० कटोरी ३ लड़ाई ४ आसमान ५ २७ ठाना ६-८
बदन ७ कमी ९ पत्थर खाई १० क़िला ११ तसवीर १२ जगह १३ चूंटी न जा सके
१४ चौकीदार १५ ज़मीन १६-१८ हाथी मस्त १७ नाम पहाड़ २१ आसमान २२
२२ हज़ार २३-२४ कूच २५ चोटी २६ फ़ौज २९ जड़ ३०

कोउ काहू न संभारै होत आव डर चांप ।
धर्ति आप कहं कांपै स्वर्ग आप कहं कांप

चलीं कमानें जेहि मुख गोला । आवहिं चलीं धर्ति सब डोला ॥
लाय चक्रै वज्र के गढ़े ॥ चमकहिं रथ सोने के मढ़े ॥
तोहिं पर बिषम कमानें धरीं । सांचें अस्ट धात की भरीं ॥
सौ सौ मनें पियहिं वे दारू ॥ लागहिं जहां सो टूट पहारू ॥
मांती रहहिं रथहिं पर परीं ॥ शत्रुन्ह कहं सोहिं उठ खरीं ।
जौ लागे संसार न डोलहिं । होय भुइंकंप जीभ जो खोलहिं
सहस सहस हस्तिहिं की पांती खांचहिं रथ डोलहिं नहिं मांती

नदी नार सब पानी जहां धरैं वै पांव ॥
ऊंच खाल वन बीहर होत बराबर आव

कहों शृंगार जैस वे नारी ॥ दारू पियहिं जैसि मतवारी
उठै आग जो छाड़हिं स्वासा धुवां सो लागे जाय अकासा
सेंदुर आग सीस उपराहीं ॥ पहिया तरवन चमकत जाहीं
कुंच गोला दुइ हिरदें लाईं ॥ चंचल धुजा रहन छिटकाईं
रसनों लूक रहहिं मुख खोलें लंका जरै सो उनके बोलें ॥
अलक जंजीर बहुत गिय बांधे खैंचहिं हस्ती टूटहिं कांधे ।
वीर शृंगार दोउ इक ठाऊं शत्रुशाल गढ़ भंजन नाऊं ।

तिलक पलीता माथें दसन बज्र के बान
जेहि हेरहिं तेहिं मारहिं चुरकुस करें निदान

जेहिं जेहि पंथ चलीं वे आवहिं आवहिं जरत आग नस लावहिं

आसमान १ तोपें २ पहिया ३ भारी ४ तथा बारूद ५ दुशमन ६ सामने ७ हज़ार हथियों १६ सिर १० छाती ११ सीना १२ ज़बान १३ बाल १४ गरदन १५ जगह १७ दुशमन को मारने वाली १८ क़िला तोड़ने वाली १९ दांत २० तीर २१ देखना २२ बहुत २३

जरहिं जो परबत लाग अकासा बनखंड धकहिं पलास को पासा
गैंड़ा गयंद जरे भये कारे ॥ आवैं सिंगी रौझ झनकारे ।
कोयल नाग काग औ भंवरा और जो जरे तिन्हहि को संवरा
जरा समुंद पानि भा खारा ॥ यमुना श्याम भई तेहि झारा
धूम श्याम अन्तरिक्ष भये मेघा गगन श्याम भा धुवां जो मेघा
सूर्य जरा चांद औ राहू ॥ धर्ती जरी लंक भा दाहू ॥

धर्ती स्वर्ग असूझ भा तबहूं न आगि बुझाय
उठहिं बज्र जर डूंगवे धूम रही जग छाय ॥

औ बेडोलत स्वर्ग पतारू ॥ कांपे धर्ति न आगवै भारू ॥
टूटहिं परबत मेरु पहारा ॥ होय होय चूर उड़हिं होय छारा
सत खंड धर्ती भइ खर खंडा ऊपर अष्ट भये ब्रह्मंडा ॥
इन्द्र आय तेहि खंड होय छावा चढ़ सब कटक घोर दौड़ावा
जेहि पंथ चल ऐरापत हाथी अबहिं सो डगर गगन महं चाती
औ जहं जाम रही वह धूरी ॥ अबहूं बसे सो हरिचन्द पूरी ॥
गगन छिपा खेह तस छाई सूरज छिपा रैन होय आई ॥

गयो सिकन्दर कजलिबन भयो सो तस अंधियार
हाथ पसार न सूझे बरै लाग मसयार ॥

दिनहि रात अस परी अचाका भा रवि अस्त चन्द्र रथ हांका
मंदिर जगत दीप परगसी ॥ पंथक चलत बसेरे बसी ॥
दिनके पंख जरत उड़ भागे । निशि के निसर चोर सब लागे
कमल सुकेता कुमुदन फूले चकई बिछुरा चकवा मन भूले

ढेरव १ हाथी २ नाम जानवर ३-४ धुवां ५-१२ बीच ६ बादल ७ आसमान ८-१० १३-१७ २१ जलना १८ छेद २१ वोझ न बुझना १९ नाम पहाड़ १५ धूर १६ फौज १८ राह १९ नाम हाथी २० खाक २१ रात २३-२४ सूर्य २४ मकान २५ दुनिया २६ रोशन २७ मुसाफ़िर २८ कोकावेली ३०

चला कटेक[1] असचढ़ा अपूरी ॥ अगलहिं पानी पिछलहिं धूरी
महि[2] ऊजड़ी सायर[3] सब सूखा । बन खंड[4] रहे न एको रूखा ॥
गढ़[5] गिर[6] फूट भये सब माटी ॥ हस्ति[7] हेरात तहां को चांटी[8] ॥

खेह[9] उड़ानी जाहि घर हेरत फिरत सो खेह ॥
पिय आवहिं अब दृष्टिं[10] तोहि अंजन नयन उरेह

यहि बिधि होत पयान सो आवा । आय शाह चितौर नेरावा ॥
राजा राउ देख सब चढ़ा ॥ आव कटक[12] सब लोहे मढ़ा ॥
चहुं दिश दृष्टि[13] परी गज[15] जूहा ॥ श्याम घटा मेघ जस रूहा ॥
अरो उरु कुछ सूझ न आना । खर्ग[17] लोह घुमरहहिं निशाना
चढ़ धौरहर[18] देखहिं रानी ॥ धन[19] तुइ अस जाकर सुलतानी
के धन रतनसेन तुइ राजा ॥ जाकहं तुर्क[20] कटक यहि साजा
बैरख ढाल केर परछाई ॥ रयन[21] होत आवै दिन मांही ॥

अन्ध कूप भा आवै उड़त आवत तस छौर[22] ॥
ताल तलावा पोखर धूर भरी ज्योनार ॥

राजै कहा कीन्ह जस कारना ॥ भयो अस सूझ सूझ अब मरना
जहं लग राज साज सब होऊ ॥ ततखन[23] भयो सजो[24] संजोऊ
बाजे तबल अकोट जुझाऊ । चढ़ा कोप सब राजा राऊ ॥
करहिं तुखार[25] पवन सों रीसा[26] । कन्ध ऊंच असबार न दीसा ॥
का बरनों अस ऊंच तुखारा ॥ दुइ बैर पहुंचे असवारा ॥
बांधे मोर[27] छांह सिर सारहिं ॥ भांजहिं पूछ चंवर जनु ढारहिं
राग[28] संभाहा पहुंचो तोपा ॥ लोहेसार पहिर सब कोपा ॥

फ़ौज १-१२-२० ज़मीन २ तालाब ३ जंगल ४ क़िला ५ पहाड़ ६ हाथी ७ चूंटी ८ धूर ९ निगाह १०-१३ कूच ११ हाथियों का हलक़ा १४ काली घटा छाई १५ बारपार १६ आसमान १७ महल १८ पद्मावत १९ रात २१ ख़ाक २२ तुरन्त २३ सामान २४ घोड़ा २५ गुस्सा २६ मोरछल २७ तेज़-चालाक २८

तैसे चंवर बनाये औ घाले गले झंप ॥[1]
बांध सेत गजगाह तहं जो देखै सो कंप ॥[2][3]

राज तुरंगम बरनों काहा ॥[4] आनी छोर इन्द्ररथ बाहा ॥
ऐसे तुरंगम परीन दीठी ॥ धनु असवार रहहिं तेहि पीठी ॥
ज़ात बाल का समुंद थहाये । स्वेत पूंछ जनु चेवर बनाये ॥
बरन बरन पखरी अति लोनी । जानहुं चित्र संवारे सोनी ॥[10]
माथोंके जड़ सीस औ कांधे[11][12] चंवर लाग चौरासी बांधे ॥
लागे रतन पदारथ हीरा ॥[13] बरहिं दिनहिं दीपक चहुं फेरा ।
चढ़हिं कुंवर मन करहिं उछाहू[14] आगे घाल गिनै नहिं काहू ॥

सेंदुर सीस चढ़ाये चन्दन खौर देह ॥ ॥
सोतल काहू लगई अन्त होय जो खेह ॥[15]

गज मैमन्त पुखरी नृप बौरा ॥[16][17] देखै जानहु मेघ अगारा ॥
स्वेत गयंद पीत औ रांते ॥[18][19] हरे श्याम घूमहिं मद माते
चमकहिं दरपन लोहे सारी[20] जनु परबत पर परी अंबारी ॥
औ मेल पहिराये सूड़े ॥ ॥[21] कनके न भाय पाय नर रौंदे ॥[22]
सोने मेल सोहान संवारे ॥ गिरिवर टरहिं सो उनके टारे ॥[23]
परबत उलट भूमि सो मारहिं[24] परे जो भीर तीर अस झारहिं
ऐस गयंद साजे सिंहुली ॥[25] कोटि कूर्म पीठ कलमली ॥[26]

ऊपर कनक मंजूसा लाग चंवर औ ढार ॥[27]
भल पति बैठ भाल लै औ बैठे धन्कार ॥[28][29]

अश्व दल गजदल दोनों साजे[30] औ घन नवल जुझारू बाजे ॥

गलखोद १ सफ़ेद २-६ नामज़ेवर ३ घोड़ा ४ नज़र ५ रंग बरंग निशान ७ बहुत ८ खूबसूरत ९ तसवीर १० जवाहिरात ११-१३ सिर १२ खुशी १४ धूर १५ हाथी १६-२५ राजाके दरवाज़ा १७ सफ़ेद हाथी १८ लाल १९ चार आईना २० झोका २१ सोना २२ पहाड़ २३ ज़मीन २४ कछुवा २६ सोनेकी अंमारी २७ नेज़ा २८ तीरअंदाज़

माथेमुकुट छत्रसिरसाजा ॥ चढ़ा बजायइन्दु अस राजा ॥
आगेरथ सेनासब ठाढ़ी ॥ पाछेंधुजा मरनकीकाढ़ी ॥ ।
चढ़े बजाय चढ़ा जसइन्दू ॥ देवलोक गोहनु भा हिन्दू ॥
जानहुं चांद नखत लैचढ़ा । सूर्य्य कटक रैनि अस मढ़ा ॥
जौलहिं सूर जाहि देखराबा ॥ निकसचांद घरबाहर आवा ।
गगन नखत जस गिनिनजाहीं निकस आय नस भुईं नसमाहीं

देव अनीराजाकीजगहोयगयो असूझ ॥
बहिंकसहोयचहनहै चांदसूर्य्यसोजूझ ।

वहांराज अस साजबनाई ॥ वहां शाह की भई अवाई ॥
अगलेंदौड़े आगे आई ॥ पिछलेपाछ कोसदस ताई ॥
शाह आय चित्तौरगढ़ बाजा । हस्तीसहसबीससंग गाजा ॥
उनई आय दोउ दलगाजे ॥ हिन्दूतुरुकदोउ समै बाजे ॥
दोऊ समुंद दधि उदध अपारा दोनों मेरु खरबड पहारा ॥
कोपजो भार दुहूंदिश मेली औहस्ती हस्तहिं सो पेली ॥
आंकुस चमक बीज असबाजहिं गरजहिं हस्ति मेघ जनु गाजहिं

धर्ती स्वर्ग दोऊ दल जूहहिं ऊपर जूह ॥ ।
कोऊ टरैं न टारैं दोनों बज्र समूह ॥ ॥

खंड पैंतीसवां सुलह राजा औरबादशाह

हस्तिहिं सौं हस्ती हठ गाजहिं जनु परबत परबत सों बाजहिं
कोउ गयंद न टारें टरहीं ॥ । टूटहिं दांत सूंड गिर परही ॥
परबत आय जो परहिं तराहीं दलमंह चांप खेहें मिलजाहीं
कोइ हस्ती असवारहिं लेहीं । सूंडसमेट पाय तर देहीं ॥

फौज १-१० साथ २ तथा सुलतानी फौज ३ रानकी सियाही मे ४ सूर्य्य ५ तथा राजा ६ आसमान ७ पहुंचा ८ हाथी १०-१४-१५-१६ बराबर ११ समुंदरहीका १२ पहाड़ १३ धूर १८

कोइ असवार सिंहहोय मारहिं । हन मस्तक सों सूंड़ उनारहिं
गर्वे गयंद तन गगन पसीजा । रुधिर चले धर्ती सब भीजा ॥
कोइ मैमंत सँभारहिं नाहीं । तब जानै जब गुद सिर खाहीं

गगन रुधिर जस बरसै धर्ती भीज मिलाय
सिर धर टूट बिलाहिं तस पानी बेग बिलाय

औ बज्रजूझ जस सुना ॥ जेहिते अधिक भयो चौगुना
बाजहिं खड़ग उठै डर आगी । भुइँ जर चहीं स्वर्ग कहं लागी
चमकहिं बीज होय उजियारा । जेहि सिर परै होय दुइ फारा ।
तैनै मेघ अस दुहुंदिस गाजा । खड़ग जो बीच बीज अस बाजा ॥
बरसहिं सेल बान होय कांदों । जस बरसै सावन औ भादों ।
लपटहिं कोप परहिं नरवारी ॥ औ गोला ओला जस भारी ॥
जूझे बीर लिखों कहं ताईं ॥ लै अपसर कैलाश सिधाईं ॥

स्वामिकाज जो जूझै सोइ गये मुख रात ॥
जो भागे सत छांड़के मसि मुख चढ़े बरात ।

मासु ग्रासन भा अस काऊ ॥ लोहडु कूंदि भयो अगाऊ
कंदहि कादहि चूर भुइं परे ॥ रुधिर सलिलहि होय सौ यर मरे
आनन्द ब्याह करैं मसखोबा । अब भख जन्म जन्म कहं पावा
चौंसठ योगिन खपर पूरा ॥ वृक जंबुक घर बाजहिं तूरा ॥
र्र्द्ध चील्ह सब मंडप छावहिं । काग कलोल करहिं औ गावहिं
आज शाह हठ अनी बिवाही । पाई भुक्ति जैसि मन चाही ॥
जेहिं जस मासु भखा परावा । तस तेहि कर लै औरहिं खावा

शेर १ ग़रूर २ हाथी ३ आसमान ४-११ खून ५ मैजासिरका ६ जल्द ७ भारी लड़ाई ८ बन्दूक ९ तलवार १० बादलसी फ़ौज १२ बिजुली १३ इन्द्र लोक की परी २१ मालिक १५ लाल १६ सिपाही १७ ईश्वर के सामने १८ लड़ाई १९ तल-वार की बिजुली से बन्दूक लाग ज़मीन में गिरे २० पानी २१ तालाब २२ भेड़िया २३

सियार २४ [illegible]

काहूसाथनतन्नेकासकतमुवेसवपोष ॥
औरहैपूरजूजाननजोलगहैं आवतजोष

वांदनटरैसूरसोंकोपा ॥ दूसरछत्रसोंहिकेरोपा ॥
सुनाशाहअसभयोसमूहा । पैलेसबहुसैननकेजूहा ॥
आजचन्दतोरकरोंनिपात् ॥ रहैनजगमहंदूसरछात् ॥
सहसकिरनहोयकिरनपसारा । छैकाचांदजहांलगतारा ॥
देखलोहदरपनभाआवा । घटघटजानोभानुदेखावा ॥
बहुकोधितसैनोहलधाई ॥ अगिनपहारजरतजनुआई ॥
खंगबीजसबनुकेउठाई ॥ छोडनचन्दकमलकैरपाई ॥

जगमगअनीदेखकैधायहूं दृष्टिमोहेलाग
छुवैहोयजोलोहमाँझआवैनहिंआग ।

सूरजदेखचांदमनलाजा ॥ बिकसतकमलकुमुदभाराजा ॥
पहिलहिंचन्दआवनिशिपाई । दिनदिनैरसोंकौनबडाई ॥
अहैजोनखतचांदसंगतपी । सूरकीदृष्टिगगनमहंछपी ॥
कीचिंताराजामनबूझा ॥ जेहिसोंस्वर्गनधनीजूझा ॥
गढपानेउतरलडेनहिंधाई । हाथपरेगढहाथपराई ॥
गढपतिइन्द्रगगनगढकाजा । देवसनिसरैनकरराजा ।
चदरैनरहिनखतहिमांझा सूर्य्यनसोंहैंहोयचाहिसांझा

देखाचंद्रभोरभासूरजकेबडभाग ॥
चांदफिराभागढपतिसूर्य्यगगनगढलाग

कटकअसूझअलावलशाही । आवतकोइनसंभारैमाही

तनसाथनहींजाताचोहमोटाहो १ ओकापेटभरना-जोदामहिहैअंदाजारखना २ सूर्य्य ३-११-२३-२४ सामने ४ गुस्सा ५ हाथी ६ नाश ७ हजार ८ नयाराजा ९ फौज १०-१२-१६-३१ तलवार १३ ढाल १४ हाथ १५ निगाह १७ बीच १८ तथाबाशाह १९ निकलना २० कोकाबेली २१ रात २२-२६ नजर २५ आसमान २६-२७ दिन २८

उदहिं समुंद जस लहरैं देखी ॥ नयन देख मुख जाय न लेखी ॥
केते बनावत उतरे घाटी ॥ केते बनावत मिल गये माटी ॥
केतहिं निनेहिं देइ नव साजा ॥ कबहुं न साज घटै तस राजा ॥
लाख जाहिं आवहिं नव लाखा ॥ फौ भरै उटांगी नहिं शाखा ॥
जो आवै गढ़ लागै सोई ॥ थिर है रहै न पावै कोई ॥
उमर अमीर रहे जहं ताई ॥ सबको बार अंत गो पाई ॥

लाग कटक चारहुं दिश गढ़ सो परा अकदाह
सूर्य्य गहन भा चाहहि चांद भयो जस राह

अथवा दिवस सूर आवासा ॥ परी रैन शशि उवा अकासा ॥
चांद सुरद दब बैठो आय ॥ चहुं दिश नखत दीन्ह छिटकाय ॥
नखत अकासहिं चढ़हिं दिपाई ॥ तरत त लूका परहिं बुझाई ॥
परहिं सेल जस परहिं बिजागी ॥ पहनहि पहन बाजउठ आगी ॥
गोला पर गोला दरकावहिं ॥ चूना करत चारहुं दिश आवहिं ॥
उनई घटा बर्ष झरलाई ॥ ओला टपकैं परै बुझाई ॥
तुरुक न मुख फेरैं गढ़ लागी ॥ एक मरै दूसर होय आगी ॥

नृपति बान सुन मुरक परहिं सकै न कोइ गोंठ
उनई शाह सैन सब रही भोर लग ठाढ़

भयो बिहान भानु पुनि चढ़ा ॥ सहस किरन जैसो बिधि गढ़ा ॥
भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी ॥ कोपा कटक लाग चहुं फेरी ॥
बान करोर एक मुख छूटहिं ॥ बाजहिं जहां फोंक लगि फूटहिं ॥
नखन गगन जस देखे घने ॥ तस गढ़ फाटहिं बनहिं हने ॥

दरया आगका १ हमेशा २ पैदा होना ३ किलातथा दुनिया ४ हद ५ फौज ६-१९-२२ आग ७ नया राजा ८ दिन ९ सूर्य्य १० रात ११ चांद १२ तथा रतन सेन १३ गोला १४ आग १५ पत्थर १६ राजा के तीर १७ सामना १८ सूर्य्य २० हजार २१ ईश्वर २२ पहुंचना २४ आसमान २५

बानबेध साही किये राखा । गढ़ भा गड्डुर फुलावै पांखा ॥
उड़गा कीर कठिन हिय बाता । तो पै लहै होय मुख राता ॥
पीठ दीन्ह तेहिं बानहिं लागे । चांपन जाहिं पगहिं पग आगे ।

चार पहर दिन जूझ भा गढ़ न टूट तस बांक ।
गरू होत पै आवै दिन दिन नाकहिं नाक ॥

कैंका कोट जोर अस कीन्हा । घुसा नगर सुरंग तहं दीन्हा ॥
गरगजै बांध कमानै धरीं ॥ बज्र अगिन मुख दारू भरीं ।
हबशी रूमी और फिरंगी ॥ बड़ बड़ गुनी और जेहि संगी ।
जेहि की जोन जाहिं उपराहीं । जहं ताकहिं चूकहिं तहं नाहीं ।
अष्ट धात के गोला छूटहिं । गिर पहाड़ चूल होय फूटहिं ।
इकबारहि सब छूटहिं गोला । गरजै गगन धरति सब डोला ।
फूटै कोट फूट जनु सीसा ॥ उड़हिं बुर्ज जाय सब पीसा ॥

लंका रावट जस भई दाह परा गढ़ सोय ॥
रावन मांत जो जर लिखा कहु किमि अजर सो होय ।

राजा केर लाग गढ़ धुई ॥ फूटै जहां सवारहि सोई ।
बाकी बरसहिं बानक करेइ । रातहिं कोट चित्र के लेइ ॥
गाजै गगन चढ़ा अस मेघा । बरसहिं बज्र सलल कोउ ढेघा ।
सौ सौ मन के बरसहिं गोला । बरसहिं टपक तीर जस ओला ।
जानहुं परी स्वर्ग हत गाजा । फाटी धरति आय जो नाजा ॥
गैगज चूर चूर होय परहीं ॥ हस्ति घोर मानुष संहरहीं ॥
सबहिं कहा अब परले आया । धरती स्वर्ग जूझ नस लावा ।

राजा के हवास का नोना उड़गया १ मुशकिल २ मुंह लाल ३ घेरा किला ४ मरहला ५-१७ नोपें ६ आसमान ७ क़िला ८ राख ९ माथा १० बांके बनाने वाले ११ तसवीर १२ आसमान १३ सख़्त पत्थर के गोले १४ आसमान से बिजुली गिरी १५ पहुंचना १६ हाथी १९ मरना १८ क़यामत २०

उठो बज्र सन मुख जेरहे होय इक डंकौ इलाग
जगत जरै चारहुं दिशा कोर बुझावै आग

तबहूं राजा हियै न हारा। राजपंवर पर रचा अखारा॥
सोहै शाह कर बैठक जहां। सामहिं नाच करावै तहां॥
जंत्र पखावज आदिजो बाजा। सुरमंदिर रबाब भल साजा॥
बीन निपात एक कु मायज गहे। बाज उमेरती अनिक हुकहे॥
चंग उपंग नादं सुर तूरा। मुहर बंसे बाजे भल तूरा॥
डुडुक बाजडफ बाज गंभीरा। औ बाजहिं भल छंछ मंजीरा॥
तनेंबितंत सुभे घनतारा। बाजहिं शब्द होय झनकारा॥

जगसिंगार मन मोहन पातुर नाचहिं पांच
बादशाह गढ छेंका राजा भूला नाच॥

बाजा नगर केर सब गुनी॥ करहिं अलाप बुद्ध चौगुनी॥
प्रेम मेराग भेरो तेहि कीन्हा। दुसरे मोलकोस पुनि लीन्हा॥
राग हिंडोले सो तिसरे गाई। चौथे मेघ मलार सोहाई॥
पचयें औरीग भल किया। छटयें दीपक उठबर दिया॥
छओ राग गाये भल गुनी॥ औ गाई छत्तिस रागिनी॥
ऊपर भई सो पुतली नाचहिं। तर भये तुर्क कमौनी खांचहिं॥
काढा माथा धुमै रो छुमरा॥ नर भये देख मीर औ उमरा॥

सुन सुन सीसै धुन हि सब कैमलि मलि पछताहिं
कबहमहाथ चढ़ हिं यहि के तब यह दुख जाहिं

पत्थर १ इकतरफ २ दिल ३ खासमहल ४ सामने ५ नाम बाजा ६-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१ मोटे बहुत नार २२ पहिले २३ नाम राग २४-२५-२६-२७-२८-२९ मुसलमान लोग तोपें मारते थे ३० जिसने राजा की फ़ौज से सिर निकाला वह वहीं रहा ३१ सिर ३२ हाथ ३३

छत्रों राग गावें पातुरनी ।। पुनि तेहि कीन्ह लिये रागनी
भाकल्यान कान्हरा कीन्ही राग बिहाग केदारा लीन्ही
ललित बगाँल लागलहिं सोई आसावरी भयो सूब कोई
धनाश्री सौंहो सो कीन्ही । भयो बिलावल सो कह लीन्ही
रामकेली गुन कली सुहाई ।। सारंग औ बिभास मुहं आई
नित मलार जो मिलार सुनाई श्याम गूजरी पुनि भल गाई
पुरबी औ देसा खबकुरौरी ।। टोड़ी गौड़े सो भई निरारी ।।

गोरी गोरौं तर वेन सिद्ध अलापहिं ऊंच ।।
तहां तीर कहं पहुंचहि दृष्टि जहां न तहं पहुंच

पातुरि नाच दीन्ह जो पीठी पड़ गई सोंह शाह की दीठी ।।
देखत शाह सिंहासन गूंजा कब लग मिर्ग चन्द्र तेहि भूंजा
छाड़हि बान जाहिं उपराहीं गर्ब केर सिर सदा नराहीं ।।
बोलत बान लाख भा ऊंचा कोई कोट कोइ पवौ सो पहुंचा
जहांगीर कन्नौज का राजा वहक बान पातुरि के लागा
बाजो बान जांघ जस नाचा जिवगा स्वर्ग परा भुइ सांचा
उड़ि सा नाचत नचिन यामारा रहसे तुर्क बाज के मारा

जो गढ़ साजहिं लाख दस कोटि संवारहिं कोटि
बादशाह जब चाहैं बचै न एको ओट ।।।

राजैं पुंवर अकास चुलाई ।। पैरा बांध चहुं फेर ललाई ।।
सेत बन्ध जस राघौ बांधा । परा फेर भुई भारन कांधा ।।
हनुमन्त होय सब लाग गुहारा आवहिं चहुं दिश चले पहारा

नवायफ़ १ नाम राग रागनी २ से २५ तक - निगाह २६-२८ सामने २७
हिरन का बचा २९ गुरूर ३० क़िला ३१ दरवाज़ा ३२ पहुंचा ३३ +। +
समान ३४ मौकूफ़ ३५ खुश ३६ फ़ौज से बादशाह के तोपें चली ३७ राजा
के क़िला में मोंचा लपड़ा ३८ पुल ३९ श्री रामचन्द्र जी ४०

खेत फरक जस लागे गढ़ा । बांधू उठाय चहूं गढ़ मढ़ा ।।
खंड खंड ऊपर होय पटाऊ ।। चित्र अनेक अनेक कटाऊ ।
सीढ़ी होत जाहिं बहु भांती जहां चढ़ैं हस्ती सैन की पांती ।
भा गगन जस कहत न आवा जनहुं उठाय गगन लै लावा ।

राहु लाग जस चांदहिं गढ़ लागा तस बांध ।।
सब धड़ लील ठाढ़ भा रहा जाय गढ़ कांध

राज सभा सब मंसौ बैठी ।। देख न जाय मुंद भई दीठी ।
उठा बांध तस सब गढ़ बांधा कीजै बेग भार जस कांधा ।
उपजी आग आगज सबोटू ।। अब मत लील आन नहिं होई
भा त्योहार जो चाचर जोरी खेल फाग अब लाई होरी ।।
समंद फाग मेल सिर धूरी ।। कीन्ह जो साका चाहौ पूरी ।।
चन्दन अगर मलयगिर काढ़ा घर घर कीन्ह सरा रच ठाढ़ा
जून्हें कहं साजा रनबासू । जेहि सत हियें कहां तेहि आसू

पुरुषन खरग संभारी चन्दन खौरी देह ।।
मेहरिन सेंदुर मेला चहहिं भई जर खेह

आठ बरस गढ़ छेंका रहा । धन सुलतान कि राजा महा
आय शाह अंबराउ जो लाई फरे झरे पै गढ़ नहिं पाई ।।
हठैं जोरी तब जूल्हर होई ।। पद्मिनि पावन मिन्नत सोइ ।
यहि बिधि हील दीन्ह तब नांई देहिली की अंदासें आई ।।
पक्रम लेबे दीन्ह जो पीठी । सो अब चहा सोंह के दीठी ।।
जेहि भुइं माथ गगन सिर लागा थाने उठे आव सब भागा

सफ़ेद पत्थर १ तसवीर २ हाथी ३ मरहला ४ आसमान ५-२३ निगाह ६ जल्द ७ डरपोक ८ फागखेलो ९ चढ़ाई १० चिता ११ मौन १२ दिल १३ मर्दों ने तलवार ली १४ औरत १५ ख़ाक १६ बाग़ १७ आहसम भाकि बेमरे १८ मुशकिल १९ अरज़ी २० नाम मुल्क २१ सामने २२

वहां शाह चितौर गढ़ छावा । यहां देश अब भयो परावा ।

परत दौर जेहि पंथ में बाढ़ा बेर बबूर ॥
निशि अन्धियारी जाय तब बेग उठे जस सूर ॥

सुना आद अरदा जो पढ़ी । चिन्ता आन आन चित चढ़ी
तब आगो मन चीते कोई । जो आपन चेता कछु होई
मन झूठा जिव हाथ पराई । चिन्ता एक भई दुइ ठाईं ॥
गढ़ सों उरभ जाय तब छूटा । होय मिलाव कि सो गढ़ टूटा ।
पाहन कर रवि पाहन हीरा । बेधो रतन पान दै बीरा ॥
सुरजा सेतें कहा यह भेऊ । पलट जाहु अब मानहु सेऊ ।
कहु तो सों पद्मिनी ना लेऊ । जो राके हि छाड़ गढ़ देऊ ॥

आपन देश खाहु ले हिंवल और चँदेरी लेहु
समुद्र संभद न कीन्ह मोहि ते पांचो नग देहु

सुरजा पलट सिंह चढ़ गाजा । अज्ञा जाय कहा गढ़ राजा
अबहूं हिये समझ रे राजा । बादशाह सों जूझ न छाजा
जाकर दीहि पृथ्वी सेई ॥ । चहै तो मार और जिव लेई ।
पिंजर मह तू लीन्ह परेवा । गढ़पति सो बाँचे कै सेवा ॥
जब लग जीभ अहै मुख तोरे । संवर उघेल बिनय कर जोरे
पुनि जो जीभ पकड़ जिव लेई । को खोले को बोलै देई ॥
आगे जस हमीर मैं मन्ता । जो न सकौसि तोर भा वन्ता ।

देव काल्ह गढ़ टूटे राज वही कर होय ॥
करसे वा सिर नायके घरन घाल बुधि खोय

अलाउद्दी १ निगाह २ राह ३ रात ४ जल्द ५ सूर्य ६-८ अरज़दाश्त ७ पत्थर ८ मारडालना १० नाम पहलवान ११ भेद १२ मुलाकात १३ नाममुल्क १४-१५ तुहफा १६ शेर १७ कुक्त १८ दिल १९ जानदार परन्द २० क़िलादार २१ ख़िदमत २२ नाबेदारी २३ नामराजा २४ अहंकारी २५

सुरजा जस हम्मीर मन ताका । औ रनिबाहौ आपन साका
वह अस हौं सकबन्दी जाहीं । हौं सो भोज बिक्रम उपराहीं
बरस सात महं अन्न न खांगा । पानि पहार भवै बिन मांगा
तेहि ऊपर जो पै गढ़ टूटा ॥ सत सकबन्दी केर न छूटा ।
सोरह लाख कुंवर हैं मोरें । पतंग परहिं जस दीप अंजोरें
जेहि दिन चांचर चाहों जोरी । समदों फाग मेल के होरी ॥
दै के घानि जोरावत जीउ । सो कैस आवहिं भोसक पीउ

अबहूं जूझ हर साज के कीन्ह चहूं उजियार ।
होरी खेलौं रनकटिन कोउ न समेटहि छार ।

अन राजा सो जरै निआना । बादशाह की सेव न माना ॥
बहुतहिं अस गढ़ कीन्ह सजोना । अंत भई लंका जस रवना ॥
जेहि दिन वह छेंके गढ़ घाटी । होय अन्न ओही दिन माटी
जूझा नेसि जल ढुवे पहारू । वह रोवे मन संवर सिंहारू ।
सोनहिं सोन ऐस गढ़ रोवा ॥ कस होइहै जो होइहै धुवा
सवर पहाड़ सो ढारै आंसू ॥ पै तोहि सूझ न आपन नासू
आज काल्ह चाहै गढ़ टूटा । अबहूं मान जो चाहस छूटा

हैं जो पांच नग ना सो ले पांचो कर भेट ॥
मरा सो एक गुन मानै सब औगुन कर मेट

अन सुरजा को नैरै पारा ॥ बादशाह बड़ अहै हमारा
औगुन मेट सकै पुनि सोई । औ जो कीन्ह चहै सो होइ
नग पांचों का देऊं भंडारा । इसकंदर सों बांचै दारा

नाम पहलवान १ नाम राजा २-५-६ बहादुरी ३ बहादुराण ७-८ कमी
७ रोशनी ९ फाग खेलों १० क्या किसी को मुंह देखावेंगे ११ मौन १२
राख १३ आखिर १४ खिदमत १५ नाश १६ सूराख १७ शायर १८
सच्चे है १९ खजाना २० नाम बादशाह २१-२२

जो यह बचन तुहि माथे मोरं । सेवा करों ठाढ़ कर जोरे ।।
पै बिन सप्ते न अस मन माना । सप्त बोल बाचा परमाना ।
कीन्ह जो गुरू लीन्ह जग भारू । तेहिक बोल नहिं टरे पहारू ।
नाघत मांझ भंवर हम यीवा । सुएँ कहा मुंद भेदु जीवा ।।

सुएँ सस कीन्ह छल बैनहि मीठी मीठ ।
राजा कर मन माना मानी तुरत बसीठ ॥

हंस कनक पींजर हत आना । औ अमृत नग परस पखाना ।
औ सुनौं सोन की डांडी । सारदूल रूपे की कॉड़ी ।।।
दीन्ह बसीठ सुरजा ले आई । बादशाह पह आनि मिलाई ।
ऐ जग सूर भूमि उजियारी । बिन्ती करहिं काग मसिकारी ।
बड़ परताप तोर जग तपा । नवो खंड तोह को नहिं छपा ।
कोहैं छोह दोनों तोहि पाहां । मारेसि धूप जियावस छाहां ।
जन मन सूर चांद सो रूसैं । गहनै गिरासि पड़ा मंजूसे ।।

भोर होय जो लागे उठे रोर किये काग ।।
मसि छूटे सब रैन की कागा जाय अभाग ।

कर बिन्ती अज्ञा अस पाई ।। कागहि से आपहु मसि लाई ।
पहिले धनुख न लैबे लागी । काग न लेइ देख सु भागी ।
अबहूं तेहि सुर सोहे न होही । देखहिं धनुक चलहिं पिर आहीं ।
तेहि कागहिं की कोन बसीठी । जो मुख फेर चलहिं दे पीठी ।

खिदमत १ हाथ २ क़सम ३ मजबूत ४ भारी ५ नाम पहलवान ६ बान ७ क़ासिद ८ सोना ९ पारस पत्थर १० हा विन्द दस्ता ११ लाल शेर १२ पिंजरा १३ सूर्य्य १४ ज़मीन १५ काला कुवा तथा राजा १६ ग़ुस्सा-मेहरबानी १७ सूर्य्य तथा बादशाह १८ तथा राजा १९ ग़ुस्सा २० पकड़ा हुवा २१ पिंजरा २२ हाज़िर २३ सियाही २४ २५ रात २५ कव्वा की सियाही दूर होय जायगी २६ हुक्म २७ निशाने पर २८ देखना ३० मुक़ाबिला ३१ वकालत ३२

ओसरसोंह होहिं संग्रामा । किन बेदे होन खैन बेश्यामा।
करहिं न आपन ऊजर केशा फिर फिर कहहिं परार संदेशा
काग नाग पै हो नो बांकी ॥ अपनी चलत श्याम मय आंकी

मेट जाय नहिं मसि कबहु भये श्याम वे अंक
सहस बार जो धोव हू तौहू न मेटे कलंक।

अब से वांजो आय जोहारी । अबहू देख खैन कहि कारी।
कहो जाय जो सांच न डरना जहं वा सरैन नाहि तहं मरन।
काल्ह आव गढ़ ऊपर भौन ओदे धनुक सौंह हिय बानू॥
पानबेसीट मयाकर पाई ॥ लीन्ह पान राजा पहं आई।
जस हम भेट कीन्ह गा कोहू सेवा माझ प्रीति अरु छोहू॥
काल्ह शाह गढ़ देखे आवा सेवा करहु जैसो मन भावा।
गुने सो चलै सो बोहित बोझा जहवा धनुक बान नहं सूझा

भाआयेसु अस राज घर बेगहि करो रसोय।
नस सं भार रस मिलवहु जेहि सु भीत रस होय

खंड पैंतीसवां न्याफ़त बादशाह॥

डोंगर मेढ़ा बड़ औ छोटी ॥ धरधर आनी जहं लग मोटी
हिरन रोझ लगना बनबसी चंदे कोन छारव औ सेसी॥
तीतर बटई लवा न बांची ॥ सारस गुंज पुछार जो नाची।
धरी परेवा पांडुक हेरी ॥। केही कैदरो उतेर बगेरी ॥
हारिल चरज आय बन्द परे । बनककरी जलककरी धरे
चकई चकवा केंप बिदारे । लकरा लैदी सोन सलार ॥

सामने १ लड़ाई २ बगुला ३ सफेद ४-११ बाल ५ आपही काले होने ६ सियाही ७ हज़ार ८ ऐब ९ खिदमत १० पनाह १२ सूर्य्य १३ कमान तीर धरदे १४ कासिद १५ गुस्सा १६ मेहरबानी १७ ख़िदमत १८ रस्सी १९ नाव २० हुक्म २१ जल्द २२ बकरा २३ पाढ़ा २४ नाम जानवर २५ से ४३ तक

मोरबड़ेसबटोइटोइ धरे॥ ऊबरदूबरखेगीन धरे ॥

कंटपरीजब भूरीरकुहुराहोय आंस ॥
कित आपनतन पोखो भाखपरावामांस

धरे मच्छ पढ़ना औरोहू ॥ धीमरधरतकरैनहिं छोहू ।
संधसुगंध धरैजल बाढ़े । टेगनमुंवेटेयसबकाढ़े ।
सींगमंगोरबीनसबधरे । तरिगांबहुतबांबेबनगरे ॥
मारेचरकचाल्हपरहासी । जलतजकहांजायजलबासी
मनहोयमीनैचरासुखचारा परजालदुखकोनिखारा ।
मारीखायमच्छनहिंबांची बाचहिंकाह भोगसुखनाची
मारेकहंसब असकैपाले कोउबारतेहिसरवरघाले

यहिदुखकंतनहिंसारकी अगमनतनोमदेह
पंथेभुलायआयजलपाछेछूटेजगतसनेह

देखनगोहूंकरहियफारा । आनीतहांहोयजेहिंआटा
तबपीसैजबपहिलेधोय कापरछानमांडैमलहोय ।
करैलचढ़ेनेहिपाकहिंपूरी मूठीमांभरहैसोजोरी ॥
जानहुनम्र स्वेनअरुउजरी नयनूचाहिअधिकबहुकुंदरी
मुखमेलतखनजाहिबिलाई सहेंसस्वादसोपावजोखाई
लुचईपोइपोइघीवभेई ॥ पाछेचहुन खांडसोंजेई ।
पूरीसोहारीकरैघीवचुवा। छुवतबिलाहिडरहिंकोछुवा।

कहीनजायमिठाईकुहनमीठसनबात
खानअघातनकोईहैवरजायसिरात

तलवार १ पालना २ दया ३ किसमजानवरदरयाई ४ से १६ मछली १७ तालाब १८ स्वादिल नें मुखडालके पहिलेखून बदन मेंनरखा १९ एहमूल के पानी में फंसे छूटी दुनिया के मुहब्बत में २० रोटी २१ कराही २२ गर्म २३ सफेद २४ मुला यम २५ हज़ार २६ बर्फ २७

रींधे चावल बरनू न जाहीं ॥ बरन[1] बरन सब सुगंध बसाहीं ।
राय[2] भोग औ काजर[3] रानी ॥ झिनवा[4] रुदवा[5] दाउदखानी[6] ।
कपूरकांट[7] कजरी[8] रतनारी । मधुकर[10] ढेला[11] जीरा[12] सारी ॥
घी[13] खींडो औ कुंवर[14] बिरासू । रामदास[15] आवै अतिबासू ॥
कहीं सो सोंधी[16] लौंची[17] बाकी । सुगंटी[18] दुगरी[19] बरहन[20] पाकी ॥
कंडुल[21] चहंहन[22] बंदेम[23] न मिला । औ समार[24] जिलवा खंड[25] चेला ।
राजहंस[26] और हंसी[27] भोरी ॥ रूपमंजरी[28] औ मुलगोरी[29] ॥

सोरह सहस[30] बरन अस सुगंध बासना छूट ।
मधुकर[31] पुहुप[32] सो जान के आय परे सब टूट ॥

निरमल मांस[33] अनूप[34] बघारा । तेहि के अब बरनौं परकारा[35] ।
कटवां बटवां मिला सो बासू । सीझा आनो भांत गिरासू ।
बहुती सोंधी घृत बघारा ॥ औ तहं केंकहि[36] पीस उतारा ।
सेंधा लोन परा सब हांड़ी । काटी कंद मूल[37] की आड़ी ॥
सोवा सौंफ उतारहि धनिया । तेहि ते अधिक[38] आवदासनिया ।
पानि उतारहिं ताकहि ताका । घृत परेहि रहा तस पाका ॥
औ पलीन्ह मांस के खांडा ॥ लागे चढ़े सो बड़ बड़ हाड़ा ॥

छागर बहुत[39] समूची धरी सरागहिं भूंज ॥
जो अस जेवन जेंवै उठे सिंह[40] अस गूंज ॥

भूंज समोसा घी मह काढ़े ॥ लौंग मिर्च तेहि भीतर ठाढ़े ।
औ जो मांस[41] अनूप सो बाटा । भये फर फूल[42] आंब औ भांटा ।
नारंग दाड़िम[43] तुरंज जंभीरा । औ हिन्दवाना बालम खीरा ।

तरहबतरह १ नाम चावल २ से-२९ तक-हज़ार ३० भंवरा ३१ फूल ३२ साफ़ ३३ बेमानिंद ३४-४१ क़िसम ३५ केसर ३६ अदरक-वा-पियाज़ वगैरा ३७-बहुत ३८ लोहे की सीख ३९ शेर ४० फलफूल आंब और बैंगन मांस के बनाये गये-४२ अनार ४३

कटहर बड़हर तेउ सँवारे ।। नरियल[1] दाख खजूर छुहारे ।।
औ जानवंत खची[2] चाहो होहीं । जो जेहि बरन स्वाद सो ओही ।
सिरका भेय काढ़ जनु आने । कमल जो भये रहाहिं बिकसाने[3]
कीन्ह मसूरा[4] धँन[5] सो रसोई । जो कुछ सब भास सोहेई ।।

वारी आय पुकारी लिये सबै पार छूछ ।।
सबरसु लीन्ह रसोई अब मो कहे को पूंछ ।

काटी मच्छ मेल दधि[6] धोई ।। औ पधार[7] चहुं बार निचोई ।।
कड़वे तेल कीन्ह बसवारू ।। मेथी घृत सो दीन्ह बघारू[8] ।।
युक्त थुक्त सब मच्छ उतारे । आंब चीर तेहि मांम उतारे ।।
औ परेहं तेहि चटपर राखा । सो रस सुरस पाव जो चाखा
भात भांन तह खाड़ा तरे ।। अंडा तल तल बीहेड़[11] धरे ।।
कंहकहि पराकपूर[12] बसाई लौंग मिर्च तेहि ऊपर लाई ।
घीव टांक महिं सोंध सिरावा पर्खे[13] बघार कीन्ह अँदावा[14] ।।

घृत परेह रहात सहाथ पहुंच लगहि बोड़ ।।
बूढ़ खाय नो जोबन सो मेहरी की ओड

भांत भांत सीं भीत तरकारी कयो भांत कुम्हड़े के फारी ।।
भडू भूजी लौका परबत्ती ।। रैता[15] कीन्ह कार के रंती ।।
चूक लाय के रींधे भाटा ।। खरबी कहं मल अरहन बाटा
तुरई चचेड़े ढेंढस तरे ।। जीर धुंगार मेल सब धरे ।।
परवर कुंदरू भूंजे ठाढ़े ।। बहुते घीव चुर[17] चुर[18] के काढ़े ।
कडुई काढ़ करेला कारे । अदरक मेल तरे कै खारे ।।
रींधे ठाढ़ सब के फारे ।।। कोंक साग पुनि सोंध उतारे

अंगूर १नाम मेवा फ़सली २ खिलना ३ मसूर की खिचड़ी ४ पद्मावत ५-६ दूधि ७ भून्ना ८ बीच ९ इस सबब से १० अलग ११ केसर १२ चिड़िया १३ गलाना १४ बहुत बीड़ाला १५ कदूकश १६ नल्लना १७-१८ खटाई हा

४८१

सीझी सबतरकारी भाजेवन सबऊंच।
धौं कारु है शाह कहं केहि पर दृष्टि पहूंच

घृत कराही भीतर परा॥ भांत भांत सब पाकहिं बरा॥
एक हिं आदि मिर्च सों पीठी। औ जोदू ध खाड़ सों मीठी॥
भई मगौछै मिरचहिं परीं। कीन्ह मगोरा औ कर परीं॥
भई मिथौरी सिरका परा॥ सोंठ लायके खरसा धरा॥
मांठ मंहीव औ जीरा लावा। भीज बरा नैनू जनु खावा।
खंड हि कीन्ह आंव चरपरा। लौंग इलाची सों खंडु बरा॥
कढ़ी सवारी और फुलौरी॥ औ खंडवानी लाय बरोरी॥

पान कनर छौंके रकु छहींग मिर्च औ आदि
एक खंड जो खावहि पावे सहस सवाद॥

तहरी पाक बोने औ गरी॥ परी चिरोंजी और खरहरी॥
घृत भूंज के पाका पेठा॥ औ भा अमृत करंब कर मीठा
चंबके लोहड़ा औटा खोवा। भा हलवा घिव करे निचोवा।
सिखरन सोंध छनाई काढ़ी। जामा दही दूधि सों साढ़ी॥
और दहो के मुरंडा बांधे॥ औ संधान बहु भांती सांधे
भई जो मिठाई कहीन जाई। मुख मेलत खन जाय बिलाई
मतेलड छाल और मरकोरी। मांट पराके और बुंदौरी॥

फेनी पापर भूंजे भय अनेक परकार॥
भइ जावर भिजयावर सीझी सबज्योनार

जेन प्रकार रसोई बखानी। तब भइ सब पानी सो सानी।

तइयार १ निगाह २ तरह बतरह ३-२४ अदरक ४ १३ क़िस्म खाने की ५-६-७-११ शक्कर का क़िवाम बनाके १-१२ पियाला ८ दही १० हज़ार १४ नाम मेवा १५-१६ काया १७ लोहे की कराही १८ लाडू १९ अचार २० क़िस्म मिठाई २१ २२-२३-खीर २५-

पानी मूल[1] परेखै[2] कोई ।। पानी बिना स्वाद[3] नहिं होई ।।
अमृत पान यहि अमृत आना। पानी सों घट[3] रहै पराना ।।
पानी दूध सों पानी घीव ।। पानि घटे[4] घट रहै न जीव ।।
पानी मां[5] अस समानी जोती। पानी उपजै[6] मानिक[7] मोती ।।
पानी सहं सब निरमल कला। पानि जो छुवै होय निरमला[8]।
सो पानी मन गर्ब[9] न करई[10] ।। सीस[11] नाय घाले पै धरई ।।

मुहम्मद नीर गंभीर जो सो नेहि मिलै समुंद
भरै ते भारी होरहे छूंछ हिं बाजहिं दुंद ।

सीझ रसोई भयो बिहानू । गढ़ देखै गवने सुलतानू ।।
कुमल[14] सुहाय सूर संग लीन्हा। राघौ[15] चेतन आगे कीन्हा ।।
नगर[16] बन आय देवान[17] जो पहुंचा मनसों अधिक गगन[18] सों ऊंचा
उघरी पंवरि[20] चला सुलतानू। जानों चला गगन[21] कहं भानू[22]।
पंवरीं[23] सात सात खंड बांके ।। सातों खंड गाढ़े दुइ नाके ।।
आज पंवर मुख भा निरमरा। जो सुलतान आय पग धरा[23]
भानु उरेह काट सब काढ़े ।। चित्र[24] मूरते बिनवहिं ठाढ़े ।।

लख लख बैठ[25] पंवरिया जेहि तन नवैं करोर ।।
तेहिं सब पंवर उघारे ठाढ़ भये कर[26] जोर ।।

खंड अरतीसवां किला बरनन बादशाह।

सातो पवरी कनें क केवारा। सातहु पर बाजहि घरयारा।
सातहिं रंग सो साखें[?] पवरीं। तबतहं चढ़े फिरे नव भंवरी
खंड खंड साज पलंग औ पीढ़ी आनहु इन्द्र लोक की सीढ़ी
चन्दन बृक्ष सुहाई छांहा अमृत कुण्ड भरे तेहिं मांहा

जड़१ देखना२ बदन३-४ बीच५ पैदा होना६ जवाहिरात७ पाक साफ़ ८-९ गरूर१० सिर११ पानी१२ ढोल१३ बहादुर१४ नाम भार१५ तुरंत१६ हवादार१७ बहुत१८ आसमान१९-२१ दरवाज़ा२०-२२ क़दम२३ तसवीर२४

[side margin, vertical, partly legible:] ...चौपाई २६ [illegible]

फरे खजूरी जा दाड़िम दाखा । जो वहि पंथ जाय सो चाखा ।
कंचन छत्र सिंहासन साजा । पैठत पँवरि मिला लै राजा ॥
चढ़ा शाह चढ़ि चितौर देखा । सब संसार पाय तरलेखा ॥

देखा शाह गगन गढ़ इन्द्रलोक के साज ।
कहो राज फिर ताकर स्वर्ग करै जो राज ॥

चढ़ गढ़ ऊपर संगत देखी ॥ इन्द्रपुरी सो जान बिशेखी
ताल तलावा सरवर भरे । औ अँबराउँ चहूँ दिशि फरे ।
कुवाँ बावरी भाँती भाँती मढ़ मंडफ तहँ तहँ चहुँ पाँती ।
राय रंग घर घर सुख चाऊ कंचन के मँदिर नग कीन्ह जड़ाऊ
निशि दिन बाजहिं मंदिर तूरा रहस कूद सब लोग सँदूरा ॥
रतनैं पदारथ नग जो बखाने घूरन महँ देखे मुँहिराने ॥
मंदिर मंदिर फुलवारी बारी । बार बार तहँ चित्र सवारी ॥

पासा सौर कुँवर सब खेलहिं गावन हिं गीत उजाहि
चैन चाउ तस देखा जनु गढ़ छेका नाहिं ॥

देखत शाह कीन्ह तहँ फेरा जहँ मंदिर पद्मावत केरा ॥
आस पास सरवँर चहुँ पासा मँदिर माझ जनु लाग अकासा
कंचन कसवार नग हिं सब जरा गगन चन्द्र जनु नखतहिं भरा
सरवँर चहुँ दिश पुरइन फूली देखा बाँरि रहा मन भूली ॥
कुंवरि लाख दुइ बार अँगोरे । दुहुँ दिश पवर ठाढ़ कर जोरे ।
शारदूल दुहूँ दिश गढ़ काढ़ कलकंज हिं मानहुँ रिस ठाढ़े ।
जानवंत लिये चित्रै कर दाऊ बहुँत के पैवर सो लाग जड़ाऊ

नाम मेवा १ अनार २ अंगूर ३ एह ४ सोना ५-१२-२२-३२ आसमान ७-८-२३ तालाब ९-२४ बागीचा १० अमीर उमरा ११ रान १२ नाम बाजा १४ जवाहिरात १५ दरवाज़ा १६-२५-२७-३२ तसवीर १७-३१ चौसर १८ कान १९ गीत २१ पेशवाई २६ हाथ २८ लाल शेर २९ उकारना ३०

साह मंदिर अस देखा जनु कैलाश अनूप।
जाकर अस धौराहर सो रानी केहि रूप।

नौ घव पंवरि गये खंड साता। आगन साह ठाढ़ भा आय।
बहू पास फुलवारी वारी॥ जनु बसंत फूला सब सोनें।
जहँ जो ठांव दृष्टि मह आवा। तहँ पांर राखा भूलि ताली॥
कमल सुभाय सूर सों हँसा।

सनरें भूमि बिछावन राता। मदिरा छाह अति सीतल पाय।
मांझ सिंहासन धरा संवारी। हसहि फूल बिकसहिं फर लोनें।
दरपन भा दरस देखरावा॥ बैठ आइ मन जहाँ सो रानी।
सूर का मन चांद पहँ बसा।

सो पै जानै नयन रस हिरदे प्रेम अंगूर॥
जेहि जो बसै चकोर चित नयनहि आवन सूर।

रानी धौराहर उपराहीं॥ सखी सरेखी साथहि बैठी॥
राजा सेव करै कर जोरे॥ नर नाटक पतुरनि औ बाजा।
प्रेम क लुबुध बहिर औ अन्धा। जानकु काहू चाव कोई॥
परगट कहि राजा सों बाता।

करहिं हृदि नाहिं करहिं तराहीं। तपै सूर सोभा आवन दीठी॥
आज साह घर आवा मोरे। आय अखाड़ सबै महँ साजा।
नाच कूद जानकु सब धन्धा। जो जें नाच न परगट होई॥
गुप्त प्रेम पद्मावत रौंता।

गीत नाद अस धन्धा दहै क बिरह की आंच।
मन की डोर लाग तहँ रहै जहाँ सो गहि गुनै खांच।

गोरा बादल राजा पाहीं। रावत दोऊ दोऊ जनु नाहीं॥

बेमिसाल १ महल २-१५ दरवाजा ३ ज़मीन ५ लाल ५-२५ डंडा ६ नीचाबीच ७ खिलना ८ खूबसूरत ६ तरुन १० सूर्य्य ११-१४-१८ नया पद्मावन २२ दिल १३ निगाह १६-२० होशयार १७ चांद १६ हाय २१ भराहुवा २२ ज़ाहिर २३ छिपा २४ अलता २६ पकड़ना २७ रस्सी २८ नामअंबी २६ सरदार

आय अवैन राजा के लागे । मूसि न जाहिं पुरुष जो जागे ॥
बाचा पुरुष तुर्क हम बूझा । परगट मेर गुप्त छल सूझा ॥
तुम नहिं करो तुर्क सों मेरू । छल पै करहिं अंत के फेरू ॥
बैरी कठिन कुटिल जस कांटा । सो मकोय रहि ओ रहि आंटा ॥
सैंच कोट जो पाय अंगोटी । मीठी खाड़ जेवांय रोटी ॥
हम सों ओछ कै पावा छानू । मूलगये संग रहे न पानू ॥

यांहि सो कथा वलराज जस कीन्ह चहै छलबाध ।
हम विचार अस आवहि मेरहि दीजे न कांध ॥

सुन राजा याहि बात न भाई । जहां मेर तहें नहिं अस भाई ॥
मंदहि भल जो करे भल सोई । अंतहि भलो भली कर होई ॥
सत्रै जो बिष दय चाहै मारा । दीजे लोन जान बिष सारा ॥
बिष दीन्हे बिष धर होय खाय । लोन देखके होय लोन बिलाय ॥
मारे खंग खर्ग कर लिये । मारे लोन नाय सिर दिये ॥
कौरौं बिष जो पंडवन दीन्हा । अंतहि दाव पंडवन लीन्हा ॥
जो छल करे वही छल बाजा । जैसे सिंह मंजूसा साजा ॥

राजै लोन सुनावा लाग दोहू जस लोन ।
आय कुहाय मंदिर कहं सिह जान भौ गोन ॥

काल १ चोरी हो जाना २ कौल बादशाह ३ जाहिर ४ मेल ५-८-१५ छिपा ६ दगा ७ सखुन ६ दुशमन १०-१६ क़िला ११ घेरना १२ अथा बादशाह को बेमुरव्वत पाया १३ जड़ १४ तलवार १७ दुर्योधन १८ राजा युधिष्ठिर आदिक १९ पहुंचना २० एक ब्राह्मन ने शेर को जो पिंजरे में बन्द था निकाल लिया शेर उसको खाने चाहा उसने कहा कि भलाई के बदले बदी न करना चाहिये जब तकरार होने लगी तब एक गीदर ने आके पंचाइत की और कहा कि हम सूरत असली देखैं तब पैसला करें जब शेर पिंजरे मैं चला गया ब्राह्मन ने खिड़की बन्द करली गीदर ने कहा कि

राजा की सोरह सै दासी । तिन्ह महँ चुन काढ़ी चौरासी
बरनबरन सारी पहिराईं । निकस मँदिर ते सेवा आईं
जनु निसरी सब बीरबहूटी । रायमुनी पिंजर हुत छूटी ।।
सबै पथमें जोबन सोहैं । नयन बान औ सारंग भौंहें ।
मारहिं धनुस फेर सिर ओही । बन घर घार धनुस जित ओही
कामकटाक्ष हनहिं चितहरनी । एक एक ते आगर बरनी ।।
जान कुइन्द्र लोक ते काढ़ी । पांतहि पात भई सब ठाढ़ी ।।

साह पूछा राघो पहँ सबते कही वैन नाहि ।।
तुई जो पद्मिनी बरनी कहु सो कौन इन माहि

कैरपञायु भूमिपति भारी ।। इन्ह में नाहिं पद्मिनी नारी ।।
यहि फुलवार सो वहु की दासी । कहँ केतकी भँवर सँग बासी
वह सो पदार्थ ये सब मोती । कहँ वह दीप पतंग जहँ जोती
ये सब तरईं सेव कराहीं ।। कहँ वह शशि देखत छिप जाहीं
जबलग सूर की दृष्टि अकासू । तबलग शशि नहिं करे प्रकासू
सुनके शाह दृष्टि तर नावा । हम पाहुन यहि मँदिर परावा ।
पाहुन ऊपर हेरैं नांही ।। हना राहु अर्जुन परछाहीं

लपे बीज जस धरती सूख बिरह के घाम ।
कब सो दृष्टि कर बरसहि तन तरवर होय जाम

सब कर दासी चहुं पासा । अप्सर जानु इन्द्र कैलाशा ।।
कोउ परात कोउ लोटा लाईं । शाह सभा सब हाथ धोवाईं
कोइ आगे पनवार बिछावहिं । कोइ जेवन लेले आवहिं ।।

रंगबरंग १ नाम जानवर २ नवजवान ३ तीर ४ कमान ५-६ तिरछी निगाह ७ ज्यादा ८ बयान करना ९-१० बड़ी उमर ११ जमीन का मालिक १२ जवाहिरात १३ छोटे नखत १४ चांद १५-१८ सूर्य १६ निगाह १७ रोशनी १९ नज़र २० - २२ देखना २१ पेड़ २३ इन्द्रलोक की परी २४

कोई मांड़ लावहिं घसिजूरी	कोई भात परोसहिं पूरी।
कोई लेले आवहिं थारा	कोइ परसहिं बावन परकारा
पहिरजो चीर परोसहिं आवहिं	दुसरी ओर बरनै देखरावहिं
बरनबरन पहिरहिं हरफेरा	आव भुंडजस अपसर केरा

पुनि संधान बहु आनहि परसहि बूकहिबूक
करै सवार गुसाई जहां परी कछु चूक।।

आनकु तरवत करहिं सबसेवा	बिन शशिसूरहि भावन जेवा
बहुपरकार फिरहिं हर फेरें।	हेरा बहुत न पावा हेरें।।
परी अस् भ सबै तरकारी।	लोनी बिना लोन सबखारी
मच्छ छुवहि आवहिं गड़कांरी	जहां कमल तहँ हाथ न आँटी
मन लाग्यो तेहि कमलकी दंडी	भावनहिं एको कनहंडी।।
सोजेवन नहिं जाकर भूखा	तेहि बिन लाग जानु सबरूखा
अन भावत चाखी वैरागा	पंचामृत जानहु विषलागा

बैठ सिंहासन गूंजे सिंह चौरे नहिं घास।
जब लग मिरग न पावै भोजन करै उपास

पान लिये दासी चहुं ओरां।	अमृत दानी भरे कचूरां।।
पानी देहिं कपूर का बासा।	सो नहिं पिये दरसकर प्यासा
दरशन पान देय तौ जीऊं।।	बिन रसना नयनहिं सो पीऊं।
पपिहा बूंद सेवातिहिं अघा	कौन काजजो बरसे मघा
पुनि लोटा कोपर ले आई।।	कै निरास अबहाथ धुवाई
हाथजो धोवे बिरहै कोरोरा	सवतिसंवति मन हाथ मरोरा
बिधिहिं मिलाव जासोंमन लागा	जोरहिं तार प्रेम कर तागा।।

गेरी १ कपड़ा २ रंग ३ परी ४ अचार ५ राजा ६ चांद ७ सूर्य्य ८ बहुतन तरह ९ देखना १० तथा पद्मावत ११ पहुंचना १२ तरकारी १३ बेचाहना १४ शेर १५ हिरन १६ शरबत १७ कटोरा १८ ज़बान १९ चिलफ़ची आफ़ताबा २० सनासा

२९ पृष्ठ २२

हाथ धोय जब बैठो लीन्ह ऊब के स्वांस ।
संवरा सांई गुसांई देय निरासहिं आंस

भइ ज्योनार फिरा खंड वानी । फिरा आ राजा के कहि बानी ।
नग अमोल सो थारहिं भरे ॥ राजें सेवै आन के धरे ॥
बिनती कीन्ह घाल गये पागा । ए जग सूर सेवं मुहिं लागा ॥
औगुन भरा कांप यहि जीऊ ॥ जहां भाँनु नहं रहा न सीऊ ॥
चारहुं खंड भाँन अस तपा ॥ जेहि की दृष्टि रैन मसि छिपा
औ भानेंहि अस निरमल कला । दरस राजा जो पावे सो निरमला -
कमल भान देखें पै हंसा ॥ औ भा तेहं चाहै परकासा ॥

रतन श्याम तहं रैन मसि ए रैवि तिमिर संहार
कर सो दृष्टि औ कृपा देख सदेहु उजियार

सुन बिन्ती वे हँसा सुलतानू । सहंसहि किरन दिपै जस भानू
रे राजा तुइ सांच जुड़ावा । भइ सो दृष्टि अब सेवं छुड़ावा
भाँन की सेवा जो कर जीव ॥ तेहि मसि कहां कहां तेहि सीउ
खाउ देश आपन कर सेवा । और देउं माड़ो तोहि देवा ॥
लीक परवान पुरुष कर बोला । धुंव सुमेरु ऊपर नहिं डोला ।
फेर बैसाव दीन्ह नग सूरू ॥ लाभ देखाय लीन्ह चहि मूरू
हंस हँस बोल टेके कांधा ॥ प्रीति भुलाय चहै छल बांधा

माया बोल बहुत कर शाह पान हंस दीन्ह ॥
पहिले रतन हाथ के चहो पदारथ लीन्ह ॥

माया मोह बिबस भा राजा ॥ शाह खेल शतरंज कर साजा ।

ईश्वर १ नाउमेद २ शरबत ३ अतर ४ नजर ५ अर्ज़ ६ - २५ गरदन ७ सूर्य्य ८ - १० - १२ - १६
२ - २१ - २ लोड़ा ९ - ११ - २९ - ३१ निगाह १३ रात १४ सियाही १५ - २० - पाक साफ़ १७ राजा १८
रात १९ अन्धियारा नासकार २२ अच्छी नज़र २३ दिन २४ हँसा २६ हज़ार २७ पत्थर
३२ मर्द ३३ नाम नरखन ३४ पहाड़ ३५ लालच ३६ जड़ ३७ नया राजा ३८ नया पद्मा ।

राजा है जब लग सिर घामू ॥	हम तुम घड़ि[1] क करहिं बिश्रामू[2]
दरपन शाह भीत तहँ लावा	देखों जोह झरोखे आवा ॥
खेलहिं दोऊ शाह औ राजा	शाह का रुख दरपन रहि साजा
प्रेम क लुब्ध पियादे पाउ ॥	चलै सौंहिं ताके कहं ठाउं ॥
घोड़ा दय फ़रज़ीबन्द लावा	जेहं मुहरा रुख चहै सो पावा
राजा पील देइ शाह मांगा ।	शाह देइ चाहि मरे रथ खांगा ।

पील हि पील देखावा भयो दोहू चौ हांत ।
राजा चहै बुर्द भा शाह चहै शह मात ।

सूर देख वै तरैई दासी ॥	जहं शशि तहां जाय परकासी
सुना जो हम दे हली सुलतानू	देखा आज तपै जस भानू ॥
ऊंच छत्र ता कर जग माहां ।	जग जो छाहं सब वह की छाह
बैठ सिंहासन गर्व महि गूंजा ।	एक छत्र चारउ खंड भूंजा ।
निरखि न जाय सौंहि वह पाहीं ।	सबै नवै कै दृष्टि तराही ॥
मन माथे वह रूप न दूजा ॥	सब रूपवंत करहिं वह पूजा
हम अस कसा कसौटी आरस	मोहूं देख कस कंचन पारस

बादशाह दे हली कर कित चितोर महं आव
देख लेहु पद्मावत जेन रहै पछताव ॥

बिकसे जो कुमुद कही शशि ठाऊं	बिकसा कमल सुनत रबि नाऊं
भइ निशि शशि धौराहर चढ़ी	सोरह किरन जैसि बिधि गढ़ी
बेहंस झरोखे आय सरेखी	निरखि शाह दरपन महं देखी
होतहि दरस परसे भा लोना	धर्ती स्वर्ग भयो सब सूना ॥

एक घड़ी १ आराम २ दीवार ३ भरा हुवा ४ सामने ५-१६ जगह ६ शहि दैके बाज़ी जीत ना चाहा ७ मुक़ाबिल ८ सूर्य ९-१३-२३ नखत १० चांद नया प-आबल ११-२२ रोशनी १२ गरूर १४ देखना १५-२८ सामने १६ निगाह १७ आईना १८ सोना १९ खिलना २० कोंका बेली २१ रात २४ महल २५ ईश्वर २६

हाशिया २७ पारस पत्थर २९ ।

रुद मांगत रुरवतासों भयो । भाश हमात रवेलमिरगयो
राजा भेद न जाने झांपा ॥ आविथ नारि पवन बिन कांपा
राघौ कहा कि लागसँपारी । लैपौढ़ावहिं सेज संवारी ॥

रैन बीत गइ भोर भा उठा सूर तब जाग ॥
जो देखे शशि नाहीं रही करौं चित लाग ॥

भोजन प्रेम सो जानि जो जेवा । भंवरहि रुचे बास रस केवा
दर्स देख भय जाय शंशि छिपी । उठा भान जस योगी तपी ।
राघौ चेत शाह पहं गयो ॥ सूर्य देख कमल बिग भयो
छत्रपती मन कहा सो पहुंचा । छत्र तुम्हार जगत पर ऊंचा
पाटे तुम्हार देवतन पीठी ॥ स्वर्ग पतार रैन दिन दीठी ॥
कोहे ते पलेंह हिं उवटरूखा । कोहे नेम हि सोयस सबसूखा
सकल जगत तुम नावे माथा । सबकर जियन तुम्हारे हाथा

दिन न नयन लावहु तुम रैन भादनहिं जाग ।
अबनिचिंत अस सोये कह बिलंब अस लाग

देख एक कौतुक हों रहा । रहअंतरपट पै नहिं अहा ॥
सरवे एक देख मन सोई ॥ रहा पानि अब पानि न होई ॥
स्वर्ग आय धर्ति महं छावा । रहा धर्नि पै धरत न आवा ॥
तिन्ह महं पुनि एक मंदिर ऊंचा । करने अहा पै कान हिं पहुंचा
तेहि मंड फ मूरत मन देखी । बिन तन दि न जिव जाय बिशेषी
पूरन चन्द्र होय जनु तपी ॥ पारस रूप दरस दै छिपी ॥
अब नहं चेतु दसी जिव तहा । भान अमावस पावे कहां ।

मुंह १ छिपा २ नाम भोर ३ चुरीहवा ४ रात ५ सूरी नथा बादशाह ६.११ चांद नथा पद्मावत ७-१० ध्यान ८ कामल ९ तख्त १२ आसमान १३-२३ निगाह १४ मेहरबानी १५ दरखोना १६ गुस्सा १७ तालाब १८ २२ सुब १९ देनमाथा २० परदा २१ हाथ २४ चौदहीं रात का चांद २५-२६

बिकेसा कमलु स्वेगा लीधे जनु लौं कुगावेज
यह राहु भा भानहि राघो मनहि पतीज

अति बिचित्र देखा सो ठाढ़ी । चित कीं चित्र लीन्ह जिव काढ़ी
सिंहलंक कै भसतल जोरू । आंकुसनाग महावत मोरू
तेहिऊपर भा कमल बिकासू । फिर अलि लीन्ह पुहुपरस बासू
दोऊ खंजन बिच बैठा सुवा । दुइज का चन्द धनुष लै उवा
मिरग देखाय गवन फिर गया । शशि भा नाग सुर्य्य भा दिया
सुठि ऊंचे देखन वह उचका । दृष्टि पहुंच कीं न पहुंचन सका
पहुंचा भयो हस्ति गत भई । गहिं न सका देखत वह गई

राघो हेरत जो गयो अकुल हिये समाधि
नहैतन राघ बाघ भा सके न कै अपराध

राघो सुनत सीस भुई धरा । जुग जुग राज भानु को किरा
वही किरानवह रूप बिशेखी । निश्चे तुम पद्मावत देखी ।
केहरि लंक कै भसतल हिया । गीव मयूर अलक बेधि दिया
कमल बदन औ बास संभारु । खंजन नैन नासिका कीरु
भौंह धनुष शशि दुइज लैलाटू । सब रानिन ऊपर वह पाटू ।
सोई मिरग देखाय जो गयो । बैनी नाग दिया चित भयो ।
दरपन महँ देखी परछाहीं । सो मूरति भीतर जिव नाहीं

सबै शृंगार बनी धनि अबसा लीमतिकीज
अलक जो लटकी अधर पर सो गहि बेरत लीज

खिलना १ ८ आसमान २ रान ३ सूर्य्य ४·२१·२६ मुरझाना ५ चीता की कमर ६·२२ हाथी ७·२३ भंवरा ९ फूल १० ममोला ११·२९ हिरन १२ चांद १३·३० निगाह १४ हाथ १५ देखतही चाहा कि आपको पहुंचाऊ १६ पकड़ना १७·३६ देखना १८ तसवीर का मन आई शेर की तरह गुस्सा किया १९ सिर २० गरदन २४ बाल २५ ह्वा २७ नाक तोता की २९ माथा ३१ तख्त ३२ हिरन ३३ चोटी ३४ पद्मावत ३५ अकिल ३६ जुल्फ

खंड उन्तालीसवां कैद होना राजा रतनसेन का

मीत भा मांगा बेग बेवानू ॥ चला सूर संवरा अस्थानू ॥
चलत पंथ राखा जो पाऊ । कहाँ रहै थिर चलत बटाऊ ॥
पंथिक कहं कहवां ससताई । पंथ चलै तब पंथ सेराई ॥
छल कीजे बल जहांन आंटा । लीजे फूल टार के कांटा ॥
बहुत मया सुनि राजा फूला । चला साथ पहुंचावै भूला ॥
शाह हेतु राजा सों बांधा ॥ बातहिं लाय लीन्ह गहि कांधा ।
घिव मधु सान दीन्ह रस सोई । जो मुंह मीठ पेट बिष होई ॥

अमी बचन औ माया कोन मुया रस भीज ।
शत्रै मरै अमृत जो तेहि बिष काहे दीज ॥

चांद घराहि जो सूरज आवा । होय सो अलोप अमावस पावा ।
पूछहिं नखत मलीन सो मोती । सोरह कला न एको जोती ॥
चांद गहन आगाह जनावा । राज भूल गहि शाह चलावा ।
पहिले पंवर नाघ सो आई । ठाढ़े भये राज पहिराई ॥
सौ तुखार तीस गज पावा । दुंदभि औ चौघोड़ी देवावा ॥
दूजे पवर दिया असवारा ॥ तीजे पवर नग दीन्ह अपारा ।
चौथे पंवर दै दर्ब करोरी ॥ पंचयें दुय हीरा की जोरी ॥

छठयें पवर माडो दियो सतयें दीन्ह चंदेरि ।
सात पवर नाघत नृपति लेगयो बांध गरेर ॥

याहि जग बहुत नदी जल जोगु । कौन पार भा कौन न बूड़ा ॥
कौन अन्ध भा आग न देखा । कौन भयो डीठार सरेखा ॥
व्याध भई राजा कहं माया । तज कैलाश परी भुइं पाया ।

दोस्त १ सवारी २ बादशाह ३ मकान ४ राह ५-६ कायम ६ मुसाफिर ७-८ पहुंचना १० पकड़ना ११ शहद १२ मीठी बात १३ दुशमन १४ छिप जाना १५ नथा सखी १६ पद्मावत १७ खबर १८ दरवाज़ा १९ घोड़ा २० हाथी २१ डंका २२

ओहि कारन गढ़ कीन्ह अगूठी । कित छोड़े जो आवै मूंठी ॥
शत्रुहि कोउ पाव जो बांधे । छोड़ आप काहू कै बिंधे ॥
चारा मेल धरा जस माछू । जलसे निकस मरै जस काछू ॥
शत्रुहि नाग पेटारी मूंदा । बांधा मिरग पैग नहि खूंदा ॥

राजा धरा आन के तन पहिरावा लोह ।
ऐसो लोह सो पहिरे चैत श्याम को ओह ॥

पायन गाढ़ी बेड़ी परीं ॥ सांकर ग्रीव हाथ हथकड़ीं ॥
औ धर बांध मंजूसा मेला । ऐसो शत्रु जन होय दुहेला ॥
सुनि चितौर महं परा बखाना । देश देश चारहुं दिश जाना ॥
आज नरायण फिर जग खूंदा । आज सो सिंह मंजूसा मूंदा ॥
आज खसे रावन दस माथा । आज कान्ह काली फन नाथा ॥
आज छिपान कंस कर डीला । आज मीन शंखासुर लीला ॥
आज परे पांडव बंद माहां । आज दुशासन उतरी बांहां ॥

आज धरा बल राजा मेला बांध पतार ॥
आज सूर दिन अथवा भा चितौर अन्धियार ॥

देव सुलेमां के बंद परा ॥ जहं लग देव सबहि सत हरा ॥
शाह लीन्ह गहि कीन्ह पयाना । जो जहं शत्रु सो तहां बिलाना ॥
खुरासान औ डरा हरेव ॥ कांपा बिदर धरा अस देव ॥
बंध उदयगिर धौलागिरी । कांपी सृष्टि दुहाई फिरी ॥
उवा सूर भइ सामहि करा । पाला फूट पानि होय ढरा ॥
डंडवी डांड दीन्ह जहं ताईं । आय दंडवत कीन्ह सबाईं ॥

जिसलिये १ घेरना २ दुशमन ३-६-२५ दुख ४ कछुवा ५ पैर बंधा हिरन नहीं भागना ७ ग़फ़लत का फल उठाये ८ गरदन ९ पिंजरा १०-१५ दुखी ११ बयान १२ सखुनी १३ शेर १४ गिरना १६ श्री कृष्णाजी १७ मछली १८ नाम दैत्य १९ राजा युधिष्ठिर २० नाम बहादुर २१ सूर्य २२ नाम बादशाह २३ कूच २४ नाम मुल्क २८ ईस २० दुनिया ३२

टूटि डांड़ सब स्वर्गहिं गई ।। भूमि जो डोली इस्थिर भई ।।

बादशाह देहिली महं आय बैठ सुख पौर
जेहिं जेहिं सीस उठावा धर्ती धरि ललाट ।

हबशी बंदवाना जियबधा । तेहिं सौंपा राजा अग देहा ।।
पानि पवन कहं आस करेई । सो जिय बधिक सांस बहु देई ।
मांगत पानि आग लै धावा । मुंगरी एक आन सिर लावा ।
पानी पवन लुडु पिया सोपिया । अबको आन देय पानिया ।
तब चितौर जिय रहा न तोरे । बादशाह है सिर पर मोरे ।।
जोहि हं कोरे ही उठ बल ना । सो कित करा होय कै मिलना ।
करै सो मीत गाढ़ बंद जहां । पान फूल पहुंचावे तहां ।।

जल अंजन महं सोवा समुंदन संवर जाग ।
अब धर काढ़ा मछ जेों पानी मांगत आग

पुनि चलि दुइ जने पूछन आये । बैसठ दूंध आय देखराये ।
छुई मरि पुरी न कबहूं देखी । हाड़ जो बिथरे देख न लेखी ।
जानी नहिं कि होब अस मुहूं । खोजे खोज न पावब कहूं ।।
अब हम उतर देहु रे देवा ।। कौन गर्ब न मानी सेवा ।।
मुहं अस बहुत माड़ खनि मूंदी । बहुरं न निकस बार हेय खूंदी
जो जस हंसे सो तैसे रोवा ।। खेले हंसे अभे भुइ सोवा ।
जस आपने मुहं काढ़ धुवां । चाहेसि परा नर्क के कुवां ।

जरेसि मरेसि अब बांधा तैसो लाग नोहिं दोख
अबहू मांग पद्मिनी जो चाहेसि भा मोख

आवाज़ मनादी १ आसमान २ ज़मीन ३ क़ायम ४ नरवन ५ सिर ६ माथा ७ हबशी दारोग़ा क़ैदखाना ८ जल्लाद ९ जलाहुवा १० जान मारने वाले ११ डोलाना १२ हाथ १३ पानी महं पियासा १४ आदमी १५ आग १६ यमपुरी १७ जवाब १८ ग़रूर १९ फेर २० पाप २१ नजात तथा क़ैद से २२

पूछहिं बहुत न बोला राजा । लीन्हेसि जियें मींचि मन साजा
खने गड़वा चरनहिं लै राखा । नित उठ दगध होय नौ लाखा
ठावँ सो सांकर औ अन्धियारा । दूसर कार वट लेइ न पारा ।।
पीछे सांप आय तहँ मेली ।। बाका आन छुवावहिं हेली
धरहिं संदासी छूटे नारी । रात देवँस दुख पहुँचे भारी
जो दुख कठिन न सहै पहारू । सो अँगवा मानुष सिर भारू
जो सिर परे आय सो सहे ।। । कछु न बिसाय काहु सों कहे

दुख जारे दुख भूँजे दुख खोवै सब लाज ।।
काजहिं चाह अधिक दुख दुखी जान जेहि वाज

पद्मावत बिन कंत दुहेली । बिन जल कमल सूख जनु बेली
गाढ़ी प्रीति सो मोसों लाई ।। देहिली जाय निचिंत होय छाई
को उन बहुरा पुनि हरदेशू ।। केहि पूछूं को कहे संदेशू ।।
जो कोइ जाय तहां का होई । जो आवे कछु जाने न सोई ।
अगम पंथ पिय तहां सिधावा जो रे गया सो बहुरि न आवा ।
कुवां डार जल जैसे बिछोवा डोल भरा नयनहिं धँन रोवा
लीजुर भई नौ हूँ बिन तोही कुवां परी धर काढ़सि मोही

नयन डोल भर ढारे हियेन आग बुझाय
घड़ी घड़ी जिय आवै घड़ी घड़ी जिव जाय

नीर गंभीर कहां हो पिया ।। तुम बिन फाटे सरवर हिया
गयो हेराय बिरह के हाथा ।। चलत सरोवर लीन्ह न साथा
चरत जो पंखे केल कर नीरा । नीर कठिन कोउ आव न तीरा

मौन १ तंग पिंजरा में कैद किया २ जलाना ३ जगह ४ डोम ५ संसी ६ दिन ७ भारी ८ उठाना ९ दुख को वह जाने जिसपर पड़े १० दुखी ११ मुश्किल सह १२ लौट १३ पद्मावत १४ रस्सी १५ खाविन्द १६ छाती १७-२० पानी गहिरा १८ तालाब १९-२१ जानवर परिन्द २२

कमल सूख पंखुरी वेहिरानी	गल गल के मिल छार हेरानी
बिरह रेत कंचन तन लावा	चून चून के खेहे मिलावा
कन कन जो कन कन है वेहिराई	पिय पे छार समेटो आई
बिरह पवन यहि छार सरीरू	छार हि आन मिलावहु नीरू

अबहु जिदावहु के मया बिथुरी छार समेट
नइ काया अवतार नव दर्श तुम्हारे भेट।

नयन सीप मोती तस आसू	तन तन तन परहि करे तन नासू
पदक पदारथ पद्मिन नारी	पिय बिन भइ कौड़ी बरबारी
संग लै गयो रतन सब जोती	कंचन कया काच भइ पोती
बूड़त हो दुख दग्ध गंभीरा	तुम बिन कंत लाव को तीरा
हिये बिरह होय चढ़ा पहारू	जल जोबन सह सके न भारू
जल महं अगिन सो जान बिछूना	पाहन जरहि हेहि सब चूना
कौन जतन कत तुम पाऊं।	आज आग हो जरत बुझाऊं

कौन खेड़ हो हेरो कहां बन्धु हो नाहि॥
हेरे कतहु न पाऊं बसेहु डिरदे माहि

नागमती पिय पिय रट लागी	निशि दिन तपे मच्छ ना लागी
भंवर भुजंग कहां हो पिया	हम ठेगा तुम कान न किया
भूल न्ना हि कमल के पाहां	बाधत बिलंब न लागो नाहां
कहां सो सूर पास हों जाऊं।	बाधा भंवर छार के लाऊं
कहां जाउं को कहे संदेशा	जाऊं सो तह योगिन के भेशा
फार पटोरे सो पहिरों कंथा।	जो मुंह कोऊ देखावे पंथा

अलग १-८ धूर २५-६ मिलना ३ सोना ४- ६-१६ रेजारेजा ७ पानी १० बदन ११ पैदा होना १२ गर्म १३ लाल जवाहिर १४ मोल १५ आग भारी १७ किनारा १८ छाती १९ पत्थर २० देखना २१ कैद २२ खाविन्द २३-२६ रान २४ दुशमना २५ सर्ख २७ सारी २८ गुदड़ी २९ राह ३०

वह पंथे पलक न जाउं बोहारी । सीस चरण के चलों सिधारी

को गुरु अगवा होय सखि मुहिं लावे पंथ मांह
तन मन धन बलवल करों जो रे मिलावे नांह ।

केहि कारन रोवे बाला ॥ जनु टूटहिं मोतिन के माला
रोवत भई न स्वांस संभारा नयन चुवहिं जनु उरली धारा
जाकर रतन परे पर हाथा ॥ सो अनाथ किमि जीवे नाथा
पांच रतन वह रतनहिं लागी बेग आव पिय रतन सभागी
रहीं न जोत नयन भये खीनी श्रवन न सुनों बैन तुम लीन्हे
रसना रस नहिं एको भावा । नासिक और बास नहिं आवा
तच तच तुम बिन अंग मोहिं लागी पांचो दगधे बिरह अब लागी ।

बिरह सो जार भस्म के चहै उड़ावा खेह ॥
आय सो धन पिय मिलवे करलेव नइ नेह

पिय बिन व्याकुल व्यापी नागा बिरह तपन श्याम भये कागा
पवन पानि कहं सीतल पीउ जेहि देखे पलहे तन जीव ॥
कहं सो बास मलिय गिरनांहां जेहि कल परत देत गल बाहां
पद्मिन ठगनी भई कित साथा जेहि ते रतन परा पर हाथा ।
होय बसंत आवहु पिय केसर देखे फिर फूले नागेसर ॥
तुम बिन नांह रहे हिये तचा अब नहिं बिरह गडुरपे बचा
अब अन्धियार परा मसि लागी तुम बिन कौन बुझावे आगी

नयन श्रवन रस रसना सबै खीन भये नांहो
कौन सो दिन जेहि भेट के आय करे सुख छांह

एह १ सिर २ खाविन्द ३ १८-२-२६ नाक जा देखने-सुन्ने-सूंघने-बोलने छूने-की ४-१२ जल्द ५ रोशनी कम ६ कान ७-२३ आवाज़ ८ ज़बान ९-२४ नाक १० बदन ११ आग १३ धूर १४ रानी नागमती १५-१९ हराहे जा १६ चन्दन १७ दिल २१ सियाही २२ कमज़ोर २५

कंभलनेरि राय देव पालू ॥ राजा केर शत्रु हिय सालू ।
उनपै सुना कि राजा बांधा पाछल बैर संवरि छल साधा
शत्रु साल तब न्योरे सूय ॥ जो घर आव शत्रु की जोय ।
दूती एक वृद्ध तेहि ठाऊ ॥ ब्राह्मन जाति कुमोदन नाऊं
वह हंकार के बीरा दीन्हा । तोरे बल मैं बल जिव कीन्हा
तुइ कुमदनी कमल के नैरे स्वर्ग जो चांद बसै ताहि हेरे ।
चित्तौर महं जो पद्मिन रानी कर बल छल सो दै मुहिं आनी

रूप जगत मन मोहन जेहि पद्मावत नाउं ।
कोटि द्रव्य तुहि देहों आन करेसि इक ठाउं

कुमदनि कहा देख हौं सो हो मानुष कहा देवता मोहों ।
जस कांवरु चमारिन लोना कौन हि छल पाढ़त कै टोना
बिसंहर नाचहि पाढ़त मारी ओ धर मूंदे घाल पेटारी ॥
वृक्ष चले पाढ़त के बोला ॥ नदी उलट बहि परबत डोला
पाढ़त हरि पंडित मति घेरी और को अंध गूंग औ बहिरी
पाढ़त ऐसो देवतहि लागा मानुष का पाढ़त सों भागा
पाढ़त कै हठ काढ़त पानी। कहां जाय पद्मावत रानी ॥

दूती बहुत पैंच के बोली पाढ़त बोल ।।
जाकर सत्त सुमेर है लागे जगत न डोल ॥

दूती बहुत पकावन साधी मोतिन लडू खरोरा बांधी ।
माठ पेरा के फेटे पापर ॥ पहिर बूभ दूती के कापर ॥
लेपूरी भर डाल अछूती ॥ चित्तौर चली पैंच के दूती ।
वृद्ध बेश जो बांधे पाऊं ।। कहां सो जोबन कित बोसऊं

नाममुल्क १ दुशमन २-५ दिल दुख देने वाला ३ दुशमन दुख देने वाला ने चाहा कि जैसे बन पड़े ४ जगह ६ बोलाया ७ आसमान ८ नज़र ९ सांप १० मंत्र ११-२३ पेड़ १२ कौल मज़बूत १४-१७ ईमान १५ मोतीचूर के लड़्वा १६ खरी-

तन बूढ़ा मन बूढ़ न होई ॥	बल नरहा लालच जैं होई
कहां सो रूप जगत सब रोता	कहां सो गर्ब हस्ति जस माता
कहां सो तीर्थ नयन तन ठाढ़ा	सबै मार जोबन्न पुनि काढ़ा

मुहम्मद बृद्धि जो नइ चलै काह चलै भुइं टोइ
जोबन रतन हेरान है मगं धर्ती महं होइ ।

आय कुमोदनि चित्तौर चढ़ी	जोहन मोहन पाढ़त पढ़ी ।
पूंछ लीन्ह रनवास बरोठा	पैठ पंवर भीतर बढ़ कोठा ।
जहं पद्मावत शशि उजियारी	लै दूती पकवान उतारी ॥
हाथ पसार धाय के भेटी ॥	चीन्ही नहिं राजा की बेटी ।
हों ब्राह्मन जेहि कुमदन नाउं	हम तुम उपनी एकहि ठांउ ।
नाउं पिता करदूबे बेनी ॥	सदा परोहित गन्धर्ब सेनी ।
तुम बारी तब सिंहल दीपा	लीन्हे दूध पियायो सीपा ।

ठांउं कीन्ह मैं दूसर कंमल नौरहि आय ।
सुन तुम कहं चित्तौर महं कहं कि भेंटो जाय

सुन निश्चै नैहर की गोई ॥	गरे लाग पद्मावत रोई ॥
नयन गगन रबि बिन अंधियारे	शशि मुख आंसु टूट जनु तारे
जग अंधियार गहन दिन परा	कब लग शशि नखत हित सभए
माय बाप कित जन्मी बारी	गौंव तोड़ कित जन्म न मारी
कित ब्याह दुख दीन्ह दुहेला	चित्तौर पंथै कंतैं बंदे मेला ।
अब यहि जियन चाह भल मरना	भयो पहार जन्म दुख भरना ।
निकस न जाय निलज यह जीउ	देखो मंदिर सून बन्द पीउ ॥

दुनिया १ लाल २ गरूर ३ हाथी ४ कटीली ५ शायद ६ बहुत तरह के मंत्र ७ दरवाज़ा ८ चांद ९-१६-२० पैदा होना ११ जगह १ १ बाप १२ पद्मावत का बाप १३ दूसरा ख़ाविन्द १४ यक़ीन १५ गुड़ियां १६ आसमान १७ सूर्य्य १८ गरदन २१ भारी २२ राह २३ ख़ाविन्द २४ क़ैद २५

कुहुक जो रोवे शशि नर देत नथन हि राते चकोर
अबहूं बोले तहं कुहुक चोर कोकिल मोर

कुमुदिन कंठ लाग सुठ रोई ॥ पुनि लै राग डार मुख धोई ॥
तुइ शशि रूप जगत उजियारी सुख न भांप निशि होय अंधियारी
सुनि चकोर कोकिल दुख दुखी घुंगची भई नयन कर मुखी ॥
केतो धाय मरै कोई बाटा ॥ सोई पावै जो लिखा ललाटा ।
जो बिधि लिखा आन नहिं होई कित धावै कित रोवै कोई ॥
कित कोइ छोहा कर औ पूजा जो बिधि लिखा होय नहिं दूजा
जैन कुमोदिनि वचन करेई ॥ तस पद्मावत उत्तर न देई ॥

सेंदुर चीर मैल तस सूख रही तस भूल ॥
जेहि शृंगार पिय तज गया जन्म न पाहि फूल

तब पकवान उघारी दूती ॥ पद्मावत नहिं छुई अछूती
सोहि आपने पिय केर खंभोरु पान फूल कस होय अहारु ॥
मो कहं फूल भये जस कांटी बांट देहु जो चाहेसि बांटी ।
रतन छुवे जेहि हाथहिं सेती और न छुवों सो हाथ सकेती
दस करंग भय हाथ मंजीठी मुकुता लेउ पै घुंगची दीठी ॥
नयन कर मुखी रातो काया सो तो होहिं घुंगची जेहि छाया
अस के ओछ नयन हत्यारे देखत गा पिउ गहे न पारे ॥

का तोर छुवों पकावन गुड़ कडुवा घिव रूख
जेहि मिल होत सवाद रस लै पिय गयो सो भूख

कुमुदिनि रही कमल के पासा बैरी सूर्य्य चांद की आसा ।

चंद्रमा तथा पद्मावत १ नथा सखी २ लाल ३ पपीहा ४ नामदूती ५-१२-२१ आफ़ताब ६ चांद ७ रान ८ माथा ९ ईश्वर १० चाहना ११ बात १३ जवाब १४ छोड़ना १५ दुख १६ लाख १७ मोती १८ लाल बदन १९ पकड़ न सके २० नथा राजा २१

बहकुंभलानरही भे चूरू
कसतुईं बारी रेहसिकुंभलानी
ओबहीं कंमल कलीनुमवारी
वेनी तोर मैलसिर रूखो ।
पानबेलबिधि कयोंजमाई
कर श्रंगार सुख फूलतबोला
बिकसरैन बातहिं वार मोरु
सूखबेलजरा पावन पानी
कोमल बैशउठत पोनारी ।
सखर माहरहेसि कूससूखी
सींचतरही तोहपलहाई ।
बैठ सिंहासन भूलहिंडोला

हार चीरनितपहिरो सिरकी करहुसंभार
भोगमानदिनदस लिये योबनगयेनबार

बेहसजो कुमदन योबनकहा
रे कुमदनयो बनतेहिमांहां
जाकर रूप सोबाहरछावा
अहाजो राजारतनअनूरा
कोप लंगपोढे कोमैंढे ॥
कमलन बिकसासंपुट रहा
जो आछेपियकोसुखलहा
सोउजार घर कोन बसावा ।
केहक सिंहासन केहकपटोरा
सोवनहार परा बन्दगाढे ॥
चहुंदिश यह घर भार दियारा
कायाबेलजान तबजामी ।
सबसिंगार लैसाथसिधारा ।
सींचनहार आव घरस्वामी

तोलहिरहों भुरानीजो लहि आवसोकंत
बहीफूलयहसेंदुर होयसेउठबसंत ॥

जननुइं बारि करेसिअसजीउ
पुरुषसंग आपनकहुकेरा ।
योबनजलदिनदिनजसघटा
सुभ्रैसरोवरजोलहिनीरा
जोलहियो धैन तोलहिपीउ
एक कुहाय दूसर सौंहेरा ॥
भंवरछिपानहंसपरगटा ॥
बहुआदरपरवीबहुतीरा

मुरभाईहुई १ खिलना २-१३ रात ३ लड़की ४-२० मुलायम ५ छसोठनी हुई ६ चोटी ७ तालाब ८ ईश्वर ९ बदन १०-१७ हरी ११ वज्र १२ रोशनी १४ कपड़ा १५ मोढा १६ खाविंद १९ जवानी २१ मर्द २२ हेखना २३ ज़ाहिर २४ भराहुवा तालाब २५ पानी २६ किनारा २७

नीरे[1] घटै पुनि पूंछ न कोई ॥ परस[2] जो लीज हाथ रहि सोई ।
जब लग कालिंदि होय बिरासी । पुनि सुरसरि होय समुद परासी
योबन भवर फूल तन तेरा । बर्ध पूंछ जस हाथ मरोरा ।

योबन छूषा तन कौन मया गोन नहि साथ
छल कै जाय हि बान पै धनुष छाड़ दुइ हाथ

जो पिय रतन सेन मोर राजा बिन जिव योबन कौने काजा
जो नहिं जिव तो योबन कहे बिन जिव योवन काह सो अहे
जो जिव तो यहि जोबन भला आपहि जैसा करै निरमला ।
कुलकर[12] पुरुष सिंह[13] जेहि केरा तेहि थल[14] कैसा सियार बसेरा
हिये[15] फाड कूकुर तेहि केरा सिंह तजि सियार मुख हेरो ।
योबन नीर घटै का घटा । सत[18] के बेर न जाय हिये फटा ।
सघन[20] मेघ होय[21] स्याम बरीसहिं योबन नये तरेवर[22] होय दीसहिं

रावन पाप जो जिय धरा दोऊ जगत मुह कार
राम सत्य जो मन धरा ताहि छलै को पार ।

कित पावसि पुनि जोबन रोतो मैमंत[24] चढा स्याम सिर छाता
योबन बिना वृद्ध होय नाउं ॥ बिन योबन थाके सब ठाउं ।
योबन हेरत मिलै न हेरा ॥ तेहि पुनि जाहि कहिं नहिं फेरा
अहहिं जो केश नग[26] भंवर जो बसा पुनि बकै होहिं जगत सब हंसा
सेंबर सेव न चेत कर सुवा ॥ पुनि पछताय अंत हो भुवा ।
रूप तेर जग ऊपर लोना ॥ यह जोबन पाहुन जल सोना
भोग बिलास केर यह बेरा मान लेहु पुनि को कहि केरा

पानी १ सुख २ यमुना तथा जवानी ३ गंगा तथा बुढ़ापा ५ जवानी ६ नाम राजा रानी ७ मुहब्बत ८ तीर ९ कमान १० साफ़ ११ खाविन्द ब्याहा हुवा १२ शेर १३ जगह १४ कानी १५ १८ देखना १९ पानी १७ ईमान १८ बादल २० खाविन्द २१ पेड़ २२ लाल २३ मस्त २४ मुकाम २५ सांप २६ बगुला

उठत कोंप जस तरिवर तस यौबन तोहि रात।
तेलहु रंग लेहि रच पुनि सो पियरे होपात।

कुमुदिनि बैन सुनत हिय जरी। पद्मिनि हिये आग जनु परी।
रंग ताकर हों जारों रचा ॥ आपन तजि जो पराये हिलचा
दूसर करै जाय दुइ बाटा ॥ राजा दुइ न होहिं इक पाटा
जेहि जिय प्रेम प्रीति दृढ़ होई सुख सुहाग सों बैठा सोई ॥
यौबन जाउ जाउ सो भंवरा पिय की प्रीति न जाय जो संवरा
यहि जग जो पिय करहिं न फेरा वह जग मिलहिं जो दिन दिन मेरा
यौबन मोर रतन जहं पीऊ। बेलसो पिय पर यौबन जीऊ

भर्थरि बिछुरि पिंगला आह करत जिव दीन्ह
हों पापिनि जो जियत हों यही दोष हम कीन्ह

पद्मावत सों कौन रसोई ॥ जेहि परकार न दूसर होई ॥
रस दूसर जेहि जीभहि बैठा सो जानै रस खटा औ मीठा।
भंवर बास बहु फूलहिं लेई ॥ फूल बास बहु भंवर न देई ॥
तुई रस पुरुष न दूसर पावा। जेहि जाना जेहिं लीन्ह परावा
इक चुल्लू रस भरहिं हिया जो लहि नाहिं फिर दूसर पिया
तोर यौबन जस समुंद हिलोरा देख देख जिव बूड़े मोरा ॥
रंग और नाहिं पाइ बैसें ॥ जन्म और तुई पावत कैसें।

देख धनुस तोर नयना मोहिं लाग बिख बान
बिहंसे कमल जो मानै भंवरे मिलाऊं आन

कुमुदिनि तुइ बैरिन नहिं धाई मोहिं मैं सि बोरन छै लावसि आई

पेड़ १ लाल २ नाम दूती ३-२३ बात ४ दिल ५-१९ छोड़ना ६ दूसर राह तथा नर्क ७ सर्वत ८ मज़बूत ९ मुलाक़ात १० कुरबान ११ नाम राजा १२ जुदाई १३ नाम रानी १४ पाप १५ दुइ तरह १६ मज़ा १७ मर्द १८ त्यों बूड़ा   आवे २० हंसना २१ नया दूसरा खाविन्द २२ कारन २४ दग़ा २५

निरमेल जगत नीरकर नाम।	जो मसि परै होय सो श्याम।
जहवां धर्म पाप नहिं दीसा।	कनक सुहाग सो भऊ जस सीसा
जो मसि परै होय शशि कारी।	सो हंस लाय देहसि मोहिं गारी
कापर महं न छूट मसि अंकू॥	सो मसि लाय मोहि देस कलंकू।
श्याम भंवर मोर सूरज करा।	और जो भंवर श्याम मसि भरा
कमल भंवर रवि देखै आंखी	चन्दन पास न बैठै मांखी॥

श्याम समुंद मोर निरमल रतन सेन जगै सेन
दूसर सेर जो कहा दै सो बिलाय जस फेन।

पद्मिन पुनि मसि बोलन बैनो	सो मसि देख दुहू नैन नयना
मसि शृंगार काजर सब बोला	मसक बूंद तिल सोहि कपोला
लोनी साई जहां मसि रेखा।	मसि पुतरिन तेहि से जग देखा
जो मसि घाल नयन दुहु लीन्ही	सो मसि फेर जाय नहिं कीन्ही
मसि मुद्रौ दुइ कुंच उपराहीं	मसि भंवरा जस कमल भवाहीं
मसि केशहि मसि भौंह उरेहीं	मसि दिन दर्शन सो मन देहीं
सो कस सेंन जहां मसि नाहीं	सो कस पिंडै न जहं परछाहीं।

जस देवपाल राउ नस छत्र धरा सिर फेर।
चितौर राजा बिसराग यो जो कं भैल नेर

सुन देवपाल जो कंभलनेरी	पंकज नयन भौंह धनै फेरी।
ऐ तु मोर पिय कर देवपालू।	सो कित पूछ सिंह सर भालू॥
दुखन भरा तन जैसन केशा	तेहक संदेश सुनावसि बेश्या
सोन नदी अस मोर पिय गरवा	पाहन होय परै जो हेरवा॥

पाक साफ़ १-१० पानी २ सियाही ३ काला ४ सोना ५ चांद ६ दाग़ ७ ऐब ८ सूर्य ९ दुनिया का देखने वाला ११ बराबरी १२ बान १३ गाल १४ खूबसूरत १५ छाप १६ छाती १७ बाल १८ दांत १९ सफ़ेद २० बदन २१ नाम मुल्क २२ कमल २३ पद्मावत २४ दुशमन २५ ग़ैर की बराबरी २६ रीछ

जेहि ऊपर अस गरुवा पीउ । सुकस डोलाये डोलै जीउ
फेरत नयन चीर सो छूटी ॥ भइ कूटन कुटनी तस कूटी
नाक कान काटी मसि लाई । मूड़ मूड़ के गदहे चढ़ाई ॥

मुहम्मद गरु जो विधि लिखी का कोइ तेहि फूंक ।
जेहि क भार जग थिर रहा उड़े न पवन के झूंक ॥

रानी धर्म सार पुनि साजा ॥ बन्दि मोक्ष जेहि पावहि राजा
जहं लग परदेशी चलि आवा । अन्न दान औ पानि पियावा
योगी यती आवहि जिन कंथी । पूछी पिया जान कोउ पंथी ।
दान जो देत बांह भइ ऊंची । जाय शाह पहं बात जो पहुंची
पातुरि इक हुत जोग सुआंगी । शाह अखारे हुत वह मांगी ॥
योगिन भेष बियोगिन कीन्ही । सुन के शब्द मोल तन कीन्ही
पद्मिन पहं पठई कर योगिन । बेगि आन करि बिरह बियोगिन

चितै कला मन मोहन परकाया परवेश ।
आय चढ़ी चितौर गढ़ होय योगिन कर भेष ॥

खंड चालिसवां वेश्यागवन ॥

मांगत राज बार चलि आई । पौरी यह बात जनाई ॥
योगिन एक बार है कोई ॥ मांगे जैसि बियोगिन होई
अबहीं जवैयो बनन पलीन्ही । फार पटोरा कंथा कीन्ही ॥
बिरह बिभूत जटा बैरागी । छाला कांध जापे कंठ लागी
मुद्रौ श्रवनन नहीं थिर जीउ । तन त्रिशूल अधारी पीउ ॥
छाता छांह धूप जनु मरे । पायन पौंवरी भूभुल जरे ॥

लंहगा १ सियाही २ ईश्वर ३ कायम ४-२३ खैरातखाना ५ भेषवाले ६ मुसाफ़िर ७ मक्कार ८ शाह ने बोलाया ९ पद्मावत को लाव इनआम पावेगी १० जल्द ११ तसवीर १२ दरवाज़ा १३-१५ फेरफार १४ दुखी १६ नवज-वान १७ सारी १८ गुदड़ी १९ माला २० वाला २१ कान २२ खड़ाऊं २४

शृंगी शब्द धन्धारी करा।	जरैं सो ठौउ जहां पगधरा॥

किंगरी गहे बियोग बजावैं बारहिं बार सुनाउ।
नयन चक्र चहुं दिशि निरखि धौं दर्शन कवपाउ॥

सुनि पद्मावत मंदिर बोलाई।	पूंछी कौन देश ते आई॥
तरुन बैश तोहि छाजन योगू	केहि कारन अस कीन्ह बियोगू
कहेसि बिरह दुख जानन कोई	बिरहिन जान बिरह जेहि होई
कंत हमार गयो परदेशा।	तेहि कारन हम योगिन भेशा
काकर जिय यो बन अर देहा	जो पिय गयो भयो सब खेहा
फार पटोरैं कीन्ह मन कंथा	जहं पिउ मिलै लहुं सो पंथा।
फिरों करों चहुं चक्र पुकारा	जटा परी को सीस संभारा।

हिरदयै भीतर पिय बसै मिले न पूंछे काहि
सून जगत सब लागै वह बिन कछू न आहि

श्रवन छेद में मुंद्रा मेली।	शब्द उनाउ कहां पिय गेली
तेहि बियोग सिही नित पूरी	बार बार किंगरी भइ भूरी
को मोहिं लै पिय कंठ लगावै	परम अधारी बात जनावै
पांवर टूट चलत पा छाला	मन न मरै तन यो बन बाला
गयों प्राग मिला नहिं पीऊ	करवैं लीन्ह दीन्ह बल जीऊ
जाय बनारस जाप्यो कैया	पार्खे पिउ न हायों गया।
जगन्नाथ चक्रहि के आय	पुनि सो द्वारका जाय नहाय

जाय केदार दाग तन नहं न मिला तनै आंक
ढूंढि अयोध्या आय फिर स्वर्गद्वारी झांक

शृंगी बाजा की तरह आवाज़ मरदाना १ जगह २ पैर ३ दरवाजा ४ तरफ़ ५ देखना ६ नवजवान ७ दुख ८ वास्ते ९ धूर १० मारी ११ गुदड़ी १२ राह १३ सिर १४ दिल १५ कान १६ बाली १७ आवाज़ १८ जाना १९ सोक २० शेर २१ नामबाजा २२ गले २३ खड़ाऊं २४ सिरकटाना २५ तपकिया २६ पना २७

गड़ मुख[1] हरिद्वार फिर कीन्हा। नगरकोट[2] कित[3] रसना दीन्हा।
ढूंढ़[4] बालनाथ कर टीला ।। मथुरा[5] मथ्यों न सो पिय मेला।
सुर्य्य कुण्ड महं जा सौं देहा[6] बद्री मिला न जा सों नेहा ।।
रामकुण्ड[8] गोमति गुरुद्वारू[10] ।। दाहिने वर्त[11] कीन्ह कै भारू ।
सेतै[12] बन्द[13] कैलाश[14] सुमेरू ।। गयो अलख[15] पुर जहां गंभीरू
ब्रह्म[16] वर्त[17] ब्रह्मावर्त[18] परसी ।। बेनो संगम[19] सी भों करसी ।।
नील[19] के राठ[20] मिश्रिख[21] कुरजेरो गोरख[22] नाथ अस्थान[23] समेटा।

पटना पूर्व सो घर घर हाड़ फिरो संसार ।।
हेरत[24] कहं न पिय मिला ना कोइ मिलवन हार

बन बन सब हेरो नव खंडा। जल जल नदी अठारह गंडा।
चौंसठ तीर्थ कीन्ह सब ठाऊं लेत फिरो कह पिय कर नाऊं
देहिली सब देखों तुरकानू औ सुल्तान केर बंदवानू[25]।
रतन सेन देखो बंद माहां। जरै धूप[26] रवैं पाव न छाहां।
सब राजा बांधे औ दागी ।। योगिन जान राज पग[27] लागी।
कासों भोग जहं अस लगऊ यह दुख लै सो गयो सुख देऊ।
देहली नाउं न जानो होली सेंठ[28] बंद गाढ़ निकस नहिं गेली

देख दग्ध[29] दुख ता कर अभों कैया नाहिं जीव
सो धनि[30] कैसे वह जियै जा कर अस बंद पीव

पद्मावत जो सुना बंद पीउ ।। परा अगिन महं जानहु घीउ
दौर पाय योगिन के परी ।। उठी आग योगिन पुनि जरी
पाय देहु दुइ नयनन लाऊं। लै चलि तहां कंत जेहि ठाऊं।

नाम तीर्थ १ से २१ नाम योगी २२ मकान २३ ढूंढ़ना २४ क़ैदखाना २५ कभूं छाया नहीं पाना २६ पालागन राजा ने किया २७ लेकिन क्या दुख नियार जहां दख़ल ग़ैर का नहीं २८ सख़्त क़ैदख़ाना जहां से निकलना मुश्किल है २९ जलना ३० बदन ३१ औरत तथा पद्मावत ३२

जेहि नयनन तुइ देखा पीउ ।	मोहि देखाय देव बल जीउ ।।
सत औ धर्म देउ सब तोही ।।	पियकी बात कुहे जो मोही ।
तुइ मोर गुरु तोर हौं चेली ।।	भूली फिरत पंथ जे मेली ।।
डंडे एक माया कर मोरें ।।	योगिन होउ चलों संग तोरें ।

सखिन कहा पद्मावतहि प्रगट करो ना भेश ।
योगी जुगवे गुप्त मन लै गुरु कर उपदेश ।

भीख लेहु योगिन फिर मांगू	कंत न पाइ खीन सुवांगू ।।
यह बड़ योग बियोग जो सहा	जैसे पिय राखे तुम रहा ।।
घरही महं रहु भई उदासा ।	अंचल खप्पर सींगी स्वासा ।।
रहै प्रेम मन उरभा लटा ।	बिरह ढंढार परहिं सिर जटा
नयन चक्र लावै लै पंथा ।।	कौया कापर सोई कंथा ।।
छाला भूमि गगन सिर छाता	रंग रतेरहिं हिरदे राता ।।
मन माला पहिरे तंत ओही ।	पांचौं भूत भस्म तन होहीं ।

श्रवन कुण्डल सुन पिय बचन पावरै पाय परेहु
डंडे के गोरे बादलहि जाय अंधारी लेहु ।

सखिन बुझाई दग्ध अपारा	गइ गोरा बादल के बारा ।।
चरण कमल भुइं जन्म न धरी	जात तहां लग छाला परी ।।
निकस आय सुन क्षत्री दोऊ	तस कांपे जस कांप न कोऊ ।
केश छोर चरणन रज झारी	कहां पांव पद्मावत धारी ।।
राखा आन पाट सुन बानी ।	बिरह बियोग न बैठी रानी ।
चंवर ढार है चंवर डुलावहिं	माथे छात रजायस पावहिं

रह १ एक घड़ी २-२२ मेहरबानी ३ ज़ाहिर ४ भेद ५ छिपा ६ औ छोंवे फ़रेब से ७ नाम आज्ञा ८ भारी ९ राह १० बदन ११ गुदड़ी १२ ज़मीन १३ आसमान १४ ख़ून १५ दिल १६ लाल १७ आंख-कान-नाक-ज़बान-छूना १८ कान १९ बात २० खड़ाऊं २१ नाम मंत्री २३-२६ सहारा २४ आग २५ दरवाज़ा २७ सोनेका

उलट बहा गंगा कर पानी। सेवक बारन आवहिं रानी।
का अस कष्ट कीन्ह जेइ जो तुम करत न छाज
अज्ञो होय बेगे सो जीउ तुम्हारे काज ॥

खण्ड इकतालीसवां पद्मावती वा गोरा बादल संवाद।

कही रोय पद्मावत बाता। नयनहिं रक्त देख जग राता।
उलट समुंद जस मोती भरे रोवत रुधिर आंस तस ढरे।
रतन के रंग नयन पै वारों। रती रती के लोहू ढारों ॥
कमलहि ऊपर भंवर उड़ाऊं लै चलि तहां सूर्य्य जहं पाऊं
हिये कर हरद बदन के लोहू। जिय बल देउं सो संवरि बिछोहू
परहिं आंसु सावन जस नीरू हरियरि भूमि कुसुंभी चीरू।
चढ़ी भुवंगिन लट लट केशा भइ रोवन योगिन के भेशा।
बीरबहूटी भै चलें तो हू रहहिं न आंस ॥
नयनहिं पंथ न सूझै लाग्यो भादों मास।

तुम गोरा बादल खंभ दोऊ जस रन भारथ और न कोऊ
दुख बर्खा अब रही न राखा मूल पतार स्वर्ग भइ शाखा
छाया रही सकल महिं पूरी बिरह बेल भइ बाढ़ खजूरी
तेहिं दुख लेत बृक्ष बन बाढ़ी सीस उघारे रोवहिं ठाढ़ी ॥
भूमि पूर सायर दुख पाटा। कौड़ी भई फेर हिये फाटा।
बेहरि हिये खजूर कर बिया। बेहरि नाहिं मोर पाहन हिया
पिय जेहि बंद योगिन ह्वै धाऊं हों बंध लों पिय मेंकेराऊं ॥
सूरज ग्रहन गरासा कमल न बैठी पीट ॥
मुहं पंथ तहं गवन बकंत गये जेहि बार ॥

दरवाज़ा १ हुक्म २ जल्द ३ लाल ४ जवाहिर ५ खून ६ छाती ७-२२ जुदाई ८ पानी ९ ज़मीन १०-१७-२० नागिन ११ राह १२ नाम मंत्री १३ जड़ १४ आसमान १५ सब १६ पेड़ १८ सिर १९ तालाब २१ फटना २३ दिल २४ पत्थर २५

खाइकता २६ नरवत २७

गोरा बादल[1] दोऊ पसीजे ।।	रोवत रुधिर[2] सीस[3] लहि भीजे
हम राजा सों यही कोहाने[4] ।	तुम नहिं मिले धरै तुरकाने
जो मति[5] सुन हम आय कोहाये	सो नियान[6] हम माथे आये ।
जब लग जियें न भागहिं दोऊ	स्वामि न जिय कित योगिन होऊ
उवै अगस्त्य[7] हस्ति[8] अब गाजा	नीर[9] घटे घर आवें राजा ।।
वर्षा गयो अगस्त्य की दीठी[10]	परै पलान[11] तुरंगन[12] पीठी ।।
बेधों राहु छुड़ाऊं सूरू[13] ।।	रहै न दुख कर मूल अंगूरू[14] ।

वह सूरज[15] तुम शशि वदन आन मिलाऊं सोय
तस दुख महं सुख ऊपने[16] रैनै[17] मांझ दिन होय

लीन्ह पान बादल औ गोरा ।	गहि[18] लै देउं उपम तुम जोरा ।।
तुम सावंत[19] न सरबर[20] कोऊ ।	तुम हनुमंत अंगद[21] सम[22] दोऊ
तुम अर्जुन[23] औ भीम[24] भुवारा	तुम बल बीर सो मंदन हारा ।
तुम टारन भारन जग जानी	तुम सो पुरुष औ कौन[25] बखानी
तुम अस मोरे बादल गोरा ।	काकर मुख हेरों[26] बंद छोरा ।
जस हनुमंत राघो बंद छोरी	तस तुम छोर मिलावहु जोरी

जैसे जरत लच्छ घर साहस[27] कीन्हा भीउं[28]
जरत खंभ तस काढो कै पुर षारथ जीउं

राम लखन[29] सम दैत्य संहारा ।	तुमही घर बलभद्र[30] भुवारा ।
तुम द्रोना[31] औ पत्ता गंगेऊ[32]	तुम लेखो ईश्वर सहिदेऊ
तुमहु युधिष्ठिर[33] औ दुर्योधन	तुमहु भोज[35] नल[36] दोउ सम्बोधन

नाम मंत्री १ खून २ सिर ३ खफा होना ४ सलाह ५ आखिर ६ नाम नखत ७·८ पानी ९ निगाह १० चारजामा ११ घोड़ा १२ सूर्य्य १३ जड़ १४ चांद १५ पैदा १६ एन १७ जोड़ी मिलाऊं १८ बहादुर १९ बराबर २०·२२·२९ नाम सूरवीर २१·२३·२४·२५·२८·३१·३२·३३·३४·३५·३६ देखना २६ बहादुरी २७ बलभद्र का घर खराब किया ३०

तुम राघौ प्रसराम औ जोधा । तुम परतंज्ञा औ हत बोधा ।
तुम्ह अनुरुहन भूंथ कुमारा । तुम कंसहिं चांडूर संहारा ।
तुम परदुम्न औ अनिरुद्ध दोऊ । तुम अभिमन्यु बोल सब कोऊ ।
तुम सरपूज न बिक्रम साके । तुम्ह हरिचंद हमीर सत्त माके ।

जस अर्जुन संकर पाइ कै न भयो भीमें बंद छोर ।
तस परबंस परे कों हमकूँ राखलेहु ब्रह्म मोर ।

गोरा बादल बीरा लीन्हा । जस हनुमंत अंगद बल कीन्हा
साजि सिंहासन ताना छातू । तुम माथे जुगजुग अहिवातू ।
कमल चरन भुइं धर दुख पावहु । चढ़ सिंहासन मंदिर सिधावहु
सुन सूरज कमलहिं जिय जागा । केसर बरन पवन हिय लागा
जनु निसि मुंह अब दीन्ह देखाई । भा अंदोर मसि गई बिलाई ।।
चढ़ी सिंहासन झमकत चली । जानहु चांद दुइज निरमली ।
औ संग सखी कुमोद तराई । ढारत चमर मंदिर लै आई ।।

देख दुइज सिंहासन संकर धरा ललाट ।।
कमल चरण पद्मावत लै बैठारी पाट ।।

खंड बयालीसवां गोरा बादल गवन

बादल केर जसोदा माया । आय गही बादल के पाया ।
बादल राय मोर तुई बारा । का जानोसि कस होय जुझारा
बादशाह भूमिपति राजा ।। सनमुख है न हमीर रहि छाजा
छतिस लाख तुरी जेहि साजहिं । बीस सहस हस्ती दल गाजहिं

श्रीरामचंद्र १ नाम महासूर बीर २-६-७-१२ कौल ३ भाई श्री रामचंद्र ४-५ माता ८ बेटा श्रीकृष्ण ९ पोता श्रीकृष्ण १० बेटा अर्जुन ११ बराबरी १२ बिक्रमादित्य १३ नाम राजा १४-१५ सच बोलने वाले १६ राजा जुधिष्ठिर १७ उसी तरह इस बखत मे मदद करो १९ नाम मंत्री २० एरा २१ रात २२ रोशन २३ सियाही २४ साफ़ २५ कोकाबेली २६ नखत २७ माया २८ नखत २९ लड़ाई ३० होगा ३१ हाथी ३२

जबहीं आय चढ़े दल टूटा । देखत जैस गगन घन घटा ।
चमकहिं खड्ग जो बीजु समाना । घुमरहिं गलगाजहहिं निसाना ।
बरसहिं सेल बान घन घोरा । धीरज धीर न बांधे तोरा ॥

जहां दलपती दल मलहिं तहां तोर का काज ।
आज गवन तोर आवै बैठ मान सुख राज ॥

मानत ज्ञानेसि बालक आदी । हौं बादल सिंह रन बादी ।
सुन गज जूह अधिक जिउ तपा । सिंह जात कहुं रहे न हिं छिपा ।
तब गल गाजन गाजत सूला । सोहे शार्दूल सों जरो अकेला ।
को मोहि सोंह होय मैमंता । फारौं सूंड उखारौं दंता ॥
जरौं स्वामि संकरे जस टारा । औ बल जस दुर्योधन मारा ।
अंगद कोप पांव जस राखा । टेकौं कटक छतीसौ लाखा ।
हनुमत सरिस जंघ पर जोरौं । दहौं समुंद स्वामि बंद छोरौं ।

जो तुम मान जसोदी मोहिं न जानो बार ॥
जहं राजा बलि बांधा छोरौं पैठ पतार ॥

बादल गवन जूझ कर साजा । तैसहिं गवन आय घर बाजा ।
लिये साथ गवने कर चारू । चंद्र बदन रच कीन्ह सिंगारू ।
मांग मोति भर सेंदुर पूरा ॥ बैठ मयूर बांक तस जूरा ॥
भौंहें धनुष टकोर परीखी । काजर नयन मार सर तीखी ।
घाल कैंच बचौटी कासजा । तिलक जो देख ठाउं जिउ तजा ।
मणि कुंडल डोलैं दुइ श्रवना । शशि धुन नहिं सुन सुन पिय गवना ।
नागिन अलक झलक उरहारू । भयो सिंगार कंत बिन भारू ।

आसमान १ नलवार २ बिजुली ३ फरहरा ४-१२ गोला ५ तीर ६-२२ बड़े रज्जा ७ छोटा लड़का ८ शेर ९-११ हाथियों का हलका १० सामने १३ मस्त १४ मालिक का का करें १५ नाम महा सूरवीर १६-१७ फौज १८ राजा १९ पहुंचा २० मोर २१ कमान २२ कटीली २३ नाम नयन २५ कान २६ सिर २७ बाल २८ छाती २९

गवन जो आयो पंवर महं पिय गवने परदेश।
सखी बुझावहिं किमि अनल बुझै सो कोहै उपदेश॥

मान गवन जस घूंघट काढ़ी। बिनवै आय बार भई ठाढ़ी।
तीथिहिं खींच गहि आढ़ा॥ कंत न हेरे कीन्ह जिय पोढ़ा।
तब धन कीन्ह देहं सबै सदीठी। बादल तबहिं दीन्ह फिर पीठी।
मुख फिराय मन अपने रीसा। चलत न तिया कर मुख दीसा।
भामिन्न भेय नारि के लेरवे। कस पिउ पीठ दीन्ह मुहं देखे।
मंगे पिय हंसि समाने चालू। हूल से पीर गढ़ाउ सालू॥
कूंचनीबी अब पीठ गड़ोऊं। गहो सिनो हूक काढ़ रिस धोऊं।

कहों लजाय तो पिय चले कहों तो कुहि मुहि डीठ।
ढाढ़ रेवानी का करों भारी दोऊ बसीठ॥

लाज किये जो पिय नहिं पाऊं। तजो लाज करे जोर मनाऊं।
करहु ठ कंत जाय जेहि लाजा। घूंघट लाज आव केहि काजा।
तब धन बेहस कहा गहि फेटा। नारि जो बिनवे कंत न मेटा।
आज गवन हूं आई नाहीं॥ तुम न कंत गवनो रन माहीं।
गवन आव धन मिलन की ताईं। कौन गवन जो गवने साईं॥
धन न नयन भर देखा पीऊ। पिया न मिला धन सों भर जीऊ।
तेहि सब आस भरा है केवा॥ भंवर न तजै बास रस लेवा॥

पायन धरा ललाट धन बिनय सुनहु हो राय।
अलक परी फंदवार है कैसहिं तजै न पाय।

दरवाजा १ जाना। सिधारना २ कि स नरहे ३ आग ४ ड्योढ़ी ५ करीली निगाह सेदेखा ६ खींचना ७ देखना ८-३ औरत बादलकी हंसना १०-२२ शावद ११ नाममंत्री १२ चोरनका अगून बदसमामया १४ शायर १५ निगाह १६ पीठ देखनसकी नकी १७ छाती १८ खींचाकि दिल का दुख निकला १९ मो- ख २० सेनो छाती २१ हाथ २२ अजं २४ खाविंद २५-२६ कमल २८ छोड़ना २९

माघा ३० बाल ३२

छाड़ फेंट धनि बादल कहा । पुरुष गवन धनि फेंट न गहा ॥
जौ तुइँ गवन आय गजगामी । गवन मोर जहँवाँ मोर स्वामी ॥
जब लगि राजा छूट न आवा । भावै बीर सिंगार न भावा ॥
तिया भूमि खर्ग की चेरी ॥ जीत जो खर्ग होय तेहि केरी ।
जेहि घर खर्ग मूंछ तेहि गाढ़ी । तहाँ न आँड न मूंछ न दाढ़ी ॥
तब मुह मूंछ जीउ पर खेलौं । स्वामि काज इन्द्रासन पेलौं ॥
पुरुष क बोल टरै नहिं पाछू । दसन गयंद गीव नहिं काछू ॥

तुइँ अबलौ धन कुबुधि बुध जानै कहा जुझार ।
जेहि पुरुषहिं हिय बीर रस भावै तेहि न सिंगार ॥

जौ तुम्ह चहौ जूझ पिय बाजा । कीन्ह सिंगार जूझ मैं साजा ॥
जोबन आय सौंह है रोपा । पिघला बिरह काम दल कोपा ॥
भयो बीर रस सेंदुर मांगा ॥ राता रुधिर खर्ग जस नांगा ।
भौंह धनुष नयन सर सांधे । बरुनि बीज काजर बिष बांधे ।
दय कटाक्ष सों सान सँवारी । जौ मुख सेल भाल अनियारी
अलक फांस गीव मेल असूझा । अधर अधर सों चाहहिं जूझा
कुंभस्थल कुच दोउ मैमन्ता । पेलौं सौंह सँभारहु कंता ॥

कोप सिंगार बिरह दल टूट होय दुइ आध ।
पहिले मोहिं संग्राम कै करहु जूझ की साध ॥

केसहुं कंत फिरै ना फेरी ॥ आग परी चित्तौर धन केरी ॥
उठो सो धूम नयन गरवानी । लागे परे आंसु महरानी ॥

कमर १ छोरना २ पकड़ना ३ हाथी की चाल ४ लड़ना ५ जमीन ६ तलवार ७ मर्द ८ दाँत हाथी के ९ गरदन कछुवा की १० नादान ११ कम अकिल १२ लड़ाई १३ मर्द १४ दिल १५ तामने १६ लाल खून १७ तीर १८ पलक बिजुली की तरह १९ तिरछी निगाह २० नोकीले २१ बाल २२ गरदन २३ हौंठ २४ हाथी मस्त २५ छाती २६ मुकाबिल २७ लड़ाई २८ दुरदा २९ धुवां ३०

भीजे हार चीर हिय चोली । रही अछूत कंत नहिं खोली ।
भीजे लाग छुवे कर सुंदन । भीजे भंवर कमल सिर फुंदन
चुय चुय काजर अंचर भीजा । तबहुं न पिय के रोवं पसीजा
छाड़ चला हिरदय दय दाहू ॥ निठुर नांह आपन नहिं काहू
सबै सिंगार भीज भुइं चुवा । छार मिलाय कंत नहिं छुवा
रोये कंत न बहुरे तेहि रोये का काज ॥
कंत धरा मन जूझ रन धनै साजी सब साज

१०. खंड तेतालीसवां गोरा बादल बरनन

मतै बैठ बादल औ गोरा ॥ सो मत कीज परै नहिं भोरा ॥
पुरुष न करैं नारि मत कांची । जस नवें शावा कीन्ह न बाची
चुहु हाथ है संकर बेरी ॥ सकते छाड़ के भई बंदेरी ॥
संजग जो नांह मारबल बांधा । कुधं कहिये हस्ती का बांधा
देवतन चले आप अस आंटी । सुरजैन कंचैन कुरजैन मांटी
कंचन जुरै भयेदस खांड़ा । फूट न मिले छौर कर भांड़ा ।
जस तुरकन्हि राजा छल साजा । तस हम साज छुड़ावहि राजा
पुरुष तहां ही छल करै जहं बल कैसो न आंट ।
जहां फूल तहं फूल है जहां कांट तहं कांट ॥
सोरहसै चंडोल संवारी ॥ कुंवर संजोयल तह बैठारी
पद्मावत कर साज बेवानू ॥ बैठ लुहार न जानै भानू ॥
रचि बेवान सो साज संवारा । चहुंदिश चंवर करहिं सब ढारे
साज सबै चंडोल चलाई ॥ सुरंग उहार मोति बहु लाई ॥

सारी १ छाती २ ४ कुरती ३ जलन ५ खांविंद ६-८ धूप ७ औरत ९ सलाह १० नाम मंत्री ११ हंसी १२ मर्द १३ नाम शहजादी १४ नाम बादशाह १५ उसको छोड़ दिया १६ होशयार १७ अकिलमंद १८ हाथी १९ दोस्त २० सोना २१ दुशमन २२ मारी २३ पहुंचना २४ बहादुर २५ सर्व्य २६ चारोंतरफ २७

कहत चले पद्मावत चली। भये संग गोरा बादल बली।
देख बेवाने देवता भूलहिं। हीरा रतन पदारथ भूलहि
कमलन रहा औ को बेली। सोरह से संग चली सहेली।

राज कुँड़ादन रानि चलि आप होय तह ओल
तीस सहस तुरि खींच संग सोरह से चंडोल

गागौरा नाप है आगम जा॥ राजा बंद जेहि के सौंपना।
बिनती कीन्ह पायगहि गोरा टका लाख दस दीन्ह अकोरा
अबरानी पद्मावत आई। बिनैवो बादशाह सो जाई।
चित्तौर की मैंसी है कीली बिनती करै आय हूं देहिली॥
सब भंडार की मेसो कूंजी बिनती करै जहां है पूंजी॥
राजा सौंप मंदिर महं आऊं एक घड़ी जो अज्ञा पाऊं॥
देख अकोर भयेजस पानी। तबर खवार गये सुलतानी

लीन्ह अकोर हाथ जो जीउ दीन्ह तेहि हाथ
जोवह कहे करे सो कहीं छाडनहिं माथ

सतन रहे हाथ जो बारा॥ लोभ पाप की नदी अकोरा।
ठाकुर केर बिनासहि काजू॥ जहं अकोर तहं नेक केन राजू॥
द्रव्य लोभ चंडोल न हेरा॥ भाजिउधि वरखवारी केरा
ऐजगसूर चाँद चलि आवा॥ जाय शाह आगे सिर नावा॥
सोरह से चंडोल जो आई॥ औ जानवन्त सब नरखत नराई
लैसा आय पद्मावत कुंजी। चित्तौर जेन राज की पूंजी॥
लैसौंपो राजा इक घड़ी॥ बिनती करै जोरे कर खड़ी॥

राजमंत्री १०-६ जहिरा ब २ चंडोल ३ तीस हजार ४ घोड़ा ५ पहिले ७ रिशवत नज़राना ८ १७-१८-२६ अर्ज़ ६-१०-११-१२ कुंजी १२ खज़ाना १४ हुक्म १५ खरोसा १६ ईमान २० एजअरका नहीं २१ खराब २२ तलाशी लेना २३ दर्पन २४ सखी सहेली २५ हाथ २७

यहां वहां के स्वामी[1] दोहूं जगत मोहिं आश[2]।
पहिले दरस देखावन्हप[3] तब आउं कैलाश॥

ग्रसौं[4] भई जाय इक घरी। छूट जो घरी फेर विधि[5] भरी॥
चलि देवान राजा पहं आवा। संग चँडोल[6] जगत सब छावा॥
पद्मावत के भेष[7] लोहारू। निकस काट बंद[8] कीन्ह जोहारू॥
उठा कोप जस छूटा राजा। चढ़ा तुरंग[10] सिंह[11] अस गाजा॥
गोरा[12] बादल खांडे[13] काढे। निकस कुंवर चढ़ चढ़ भये ठाढ़े॥
तीख[14] तुरंग गगन[15] सिर लागा। कौन जुगत कर टेकै बागा॥
जो जिय ऊपर खर्ग संभारा। मरनहार सो सहैसहिं[16] मारा॥

भइ पुकार शाह सों शशि[17] औ नखत सो नाहिं।
छल कै ग्रहन गिरासा ग्रहन गिरासी छांह॥

लै राजा चितौर कहं चले। छूटो मिरग[18] सिंह[19] कर बले॥
चढ़ा शाह चढ़ लाग गुहारी। कटक असूझ[20] परी जग कारी॥
फिर गोरा बादल सों कहा। गहन[21] छूट पुनि[22] चाहे गहा॥
चहुं दिशि[23] आवा लोपत भानू[24]। अब यह गोय यही मैदानू॥
तुइ अब राजा लै चल गोरा। हौं अब उलट जुरौं[25] भा जोरा॥
वह चौगान तुर्क कस खेला। होय खिलार रन जुरौं अकेला॥
तब पाउं बादल अस नाउं। जब मैदान गोय लै जाउं॥

आज खर्ग[26] चौगान गहि करौं सीस रन गोय।
खेलौं सौंहें[28] शाह सों हाल जगत महं होय॥

तब अगमन है[29] गोरा[30] मिला। तुइ राजा लै चल बादला[31]॥

मालिक १ उमेद २ राजा ३ हुक्का ४ छूटकर ५ चंडोल ६ सूरज ७ बेड़ी ८ सलाम ९ घोड़ा १०-१४ शेर ११-१९ नाम मंत्री १२-३०-३१ तलवार १३ आसमान १५ हजार १६ चांद तथा पद्मावती १७ हिरन १८ फौज २० राजा २१ फेर २२ चारों तरफ २३ सूर्य २४ मुकाबिल २५ पकड़ना २६ सिर २७ सामने २८ आगे २९

पिता मेर जो सारी साथें।	मीचेनदेय पूत के माथें ॥
मैं अब आयु भरी औ भूंजी	कापछताव आय जो पूजी ॥
बहुनहिं मारमरें जो जूझी ॥	ताकहं जन रोवहु मन बूझी ॥
कुंवर सहस संग गोरा लीन्ही	और बीर बादल संग कीन्हीं ॥
गोरहि समुद मेघ अस गाजा।	चलालीन्ह आगे कर राजा ॥
गोरा उलट खेत भा ठाढ़ा ॥	पुरुष देख चौगुन मन बाढ़ा ॥

आव कटक सुलतानी गगन छिपा मसि मांझ।
परत आव जग कारी होत आव दिन सांझ।

होय मैदान परी अब गोय ॥	खेल हार वह काकर होय ॥
योबन तुरी चढ़ी जो रानी ॥	चली जीत अति खेलसयानी
कटै चौगान गोय कुंच साजी।	हिय मैदान चली लै बाजी ॥
हाले सो करे गोय ले बाढ़ा ॥	गाली दुहूं पैच कै काढ़ा ॥
भट पहार वे दोनों गोरें ॥	हेठि नेर पहुंचत सुठ दूरी ॥
ठाढ़े बान चलहिं अस दोऊ।	सालेहि हियें न काढ़े कोऊ ॥
सालहिं नेहि जान सिहै डाढ़ी	सालहिं जासु चहै उठ काढ़ी।

मुहम्मद खेल प्रेम का गहिर कठिन चौगान।
सीस न दीजे गोय जिमि हल न होय मैदान

फिर आगे गोरे तब हांका ॥	खेलों आन करों रन शाका।
हों खलों धौलागिर गोरा ॥	टरों न टारे अंग न मोरा ॥
सोहिल जैस गगन उपराहीं	मेघ घटा मोहि देख बिलाहीं
सहस सीस शेकर सम लेखों	सहसहिं नयन अंधि भा देखों

बाप की जगह राजा साथ है १ मरना बेरे का नदेखेगा २ उमर ३ हज़ार ४ २६ नाम मंत्री ५-६-७-८ मर्द ९ चाह १० फ़ौज ११ आसमान १२ स्याही १३ घोड़ा १४ कमर १५ छाती १६ सीना १७ हलचल १८ तथा छाती १९ निगाह २० मुरख २१ दिल २२ खिर २३ बराबर २४ ललकारना २५ बहादुरी २६ नाम पहाड़ २७ नाम

चारहुं भुजा चतुरं भुज आजू । कंस न रहा और को साजू ॥
होंहै भीमसे आजु रनगाजा । पाछें घालउं कोंई राजा ॥
होय हनुमंत यमकातर धाऊं । आज स्वामि संकरैं नियाऊं ॥

है नल नील आज हो देऊं समुद महिं मेंड़ ।
कटक शाह करटकों है सुमेरे रगबेंड़ ॥

उनई घटा चहूं दिशि आई । छूटहिं बान मेघ झरलाई ॥
डोले नाहिं देव जस आदी ॥ पहुंची तुर्क बादि कहं बादी ॥
हाथन गहैं खर्ग हरवानी ॥ चमकहिं सेल बीजु के बानी ॥
साजबान जनु आवे गाजा ॥ बासुक डरे शीश जनु बाजा ॥
नेजा उठे डरे मन इन्दू ॥ आवहिं पाछु जान कबहिन्दू ॥
गोरे साथ लीन्ह सब साथी ॥ जस मेमंत सूंड़ बिन हाथी ॥
सब मिल पहिल उठौनी लीन्ही । आवत आय हांक सब कीन्ही ॥

रुंड मुंड अतिटूटहिं सहि बखतर औ कूंड़ ।
तुरी होहिं बिन कांधे हस्ति होहिं बिन सूंड़ ॥

उनवत आय सैन सुलतानी । जानहु परले आवत लौनी ॥
लोहे सैन सूझ सब कारे ॥ तिल इक कहूं न सूझ उघारे ॥
खर्ग फुलाद तुर्क सब काढ़े ॥ हरी बीजु अस चमकहिं ठाढ़े ॥
पीलवान गजे पेल सो बांके ॥ जानहु काल करहिं जियें मांके ॥
जनु यमकात करहिं सब भवां । जिय पै चीन्ह खर्ग अपसवां ॥
सेल सांप जनु चाहे डसा ॥ लीन्ह काढ़ जिय मुख बिष बसा ॥

चारहाथ १ नाम राजा दैत्य २ नाम महासूरबीर ३ मदद ४ महाबीर जी ५ नाम कोल्हू ६ मालिक को बचाऊं ७ नाम बंदर जिन्होंने पुल समुंद्र में बांधा था ८-९ फौज १०-२४-२६ नाम पहाड़ ११ चारों तरफ़ १२ तीर १३ पैदा हुआ १४ बराबर १५ नलवार १६ बिजुली १७-१८-२७ नाम राजा सांप १९ सिर २० टूटे २१ घोड़ा २२ हाथी २३ पहुंची २५ हाथीमस्त २८ लेने वाले २९ यमदूत

तिन्ह सामहिं गौरा रन कोपा । अंगद सरस पाउं भुइं रोपा ॥

सपुरुष भागन जाने भुइं जो फिर फिर लेइ ॥
सूर कहैं दो कर स्वाम काज जिउ देइ ॥ ॥

भइ बग मेल सेल घन घोरा । औगज पेल अकेल सो गोरा ।
सहस कुंवर सहसहुं सत बांधा । भार पहार जूझ कहं कांधा ॥
लाग भरे गोरा के आगे ॥ बागन मोर घाव मुख लागे ।
जैस पतंग आग धंस लीन्ही एक मुवै दूसर जिय दीन्ही ॥
टूटहिं सीस अधर धर मारी टूटहिं कंधहि कंध निरारी
कोई परहिं रुधिर है रांती ॥ कोइ घायल घूमहिं मद माती
कोइ घर खेहहि कीन हौ भोगी भस्म चढाय बैठ जस योगी ।

घरी एक भा भारथ भइ असवारहिं मेल
जूझ कुंवर सब बैठ गोरा रहा अकेल ॥

गोरै देख साथ सब जूझा । आपन कौल नेर भा बूझा
कोप सिंह सामहिं रन मेला लाखन सों नामरै अकेला
लियो हांक हस्तिन की ठटा जैसे सिंह बिदारे घटा ॥
जेहि सिर देइ कोप नरवारू । सैं घोड टूटहिं असवारू ॥
टूट कंध सिर परे निरारी ॥ मांठ मैं जांघ जानु रन हारी ॥
खेल फाग सेंदुर छिरकावे चाचर खेल आग रण लावे
हस्ती घोड धाय जो धूका औनहि दीन्ह सो रुधिर भभूका ।

भइ अज्ञा सुलतानी बेगौं करहु यह हाथ ।
रतनजात है आगें लिये पदारथ साथ ॥

नाम मंत्री १ नाम बंदर २ बहादुर ३-४ हाथ ५ हाथी ६ हज़ार ७ सिर ८ धड़ फेंकना ९ अलग १०-२० खून ११ लाल १२ राख १३ लड़ाई १४ मौत १५ और १६ १८ हाथी १७-२२ फाड़ना १९ लाख २१ लोहू २३ कूका २४ जल्द २५ नथा पद्मावत २६

सबै कटक[1] मिल[2] गोरो छेंका । गूंजत सिंहै[3] जाय नहिं टेका ।
जेहिं दिशि[4] उठै सोइ जनु खावा । पलट सिंहै[5] तेहिं ठाउँ न आवा ।
तुर्क बोलावहिं बोलै नाहीं । गोरे मीचै धरी जिय माहीं ।
मुवे पुनि जूझ जाज जगदेऊ । जियत न रहा जगत महं केऊ ।
जन जानहु गोरा सो अकेला । सिंहै की मूछ हाथ को मेला ।
सिंह जियत नहिं आप धरावा । मुवे पीछ कोऊ घिस यावा ।
कै सिंह मुह सौंहैं[6] जो डीठी । जब लग जियै देय नहिं पीठी ।

रतनसेन जो बांधा मसि गोरा के गात ।।
जब लग रुधिर[7] न धोऊं तब लग हैय न रात[8] ।।

सुरजा[9] वीर सिंह चढ़ गाजा । आय सौंह गोरा सो बाजा ।।
पहलवान सो बखाने बली । मदद मीर[10] हमजा औ अली ।।
मदद अयूब सीस[11] चढ़ कोपी । महा भारथी नागु अलोपी ।
औ नायौं सालार सो आये ।। जेहि कवरो पांडो बंद पाये ।।
लंधौर[12] देव धरा जेहि आवे ।। औ कोमोल[13] बाद कहं पावे ।।
पहुंचा आय सिंह असवारू । जहां सिंह गोरा बरियारू[14] ।।
मारेसि सांग पेट महं धसी ।। काढ़ेसि हुमक के आंत भुइं खसी ।।

भाट कहा धन गोरा तुइं महिरावन राउ ।
आंत समेट कर कांधे तुर्री देत है पाउ ।।

कहेसि[15] अंत अब भा भुइं परना । अंत को निरे[16] खेंह सिर भरना ।
कहि के गरज सिंह अस धावा । सुरजा शार्दूल पहं आवा ।

फ़ौज १ नाम मंत्री २ ओर ३-५-८ तरफ़ ४ मौत ६ ऐ बादशाह बेमरे शायन - शाऊंगा ७ सामने निगाह ९ सियाही १० बदन ११ खून १२ लाल १३ नाम पहेलवान १४-१६-१७ सामने १५ सिर १८ बड़े बहादुरों का नाम मिटानेवा - ले १९ नाम सिपहसालार २० नाम देव २१ नाम राजा २२ ज़बरदस्त २३ घोया २४ आख़िर २५ हमेशा २६ शरत २७ ओर मुर्दे २८

सुरजें कीन्ह सांग पर घाऊ ॥ परा खर्ग[3] जनु परा निहाऊ ।
बज्र की सांग बज्र का डांड़ा ॥ उठी आग तस बाजा खांड़ा ।
जानहु बज्र बज्र सों बाजा ॥ सबही कहा परी अब गाजा ।
दूसर खर्ग[4] कन्ध पर दीन्हा ॥ सुरजें वह ओड़न[6] पर लीन्हा ।
तीसर खर्ग कूड़ पर लावा ॥ कांध गरज[7] हत घाव न आवा ॥

तस मारा हत गोरें उठी बज्र की आग ॥ ॥
कोउ नेरें नहिं आवे सिंह[8] सेंदूरा[9] लाग ॥

तब सुरजा कोपा बरिवंडा[10] ॥ जान सेंदूर केर भुजडंडा ॥
कोप गरज मारेसि तस बाजा जानहु परी तुरत सिर गाजा[11] ।
खरे[12] टूट टूट सिर तासू ॥ मेसुमेरु[13] जनु टूट अकासू ॥
धमक उठा सब खर्ग[14] पतारू फिरगइ दीठि[15] फिरा संसारू ॥
भा परले अस सबहीं जाना काढ़ा खर्ग[16] खर्ग नेराना ॥
तस मारेसि सें घोड़े काटा ॥ धर्ती फाट शेश फन नाथा ।
आनि जो सिंह[18] बरी है आई ॥ शार्दूल[19] सों कौन बड़ाई ॥

गोरा परा खेत महं सुर[20] पहुंचावा पानि ॥
बादल[21] लै गा राजा ले चितौर नेरान ॥

पद्मावत मन रही जो भूरी ॥ सुनत सरोवर[22] हिय[23] गा पूरी ॥
अद्रा[24] महं हुलास[25] जस होई ॥ सुख सुहाग आदर भा सोई
नयन जो कुमुदनि[26] लीन्ह अंगूरु उदा कमल अस उगवा सूरू[27] ।
पुरइन पूर संवारी पौरी[28] ॥ ओ सिर आन धरा सिर छाता
लाग्यो उदय होय जस भोरा । रैन गई[29] दिन कीन्ह अंजोरा[30] ॥

नाम पहेलवान १ तलवार २-५-१६ निहाई ३ बिजुली ४-११ ढाल ६ उछल नल-वार पर तलवार परी ७ शेर ८-१८ जोरसुर्द ९-१९ ज़बरदस्त १० खुपड़ी १२ पहाड़ १३ आसमान १४-१७ निगाह १५ देवता २० नाममंत्री २१ तालाब २२ छाती २३ नाम नखत्र २४ खुशी २५ कोकाबेली २६ सूर्य्य २७ तबूतरा २८ रात २९ रोशनी ३०

अस्त[१] अस के पाई[२] कैला । आगें वली करैक[३] सब चला।
देख चांद अस पद्मिन राली । सखी कुँमोद[४] सबै बेकैसानी

गहन छूट दिनेर[५] कर शशि सो भयो मिलाव
मंदिर सिंहासन साजा बाजा नगर बधाव

बेहंस चांद दय मांग सेंदूरू। आरत करन चली जहं सूरू[६]
औ गोहन[९] शशि[१०] नखत तराई । चितोर की रानी जहं ताई ।।
जनु बसंत रितु फली जो छूटी । की सावन महं बीर बहूटी।।
भा आनन्द बाजा पचतूरा।। जगत रौनि[११] है चला सेंदूरा।
धुनि मृदंग मंदिर बहु बाजे। इन्द्र शब्द[१२] सुन शब्द जो लाजे
देख कंत जस रबि[१३] परकासा[१४] । पद्मावत मन कमल बिकासा
कमल पाय सूरज के परा।। सूरज कमल आन सिर धरा

सेंदुर फूल तंबोल सो सखी सहेली साथ।।
धन[१६] पूजी पिय पाय दुय पिय पूजी धन माथ

पूजा गवन देउं तुम राजा।। सबै तुम्हार आव मोहे लाजा
तन मन योबन आरति करूं । जीव काढ़ न्योछावर देऊं।
पंथ[१७] पूर कर[१८] हृदि बिछाऊं।। तुम पगं[१९] धरो सीसें[२०] मैं लाऊं।।
राखत पाय पलक नहिं मारो । बरनेहि[२१] सो रेंच[२२] रनहि भारो
हियें[२३] सो मंदिर तम्हारो नौंहा[२४] । नयन पंथ[२५] आवहु तेहि माहां
बैठो पाटै[२६] छत्र तब फेरी।। तुम्हरे गर्ब[२७] गवी हों चेरी।।
तुम जिय मैं तन जो लहि मैया[२८] । कहे जो जीउ करै सो कैया[२९]

जो सूर्य सिर ऊपर तब सो कमल सिर छात्त
नाहित भरी सरोवर[३०] सूखी पुरइन पात।।

पमरएम कर १ कल २ फ़ौज ३ कोकाबेली ४ खिलना ५ · १५ सूर्य ६ · ८ · १३ चांद ७
१० साथ ९ लाल ११ आवाज़ १२ रोशनी १४ पद्मावत १६ राह १७ · २५ निगाह १८ पाउं
१९ सिर २० पलक २१ धूर २२ दिल २३ खाविंद २४ तखत २६ गरूर २७ मुहब्बत २८ [illegible] २९ तालाब ३०

नींद न लीन्ह रैन[1] सब जागा । होत बिहान[4] आय गढ़ लागा
कुम्भलनेर[2] अगम[3] गढ़ बांका । बिषम पंथ चढ़ जाय न झांका
राजा तहां गयो लै कालू ॥ होय सामहिं[5] रोपा देवपालू

दोऊ लड़े[6] होय समुख लोहे भयो असूझ ।
शत्रु जूझ तब न्योरे[7] एक दोउ मनु जूझ ।

खंड पैतालीसवां देवपाल लड़ाई

जो देवपाल[8] राउ रन गाजा ॥ मोहिं तुहिं जूझ एकाकी[9] राजा
मेलेसि आय सांग बिष भरी । मेट न जाय काल की घरी ।
आय नाभ पर सांग जो बैठी । नाभ बेधि निकसी नृप[10] पीठी
चला मार तब राजा मारा । टूट कंध धड़ भयो निरारा[12] ।
सीस[13] काट कै पैरी[14] बांधा । पावा दांव बैर जस[15] सांधा
जियत फिरा आयो बल भरा । मांझ बाट[16] होय लोहे[17] धरा ।
कारी घाउ जाय नहिं डोला । रही जीभ[18] यम गहे को बोला

सुधबुध सब बिसरी बार परी मंझ[19] पाट ॥
हस्ति[20] घोर को का कर घर आनी गड़ खाट

खंड छयालीसवां बैकुंठ बासी राजा

तौ लहि स्वांस पेट मंह अही । जौ लह दशा जीउ की रही ।
काल आय देखलाई सांटी[21] । उठ जिय चला छाड़ के माटी
का कर लोग कुटंब घर बारू । का कर अर्थ दर्ब[22] संसारू ॥
वही घड़ी सब भयो पराया । आपन सोइ जो परसा खावा
रहिं जेहि हितू[23] साथ के नेगी ॥ सबै लाग काढ़न तेहि[24] बेगी ॥

एत १ नाम मुल्क २ जहां जाना मुशकिल है ३ टेढ़ी राह ४ आया ५ दुशमन ६ लड़ाई ७ आखिर ८ नाम राजा ९ अकेले १० राजा ११ अलग १२ सिर १३ शिकारबंद १४ जैसा बैर किया १५ राह में १६ हथ्यारबंद १७ मौत ने पकड़ी १८ मुरदा की तरह तखत पर १९ हाथी २० छड़ी २१ दौलत २२ दोस्त २३

हाथ भार जस चलै जुवारी । तजो राज होय चला भिखारी
जबलग जीउ रतन सब कहा । भा बिन जीउ न कौड़ी लहा

गढ़ सौंपा तेहिं बादल गये टेकते बसदेउ ॥
छोडी राम अयोध्या जो भावै सो लेउ ॥

पद्मावत पुनि पहिर पटोरा ॥ चली साथ पिय के होय जोरी
सूर्य छिपा रैन है गई ॥ पूनूं शशि सो अमावस भई ॥
छोर केश मोतिलर छूटी ॥ जानो रैन नखत सब टूटी ॥
सेंदुर परा जो सीस उघारी ॥ आग लाग चाहि जग अंधियारी
यही दिवस हों चाहत नाहिं । चलों साथ पिय दे गल बाहा
सारस पंख न जिये निरारे । हों तुम बिन का जियों पियारे
न्योछावर कै तन छहराऊं । छार हो संग बहुर न आऊं ॥

दीपक प्रीति पतंग ज्यों जन्म निबाह करेउं
न्योछावर चहुं पास है कंठ लाग जिय देउं

खंड सैंतालीसवां सती होना पद्मावत-नागमती

नागमती पद्मावत रानी ॥ दोऊ महा सत सती बखानी
दोऊ सौत चढ़ खाट जो बैठी । औ शिवलोक परा तहं दीठी
बैठा कोई राज औ पाटा ॥ अंत सबै बैठे पुनि खाटा ॥
चन्दन अगर काढ़ सर साजा । औ गति देय चले ले राजा ॥
बाजन बाजहिं होय अगोता । दोऊ कंत ले चाहें सोता ॥
एक जो बाजा भयो बिवाहू । अब दूसरे है और निबाहू ॥
जियत जले जो कंत की आसा । मुवे रहस बैठे एक पासा ॥

छोड़ना १ नाम मंत्री २ बैकुण्ठ गये ३ सारी रैन सामी ४ एल ५ पूरनमाशी का चांद ६ बाल ७ सिरुदुनिया ८ दिन १० खाविन्द ११ अलग १२ बियगता १३ राख १४ लौट १५ पद्मावत-नागमती १६ नज़र १७ तख़त १८ आख़िर १९ चिता २० दाह २१ कड़का २२ खाविंद २३

मैं यह अर्थ पण्डितन बूझा। कहा कि हम कुछ और न सूझा॥
चौदह भुवन जो हन उपराही। सो सब मानुष के घट माहीं।
तन चितौर मन राजा कीन्हा। हिये सिंहल बुधि पद्मिन चीन्हा॥
गुरू सुवा जेहिं पंथ देखावा। बिन गुरु जगत सो निरगुन पावा॥
नागमती यह दुनिया धंधा। बाचा सोई न यह चित बंधा।
राघो दूत सोई शैतानू॥ माया अलाउदी सुलतानू।
प्रेम कथा यह भांत बिचारू। बूझ लेहु जो बूझ पारू॥

तुरकी अरबी हिन्दवी भाखा जेती आहि।
जामें मारग प्रेम का सबै सराहें ताहि॥

मुहम्मद कब यह जोर सुनावा। सुना सो प्रेम पीर का पावा।
जोरे लाय रक्त ले गये॥ प्रेम प्रीति नयनन हिं जल भये।
औ मैं जान गीत अस कीन्हा। की यह रीति जगत महं चीन्हा।
कहां सो रतनसेन अब राजा। कहां सुवा अस बुधि उपराजा।
कहां अलाउदीन सुलतानू। कहं राघो जेहि कीन्ह बखानू।
कहां सुरूप पद्मावत रानी। कुछ न रही जग रही कहानी।
धन सोई जस कीरति तासू। फूल मरै पै मरै न बासू॥

केन जगत यश बेचा केन लीन्ह यश मोल।
जो यह पढ़े कहानी हमसंवरै दोई बोल।

मुहम्मद बृद्धि बैस जो भई। योबन हत सो अवस्था गई।
बल जो गयो कै छीन सरीरू। दृष्टि गये नयनहिं दे नीरू॥
दसन गये कै बचा कपोला। बैन गये अनरुच दे बोला।

सात परदा आसमान सात परदा ज़मीन १ मीजर २ छाती ३ राह ४ दुनिया ५ बूझ सके कोई बोलो ७ खून जिगर पीके ८ दुनिया में निशानी ९ अक़िलबाई १० तारीफ़ ११ नेकनामी १२-१४-१५ करनी १३ दुआ यरवैर १६ बूढ़ी उमर १७ जवानी १८ उमर १९ दुबला बदन २० निगाह २१ पानी २२ ग़म २३ गाल २४ आवाज़ २५

बुधि[१] जो गइ दै हिये[२] बौराई ॥ गर्ब[३] गयो तरिहुन सिर नाई ।

स्रवन[४] गये ऊंच जो सुना ॥ सियाही[५] गये सीस[६] भा धुना ।

भंवर गये केसहि[६] दै भुवा ॥ योबन[७] गयो जीत लै जुवा ।

जौ लहि जीबन योबन साथा । पुनि सो मीचु[८] पराये हाथा ।

बूढ़[९] जो सीस डुलावै सीस धुनहि तेहि रीस[१०] ।
बूढ़ी आयू[११] होहु तुम कै यह दीन्ह असीस ।

अक़िल १ दिल २ ग़ुरूर ३ कान ४ सिर ५-१० बाल ६ जवानी ७ मौत ८ बूढ़ा ९ गुस्सा ११ उमर १२

इति श्री पद्मावत भाषा मलिक मुहम्मद जायसी कृत समाप्तः

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
पांचवीं रस सारिणी	राम व्याहोत्सव	दोहावली रत्नावली
छठीं तिथि बोध	बिहारी सत सई सटीक	स्त्री दर्प्पण
सातवीं पुस्तक मातस्त्र कृत	विश्राम सागर	समर बिहार बिन्द्राबन
सत्य नारायण की कथा स०	राम लगन	रमल सार
शनिश्चर की कथा	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कथा चित्र गुप्त
राम कलेवा	वैस्नवी संध्या	कायस्थ दर्प्पण
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	याज्ञवल्क्य भाषा टी० स०	कृष्ण बाल लीला
कवि कुल कल्पतरु भाषा	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	गीत गोविन्द सटीक
प्रेम रत्न	आनन्दाऽमृत वर्षिणी	रामाभिषेक नाटक
बन यात्रा	निर्णय सिन्धु	इन्द्र सभा नागरी
भजनावली	ध्यान माला	सिंहासन बत्तीसी
बारह मासा फ़क़ीर अला-	अवतार कथामृत	शुक बहत्तरी
बरवा	देवाभरण	अपूर्व्व कथा अर्थात्-
बारहमासा बल देव प्रसाद	ज्ञान चालीसी	गुल बकावली
कृत	शंकर दिग्विजय भाषा	गुल सनोबर नागरी
कृष्ण सागर	योग वाशिष्ठ देवनागरी	चित्र चन्द्रिका
मनोरञ्जन	मार्क्कण्डेय पुराण	छन्दोर्णव पिङ्गल
हारीत स्मृति नागरी	बैताल पच्चीसी	हिदायत नामा मालगुज़ारी
भगवद्गीता सटीक नागरी	दानलीला नागलीला	हिदायत नामा बंदोबस्त
रामायण राम बिलास	सभा बिलास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
यमुना लहरी	विक्रम बिलास	बाला बोध
षट्पञ्चाशिका	इन्द्रजाल नागरी	गरुड़ पुराण प्रेतकल्प
कल्पसूत्र भाषा	कायस्थ कुल भास्कर	सांख्य तत्व कौमुदी
विनय पत्रिका सटीक	क़िस्सह गोपी चंद भरतरी	मनोहर कहानी
किताब पटवारी ४ भाग	बहार बिन्द्राबन	
रसराज	पद्मावती खंड आल्हखंड	**क़ानून**
कृष्णप्रिया	लावनी व घोर बनारसी	
भगवद्गीता विष्णु सहस्र-	युगल बिलास	ताज़ीरात हिन्द अर्थात्-
नाम सहित	भाषा महाभारत विजय-	ऐक्ट ४५ सन् १८६० ई०
ज्ञान स्वरोदय	मुक्तावली	ऐक्ट ३५ सन् १८६६ ई०
भरतरी गीत	जनक पच्चीसी	ज़ाबिते फ़ौजदारी
देवी भागवत नागरी	शृंगार प्रकाश	मजमूआ ऐक्ट लगान-

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
अवध जिसके साथ नीचे	अक्षरदीपिका	किष्किन्धाकाण्ड
लिखे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं	विद्यांकर	सुन्दरकाण्ड
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई०	बालबोध	लंकाकाण्ड
जदीद	भाषाचन्द्रोदय	उत्तरकाण्ड
ऐक्ट १९ सन् १८६३ ई०	इंगलिस्तान का इतिहास	अक्षरारम्भ
ऐक्ट २४ सन् १८६५ ई०	गणितलता १ भाग	भाषातत्त्वदीपिका
ऐक्ट १६ सन् १८६१ ई०	तथा २	बालाभूषण
ऐक्ट नं० २६ सन् १८६६ ई०	तथा ३	हिदायतनामा मुदर्रिसा-
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	गणितप्रकाश १ भाग	न् हल्क़ह बंदी
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	तथा २	शिक्षावली
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	तथा ३	भोजप्रबन्धसार
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	तथा ४	राजनीति
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	शिशुबोध	स्त्रियों की हितोपत्रिका
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	पशुचिकित्सा	अवध भूगोल
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग	कविरत्नाकर
ऐक्ट नं० १९ सन् १८६० ई०	तथा २	भूगोलदर्पण
क़वायद रेलवे और उसके	रेखागणित १ भाग	बीजगणित १ भाग
साथ क़ानून भी हैं॥	तथा २	तथा २
ऐक्ट १९ सन् १८७३ ई०	सूरजपुर की कहानी	कैथी वर्णमाला
अर्थात् क़ानून लगान	विद्याचक्र	
मुमालिक मग़रबी व	भूगोलतत्त्व	महाभारत भाषा छन्द प्र-
शिमाली	पदार्थविद्यासार	बन्ध में जो श्रीमन्महारा-
ऐक्ट १२ सन् १८७४ ई०	वर्णप्रकाशिका	जाधिराज उदितनारायण
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	मङ्गलकोष	सिंहजी काशीनरेश ने गो-
	पत्रदीपिका	कुलनाथादि कवीश्वरों
सरिश्ते तालीम की	भारतखण्डिका	से रचना कराय कलकत्ते में
पुस्तकें	क्षेत्रप्रकाश	छपवाया था वही श्रीयुत
भाषा लघुव्याकरण १ भा०	पत्रहितैषिणी	माधवसिंह गढ़ अमेठी न-
तथा २	रामायण सातों काण्ड	रेश की सहायता से इस यं-
धात्वर्णव	बालकाण्ड	त्रालय में टैप के अक्षरों में
अक्षरावली	अयोध्याकाण्ड	२९ पर्व शुद्धता से छपा है॥
	आरण्य	